विश्वकथाशतकम्
[ सौ देशों की सौ श्रेष्ठ कहानियाँ ]

पुस्तकालय कोष्ठक – शिक्षा विभाग
उत्तर प्रदेश के रीतन ने क्रम

पद्म शास्त्री

देवनागर प्रकाशन
चोड़ा रास्ता. जयपुर
विज्ञवकथासागरतकम्
प्रथम: भागः
प्राककथनम्

भूतलेखिक्मन् विशेषतः मानवोस्यं कथाप्रियः कथामिति: कल्पनाशक्ति बालकेषु विवर्धिते ।।1।।
शैली लोककथानान्तः सजीवा कल्पनास्थिता सत्या भाति विचित्रार्था चादर्शं प्रतिबिम्बवत् ।।2।।
बीजवचनं कथासूत्रं पद्मपल्लववत्कथा एका चौथं कथा भड़्यां कथ्यते च सहस्रं ।।3।।
कथानान्तनुवादोवंशं शतकेश्वरसिन्हं विचारते केवलं हि कथासूत्रबलेनाः प्रपन्धवतम् ।।4।।
कथासु गुम्फितं वचारति समयं लोकजीवनम्
बालकान्तं बिबोधाय कथानाचं निदर्शनम् ।।5।।
बाला देशविदेशानां कथा: शृवत्वा प्रहारिताः
ऐतिहासिकं युक्तं विश्ववाच्यान्तिप्रवर्ध्य काना: ।।6।।
गुम्फितं सरल विश्वकथाश्वतकनामकम
सस्तुतस्य प्रसाराय मनोरञ्जनहेतवे ।।7।।
निघारितकिर्मिण्ति श्रुवं नीरक्षीरविवेचिन्:
कथाकारश्रममध्यात्र वीक्ष्य वित्त्वज्जनाः स्वयम् ।।8।।

निवेदनं:
"पद्म" शास्त्री

128 मुक्तानन्दन्तगरम्, गोपालपुरामाङ्गः, जयपुरम् 15
प्राककथन

इस पुस्तको पर विशेषकर मनुष्य को कथा से प्रेम होता है। कथाओं से बालकों में कल्पनाशक्ति का विकास होता है।

लोककथाओं की शैली सजीव एवं कल्पना पर आधिक होती है। ये विच्छल कथाएं दर्शन में प्रतिविम्ब को तरह सत्य प्रश्न होती हैं।

कथा का मूल स्रोत बोध की माति होता है एवं कथाएं कमल के पत्तों की तरह। एक ही कथा को विविध भावविमुखता द्वारा हजार प्रकार से कहा जाता है।

इस “विश्वकथाशतक” में किन्ही कथाओं का अनुवाद नहीं किया गया है। प्राप्तकृत कथासूत्र का केवल उदाहरण लेकर उन्हें विकसित किया गया है।

इन कथाओं में समग्र लोकजीवन का गुप्तन तथा बालकों के जानवरचन के लिए कथाओं का विकास किया गया है।

देश-विदेशों की कथाएं सृंगकर बालक प्रसन्न होते हैं। उनमें एकता की भावना आती है तथा इसे विश्ववशास्त्र की वृद्धि होती है।

मैंने इस सरल “विश्वकथाशतकम” नामक कथाप्रत्यक्ष को, संस्कृत के प्रसार के लिए तथा मनोरंजन के लिए लिखा है।

निश्चित ही, नीरक्षर का विवेचन करने वाले विद्वान, कथाकार के अभ तथा स्वभाव निर्देश कर लिये।

निवेदक पद्म शास्त्री

128 मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा सागर, जयपुर 15
<table>
<thead>
<tr>
<th>पाठ</th>
<th>नाम</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>सोने का कुंड</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>स्वयंकेशी</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>विचित्र टोपी</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>बुद्धि मठ वाड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>सफेद गाय</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>खार मई</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>मदनलाल के सींग</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>सांप थौर नेवल का मथगड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>जलसा कर्म बोसा फल</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>सौलेली मां</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>गरीबों को न मूलो</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>मठली की करामत</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>वीरकुमार</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>सूखे राजा</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>सूर्य का प्रकाश</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>विनिष्ठा मित्रता</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>मन का जादू</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>ज्ञूते से मुक्ति</td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>गरीब का पैसा</td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>बा खो</td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>माता का लौटना</td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>तीन सिद्धात</td>
</tr>
<tr>
<td>23.</td>
<td>रीठ थौर गोड़ड़</td>
</tr>
<tr>
<td>24.</td>
<td>वाणिज्यन्त्र की लीला</td>
</tr>
<tr>
<td>25.</td>
<td>कुमारी वाह वाह</td>
</tr>
<tr>
<td>26.</td>
<td>विकास का विवेक</td>
</tr>
<tr>
<td>27.</td>
<td>सिहू थौर उसका पुत्र</td>
</tr>
<tr>
<td>28.</td>
<td>श्यामुता का रहस्य</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>पाठ</th>
<th>नाम</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>29.</td>
<td>ब्रम्हा</td>
</tr>
<tr>
<td>30.</td>
<td>नेपाल</td>
</tr>
<tr>
<td>31.</td>
<td>श्रीलंका</td>
</tr>
<tr>
<td>32.</td>
<td>रुस</td>
</tr>
<tr>
<td>33.</td>
<td>ब्रह्मोदिया</td>
</tr>
<tr>
<td>34.</td>
<td>ब्राह्मोदिया</td>
</tr>
<tr>
<td>35.</td>
<td>स्काटलैंड</td>
</tr>
<tr>
<td>36.</td>
<td>हिवेलनर्लैंड</td>
</tr>
<tr>
<td>37.</td>
<td>इटली</td>
</tr>
<tr>
<td>38.</td>
<td>फरान्डा</td>
</tr>
<tr>
<td>39.</td>
<td>पुल्मेराल</td>
</tr>
<tr>
<td>40.</td>
<td>मिश्र</td>
</tr>
<tr>
<td>41.</td>
<td>अलस्का</td>
</tr>
<tr>
<td>42.</td>
<td>भारतीय लैंड</td>
</tr>
<tr>
<td>43.</td>
<td>पेरू</td>
</tr>
<tr>
<td>44.</td>
<td>भारत</td>
</tr>
<tr>
<td>45.</td>
<td>वियतनाम</td>
</tr>
<tr>
<td>46.</td>
<td>जापान</td>
</tr>
<tr>
<td>47.</td>
<td>रोम</td>
</tr>
<tr>
<td>48.</td>
<td>युकेन</td>
</tr>
<tr>
<td>49.</td>
<td>वर्नी</td>
</tr>
<tr>
<td>50.</td>
<td>मलाया</td>
</tr>
<tr>
<td>51.</td>
<td>हंसलैंड</td>
</tr>
<tr>
<td>52.</td>
<td>बाना</td>
</tr>
<tr>
<td>53.</td>
<td>पोलैंड</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>पाठ</th>
<th>पृष्ठ</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>3</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>7</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>11-13</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>15-17</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>19-21</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>23-25</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>27-29</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>31-33</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>35-37</td>
</tr>
<tr>
<td>10</td>
<td>39-43</td>
</tr>
<tr>
<td>11</td>
<td>45-47</td>
</tr>
<tr>
<td>12</td>
<td>49-51</td>
</tr>
<tr>
<td>13</td>
<td>53-55</td>
</tr>
<tr>
<td>14</td>
<td>57-59</td>
</tr>
<tr>
<td>15</td>
<td>61-63</td>
</tr>
<tr>
<td>16</td>
<td>65-67</td>
</tr>
<tr>
<td>17</td>
<td>69-71</td>
</tr>
<tr>
<td>18</td>
<td>73-75</td>
</tr>
<tr>
<td>19</td>
<td>77-79</td>
</tr>
<tr>
<td>20</td>
<td>81-83</td>
</tr>
<tr>
<td>21</td>
<td>85-87</td>
</tr>
<tr>
<td>22</td>
<td>89-93</td>
</tr>
<tr>
<td>23</td>
<td>95-97</td>
</tr>
<tr>
<td>24</td>
<td>98-101</td>
</tr>
<tr>
<td>25</td>
<td>103-105</td>
</tr>
<tr>
<td>26</td>
<td>107</td>
</tr>
<tr>
<td>27</td>
<td>109-111</td>
</tr>
<tr>
<td>28</td>
<td>113-115</td>
</tr>
<tr>
<td>पंक्ति</td>
<td>विषय</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>-------------------------------</td>
</tr>
<tr>
<td>२६.</td>
<td>सुंदर, गुरुदा किवीदा</td>
</tr>
<tr>
<td>२०.</td>
<td>भारत राष्ट्र</td>
</tr>
<tr>
<td>२१.</td>
<td>नाराजसः कार्तिक</td>
</tr>
<tr>
<td>२२.</td>
<td>नारिकेल-कृषि</td>
</tr>
<tr>
<td>२३.</td>
<td>माननवतायाः परिचयः पाकिस्तान</td>
</tr>
<tr>
<td>२४.</td>
<td>बैकॉमोरेबा घोटक</td>
</tr>
<tr>
<td>२५.</td>
<td>प्रजाप्रियो तूफान</td>
</tr>
<tr>
<td>२६.</td>
<td>बाण्यरूप:</td>
</tr>
<tr>
<td>२७.</td>
<td>वरको होरबन्का</td>
</tr>
<tr>
<td>२८.</td>
<td>त्यागप्रियो धर्मगुरु:</td>
</tr>
<tr>
<td>२९.</td>
<td>सिङ्गरेला-उपास्थ्यानम्</td>
</tr>
<tr>
<td>३०.</td>
<td>सुंदरस्य प्राथ्यूति</td>
</tr>
<tr>
<td>३१.</td>
<td>वी भारती</td>
</tr>
<tr>
<td>३२.</td>
<td>अन्यमय:</td>
</tr>
<tr>
<td>३३.</td>
<td>ध्वनिकारको नीशार:</td>
</tr>
<tr>
<td>३४.</td>
<td>हरितभेस्य पश्चाताप</td>
</tr>
<tr>
<td>३५.</td>
<td>रंकुहरियंग्योर्डवनम्</td>
</tr>
<tr>
<td>३६.</td>
<td>मृत्युप्रजय:</td>
</tr>
<tr>
<td>३७.</td>
<td>राजकुमारो रेक़</td>
</tr>
<tr>
<td>३८.</td>
<td>महकास्त्योत्पत्ति:</td>
</tr>
<tr>
<td>३९.</td>
<td>मृत्युमुन्बलवली लोके</td>
</tr>
<tr>
<td>४०.</td>
<td>मृत्युस्थ्य व्यवहार:</td>
</tr>
</tbody>
</table>
26. मैं कहाँ नाचूं
30. ननोखरी रानी
31. मूर्ख ज्योतिषी
32. मानवाल की बेटी
33. मातृत्व का परिचय
34. बौकी का घोड़ा
35. प्रजा का प्रिय राजा
36. भ्रष्टाचार का चोर
37. बेचारी होरबंका
38. न्यायप्रिय धर्मगुरु
39. सिंहरेला की कहानी
40. सूर्य की प्राप्ति
41. दो माई
42. व्यापारी
43. ग्रामवास करते वाली रजाई
44. हृदे मंडळ का पच्चत्राष्ट्रा
45. रंकु खीर विरिए की दीवार
46. मूत्युभूत
47. राजकुमार मेंढक
48. पत्थर की उत्पत्ति
49. मूत्यु बलवान् है
50. सूर्य का व्यवहार
इत्युक्तवा काकः कक्षाम्यन्तरातिस्रो मञ्जूषा निस्सार्य तां प्रत्य-बदत् बालिके। यशेच्छं गृहार्य मञ्जूषामेकाम्। लघुत्मां मञ्जूषां प्रगृहि बालिकया कथितस्मिन्देव मदिरयतप्पुलानां मूल्यम्। गृहमागत्य ततः मञ्जूषा समुद्घातिता, तस्यां महाहरिषिण हीरकारिण विलोक्य सा प्रहरिता तद्विदाशनिका च सहजाता।

तस्मिनेऽव ग्रामेः एकास्परा लुन्धा बृहा ल्यूकस्तु। तस्या ह्रस्पि एका पुत्री भानितु। इर्ष्यंगासा तस्य स्वर्गेङ्काकस्य रहस्यमभिज्ञातवती। सूर्यं-तपेत् तप्पुलान्निदिनिनिष्ठ्य तथापि स्वसुता रक्षरथं नियुक्ता। तथेव स्वर्गेंपक्षः काकः तप्पुलान् भक्षणस्य तामपि तज्ज्वाकारण्यतु। प्रात्स्त्रं गत्वा सा काकं निर्भरत revoked भावोचत्-भो नीचकाक! श्राहमागता, महा तप्पुलसंयुक्तं प्रयच्छ। काकोज्ज्वोत्-प्रहं त्वत्कुटे सोपानसुत्तरायामि तत्त्त्वथ च्वर्णेंमयं रज्जतमयं तास्रमयं वां। गवित्या बालिकया प्रोक्तम्-च्वर्णेंमयेन सोपाने-नाह्मार्गच्छामि परं च्वर्णेंकाकस्त्वतः तास्रमयं सोपानेमेव श्रायच्छत्। च्वर्णेंकाकस्तां भोजनमपि तास्रमाजने ह्वकारण्यतु।

प्रतिनिवृत्तिकारे स्वर्गेंकाकेन कक्षाम्यन्तरातिस्रो मञ्जूषा: तत्पुर: समुक्षिता। लोभाविष्टा सा बृहत्तमां मञ्जूषां गृहीतवती। गृहमागत्य सा तरंगिता यावद मञ्जूषामुद्घातययति तावत्तस्यं भीषण: कृष्णसर्पों विलोकित। लुन्धया बालिकया लोभस्य फलं श्रापतम्। तदन्तरं सा लोभं पर्याँत्यजतु।
इतने में कौश्य कमरे से तीन पेटिया निकाल कर उसे कहने लगा-बालिके। तुम इच्छानुसार एक पेटी उठा लो। सबसे छोटी पेटी उठाकर बालिका ने कहा—यह मेरे चावलों का इतना ही मूल्य है। घर धारकर उसने पेटी को खोला। उसमें कीमती हारों को देखकर वह बहुत हुष्टित हुई। उस दिन से वह धनिय हो गई।

उसी गांव में एक लोभी बुढ़ा भी रहती थी। उसकी भी एक ही पुत्री थी। ईस्टों से उसने इस स्वर्गकाल का रहस्य जान कर लिया। सूर्य के प्रकाश में उसने भी चावल डाले और झप्पनी पुत्री को उनकी रक्षा के लिए नियुक्त किया। स्वर्गकाल ने चावल खाते हुए, उस कन्या को बुलाया। प्रातःकाल वहाँ जाकर वह कौबे को फटकारती हुई बोली—घरे नीच कौबे। मैं तो गई हूँ मुझे चावलों का मूल्य दो। कौबे ने कहा भी तुम्हारे लिए सीढ़ी उतारता हूँ तो बताओ सोने की सीढ़ी ऊताहूँ, चाँदियाँ की या ताम्बे की। श्रीमान बालिका ने कहा—मैं सोने की सीढ़ी से ग्राउँगी, परन्तु स्वर्गकाल ने उसके लिए ताम्बे की सीढ़ी दी तथा ताम्बे के शाल में ही उसे भोजन भी कराया।

बालिका के लौटने समय स्वर्गकाल ने उसी प्रकार तीन पेटिया उसके सामने रखा। लोभी बालिका ने सबसे बड़ी पेटी उठाई। उस लोभी बालिका ने घर धारकर जब पेटी खोली तो उसने उसमें भयंकर काला सांप देखा। लोभी बालिका ने झपने लोभ का फल पा लिया। तदनन्तर उसने लोभ करना छोड़ दिया।
2. स्वर्णकेशी

नेपालस्य श्रेष्ठकथा

एको विश्राम प्राप्तिः। तस्य हे स्नियो तस्याश्रेयको पुत्री पुत्राश्रेयः।
श्रेयाः। केवलामेका पुत्री। सा नातिसुन्दरा, बालक्षाना विहीना बालिकाः।
या वाला धर्मसुन्दरी तस्या: केशा: स्वर्णकेशीमयाश्रेणस्यसन्नतिः जनास्ताः स्वर्णकेशी
शीतोष्णरथवन्। तस्या माता मृता। निमातुविश्ववहरस्ताः प्रति नातिसुन्दरुः।
सा स्वर्णकेशी सेवं चारण्यतुः प्रेयत। तस्या: सुता सानल्य गृहो न्यवसुः।

स्वर्णकेशी सदैव व्यवहारतर्वमञ्जरानातु। एको भारुवियोगी हस्तीं
तां विलोक्यो मेष्ट: प्राह, तव वृृथा कि रोदिति? बालिका प्राहः।—सहिष्णुता
महिः न सिन्ध्वती। स्वपुपुष्यो भोजनं ददात्ति न महास्। मेषो भूते, त्वमस्य
दृस्त्यम् भूलं श्रवन, त्वाके बेत्र मिलिष्टम्। तेन देवेया मन्द्रृं गे प्रहर,
यथेष्टित्र प्राप्तिः। बालिका तथैव कुलवती। यथेकछ फलानि,
सिद्धान्तहि भक्तिर्वता सा हृदंश्ट्रात् सम्बाजता। एको विश्वासा
विश्वासितम् नाहमस्य भोजनं ददामि। पुनः कथमिष्यं पीवा जड़जन्यते।
रहस्यमिव शालुः सा स्कृतुं तत्त्वा सह श्रेष्टवती। चतवारि दिनानि
व्यतिवतानि, बुध्विता स्वर्णकेशी बिनालुः सम्बाजता। एको सा ताते दूरे
प्रेयतु। यदा सा मिष्ठान्त स्नाति तद्भव सा निवृत्त प्रावभूत-महामणि
देहि मिष्ठानम्। स्वर्णकेशी मिष्ठानं दत्तवती।

सन्ध्या सम्बाजता, मात्रा पृष्टम् कि रहस्यं शास्तम्? पुत्री चारितः
सर्वं कृतान्तमश्वायकयतु। सा प्रावोष्टम्—प्राह मेषेष्ये हृदिष्ट्यामि। एको
सदैव स्वर्णकेशी सेवः प्राह भगिनि! मा शुष्ट्वा। त्वंत्रुते नाहं
परिण्यामि। तेन मन्मांस खाद्विष्टा। तव मदशशी उपलोकितं गरेन
निश्खियान निपिदि गायत्री, त्वमन्न्तरत पूर्वविष्ट्यामि।

बहूत दिनानि व्यतिवतानि। शेषेक विना सा सदैव दिनानि
क्षयति। एको तस्य प्रामस्य निकटविनि नगरे भेलापक्ष्यालगत्।
2. सोने के केंद्र वाली

नेपाल की श्रेण्ट कथा

एक बाहर था। उसकी दो स्त्रियाँ थीं। उसकी एक पुत्री तथा एक पुत्र था। दूसरी स्त्री की केवल एक पुत्री थी। वह सुंदर भी नहीं थी। तथा बाळ से कानी थी। दूसरी स्त्री की बालिका अधिक सुंदर थी। उसके केंद्र सोने के समान थे। तरत: लोग उसे स्वर्णकेशी कहते थे। उसकी माता मर चुकी थी। सौतेली माँ का व्यवहार उसके प्रति अच्छा नहीं था। वह व्यवहार की, रोज मेडा बनाने को मजबूर थी। उसकी पुत्री धानन्दपूर्वक घर में ही रहती थी।

स्वर्णकेशी सौतेली माँ के इस व्यवहार को जानती थी। एक बार वह मां के वियोग में रो रही थी तब मेडे ने कहा—तू व्यय क्यों रो रही है? बालिका ने कहा—मेरी सौतेली माँ मुस्क पर प्रेम नहीं करती। वह प्रपनी पुत्री की भोजन देती है मुस्को नहीं। मेडे ने कहा—तुम्हा इस पेड़ के नीचे खड़ी, वहाँ तुम्ही एक बेंत सिलेगा। उस बेंत के बेरे सीं ग पर मारे। जो चाहेंगी सो सिलेगा। बालिका ने ऐसा हो किया। इस्माइल अबुसार फल तथा मिष्टान्न खाकर वह हुस्त पुष्ट हो गई। एक दिन सौतेली माँ के विचार किया। मैं इसे भोजन नहीं देती हूँ। फिर यह ऐसी मोटी कैसे हो रही है? इस रहस्य को खाने के लिए उसने प्रपनी पुत्री की उसके साथ लगा दिया। चार दिन व्यतिरित हो गये। मूली प्यासी स्वर्णकेशी दुखी हो गई। एक दिन स्वर्णकेशी ने उसे ठूले मेज दिया। जब वह मिष्टान्न खा रही थी इतने में उसने लौट कर कहा—मुझे भी मिठाई हो। स्वर्णकेशी ने उसे मिठाई दे दी।

संख्या हो गई। माता ने पुत्री—तुम्ही रहस्य का पता लगा? पुत्री ने प्रादेशिक से श्रंद तक सारा बूढ़ावत कह गया। माता ने कहा—मेरे को ही मार बालू भी। एक बार रोर करे हुई स्वर्णकेशी को मेज ने कहा—भगवान! शोक सह करूँ। तुम्हारे लिए मैं नहीं महसूग। के मेरे मांस को खाये। तू मेरी हत्हियाँ को किसी खड़े में ढालकर विपन के समय मांगना तेरी मनोकामना पूर्ण होगी।

बहुत दिन बीत गये। मेडे के बिना वह बालिका दिन बिता रही थी। एक दिन उस गाँव के समीप ही किसी नगर में मेला लग रहा था।
सा विमाता तां तत्त्वालान्वितं मादिश्य स्वपुज्या सहू मेलाकपं दूर्ष्टं गता। 
शोकविविलास वालिका र्त्तीं विलोक्य समाचारगत्या वोचनूं समिनि। 
सा शुचः तव कायं वयं करिष्यां। तस्मात् मेलाकपं विलोक्य सुखस्मार्गः। 
सा तदा मेवालित्वस्तिनेनका। तस्मात् सा दुहूः मुल्यसी वस्त्रारुपः। 
स्वंपानही नास्तः श्राद्धवन्ती। वस्त्रासः श्राद्धवन्ति परिवार्याः। 
मार्ह्या सा मेलाकपं ग्रामः।

कोऊ पि राजकुमारीरोडः तत्तागतस्वासीत्। स्वर्णकिश्या: सुन्दरतां विलोक्य स विमुखः सम्भाजः। सा सैनिकानादिदेशं, परिवार्यं केवः 
कथा। सैनिकानागताविलोक्य वस्त्राः पलामिता। तस्मा एकोपानन्दः 
मार्ह्यं पतिता। राजकुमारीशा सैनिकानालिप्ता एततः। पादे हुूः पानिनियं 
सम्यायामयतं तथा सहू महिवाहें भविता। ता विचिन्नति नै सैनिका- 
स्तव्रूः एतः: यथा स्वर्णकिश्या चास्ते। विमाना कथिनं नेयं राजपुरी परं 
म्लेविका। राजकुमारीशा सहू स्वर्णकिश्या विवाहः सम्भाजः।

विमाना तां हन्त्यु अयायत। पुत्रेमुखं सा तां स्वपृः समाहृतः। 
एकां भ्रमणः सा स्वर्णकिश्या सत्यवर्षस्य निकटमायकपालयचः तां 
सरोवरे। स्वयं तत्परित्यां परिवार्य राजभवनं यथा। ता सुबोध: राजपुरी 
निविस्तत: कथंतिमुरुः। तमक्ष्या कायाः द्वाव्यावाहाः। न 
कथा जाता। सा प्रावोत्तुयुं, सूर्यवित्यप्रस्वेतः। सबं तस्मः केतवं विज्ञाय 
स तामसम्याद्वूः ज्ञुः सा स्वर्णकिश्या। सा सबं रहस्यं प्राच्छेत।

तस्मिनेव काले स्वर्णकिश्या भाभा जारं पातुः तत्सरोवरमस्मिनः। 
स्वहस्त्वतं केशपाणः विकोक्य देन विचारितम्। तूनमयं केशपाणो मम 
भगिन्या वर्ते। उस्मनं स तद्ध्वूः गता विमानस्वपृः ज्ञ गता से 
भगिनी। सा प्रावोत्तु सा मृता। विमानसे मूतापि सा दैवयोगात 
जीवन्ति राजभवनमस्तासार। इत स मुनकृक्कर्मणों इत्तं विच्छाय 
भगिन्या विरोधे गीतं मायुं विचार। एकां स तस्मा एव रुक्म्याः 
निगंमच्छासीत्। भगिनीं परिवार्यताती यदयावेद मधियो भाभा। सा 
परिवारिकं सम्प्रेष्य तमात्वूः। दृष्टान्तामय स लोन्नाविद्यलाव- 
स्थताम्। राजकुमारोपिं तद्भवतां मन्नित्वपदे वस्त्राद्वूः 
तद्हितावरम्भं ते मम ज्ञानं हुः कसूः।
सीतेली माँ उसे बाहर साफ करने को वे गई और भागी पुली के साथ स्वयं मेला देखने चली गई। शोक से दुखी बालिका को रोती हुई देखकर पक्षी प्राणकर कहने लगे। बहिन! शोक सत करो। इस तुम्हारा कार्य करो। तुम मेला देखकर मुख्यपूर्वक भा जाओ। स्वरूपकेशी ने तब भेड़ की हुड़ड़ीवाला बखड़ा खोदा। उसमें से उसने बहुमूल्य वस्त्रावृक्षार्ग पहने तथा बोड़े पर चढ़कर वह भी मेला देखने गई।

कोई राजकुमार भी वहाँ प्रवाह हुआ था। स्वरूपकेशी की सुन्दरता को देखकर वह भी सुयोग हो गया। उसने सैनिकों को ब्राह्मण दिया, पता लगायों—यह कौन है। सैनिकों को प्रवाह हुआ। देखकर कन्या भाग गई। उसका जूता। मार्ग में ही गिर गया। राजकुमार ने सैनिकों को ब्राह्मण दिया—जिसके पैर में वह जूता प्राप्त होगा। उसी के साथ मेरा विवाह होगा। उसे दूबूते हुए सैनिक उसके चर गए जहाँ स्वरूपकेशी थी। सीतेली माँ ने कहा—यह राजपुत्री नहीं है यह मेरी नौकरानी है। राजपुत्र के साथ स्वरूपकेशी का विवाह हो गया।

सीतेली माँ उसे भारसी चाहीतi थी। पुली द्वारा उसने उसे प्राप्ते घर बुलाया। एक बार घुमने के लिए स्वरूपकेशी को ले गई और उसे सरोवर में गिरा दिया। स्वयं उसके कपड़े पहन राजभवन गई। उसे देखकर राजपुत्र प्राणशर्य में पड़ गया तथा कहने लगा—तुम भाँति से कानी तथा कमल रंग की कौंते हो गई हो। उसने कहा—सूर्य की घूप से। उसके इस छल कपड़े को देखकर उसने उसे दण्ड दिया तथा पृथ्वी किसे स्वरूपकेशी कहूँ मैं। उसने सारा रहस्य बताया दिया।

उसी समय स्वरूपकेशी का साहित्य जल पीने तालाब में गया। अपने द्राक्ष में प्रायः हुए केश-पाशों को देखकर उसने विचार किया। वे केश निश्चित मेरी बहिन के हैं। दुःख होकर वह उसके घर गया। उसने सीतेली माँ से पृथ्वी-मेरी बहन कहाँ गई। उसने कहा मर चुकी है। सीतेली माता की तरफ से तो वह मर चुकी थी। किंतु देवयोग से वह जीवित राजभवन पहुँच गई। इसरों में बंद की छाल की घाती बनाकर वह अपनी बहिन के विरुद्ध में गोल माता हुआ फिरता रहा। एक दिन वह उसी ग़ली से निकल रहा था। बहिन ने पहचान लिया कि यही मेरा माई है। दासी को भेज कर उसने उसे बुलाया। एक दूसरे के देखते ही वे नेहूँविहूँ हो उठे। राजकुमार ने भी उसके साही को मल्ली बना दिया। उस दिन से वे प्रेमपूर्वक रहने लगे।
3. विचित्र गिर्तस्वायामः

अः श्रमशील: कित्तु निर्धनो वालकश्चासीत। तस्य श्रमेण
प्रसन्नश्चैकः कृषकस्तस्मै वृषभसेन प्रदत्तवान्। बालको व्यः शायरः श्रेणः
वृषभे्मा कृषि करिग्यामिः। स वृषभम् नीत्वा श्राचलत्। मागें घृतेंको
प्रूत्स्मालप्पयन हः हः। एष मेषस्त्वया कृषि नीते? बालकः प्रोवाच—
श्य शमनः प्रतियते, यतोहिः मेषं वृषभम् कषयति। द्वादशो घृतेंकवदत्तू—
मेषोविं द्रिग्यमाणा इवासितू। द्वादशेन किंतु निर्धनं वराक्षस्त्वां मेषं: पञ्च—
पुष्यकर्षस्माभिः केवलः।

एकाकी स व्यः शायरः—यद्वहरेकाही त्रिभिरेकिं जेश्यामिः।
तथ्यस्ते वृषभं नीत्वा श्राचलनः। दामुगच्छन्ना प्रोवाच—भवन्तो दयालः।
नार्समलसंके मम कोशी वितवते। मामि मृत्युप्पे सहृद्य नयत। तें तं
सहिंवानयनः। प्रियमेया, परिचर्या स तेषां मनःस्थतयत।

एकाका स बालको विषितः शिरस्स्यामः परिशायं स्वस्त्रुं प्रत्यचलत्।
तदवृष्टवा हस्तस्ते प्रायोक्षुन—विद्वृषकस्तेव शिरस्स्याम तया कृतः
समाख्यातिः? बालको ब्रूते—शिरस्स्याश्रितिं सिद्धप्रदायकं वर्तते।
एतत्त्परिशायापरे वस्तूनि विना मृत्युप्पे नेतुं शक्यते। श्रस्त्र प्रभावश्शानः
प्रकोपदभद्रस्तः। तेन सहृपान गन्तुकामास्ते शूतस्ताहिं स्वस्व—
कार्याकाकायाय निर्गता।

इतो बालकश्चारणं गतं। प्रसिद्धािपशिपकानववदत्त्—ग्रें श्वस्तिगमि
घृतं। समं वस्तूनि कृतमारामिष्यामि शिरस्स्यामेत्तपरिशाय। भवन्तो
वस्तूनि मृत्यु मा श्राचालनम् पुरतरं समस्तं मृत्युं दास्यामि। धनराशि
भिमाप्रमृणां स्वीकृवतं। आपरिकैस्त्ववीकृतम्।

श्रस्त्रसिन्न दिदे प्रातः स ब्रूतेः सममापणं प्राप। आपरिकास्तः
मृत्यु श्राचालनम् पूर्णं दिदे ते शिरस्स्यामायश चगमस्तकरे चमत्करूं यथेष्वत्
सम्माणा ग्रामौ स्वायाम प्रापः। शिरस्स्यामेत्तपेन्तूं ते बालक—
मक्षयनः। बालक: प्रोवाच—मदीयें पौंटकी—संपति: कथेमहेनाणां
3. विचित टोपी

भीमका को भेंट कथा

एक परिस्थिति किस्तु निर्भर बालक था। उसके परिश्रम से प्रसन होकर किसी किसान ने उसे एक बैल दे दिया। बालक ने विचार किया-इस बैल से कृषि करेगा। वह उस बैल को लेकर चल गया। मार्ग में किसी छूट के उसे दुकान पुकार कर कहा-पूर्व हुआ तुम इस भेड़ को कहां ले जा रही हो? बालक ने कहा-यह बैल है न कि भेड़। हंसते हुए इस छूट के उसने होने सहयोगियों से कहा-प्रसन होता है कि यह बालक परम है क्योंकि यह भेड़ को बैल कह रहा है। दूसरे छूट ने कहा-यह भेड़ मरने वाली ही है। दूसरे छूट ने कहा-देवारी इस भेड़ की, पांच रघुनाथ में हुएं खरीद लेना चाहिए।

उसके बाद बालक ने विचार किया-प्रसन के इन छूटों से नहीं जीत सकता। वे छूटों छूटे उस बैल को लेकर चल पड़े। उनके पीछे पीछे चलते हुए उस बालक ने कहा-दाय लोग प्रसनल हैं। बहुत इस संसार में कोई नहीं है। मुझे भी नीचकर के रूप में प्रसन्न साथ लें चलिए। वे उसे भी साथ ले गये। परिस्थिति यह देखा से उनके मन जीत लिये।

एक दिन वह बालक किसी विचित टोपी को पहन कर प्रसन्न घर की ओर जाने लगा। उन छूटों ने हंसते हुए कहा-प्रसन की तरह की यह टोपी टपकने कहां से ली? बालक ने कहा-यह टोपी सिद्धिवादन है। इस प्रसन्न कर बाजार में सभी चीजें बिना मुहूर्त ही सिल सकती है। इस टोपी का प्रभाव बाजार में देखा। उसके साथ ही बाजार जाने के इलाके बाले वे दूर से उस दिन प्रसन्न घर ने काम पर चले गये।

इस बालक भी बाजार गया। मुहूर्त दुकानदारों के कहने लगा-जिन में इस टोपी को पहनकर कल तीन छूटों के साथ चीजों में खरीदने प्रारंभ न। बाजार मुझके चीजों के मुहूर्त न मांगें। फिर में सारा मुहूर्त ने दूर गया। इस अभिस्म हमेशा की स्वीकार कीजिए। दुकानदारों ने उसे स्वीकार कर लिया।

दूसरे दिन प्रताकाल वह छूट के साथ बाजार गया। दुकानदारों ने उठकर उसे प्रशंसा किया। दिन वह उस टोपी के बमाकर ते चमककर छूटे फिरते रात्रि में प्रसन्न घर पहुँचे। इस टोपी को खरीदने के लिए उन्होंने बालक को कहा-बालक ने कहा-यह मेरी पैतृक सम्पत्ति
विज्ञान? चालू ते स्वस्थ्या: सर्वसम्प्रसा दत्ता तत्त्व शिरस्वाण श्रीकुं मान्यन्। बालकोशिक सत्ता सामग्री वृषभे समारोप्य रात्रिवेव दूरमण्डलो। प्रातिस्थान शिरस्वाण परिधाय तेष्वेवापणेषवर्णमुञ्जय यथेच्छ भोजनक्षा-कुबेर्णू। यदा चापशादवहरागच्छन्नातिएकस्तानवोच्चत् वस्तुताः मूल्यातो तु वच्चत। चकितस्वा प्रावोचन् न पश्चि शिरस्वाणामेतत्। कुस्वादश्च-पत्रिएकस्तानरुप्त्त। तेष्वेकको विपदम्मामापतितां ताप्त्यश्च शीघ्रं रूप-काण्ययच्चत। भौतिकते तेस्तमादू हट्टानिर्गतः।

एवं कलहायमानास्ते परस्परं दोषारोपणं क्षणु:। तेजु वृत्तुकोशिष्यशिर-स्वाण परिधाय द्वारे सः चापणं प्रविष्टेऽ। यथेच्छ भुक्त्वा यावते बहुर्गुणमुद्दातास्तावदापाशिको रूप्यकाण्ययाच्चत। तदा सः शिरस्वाण प्रकाश्यातुमारेभे। कुदु: पण्याजीवप्रदेशार्यमार्यतेन तत्त् शिरस्वाण प्रज्ज्वलकर्मी पचति भस्मसादास्वतस्।

भस्ममोहूतं शिरस्वाणं वीक्ष्य ते प्रौच्छवश्वं लपनु। तत्त् जनसम्मदेः समग्रते। यावदू धूर्ताः शिरस्वाणुः मुशापाणयिनु। तावतस्वै नितरन प्राप्तसनु। पण्याजीवस्तानं शिरस्वाणस्य वास्तवविकतामकथयत। तत्त्व् त्वा ते हर्षभा इवाम्बनु। ते भ्राचर्यो तेन बालकेन वस्य स्वबुद्ध्या प्रवत्तिताः। तदृदिनात्रेचाचायानं छल्लियुँ मरि नाकुर्बनु।
है, मैं इसे कैसे बतूँ? अत्तर में उन घूर्णी ने ग्रन्थी सम्पत्ति के बदले उस टोपी को खरीदा था और वे चल पड़े। इससे बालक भी सारी सम्पत्ति बैल पर रखकर रात्रि में ही बहुत दूर चला गया। अत्तर कल वे धूर्त उन दुकानों पर गये और इच्छानुसार भोजन करने लगे। जब दुकानों से बाहर आये तो दुकानदार ने कहा-बीजों की कीमत तो दी। चकित होकर उन्होंने कहा-इस टोपी को नहीं देख रहे हो। कुछ होकर दुकानदार ने उन्हें रोक लिया। उनमें से एक घूर्णी ने इस आई हुई विपत्ति को देखकर शीघ्र ही रूपये निकाल कर दिये तथा वे शीघ्र उस दुकान से निकल गये।

इस प्रकार भगवड़ते हुए वे एक दूसरे पर दोषारोपण करने लगे। उनमें से तीसरा घूर्ण टोपी पहन कर दोनों के साथ दुकान में प्रविष्ट हुए। इच्छानुसार भोजन करके जब वे बाहर जाने लगे तब दुकानदार ने रूपये माँगे। तब उसने घरपनी टोपी कपायी। कुछ दुकानदार ने उसे एक चपेटा मारा तत्त्व वह टोपी प्रज्वलित श्रीमती में गिर गईं तथा भस्म हो गई।

टोपी को जला हुआ देखकर वे विलाप करने लगे। वहाँ भीड़ एकत्रित हो गई। जब घूर्णी ने टोपी के गुरुण का वर्णन किया तो सभी लोग बहुत हुए। दुकानदार ने टोपी को वास्तविकता उन्हें बताई। यह सुनकर वे उत्साह होकर विचार करने लगे, उस बालक ने हमें घरपनी नुकसान से ठंग लिया है। उस दिन से उन्होंने दूसरों को छलना बल्द कर दिया।
4. वृद्धो मत्स्याजीवी

रूसदेवस्य श्रेष्ठकथा

पुरा रूसदेवो समुद्रस्योपकृष्ट्द्वृद्ध तव निर्माण स्ववृद्धया सह कौशिकीयो मत्स्याजीवी न्यवसत्। निर्धनोद्ध्वरोत्कृष्ट्वा वृद्धश्रद्धातीर्ष तलो दयालुकृष्ट्वात् किन्तु तत्सय पत्नी कलहपिया, लोमाकृष्ट्वेता तथां कठोरा चार्सीत्। वृद्धः प्रातरायम् सायं यावत् समुद्रे जालं प्रसायं मत्स्याववृद्धात् तत्थिलकीय स्वोदर्याण्त्य पलयाण्त्य सम। वृद्धः व्याचारायवधय वृद्धः सुतरां नितास्यं वा कार्यांन करोति, इत्यथं सा नित्यं वृद्धेन कलहार्यमाना चार्सीत्।

एकदा वृद्धः प्रयत्तमानोद्धि किमपि नासाद। स व्याचारेऽद्वृद्धा कलण्ड निधास्यति। यावत् प्रपरमानं संस्मृतं स जालं प्रसारायति तात्तस्स्मथ कृष्णमयेः मत्स्यं प्राप्टोति। स मत्स्यो मनुष्यावथ्यामवद्वृद्धं स्वरे; वृद्धः मत्स्याजीव ! श्राद्ध समुद्रस्य राजकुमारी। यदि तवं मां स्वद्यसृतं संहिरं तवां मनोनिष्ठ्यं पूर्वसिद्धां।

वथालुसर्सै तमत्तमहत्। यावत् यदा स गृहं प्रतिनिवृत्त स्तदा वृद्धा तव निर्मितस्यन्ति प्रोवाच, हे मृद्वाबारिन्! कर्धं स्वरुपंस्यमत्स्यो मनुष्यमिव द्वांम प्रावहरति? अहं सन्मयं जानायि तव धूर्तवताम। वृद्धः समुद्रस्य तद्व गतवा प्राश्यतृतो मो समुद्रस्य राजकुमारि! ममेकं प्रास्तोत्रः स्यूगु। समुद्रजल-वीचिष्ठ्व स्वप्नवती मत्स्यं समागतं प्रोवाच दयालुवृद्ध! किमिच्छसि? वृद्धो ब्रूते राजपुत्रिकेः। मद्यीव वृद्धा कावेल्क्यु न्तनाः नावविन्द्यति। सा प्राहं गृहं गच्छत तवेच्छु पूर्णां महविष्ठ्यति। प्रायोगराजीयमित्त्यं हामिनन्दस्य वृद्धा प्रोवाच—तथा कर्त्त गृहं न याचितम्? वृद्धादेशमालवखं मत्तवा वृद्धः पुनः समुद्रमालसाद।

शाहसं क्रत्तास स पुनः स्तामान्यमहत्। स्वर्णमत्स्यं शीर्षभागमत्यं प्रोवाच प्रादश्यतु कि कन्यापि वस्तुन्त्र प्रालव्यकलात्सि? वृद्धः प्रोवाच-मदोया लुह्वा वृद्धा निवासगहुविच्छुद्यति। सा प्राहं गृहं गच्छत तवेच्छु पूर्णां महविष्ठ्यति। गृहं गतवा वृद्धेन दृष्ट्मम्य-तत्कुटकोस्याने भवनमेकं स्थिरामात्सीत। लुह्वा वृद्धा मनस्यकरोण्ड हा! यदि ममापि शूर्या ह्यमविष्ठ्यन्त तथा हृद्यम्प्रधिनिकर्तीवज्जीवनस्यमाप्यिष्ठ्यम्। वृद्धः पुनः समुद्रत्वं प्राप तमस्माह्यभच।
4. बुड्ढा मछुवारा

रूस को प्रेरण कथा

बहुत पहले रूस देश थे, समुद्र के निकारे भीषण बनाकर, प्रजनो मृदा के साथ कोई मछुआरा रहता था। यह बृह निरंजन, सरल एवं दयालु था किन्तु उसकी पत्नी अग्नालू, लोभी तथा कठोर हृदय वाली थी। वह बृह प्रातःकाल से लेकर साम तक समुद्र में जाल डालकर मछली पकड़ा करता था और उसे वृकश अपना पेट मरता था। बृहा का विचार था कि यह बृह मछुआरा तरह कार्य नहीं करता है इस प्रकार वह तित्व बृह के साथ मगर्ती थी।

एक दिन बहुत प्रयत्न करने पर भी बृह को कुछ न मिला। उसने विचार किया भ्राज बृहा फ़ग्ग़ेँ। परमार्थ का स्मरण कर जब वहाँ जाल बांधता है तब उसे एक सुनहरी मछली मिली। उस मछली ने मनुष्य की बाबूरी में कहा, प्रेरित मृदा मछुआरा! मैं समुद्र की राजकुमारी हूँ। यदि तुम मुझे छोड़ देगा तो मैं तेरे मन की इच्छा पूरी करूँगी।

द्वारा मछुआरा ने उसे छोड़ दिया। साम को जब वह घर लौटा तो बृहा ने फटकारते हुए उसे कहा—प्रेरित मृदा मछुआरा! क्या सुनहरी मछली मनुष्य की बाबूरी में बोल सकती है? मैं तेरी युद्धता को प्रेरित तरह जानती हूँ। बृहा समुद्र के तट पर पहुँच कर विचार करते लगा। प्रेरित समुद्र की राजकुमारी! मेरी एक आर्थिक सुनौ। समुद्र की बहरों में बेलतीं हुई मछली। ने भ्राकर कहा—हे द्वारा मृदा! क्या जानते हो? बृहा ने कहा—हे राजपुत्र! मेरी बृहा लकड़ी की नाव चाहती है। उसने कहा—घर जा तेरी इच्छा पूरी होगी। भ्राकर आशीर्वाद से मछली को अनुश्रुत करते वाले बृहा को बृहा ने कहा तूने घर चूने पर क्यों नहीं मांगा। बृहा के भ्राकर को आशीर्वाद समर्पण बृह कुमार: समुद्र तट पर पड़ चुका।

साहस करके उसने मछली को फिर बुलाया। सुनहरी मछली ने बीच हो भ्राकर कहा—भ्राकर देख क्या किसी वस्तु की आवश्यकता है? बृहा ने कहा मेरी बृहा रहने के लिए मकान चाहती है। उसने कहा, घर जाओ, सुनहरी इच्छा पूरी होगी। घर जाकर बृहा ने देखा कि कुटी के स्थान पर संचल सड़क था। तो भी बृहा ने मन में विचार किया—यदि मेरे भी नौकर चाहकर होते तो मैं भी बनी हिंदू चीजों की तरह जीवन
मत्स्येनात्मक स्थिति कविताकलासिति ? वृद्धः प्रोवाच—मदीया वृद्धा घनिष्कशीरजीवनं यापितिमिच्छति। मत्स्यो बृन्धे गृंथं गच्छ, त्वदी-येज्ञ्ञा पूर्णं शविष्यति।

गृहमात्मक तेनवालोकितम्—तथ्य प्रांसादो शनिवास्येन पूर्णं दसी-दासयुक्तश्च। प्रत्यह वृद्धा भूत्यान निर्भरसद्वती मदमानविता समजाता। एकदा ब्राह्मणो सा महाराजी वदशं विनयावनं जनास्तमय्यवादयन्त्व-श्रवासनं। वृद्धा त्वरितमेव गृहमात्मक प्रोवाच श्रारे वृद्धः। गच्छ श्रीनं नान्मपमानपूर्णं जीवनं जीविष्यामि। कृष्णे वृद्धः प्रोवाच मत्स्यन तवं प्रत्यहं कथं याचसे। नान्मपमानमिष्यामि।

रक्तनेत्रासा तव्रृद्धस्योपरि वर्षं। श्रारे तवं मत्स्यमुखे वदसि ? यदि स्वकत्य्यागमिच्छसि तवं यथामादिशिमि तथैवच। त्रिश्यारावः कि न करोति। सः पुनोसस्त्र श्राप। मत्स्येन कथितं लुंभा वृद्धा किमिच्छति? स प्रोवाच—मदनता सा महाराजी भवितुमहृति। मत्स्यचालवतु—गृहं। गच्छ त्वदीयेज्ञा पूर्णं शविष्यति। मत्स्यो गभीरे नीरे प्रविष्ट।

गृहमात्मक वृद्धे न दृष्टं यत्तारासादं परितो रक्तापुष्का सम्बन्धित। वृद्धा स्वगृहस्थसि ह्यो चोपविष्टा सेनापतिता सह मन्त्रयते। दृष्टांगीत्रमेव वृद्धं सा कृष्णा समजाता तत्त्व तमश्वश्लायायमपातयत्। सप्तदिनानि न्युटितुमिति। प्रशस्वश्लायायमपि निवसलं स मनापि दुःखितो नासीत। एकदर्श वृद्धा तमादिशितु। श्रीणं गतवा मत्स्यं कथं श्राङ् समुद्रस्य महाराजी भवितुमिच्छामि येन स मत्स्योपी मदीयानादेशानु नापयतु।

वृद्धी निर्भरसन्यूनं स तत्तासाद। सत्यं मत्स्य: प्रोवाचः—कथं किमिच्छति भवानु ? वृद्धः प्रोवाच—लुंभा वृद्धा समुद्रस्य महाराजी भवितुमिच्छति। उत्तममय्यचन्नं मत्स्यो गभीरे नीरे प्रविष्ट।। किरिक-शालां तथा तत्र प्रतीपच्छमायो वृद्धः स्वगृहं न्यवतं तनं दृष्टं प्रासादस्य स्थाने सेव जीयणं कुटी, ह्यारेकक्षिता विस्मया वृद्धा च।
यापन करती। बृह फिर समुद्रस्तर पर पड़ूँचा और मछली को बुलाया। मछली ने भार कहा, क्या आश्वक्तकता है? बृह ने कहा—मेरी बुढ़ा घनी स्वी की तरह की जीवन यापन करना चाहती हैं। मछली ने कहा—धर जाओ, तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।

धर भार करने—उसका महल घन जान्य से पूरा तथा वास दारी ते युक्त था। इतिहाद बह बृह नौकारों को फटकारती हुई बहुत अभिमानी हो गई। एक दिन भारार में उसने महारानी को देखा। लोग बड़ी नस्त्रता से उसका अभिमान कर रहे थे। बह शीर्ष धर भार करने बृह से कहने लगी—बृह शीर्ष 'जां', मैं भ्रष्टमानपूर्ण जीवन नहीं जीऊंगी। बृह होकर बृह ने कहा—पागल की तरह तू इतिहाद व्याप्त है? जै मेरे भ्रष्ट नहीं जाऊंगा।

बांध लाल करने उसके बृह पर बरस पड़ी। जै मेरे भ्रष्ट सामने बैठता है? यदि अपना कल्याण चाहता है तो जैसे में कहनी हूँ वैसा ही कर। मरता बृह नहीं करता। बह फिर बृह पड़ूँचा। मछली ने कहा—लोभी बृहा चाहती है? बृह ने कहा—अभिमानी बुढ़ा महारानी बनना चाहती हैं। मछली ने कहा—धर जाओ, तेरी इच्छा पूरी होगी। मछली गहरे पानी में बृह गई।

धर भार करने बृह ने देखा कि उसके महल के भारों घोर सिपाही घूम रहे हैं। घोर बृह लोगे के चिंतापर वैद्यकर सेनापति के साथ सलाह कर रहे हैं। बृह को देखते ही बृह कुछ ही उठी और उसे बृह-खाल में बलवा दिया। सात दिन बीत गये। बृहखाल में रहना हुआ बह बृह भी बुढ़ा नहीं हुआ। एक बार बृह ने उसे आदेश दिया। शीर्ष जाकर मछली को कहा में समुद्र की महारानी होना चाहती हूँ। ताकि बह मछली भी मेरे आदेशों का पालन कर सके।

बृह को फटकारता हुआ बह मछली बह थंब चा। सबर मछली ने कहा—कहो, मनुष्क क्या चाहते हों? बृह ने कहा—लोभी बुढ़िया समुद्र की महारानी होना चाहती है। कुछ भी उत्तर न देती हुई मछली गहरे बल में प्रवेश कर गई। कुछ समय तक उसकी बहां इन्तजार करता हुआ बृह अपने पर लौट प्राया। उसने देखा कि महल के स्थान पर बही पुरानी कुटिया है तथा उस कुटिया के द्वार पर उदास बुढ़िया बैठी है।
प. क्वेता गाँ: 
प्रकृतिकारेण क्षमत्य श्रेष्ठकथा

एकति द्वी भार्तरि पितुरुहाट्प्रचलितो स्वभावस्य परीक्षा कुतुंमकः।
श्रेष्ठकार्यानिम मसीली तथा लघुभाषा द्वाया नामकश्रासीति। तथोः
प्रचलतोवैकृति किनारि व्यतीतानि। मागं द्वी पत्यानी मिलती। एको मांगः
पूर्वदिशं प्रवति तथापरः पशुरमदिशं प्रत्यगচ्छतु। पूर्वस्थिते मार्गं पशुनां
शुरार्थानिंक्तः पशुरमदानोऽच कुवकुरचरणः। हूका पूर्वस्मार्गार्थिगि गते
मसीले च पशुरमादात्। बहुदिनान्तरं हूका वर्तस्योपत्यं प्राप, यथा
विविधानि पादार्थे श्वापितस्यानि परिवर्तितानि।

हूका व्याचरणम्—पर्वतस्य शिश्रे तु: पादार्थेण तथा? सम्बन्धः
पादार्थायम्बो निषी: स्थानः स पादार्थुस्मिरत्वान। अन्ते चक्षं विशारं
पात्रं हूका परिवर्तितं नाशकनोऽ। कते प्रयत्नं तस्मादूदेयश्चैवो विनिहितं
स्वकुरकघरस्वरूपं वृक्षं द्वारपरश्च मानवं इवसंवीतं। दैत्योऽथ भीषणांकंतिविकृतः
वदनशासीत्। हूका याबल्पवलायुतिमिच्छिति तापदेव दैत्यं: समुद्वित्युः
तलकन्तःमार्गोऽह। दैत्यस्य भारेा हूका मुहुः सुमध्यां ग्रापतत्वं, परं दैत्यावधेशो
बलीयानु। हूका युक्तिपूर्वं दैत्यमाहु भवानतिभाष्युक्तः। सबलंमहं रज्जु-
बलं विधाय अनेनायिणि एतदं हृतिस्य ववं विधायागमिन्यायिनि यदि
संबद्धासा वर्तेन!

dेत्येन समान्त्यस्य स्वकुरकरेः सहूं हूरं निन्नतः। अन्ते शुभामेकम्
संक्रित्य स्थितः, किं दूका पलायित: एवं विचारिते संति दैत्यस्य हल्तुं
प्राप्तं। स तस्य पदविचित्तान्तिनवेष्ट्यन् हुष्मापार्वमापेन। समयाग्निव हूका
स्वकुरकरातानिदेशं दैत्यं वंशवर्ष्यवा मार्थवत। कुवकुरेठ्यित्वा निहितोऽयं
दैत्यं। गृहानिगंतेन तेनावलीकं यत्स्य कृष्णमयं: प्रादोषाविशिष्टं। स
कुथारे। तच्छरस्त्रं द्वितथा चक्षे। हूका चाच्च्चर्याचरितं सम्जातो यावत्स्मादवृ
गवां वृत्तो विनिंगि:। चेत्वेका गौहिनिमिन्य स्वेता मनोरमा बासी।
प्रहुष्टोऽयं स्वग्राममं गतुकामः प्रचलितः।
प. सफेद गाय
शफीका की अठठें कथा

एक बार दो माई बप्पू चिता के घर से भन्डी की परीक्षा करनी की निकली। बड़े माई का नाम मसीली तथा छोटे माई का नाम हुका था। चलते चलते उन्हें बहुत दिन घृतीम हो गये। रास्ते में दो माई चिता।
एक मार्ग पूर्व दिशा की ओर तथा दूधका मार्ग पश्चिम दिशा की ओर जाता था। पूर्व के मार्ग पर पूजूर पर पुजन घर तथा पश्चिम के मार्ग पर कुत्ते के पार को विन्यास। हुका पूर्व के मार्ग से निकल पड़ा तथा मसीली पश्चिम के मार्ग है।

बहुत दिनों बाद हुका दिखाई देने लगी दो कोटी पर यहाँ, जहाँ बप्पू चिता के बर्तन उससे रखते हुए थे। हुका ने दिखाई दिया- बप्पू चिता की कोटी पर के बर्तन कहीं से भागे? हो सकता है कि वालों के नीचे कोई क्षति लक्षित हो। अतः उसने बर्तन उलटे किये। अतः में एक विशाल बर्तन को हुकी के पर्वी सका। प्रथम करने पर उस बर्तन में एक राक्षस निकला जिसका एक पैर धूका की तरह तथा एक पैर मनुष्य की तरह था। इसे राक्षस की वापसी भी भेजते थे। हुका भागता ही बाहर था कि राक्षस विचल कर उसके कन्धे पर बैठ गया। राक्षस के बौखलाने हुका वार्द बाहर मार्ग पर गिरा, पंसलु उसे देश का आदेश मानना ही था। हुका ले कूला- वह शीघ्रको रस्ती में बांध लेने जाना—इसके लिए में हृदय का वघ करने का रखी हैं।

देश के द्वार देश के द्वार है। जहाँ बहुते कंठों के साथ बहुत दूर लिखता है। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था। बहुत दूर आया था।
इत्यादि मसीही स्वयंकुरे: यह चामिलत। ढूका-प्रातरं प्रावो-चतु प्रेताण्ग मात्यातिश्रियु गृहतात्यंगम गवं गृहं। मसीही चाति गतं प्राप्तं नो तेजुनिष्ठं सम्पत्ति ते। परं ढूका तस्मै गं नायक्षत।

तयोः प्रचलतोड्डत्तिरिनिन्त्या व्यतीता। तत्त्वो निर्मनस्य समीप: प्राप्तु।

पसीली होंका-श्रेष्ठम् लिष्ट गतं। खानिवा निर्माणः जबलं तस्मिन्नाश्चर्यां बौड़स्ते बहुस्तशदायो:। शिपासा शाप्यते।

कित्तित्तकालानतः मसीही शीतलं जलजिततु। स ढूकामपि जलं पातुमक्षयं-यावदु हृद्वाम्या जलं पिबलित तावदृ मसीहीं तं गतं निपातयत।

गतमुख प्रस्तरेण चाच्याद्वैनुष्ठित।

मनसि भिन्नोडि मसीही खुेतां गावं तथा गोवुवुबं नीतिस्थ स्वामिन-प्रति प्रचलित। शाख लक्षधिकः क्षेत्रधेण खुेतारणा:। खेत्रधेणुः गमुपविश्य रटित हा विश्य। मसीही गवाम्भरं स्वामा-तं जवान। परं श धार्मिकम्यवहुर्दृढः गतः। पुनस्त्रेव श खगः। कथितयुक्ताः।

सम्बन्धे सासाकालीक्षवुड़ूदृढः शारामेति। प्रस्तरभणैन शारास्थतः। प्रस्तरस्तरेति। कथितयुक्ताः।

इत्यं मसीही स्वाम्राय प्राय। सर्भं ग्रामीणाः स्तरित्य स्त्रित:। मसीही व्याचारवत सर्भं बम स्वागतं कुर्वः। कित्तित्तकालानतः जने:। पुष्टम्य-कुम वतः तै स्थायं। हृद्वाम्या? स कर्ष न प्रतिविन्दु:। तस्रण: प्रस्तरस्तत:।

स्वामः श्रृंगमुपविश्य कथितयुक्ताः। कथितयुक्ताः। कप्यातम:। जना। स्वस्वापुरुः प्रति प्रचलितं। शाख खुेतामः। स्वामुकुरचा-मसीही। हृद्वाम्या। निर्माणस्य पाषबे गताः। खतित्य निपातितत्वाम्या।

श्रध्य न चीनितः। स्वामम:। सम्बन्धे। दासः स्तवः। खुेतां ग्रामेति। कथितयुक्ताः। प्रस्तरस्तरेति। शारामेति। स्तरित्य। स्तवः। सम्बन्धे। दासः।
इंग्रजी में मसीही ज्ञान की कहां सफेद गाय के प्रतिम कंद गायों को दे लो। मसीही ते कहा-सफेद गाय मुस्लिम दो दो नहीं, तो प्रतिम कंद होगा। परन्तु हुकूक ते उसे वह गाय नहीं धी। इस प्रकार शरंजते हुए उसे दो दो दिन खरीदन हो गये। वे करने के पास पहुँचे। मसीही ने कहा-योग्या उद्योग, बिद्ध लोक-कर उससे भरने का जल-घर कर बिएतल करें। तभि हमारी प्रस्तुत बुक तक। कुछ समय बाद मसीही ने शहद जल पिया। उसने हुकूम को भी जल पीने को कहा। जब हुकूम आते हैं तब मसीही उसे उस खद्दर से बाल बेते हैं। जब गाय के पुंड को पत्थर से ढुक बेता है।

मन में दिखा होते हुए भी मसीही सफेद गाय एवं प्रस्तुत गायों को लेकर आपने गाँव को चल पड़ा। मन में एक पक्षी, जिसकी चोंच सफेद तथा मैरा लाल थे, सफेद गाय के सींग पर बेठ कर रटे रहा था। हां विक्कल्प है। मसीही ने गाय के लिए आपने भाई को मार दिया। उसने पत्थर से उस पक्षी को मार डाला। परन्तु जब वह कुछ दूर गाये गया तो वह पक्षी बेसा ही करने लगा। मसीही ने पक्षी को मार कर जंगल दिया।

इस प्रकार मसीही आपने गाँव पहुँचा। उसी गाँव सींग में उसे बेल लिया। मसीही ने विकाय किया सभी में समय स्वागत टकर रहे हैं। कुछ समय बाद उन्होंने पुर्खा-वुम्भारा भाई हुकूक कहा है? वह नया नहीं लौटा। उसते कहा-मैं कुछ नहीं जानता। उसी समय नहीं पक्षी भाई के सींग पर बेठ कर कहने लगा-हां। विक्कल्प है। मसीही ने गाय के लिए आपने भाई को मार दिया। राष्ट्रव्यवस्था एवं बंपरते हुए लोग आपने आपने घर गये। पक्षी ने हुकूक की बित्तन की कहा-मसीही ने हुकूक को मारने के पास गाया। बिद्धकर उसमें बाल रखा है। हो सकता है कि वह जीत हो।

पक्षी ने उसे मार मारता। पत्थर हटा कर जब वह देखती है, तब आपने भाई को बीवा देखा।

उसकी बित्तन। सप्त निचत कह गया। वे दोनों की क्यों हुआ घर की ब्रोल पहले। मसीही ने-जब हुकूक के पर आये की बाल गाया तो वह डाल हुआ, आपने कुछ के साथ भाई गया तथा फिर कभी नहीं लौटा। इस प्रकार बायें की स्वाभाविक हुकूक झपने पिहा की समस्या का अवधारणा बना।

इसे सफेद गाय की रस्ता की क्योंकि उसका विश्वास था कि इसकी कुपा वेवी जमे यह सिद्धांत मिला है।
8. चतवारो भ्रातरः

बल्लेरियादेशस्य श्रेष्ठकः

चतवारो भातरस्मिनः । देज नित्याणं निर्वर्ता । स्वामीस्यं परीक्षा
कलु गच्छति तावस्मार्गं बुद्धश्वेको स्मितः । स्वेतश्च द्रम्य काष्ठशः
पोटलितांकरणक्षणं एवं जलालिक्ष्यमुक्तं हत्या प्रतीति ॥

स च चतुरेऽभालुकवत्—यूथं
कुः गच्छति । मामि सहैव नयत ।

स्मात्ततः निर्माणस्य पार्श्वं प्रायुक्तं
झो जलासागरको हष्टि । ते विष्ठमितुं तञ्च नोमिष्ठा ।

सर्व स्ववक्तायां: कृष्णारोटिकाश्रयं निसर्यायं भक्तिविवाहस्य: ॥
स वृद्धं पताएकं चतुर्वसी
विमुखः ते नेयो दातवनं । नुक्तवा प्रकारां जलस्त्री पीला
ते पुनः च धर्मिततः ॥

तेभ्नेति: प्रोकायांकियसुपुत्र स्मास्तक्षताद्यासाधारणोऽस्यि
निर्गच्छेः
तहुःहम्मेव गृह्य कार्यस्य ससुखं वसे
मे ॥

बृद्धो हस्तमुखस्य प्रोकाय यथा चि
मुख्यस्तू तथावि श्रवणित । तेन
हस्तमुखस्य प्रामालकाध्यं वेति पुरा
चार्यस्वभाभोहितता दुरा भागवहुः

नारायणीयते ज्ञेष्टरासारं हवदनः—यदि त्वमः
यद्वां लोको निर्माणतिमिष्टिः
तत्वं च वयमेत्रं लिखायः ।

च: प्रोकायां—यूयस्युः गतवा किंमथे कार्यः
कृष्णारोटः निर्गच्छेः निराले श्रवण्ये सौरि विशालानिः
शिलाप्रणालि तथा।

सः दूरे शब्दमयो चापस्य चन ।
उत्तमं द्वितीयं श्रद्धा यिन्सों
वाचः—तद्नाणिः शिलाप्रणालि केशरुपेण परिवर्त्तितानि भवेयस्तहाः

mन्तनाविस्तारस्य सहस्यं ।

बृद्धो हस्तमुखस्य तथा वचः

प्राधारे दूरे दीयते प्रचलिता । निरुत्तर: प्रचलनं तौ फ्रंतिस्य
समीचि प्राप्तम्: पर्वतः: कृष्णाकः: कृष्णारणः सामाक: ।
तृतीयों भावता व्यावरणायु तदस्मे लगा: प्रजाबुद्धु परिवर्तिता: स्युति
सुधु स्यालु । बृद्धैन हस्तमुखस्य तथावि फलम्

लघुभाति बृद्धैन सहे प्रचलिता: प्रसर्विनमु
प्रास्मार्गाते वि परिवर्तिता: स्युति हुः स्यालु ।

बृद्धैन हस्तमुखस्य तथावि फलम्

लघुभाति बृद्धैन सहे प्रचलिता: प्रसर्विनमु
8. चार भाई
बलिकूमिया को भूषण कथा

चार भाई थे। के राणिक निवास थे। भागे भाल्य के परीक्षा करने लिए जा रहे थे। तो मार्ग में एक वृद्ध मिला। सफेद वारी सूखी-क्षमा, लकड़ी का बण्डा तथा। फोटोली लटका कर यह वाद-पाद था लगाता था। इसके चार मार्ग को कहा—दुस्क कहां था रहे हो। मुमके सी साथ ले चलो। कलेके हुए वे बच सदी के पास पहुँचे तब दो नल दिखाई दिये। के बिच में कबने के लिए बहुत बैठ गये। सभी ने अपनी अपनी भोली से बोली के दुकाने निकलते और खाने लगें। उस वृद्ध ने एक प्यास निकाल कर उसके नाच दुकाने कर उन्हें दिये। रोटी खाते। वृद्ध जल पीकर वे वहां से जलने लगें। उनमें से एक ने कहा—कितना अस्वीकार होता। यदि एक नल से जल के स्वाद पर शराब निकलती थो। यहाँ पर घर बनाकर सुख पूर्वक रहें।

वृद्ध ने हार उठाकर कहा—जैसा हूँ आत्मा है बैल ही होगा। उसने, देखा। एक नल से सफेद शराब तथा दूसरे नल से बाल शराब वाह रही थी। तीनों मार्गों ने बड़े भाई की कहा। यदि तुम यहाँ धर्मशाला बनाना चाहता है तो हम यहाँ दूर हों। वृद्ध कहने लगा। अप्रूप गर्म जगह ज्यादा कुछ काम करो। वहां से निकल कर उन्होंने विशाल प्राणग्रन्थ में देखा। कि तीन विशाल शिलालेख हैं तथा दो सफेद पत्थर हैं। उठाकर दूसरे मार्ग ने। इसे। हुए। जी। यदि वे शिलालेख शेष के रूप में बदल आयें। तो मैं यहाँ में भाग उपचार है। वृद्ध ने हार उठाकर सैंस्था ही। कर दिया।

दो, माई वह वृद्ध के साथ प्राण बोले। निरंतर चलते हुए वे उस प्यास के पास पहुँचे जो प्याव। कहां। पंक्तियों के बैठने से काला दिखाई देता था। वृद्ध कहने वे बुन्द की। दी। में पक्ष ये भेदों के रूप में बदल जाने तो प्रभाव होता। बृद्ध ने हार उठाकर सैंस्था ही। कर दिया। छोटा भाई वृद्ध के साथ चल दिया। एक गांव में विवाह हो। राह। वे दोनों वहाँ पहुँचे। बृद्ध ने शवमुर से कहा। यह तुम्हारी कथा नहीं है। यह तो इस गुप्त की पतली होती है। बृद्ध के वचन उसने स्वीकार नहीं किये। बृद्ध ने कहा। दो शंगुर की बेलन लाने। मैं और ब्रम्हा शवमुर इन बेलन की जमीन में बोल्यें। जिसकी बेल में शंगुर लगाने उसी की यह कथा होती।
भविष्यति। सर्वं तद्रवणं स्वीकृतः। किञ्चित्कालान्तरं वृद्धस्य लतायां
फलाद्युत्पद्यानवि। तेन युक्तेन सह कह्याया विवेषः। सन्ध्यांतः। स युक्तके-
स्त्रियोवासः।

dशवर्शाशिष्या क्यतीतानि। वृद्धेन विचारितम्—ब्रह्म चतुर्वेण भातुर्वेण
पाश्चे गंभीरः। पश्चायाम् हृ ते मदीया सेवा चौद्दशी सूर्वंता। स प्रोवाचः—
याचकान्तं कते नास्ति सुरा, किमपि स्वानन्दः। इति कथायित्वा से ते वृद्धं
बहुविन्दक्षणायामास। उद्धवसुखो वृद्धो गर्भस्य गृहाप्राच—हं वयस्मात्ला: यथा
दशयश्चूर्वऽवस्थायुक्तं ज्याताम।। सा-धर्माशिशाः पूर्बक्तं सञ्ज्ञाता।।
बृद्धो लितायनजस्य पाठ्यभागागतः प्रोवाच—भुमुक्तिधार्धे गयं रोटिकां—मन्यं। स
प्रोवाच—याचकेयोस्थं विचख्ये। स्वाधि: प्रकृप्यान् वृद्ध: प्रोवाच—पूर्ववृज
वयं जायताम।। तत्त्वभवेव तत्त्वं मुर्तिकांहि परिज्ञातं सृष्टिभो न प्रत्यावर्त
खण्डी।। वृद्ध: पुन्नरजाप्लास्य द्वारागत्वेव कुक्रुः: शास्त्रायंते सम्। से
p्रोवाच—भुमुक्तिधार्धे गयं रोटिकांच वाच्यामि।। तेनवर्तितं—श्रीधर
निवर्त्यायामासो चेतृ कुक्रुरावः। प्रथिष्ठामि। प्रहस्ववृद्ध: प्रोवाच—पूर्वबृज
वयं। इत्यथाय:। कृष्णप्रस्तरः परिज्ञाता।। तदा से चतुर्वेद्यानु: पाठ्यभाग
क्षुच्चाः। वृद्धस्तपालिनि प्रावोचतु कथं वत्सलत्यति:। विनाशत्या सा
प्रोवाच—पितः।। श्रागम्यांONY विक्ष्म्याताम्।। हस्तिकायां नियत्तं भाटिका
वृक्ष्य वृद्धेन कार्यां भुमुक्तिधार्धे, महं दीप्तराचिस्यम्।। गृहविधि। वृद्धस्य
कर्मभागागतः प्रोवाच, पित: पृथ्वी गृहे। चापिन्द्र:।। सवं प्रज्ञाविलितम्।
बालकान्तं पिता चागचर्चस्य वारित।। स वेनातू किमप्रविद्यायितं:। वृद्धस्य
प्रभावेण सा मुर्तिकावांदित्तका गौरवि गृहस्तां अवरूपेण परिज्ञाता।। तदेवायांमलश्चा
गतिः।। वृद्धं वृक्ष्य स नित्यं प्रस्तयाः।। सवं मिलतवा भोजवन प्रच्छन्त:।। से
बृद्धो गृहस्वास्त्यन्तरे कश्चिपरापि न्यिगतस्तात्यस्य गृहस्य प्रांगणे।। रात्रियां
गृहविधि निर्भूतिता सा गृहामत्ततं गता यत् सृष्ट:। रोजरित । परं से
तत्साति स्त्रु:।। यावत्तता कश्चिपुस्तायपितं यावत्तत: सुबंधांक्षणायपायत।।
श्रवणं। प्रायेंद्या: प्रसावः।
सभी ने उसके बच्चों को स्वीकार कर लिया। कुछ समय बाद ही वृष्ण को बेल में धंगूर उत्पन्न हो गये। उस युवक के साथ कम्या का विवाह हो गया। वह युवक वहीं रहने लगा।

दश वर्ष व्यतीत होने पर वृष्ण ने विचार किया—मैं चारों भाष्यों के पास जाऊंगा। मैं देखता हूँ कि वे मेरी लेखा कैसी करते हैं। पहले वह ज्योत्स्ना प्राप्त के पास गया। मांगें में चलने से दुर्नाश वृष्ण ने शराब मांगी।

उससे कहा— मांगने वालों के लिए शराब नहीं है और न कोई स्थान है। ऐसा कहकर उससे उस वृष्ण को बाहर निकाल दिया। उसे मुझे करके छोटे छोटे बूढ़े ने कहा—जहाँ सर्प बसा हो तो वहों ही हो जाये। वह बस्तियों पहुँचे की तरह हो गई। वृष्ण हृदय भाई के पास प्राप्त कहने लगा। मैं भूलकर हूँ। मुझे रोटी दो। वह बोला—मैं भाष्यों से बरता हूँ। अपना घर हिलाते हुए वृष्ण ने कहा—जहाँ पहुँचे की तरह हो जाओ। उसी समय वह बेतनिटी के रूप में बदल गया और बेल पत्थरों के ऊपर रहे। वृष्ण फिर निकले हुए बस्तियों के पास गया जहाँ बुझे माँक रहे थे। वह बोला—मैं भूलकर हूँ। रोटी तथा बुझ चाहता हूँ।

उससे उतर दिया—सीमा सर्वी साथी नहीं तो कुटियों को छोड़ दूँगा। हूँ तो हुए वृष्ण ने कहा—पहुँचे की तरह हो जाओ। इस प्रकार बकरियां लाते पत्थर के रूप में बदल गईं। तब वह चाये भाई के पास गया। वृष्ण ने उसकी पत्थर को कहा—तुम्हारा पति कहाँ गया? बड़ी नशता है! उससे कहा है पिता। गाइये, विषाण कीजिए। दिगड़ी में बड़ी हुई बाटी को देखकर वृष्ण ने कहा—मैं भूलकर हूँ। मुझे दीजिए। पत्ती ने वृष्ण के कान के पास प्राप्त कर हूँ नित। हमारे घर में भाग लग गई थी। तब कुछ जल गया। बालकों के पिता बातने बाले ही हैं। वे बन ले कुछ ताबोगे। वृष्ण के प्रभाव से वे बिटी की बाटियों गेहुँ के पार देखकर बाटियों के रूप में बदल गईं। उसी समय प्रजापति ची पा गया। वृष्ण को देखकर वह भी बहुत गहरा हुआ। सभी ने मिल कर भोजन किया। वह वृष्ण घर के भर्तर ही चटाई पर लोप बनाए घर के पांपा में। प्रातःकाल जब सूर्योदय सोने के भर्तर गई कि वृष्ण का लग रहा है? परन्तु वह वृष्ण भर वहाँ न था। जब वह चटाई उठाने लगी तब उसने वहाँ दोनों के ऊपर बैठे। वहाँ! वृष्ण के तेचा का प्रभाव ऐसा ही होता है।
एकदा चटकाशिर्षेष्टम्—युस्म वृद्धः। शशकः प्रत्यत्तस्यपर्यन्त्यासृष्ट्यां—विष्णुस्य वृद्धस्य शशकः नमस्त्यासृष्ट्या। प्रकृपितः सन् त्र प्रोवाच—युगमपररक्षपायिनः कर्मणु मन्दरास्।
7. क्षरगोष्ण के सींग

कम्बोडिया की श्रेष्ठ कथा

पहले चीटियां मंडकों के समान हुआ करती थीं। एक धने वन में चोर रहते थे, वहीं पर चीटियां भी रहती थीं। चोरों के प्रभाव से भोपूर्ण में धार लग गई। सबसे वस्तुएं जल कर राख हो गई। दुःखित होकर चोर उस वन से दूर निकल गये। चीटियां ने विचार किया—ब्रह्म हम क्या करेंगे? ब्रह्म हमारा कौन पालन करेगा? आलसी चीटियां कमजोर एवं मरने लायक हो गईं। एक दिन चीटियों ने विचार किया कि शान की भांड़ी में एक बुद्धी चरगोष्ठ गहरी निधा में सो-रहा है। सबी मूली चीटियां दिन चोरी तरह चरगोष्ठ को खाने लगीं। पीड़ा के व्यक्तिप्रेत होकर चरगोष्ठ ने विलाप करते हुए कहा प्रेमी चीटियों। यदि तुम मुझे खुदा चाहती हो को मेदान में ले जा कर लाओ। मूली चीटियों ने उठाकर उसे समतल भूमि पर पटक दिया।

चरगोष्ठ शीघ्र उदकर कर पत्थर पर बढ़ गया और कहने लगा—ब्रह्म भी हम सभी खाना चाहती हो। श्रीमंत धारकर चीटियों ने कहा—इंकार हैं, तुम्हें खाना चाहिए है। तुम हमें खुलता हो। चरगोष्ठ ने एक तरकीब निकाली कि उस धारकर कमजोर हो गया हूं कुछ दिनों के बाद इसी वन में जब मैं मोटा हो जाऊं तथा मेरे सिर पर गींग निकल भारी तब मुझे खाना। तब तक तुम भी पंख वाली हो जाओगी। ऐसा कह कर वह उनकी प्रशंसा से श्रोफल हो गया।

बहुत दिन बीत गये। चीटियों को जब मार्ग में श्रुगाल, चीटें और हाथी मिले तो उन्होंने उनसे हादसा—परे क्या यापने सींगों वाला खरगोष्ठ देखा? अंगारी जानबूं हसते हुए निकल जाते थे। बहुत बरह बीत गये। उस खरगोष्ठ की प्रतीक्षा करती हुई चीटियों कमजोर हो गईं, तथा उनके पंख भी लग गये।

एका म चीटियों ने देखा कि वह बुद्धी खरगोष्ठ पर्वत की चोटी पर बैठा है तथा हंस रहा है। खरगोष्ठ ने कहा—परे सिर पर भ्रामी सींग नहीं लगे हैं। श्रीमंत धारकर वह बोला—तुम दूसरों का खून पीती हो काम नहीं करती हो, दूसरों को ठगती हो। चीटियों ने कहा—पहिले हम एक
यथा पराशुरामकारे। चटकाशचारुवन्—पूर्वं वयसकसिन् गृहे न्यवसामः सम्भवतस्तैवान्तु गुणानां प्रभावश्चास्मास्ववतरितः।

शाशकः प्राह—ये मूर्खः सन्ति श्रलसाश्च ते गुणाश्च गृहस्थः। मनुष्येषु श्रेष्ठा गुणा भवन्ति, तेषां गुणा युष्मामित्रीहः। चटका मानवानां श्रेष्ठगुणान्नापृच्छन्। शाशकः प्रोक्तं—श्रमिन्नु संसारे मानवानां सृष्टि: श्रेष्ठतमा वर्तेत्। मानवः गृहं निर्माय निवसति। स्वजीवने निर्मितं परिश्रमं कुर्विन्ति। विधानेन कार्यार्थिण सम्पादयन्ति। भगवानं स्थानं निवसति।

सम्प्रति चटका मनुष्यार्थार्थीव गृहं निर्माय निवसति। वृहदानां मांजां पालयन्ति। कलहमकुर्वाणां: प्रेम्या निवसति। वस्तूः विभज्य खाद्यन्ति। परिश्रमेण सुखं शान्तिर्न्च प्राप्तवन्ति। मानवार्थार्थीव ता: पशूनां पालयन्ति, चार्चित्य संरक्षणमयी कुर्विन्ति। स्वत्त्वाकाराश्रद्धकारं सम्प्रविधानन्ते यथाकारे जन्तुमहान् भवति प्रत्युत्त विचारे।
है धर में रहती थी। सम्भवत: उनके गुर्गो का प्रभाव हम पर पड़ा हो।

खरगोश ने कहा——जो मूँझ है, धालसी हैं, वे गुर्गो को प्रहार नहीं करते हैं। मनुष्यों में श्रेष्ठ गुर तो होते हैं। उनके गुर्गो को तुम्हें प्रहार करना चाहियें। चीटियों ने उससे मनुष्यों के श्रेष्ठ गुर्गो पूछे। खरगोश ने कहा—

इस संसार में मनुष्यों की सृष्टि श्रेष्ठतम सृष्टि है। मनुष्य घर बना कर रहते हैं। अपने जीवन में खुब परिश्रम करते हैं। नियमानुसार कार्य करते हैं। परस्पर प्रेमपूर्ण रहते हैं। वस्तुओं को बांट कर खाते हैं। अब तुम लोग मनुष्यों के श्रेष्ठ गुर्गों को अपने जीवन में उतारोगे तभी तुम्हारा जीवन श्रेष्ठ होगा। सभी चीटियों ने चिंतकर विचार किया—इस विषय में हम विचार करेंगी। उसी दिन से चीटियों का नया जीवन प्रारम्भ हुआ।

इस प्रकार चीटियों मनुष्यों की तरह घर बना कर रहती हैं। वृद्धों की भाषा का पालन करती हैं। नहीं भगाड़ती हुई रूप से रहती हैं। सभी वस्तुओं को बांट कर खाती हैं। परिश्रम से गुड़ एवं शान्ति प्राप्त करती हैं। मनुष्यों की तरह वे भी पशुओं को पालती हैं तथा भूल का संरक्षण भी करती हैं। छोटी भ्राकार वाली चीटियों श्राच्छो प्रकार जानती हैं कि}

कि 

प्राय भ्राकार से महान नहीं होता भगवान विचारों से बढ़ा होता है।
८. ग्रहिनकुलयो: कलह:

प्रास्त्रेलियादेशस्य भोज्य कथा

श्रृयते यत्सृष्टि: समकालमेव सर्पि विषयारा नासन् परं नकुलश्रा-
त्यन्तविषदर्श प्रातीत्। नकुलस्य मुखे विषपटिलकाचार्यतृ। ताँ पोटे-
लिकां मुखे निरिक्ष्य स यं यं दशति स तत्कालमेव निर्यते। मानवा नकुलाद्-
भयभीताः भ्राशन्। नकुलदंशाद्य यदा बहुव मानवा मुृतात तदा तन्येृथ्विवैृते-
दौंते चृंकचं संसदूर समायोजिता। ब्रह्मेने कीवा मनुष्यजातिरक्षायं स्वस्व-
विचाराण्यास्वस्यत। अन्ते कुलास्पः प्रोबाच श्रवः नकुलान्मानन्तज्ञाति
रक्षयिध्यामि। सर्पीय गवीः निश्चयम वर्षे चार्चय्यचक्कितः सहयातः।
सर्पः पुनार्थोकयूतः श्रवः सूर्यस्तात्पूर्वमैवाह्ष स्वभुदुह्या नकुलाधिपतिपोतिकां
नेत्रयामि। स मनसि व्यचारायत्—कपटेन विना से वशां नेत्याति।

सर्पः शानै: शानैंकुलविवसमीपमाजाजाम। तदैव रक्तमुखो नकुलश्रा-
गतः। सम्मुखितमवसरं प्रतीक्षामायः सर्पस्तम्पससार। नकुल: प्राह—मूर्ख! 
न पश्चिमस्य स्वमूर्त्ये—इत्युक्तवा स यावच्चाकर्मितुं चिचेष्टा तावतस्यप्रकृतोषाचे
श्राण्ति, सुभाष मद्यचन्त तवद्रिश्वदं कण्या जीवा प्रह्य तत्र चतुष्यति। प्रवर्ध-
मानं तत्व वल विलोकयत तत्व विनाशाय योजना निर्मित्ये। गंधी नकुल: 
प्राह-नाहिं बिचेमि, मया सह्रूष्णो मानवा मारितः। सर्पेष तथ्याः—तत्स्यमिन्त
परं सर्वं कण्या जीवा तवं हल्तुमण्डलति। विमूढः नकुल: सर्पमुबाच नाहिं
त्वा हल्मि, सर्वं वृत्तं निबेदय मासम। सर्पः प्रोबाच—तवं स्वविषपटिलिकां
मुखाः बहिर्निश्चायक्य तद्विवाहमात्मां मुरुक्षितं मध्ये। नकुल: प्राह—
श्राप्रसम्भवमेततः। रूढः शरो गत्त्युमूच्छितः चाल्मे विवेष्यो नकुल विषपटिलिकां
निविद्यायामास। सर्पो भक्ति विषपटिलिकां स्वभुते स्थापयायामास प्राह च
प्रियस्वले। बहुकां यावच्चामावानं विनाशामक रो: सम्प्रत्यहं झूझ्मना त्वाः
विज्ञेय गन्ताः कष्टमिः।
8. सांप ग्राह नेवले का झगड़ा
श्रव्द्येलिया को श्रेष्ठ कथा

चुना जाता है कि सूर्य के बाद ही सर्पों में विष नहीं था परन्तु नेवले प्रत्यक्ष विषवाले थे, नेवले ही मुख में विष की पोटली थी। इस पोटली को मुख में रख कर वह जिस जित को डहाता था वह उसी समय मर जाता था। मनुष्य नेवले से मयमीत थे। जब नेवले के काटने से बहुत आदर्शी मर गये तब सभी वन्य जीवों ने एक सभा का आयोजन किया। मनुष्य जाति की रक्षा के लिए प्रत्येक जीवों ने अपने विष विचार प्रस्तुत किये। श्रन्त में काले सांप ने कहा—मैं नेवले से मानवजाति की रक्षा कहूँगा। सांप की गर्वाक्षण को घूमकर सभी भ्रात्वर्ष्यचिह्नित हुए। सर्प ने पुन: घोषणा की—कल सुर्वस्त से पूर्व ही मैं अपनी बुद्धि से नेवले से विष को पोटली ले लुंगा। उसने मन में विचार किया—बिना कपड़े से वह वश में नहीं आएगा।

सांप गोरे गोरे नकल के बिल के पास भ्राया। उसके समय लाल मुख वाला नेवला भ्राया। उन्हें प्रवास देख कर सर्प उसके पास गया। नेवले ने कहा—मूँक्ष! अपनी मृत्यु को नहीं देखता है। ऐसा कहकर वह जब आक्रमण करता चाहता था तब सर्प चिंतिता शरीर भर ठहरी, मद्री बात सुनो—जंगली जीव तम्महे विषद चक्कर रच रहें हैं। तम्महे बल को बढ़ता हुआ देख कर तम्महे विनाश के योजना बनाई जा रही है। अर्थिमानी नेवले ने कहा—मैं नहीं। हरता हूँ। मैं नेवले हृदयों मनुष्यों को मारा है। सर्प ने कहा—यह बात सत्य है परन्तु सभी जंगली जीव तम्महे मारणा चाहते हैं। मूँक्ष नेवले ने सर्प को कहा—मैं तुम्हें नहीं मारूँगा, सारी बात मुझे बताओ। सर्प ने कहा—तुम अपने विष की पोटली मुख से बाहर निकालो तब मैं अपने को उर्धित मांगूँगा। नेवले ने कहा—यह प्रस-मभव है। सर्प छट होकर जाना चाहता है श्रन्त में विषद होकर नेवले ने विष की पोटली निकाली दी। सर्प ने शीघ्र ही विष की पोटली अपने मुख में रखकर कहा—प्रियमित! तुम्हें बहुत समय तक मानवों का विनाश किया है श्रव कै से चल से जीतकर जा रहा हूँ।
नितरा रूढोःपि नकूलो न किमपि कतुः मपारयत्। श्रास्त्रेलियावासिनामयं विश्वासस्तहिनादेव यत्स्पौं विषदंश्ट्रृ। सञ्जातो नकूलश्र विष-हीन।।। तयोः शाश्वतिककलहस्य तदेव नारायम्। यदा तौ परस्परं मिलत-स्तदा कलहयते। विषवा नरपि सपों नकूलं हल्लुं न प्रमवति कार्यभस्य विषपोटलिकं पूर्णं नकूलस्य मुखे चासीदत् स्व विषेषाप्रभावाविद्विन्तिष्ठित। नकूलो विषवेज्जोप्यस्ति। सपर्दंशेन सार्थमयं नकूलो वनं गत्वा विषहरस-मोक्षां जिळृति येनायं न श्रीयते। वैमनस्येनानेनादाप्यहिनकूलयोः कलहः\nसञ्जायत्व इति—श्रास्त्रेलियावासिनां विश्वासः।
प्रत्यय फैलिन नेवला कुछ भी नहीं कर सका। प्रास्ट्रेलिया के निवासियों का यह विश्वास है कि उस दिन से सांप विष वाला हुआ और नेवला विष रहित। उनके निरन्तर भगड़े का यही कारण है। जब वे परस्पर मिलते हैं तब लड़ते हैं। विषवाला सर्थी भी नेवले को नहीं भार सकता। इसका कारण यह है कि पहले विष की पोटली नेवले के मुख में थी। भरत: वह विष से प्रभावित रहता है। नेवला विषवंश भी है। सांप के काटने के बाद नेवला बन में जाकर विष दूर करने की श्रोपचि सृंचता है जिससे यह नहीं मरता है। इसी वैमनस्य के कारण सांप और नेवले का भगड़ा होता है—प्रास्ट्रेलिया-वासियों का यह विश्वास है।
ṣ. यथा कर्म तथा फलम्

स्क्राट्लेण्डदेशस्य श्रेष्ठकथा

पुरा कर्मिक्षिप्तिः ग्रामे एको नरश्चावसतु, तस्य पत्नी मूता। तत्समन्नेव ग्रामे एका नारी चारवस्तया: पतिर्मृतः। तयोरेकौ का बालिका चासितु, ते श्रामाभवेन न्यवस्ताम्। एकदा यदा नरस्य कथा समिहलया गृहभग्नः तथा सा प्रावोचतु तवं गृहं गतवा स्वपितं कथय यदहु तेन समं विवाहं कुत्रे-पिन्च्यामि। यद यम विवाहस्ते सह सम्पलत्येऽत्तदाः तवाचिकमादं करिङ्ग्यामिः।

स्वगृहं प्रत्यागता बालिका पितरं सवं वृत्तमार्थायतु। पिता प्राह-किं करोमि?। विवाहन सन्तनुस्तिरं जायते दुःखमपि। व स्वपुन्त्रीमां-बालिके! मदीयामेन्द्राजालिकामुस्वातुमानय, तस्यं जलमापूर्वतं, यद जलं तस्यं न स्वास्थ्यति तदेवाः विभां करिङ्ग्यामिः। तस्यायुपानहिः रत्नेन्को मासितु शिप्ताक्रमेऽपि सवं जलं बहिगतस्वे शीघ्रमेव शुभेलायां तयोर्विवाहः। संवृत्तः। पूर्वं तु नामी तस्या बालिकाया: समादरं जलतवतो पश्चात् ततं तुदति। स्वदुहितरजन निम्नरं पुष्पाणि। पुरुर्वन्युन्दिनं तस्या कुम्भिता कुशया तथा कृशा सम्पलनता।

एकदा शीतलों यदा तुषारपालो भवति तदा सा कर्मजस्य कस्मुच्छं दत्ता कह्याकस्मकथयुं वनं गतवा बदरीफलाण्याः। कथा प्रोवाच-कष्टमहुं भीषेण शीते बदरीफलाणि ज्ञानापि? तां निम्बस्यमलि सा प्रोवाच-निरंज्जे। यावत्वं बदरीफलाणि नानेय्यति तावण्डा गृहहारं तव कते चोद्धमाष्टविलयामि। ददती बालिका वनं प्रति प्रचलिता। वने परिष्मलती सा हा टजमेकं ददवः। यज्ञ ब्रह्मा वामना इसत्ती सेवसमा चासनु। यदा तत्रोपविश्वा सा भोजनं कुतुं मारंग्यती तदबं श्रेत्याशमऽविमानस्थः। प्रोवाच-कस्मक्षुतेऽपि किंचित्तु भोजनं देह्नु। सम्यविभज्य चत्वारस्ते भोजनमकुवर्। तदन्तरं श्रेत्याशमऽविमः: प्रोवाच तवं कस्मत्र भीषेणे शीते समायता। सापि सवं वृत्तान्तमार्थायतु वामना: प्रावोचन्तवं सम्मार्जतीं गृहीतवा ह्युज्जं स्वच्छं कुरु वयं तव कते बदरीफलाण्यानेवायामः।
8. जैसा कर्म वैसा फल

स्कांतलेख्क को अर्घ चढ़ा

पहले किसी गांव में एक सतुष्य रहता था। उसकी पत्नी घर गई थी। उसी गांव में एक नारी भी रहती थी जिसका पति मर चुका था। उन दोनों के एक-एक बालिका थी, वे मिर्जाता से रहती थीं। एक दिन जब मनुष्य की कन्या महिला के बारे में बातें लगी-तुम बार जाकर ग्राम का पिता को कहो कि मैं उसके साथ विवाह करना चाहती हूँ। यदि मेरा विवाह उसके साथ हो जाएगा तब मैं तुम्हारा ग्रामिक आदर करूंगी।

जब बालिका ग्राम में बातें लगी तब उसके साथ कृत्यभर बाहर बुलाया।

पिता ने कहा-क्या कहूँ? विवाह से सन्तुष्ट भी होती है, दुःख भी।

उसने ग्रामीण पुत्री को कहा बालिके। मेरे जादू वाले जूते को लाओ। उसमें जल मरो। यदि जल में नहीं ठहरेगा तब मैं विवाह करूंगा। उस जूते में एक छेद था। बालिका ही सारा जल नीचे गिर गया। शीघ्र ही शुभवेला में उसका विवाह हो गया। पहले तो नारी ने उस बालिका का आदर किया। किंतु बाद में उसे दुःख देने लगी तथा ग्रामीण पुत्री का पोषण प्रचंड प्रकार करती है। वह भी दिनों दिन उसकी कन्या कुरुप एवं कमजोर होती जाती है।

एक बार सरदी में जब बर्फ गिर रही थी तब उसके (उस सीतली मां ने) काम का धोया देकर कन्या को कहा—जंगल में जाकर बेर ले। कन्या ने कहा—हस भयंकर सरदी में बेर कहाँ मिलेंगे? उसे फसल-कारती हुई थी, कहने लगी है निलंबित। जब तक तुम बेर नहीं ले धार्मिक तब तक ये घर के दरवाज़े तैरे लिए बन्ध रहेंगे। रोती हुई बालिका वन की अंग्रेजी चल पड़ी। वन में धूमधाम हुई उसने एक फोंडी देखी। जहाँ तीन बौने लिगडी सेक रहे थे। जब वहाँ वेंटकर वह कन्या भोजन कर रही थी, तब सफंद मूछों वाले बौने ने कहा—हमारे लिए भी कुछ भोजन दो। उन चारों ने रात्रि प्रकार बाँट कर भोजन किया। सफंद मूछों वाले बौने ने कहा—तुम इस भयंकर शीत में कैसे बाई? उसने सारा वृत्तान्त सुनाया। बौने ने कहा—तुम भागो लेकर इस फोंडी को साफ करो हम तुम्हारे लिए बेर लायें। बालिका की भूल एवं परिश्रमशीलता को देखकर बौनों ने उसे बरादर दिये। एक ने कहा—यह कन्या दिन प्रतिदिन सुन्दर हो।
बालिकाया विनिमयात्त निर्भ्रमोशोलतान्त्रिक विलोकय ते तस्ये वरं दत्तवतः। नरुदिनिमयात्त कन्या सुनदरतरा महिष्यति, यद्येव वदिष्यति तदा मुखार्द्वयः। स्वाभिष्यान्ति पतिन्त्यति, इत्यद्य राजकुमारस्य राजी भविष्यति।

बदरीकलानि नीत्या शा गृहु अपार्य। फलिति बोधयो विमातः स्तम्भिता। यदा कन्या वक्तुसरोर्ये तदा तत् स्वर्णेषु भवानां निचयः सुनजाति।

बसङ्गुरुंत्ये सिद्धेन विलोकय विमातः स्वर्णेषुसहाययादाय तूसङ्गे स्विता।

‘एर्चैसहायम्’ विमातायाः स्वाभयो प्रोवाच मातः। ब्रह्मविध वन गत्वा बदरीकलान्त्यानेपथ्या।

वे भ्रमन्ति सापि तदेव अपार्य यदा वामना व्यवसां।

सा नृवाससुतो वनरिष्य नवनितं महसङ्गुमार्कवाणा।

स्वेतसमक्षु कौमलो नवनीतं पालितवानु।

सा प्रोवाच-न विचते प्रताप्सङ्गे नवनीतम्।

वामनं कथितं सम्मार्कोनोदाय गृहु नवस्च्यं कुरु, सा हूः-किमहूः तव मृत्यूः?

इस्मुल्का बदरीकलान्त्येतु।

उद्यते वामनास्ति शरिपतिवल।

एकः प्रोवाच-नमंडते कुरुः भविष्यति।

जित्यो जृते-वदेष्यं भविष्यति

तदा मुखार्द्वयः मेका:। निजाष्रिपिन्त्यां।

तृतीयः प्रोवाचः।

उद्यते अलिपिता सती

सरिष्यति।

कुशचिदिपि बदरीकलान्त्यानेपथ्या। शा गृहु अपार्य।

यदा सा वक्तुसरोर्येः तदा तस्य मुखार्द्वयः मेका:।

निन्तं।

स्यातिमिमां बोधयो माता चुकोशा।

एकः विमाता कन्या प्रावोच्यु जालिमं नीत्या तुषारे समारोपयः।

सा तपेरेजुः कुरुः मारेषे।

तस्मादेव मानितुः कौशिक राजशुः।

समयातः।

सुनदरीः

बालिका विनाशक्य स विबुध्य हृदभवतुः प्रोवाच च बालके।

कि त्वं सया

हृदवां विलिग्यम्?

बालिका जृते।

एततमम महत्सौभामायुः भविष्यति।

राजातै: राजभवनस्यमानयतः।

एकविनिलिङ्गः

सा धूलानेकामजनयतः।

वदा

विमाता कृतु: गत्या कन्या महाराजी सम्भजाता

तदेष्यं शा स्वसुप्ता शास्यं

राजभवनस्यस्य प्रावोच्यु हुहि:।

शं मामानामलभ्ये वाणा समागता?

बालिका विमातः शकार विहितकहीः।

परं द्रिष्टिये दिने।

यदा राजा

लगारोहितितः।

तदा ताम्यं गृहुः त्याः सा महाराजी महाराजसि महाराजनस्योपकरणे

नष्टां धर्मस्य।

सा स्वस्मूहः राजीप्रेष्यते॥ हरसामयः।

राजा स्वगृहुः प्रत्यागतः।

राजातै: सूक्ष्मां

विनिर्देशः।

राजा

प्रतिनिवृत्तः।

इति महाराजी नदीमवतीये

विनितितः।

शा श्रवेन तत: राजानर्तकस्य।

कुपोषो राजा विमातः।

कुरुः बालिकायु पेटिकायाः

निजियो विनितितिहराता

तिथितमादिनवः।

शत एव

केन्द्रिकवतीतमुः। यथा कर्मवः तत: फलस्।
दूसरे ने कहा—जब यह बोलेगी तब इसके मुंह से सोने के दुक्कड़े गिरेंगे। तोसरे ने कहा—यह कन्या किसी राजकुमार की महारानी बनेगी।

बेर के फल लेकर वह घर पहुँची। बेर के फल देखकर माता जबाबदेह हो गई। जब कन्या बोलने लगी तब वहाँ सींगे के दुक्कड़ों का समूह इकट्ठा हो गया। लड़की की इस दमानुपी शक्ति को देखकर सौतेली मां सोने के दुक्कड़े लेकर चुप हो गई। यह सुनकर सौतेली मां की पुत्री ने कहा माता—! मैं भी बन सकूँ जा कर बेर के फल लाऊँगी। बन में घुमता हुआ वह भी बहुत पहुँची। जहां बोले रहते थे। वह इज़हानुसार फोड़ों में जाकर मक्खन खाने लगी। सफेद मुँहें बाले बोले ने मक्खन माँगा। उसने कहा मेरे पास मक्खन नहीं हैं। बोले ने कहा—आदर लेकर इस फोड़ी को साफ़ करो। लड़की बोली—यह मैं तुम्हारी नोकर हैं! ऐसा कहकर बेर लेने के लिए वह बन में घुमती है। उन तीनों बौलियों ने उसे भाग दिया। एक बौली ने कहा—यह दिन प्रतिदिन कुँड़ा होती जायेगी। दूसरे बौली ने कहा—जब यह बोलेगी तो इसके मुंह से मेंटङ्क निकलेगे। तीसरे बौली ने कहा—यह दुःखित होकर मरेगी। कहीं भी उसे बेर नहीं मिले और वह घर पहुँच जाता। बाहर बोलने लगी तब उसके मुंह से मेंटङ्क निकले। पुत्री की यह स्विंग देखकर माता बहुत दुखी हुई।

एक दिन सौतेली माँ ने पुत्री को कहा इस जाल को लेकर बरफ में गाड़ दो। वह वैसा ही करने लगी। उसी माँ से कोई राजपुत आया। मुरब्बी बालिका को देखकर वह यह सोहित हो गया तथा कहने लगा ये बालिके। क्या तुम मेरे साथ विवाह करेगी?। बालिका ने कहा—यह मेरा महानून सौभाग्य होगा। राजा उसे राजस्वल लेगा। एक बार बाद उसने एक पुत्री को जत्म दिया। जब सौतेली मां ने सुना कि वह कन्या महारानी बन चुकी है, तब ईर्ष्या से बनापनी लड़की के साथ राजस्वल गई तथा कहने लगी है पुत्र! तुम मुझसे सलाह किये बिना ही यहाँ आ गई।

बालिका ने सौतेली माता का सक्कार किया परलूँ दूसरे दिन, जब राजा नगर से बाहर गया हुआ था तब उन दोनों ने उस लड़की को पकड़ा और राजस्वल के समीप ही नदी में डाल दिया तथा बनापनी लड़की को राजस्वल पर सुला दिया। राजा घपने घर लौटा। सौतेली माँ ने कहा—मेरी पुत्री महारानी इस समय चोट हुई है। तुम विद्रोह के लिए जाओ। राजा लेत गया। इस वकालत नदी को भर कर निकल आई। उसने सारी कहाँ राजा को सूनाई। कुँड़ होकर राजा ने सौतेली माँ को तथा कुँड बालिका को लेटी में बन चुके पहुँच की चोटी से उन्हें गिराने का भारी किया। इसीलिए किसी ने कहा है मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही फल भोगता है।
10. विमाता
र्तिक्षणर्लेखस्य अभेदकथा

एक्समिक्नन्दे न्यासस्त्काविन्ध्यव:। कित्वेत्वाकारान्तं तत्त्व पत्नी
मृता। तस्याः दामनान्मनी दुःखिता चासील। एक्वा स दिलियविवाहस्य
निष्क्रियेत्तमकरोत्। तस्या विमाता बालिकायें नातिनिर्यथ। सम्पूर्ण दिवसे
काहें सुंदर बुभकलिता बालिका गेले सम। विमातुर्यथेका कन्या। चासीलस्य
नाम काम इत्यासील।

किद्वेत्त्वाकारान्तं तत्त्विता पर्वतवर्मातु। ध्रुव्या सु दामनान्मी
कन्याया दुःखितासान्तासा। पितुर्विशाले भवने सत्यिपि शेत्य बालिका भवुकक्षे
निवसिति नायरिकाश्चेष्ट कसा प्रवेष्टं शकनिति। समस्तेः गृहकार्यः प्रकृतशीली
सा परिश्रामानं कस्तैविविन्ध्यभिन्नि भोजनं नास्थयतु।

एक्वा विमाता तां काष्ठान्यन्तु वनस्वरूपमत्। सा व्याक्षर्यवतो
श्रोतनंभविन्ध्यदुःखितो संकायों कोष्ठि भुकोभविन्ध्यवतो किद्वे सत्यकारो रक्षिता
महारानु भवित। ‘विमातु दुःखस्य कारणो तु दामनान्मी बालिका सुन्दरतरा
ह्यूस्ती।

एक्वा विमाता दुःखिती ग्रामवाच गच्छति भस्मयानु प्रहीतुं श्राम-
सरोवरम्। या नाविकानु मस्त्यानु प्रहीतयति सा रानी मोदन्नु न प्राप्यति।
दामनान्मी बालिका व्याक्षर्यवतो केवलं मत्त्वते भविन्ध्यवत नियत। सा
प्रत्येकराम्म सायं यातु मस्त्ये स्वर्णरं विम्बरासुर। सरित्तं रक्षणें
वाम्ब्यं काश्तान्मी बालिका प्रावहितुः भवित।। राजावृविहीतं तव मुखं,
सर्वित्सं सरोवरमें कथं न स्नाति। यातु दामनान्मी बालिका स्तान्तु
विशेष्त तावसा मस्त्यकरक्षेता नीत्या गृहु प्रति प्रचलित। दामनान्मी
बालिका कथणं अलक्ष्यं। कित्वेत्त्वाकारान्तं सरोवरादेका जलाप्सरा
निर्भो। सा विद्यामस्य कारणमुनुक्षयु। बालिका सर्वं चूर्तस्वायत्त।
जलाप्सरा प्राप्तिकालं वत्से। मा शुचे। तत्र करण्ये मथा स्वरूपरी मस्त्यः।
10. सौतेली मां
स्वतंत्रलेखा को भेषज कथा

एक नगर में कोई मनुष्य रहता था। कुछ समय के बाद उसकी पत्नी गई। उसकी लड़कों का नाम टाम था। एक दिन उसने दूसरा विवाह करने का निश्चय किया। उसकी सौतेली मां बालिका पर सन्देह नहीं करती थी। पूरे दिन काम करके मूँछी बालिका सो जाती थी। सौतेली मां की भी एक कहानी थी जिसका नाम काम था।

कुछ दिनों के बाद उसके पिता की भी मृत्यु हो गई। ग्राम तोट टाम नामक कन्या की दुख्दशा होने लगी। व्यक्ति पिता का एक विशाल भवन था किंतु बालिका एक छोटे से कमरे में रहती प्रत्याशा कम में वह प्रवेश भी नहीं कर सकती। घर का घराना काम भी वहीं करती थी। सारा काम करने से वह कुछ नहीं गई थी। इसका किसी को कुछ भी नहीं कहती थी।

एक दिन सौतेली मां ने उसे लकड़ी लेने बन को मेंजा। उसने विचार किया—अच्छा होता जब इसे कोई मेधिया खा जाता। लेकिन मारने वाले ने बचाने का बलवान होता है। सौतेली मां के दुख का एक कारण यह था कि टाम नामक कन्या सुन्दर होती जा रही थी।

एक दिन सौतेली मां ने दोनों कन्याओं को कहा—गांव के दालाब से मछुलियां पकड़ लाए। यह बचाव मछुलियां नहीं लायेगी उसे। शान का भोजन नहीं मिलेगा। टाम नामक बालिका ने विचार किया—यह नियम कैसे मेरे लिए लागू होगा। उसने प्रातःसंभाल से साम तक अपनी टोकरी मछुलियों से मर ली। भरी हुई टोकरी देख कर काम नामक बालिका ने कहा है। तरे मुख पर चूल लगी है। इस सरोवर में स्नान क्यों नहीं कर लेती? जब टाम ने स्नान करने का विचार किया तब काम उसकी मछुलियों की टोकरी लेकर घर की ओर चल पड़ी। टाम विलाप करने लगी। कुछ समय बाद सरोवर से एक जलपरी निकली उसने विलाप का कारण पूछा। बालिका ने शारा बृतान्त कह सुनाया। जलपरी ने कहा—है पुत्री! शोक मत कर। तेरी टोकरी में सब लुप्त हो गई। दो उसे आपने मेरे के बाद चल कुए में डाल दें। वह तुम्हारी मां की इच्छा।
स्थापितः। तत् स्वगृहस्य समीपस्ये कुष्ठे पालय, स हव समीपस्य धूर्व-विशिष्टः। शा तथेऽकरेऽत्। स मत्यं प्रितिनित्त तथा सहस बालामकरेऽत्।

विशाखिता विमाता टामनाम्नी बालिकामेकदा बहिः प्रः धूर्वत्।

विमाता तस्मात्कृष्टात् मत्यं निःसार्येः चामकश्यत्। सारं यदा टाम-नाम्नी बालिका कुष्ठणं जलापरी तदा सा मत्यमाह्यपत्त में प्रत्युत्तरं नालमत।

कहाँ विलयती तां विलोक्य जलापत्रः प्रोचाच्चा-सा शुचि। गच्छ मत्य-स्वास्थ्यिन्न स्वकपतन सिपिल। टामनाम्नीकृष्टा तवेई क्रतवती। तत्काल्मेव सा गुणदेवतामेकां शारिकां प्राप्तवती।

अपरारितं दिच्छे शासीरुप्तवः। विमाता तण्डुलाण्यां चलकानांच

मिष्कन्यं विन्याय टामनाम्नीं कन्यां प्रवाहचतुर्वं त्यं तण्डुलेन्य्यमवन्यकान्त पृष्ठकृकृतु-इत्युतीयेन विमाता स्वसुतयाः सही मेलापक्त फ्रुदमागात्। सावृज्जु मुखी

कन्या विचारचतुः कथमुद्रात शार्कपं परिखाय मेलापक्त गामिन्याम्बिः। विलपनी

वा निजगाते भो जलापरसं। शम्वसाहाय्यं कुरुल। तत्काल्मेव सहस्वरी

विषायस्त्रौपिस्यताः। क्षेणीवै तण्डुलेन्य्यमवन्यकान्त पृष्ठकृकृतु। ता

किस्मेव शार्कां पद्धारणचतु परिखाय राजसुतेव मेलापक्त प्राप। तमागाता

विलोक्य टामनाम्नी बालिका विमातुः कणः साभ्रवीच। इत बालिका भाज-सुवेभ प्रतिमाति। किस्मेवः टाम चतुर्ते।

विमातं विलोक्य टामनाम्नी बालिका भभारपलाभितुमारेषे।

तस्या: पादवाण्ये तत्त्रेयं न्यपत्तवः। विमुखः राजसु: पादवाण्ये विलोक्य-कामायतहिन्यकानां-राजसकारानां कुमारिकाम। तैत्तिकाः सकारामविव्य सानान-उनस।

सुन्दरी बालिका विलोक्य नूपस्ता महाराजीपदेभिनिक्षेत्यान्। एतात्वरदिक्य विमाता भूषां दुःखिता। एकदा पितृमुत्तुंदिसे स्तामनाम्नी

बालिका स्वपिलूगः ह्यामागता। उपर्येषत्सन्नुष्टत्वा विमाता प्रायोचत वृक्षाव-शारिकलक्ष्यिनि नोटितिता याचकेवो वितर। यदा सा वृक्षामहत्ता तवा

विमाता वृक्षमर्यङ्गतेय। शंती राजानं न्यवेदित्युं हुतत। मद्विया पुणे

शारिकलच्छानतिनिपतिया मूला च।

उत्तरायण निपतिताः बालिकामेकां बुधा स्त्री स्वगृहमानसहस्तवा

उपचारार्थ कितवती। किस्मादिन्नांतरं सा स्वस्था स्वप्निता। इत्या

विमाता स्वक्षमयापदाय राजसग: गतवा राजां प्रोचाच्चा-सा सुतां महाराजीपदेभिनिक्षेत्याम। नृपस्तायाऽन्नाः स्वीकार।
पूरी कर देगी। उसने बैसा ही किया। वह महली प्रति दिन उसके साथ बातें करती थी। सौतेली मां को शंका हुई उसने टाम नामक बालिका को एक दिन बाहर भेज दिया।

सौतेली मां ने उस महली को कुए से निकाला और उसे झा गई। टाम का जब टाम कुए के पास गई और महली को घुकारा परलू कोई उत्तर न मिला। कहाँ विलाप करती हुई टाम को देखकर जलपरी ने कहा—शोक मत कर, महली तो हृदयों को अपने कमरे में भाड़ दे। टाम नामक कन्या ने बैसा ही किया। उसी समय उसे एक सुन्दर साड़ी मिली।

हूसरे दिन उसका था। सौतेली मां ने चांबल और चने मिला कर टाम नामक कन्या को कहा—तुम ही चांबलों में से चने को शरग कर। ऐसा कहकर सौतेली मां अपनी लड़की के साथ मेला देखने चली गई। आंसू बहाती हुई कन्या ने विचार किया—मैं साड़ी पहन कर भेजे में कैसे जाऊँगी। विलाप करती हुई उसने कहा—इसे जलपरी। नीरी तहायता कर। उसी समय हुजारों चिंतियाएँ बहां भागाई। क्षणभर में हो चांबलों में से चने को शरग कर दिया। वह शीघ्र ही साड़ी और झूठे पहन कर राजकुमारी की तरह मेलें में पड़ गई। उसे दायी हुई देख कर काम नामक बालिका ने सौतेली मां के कान में कहा—वह बालिका तो राजकुमारी जैसी लग रही है। क्या यही टाम है।?

सौतेली मां को देख कर टाम नामक बालिका घर के कारण भागने लगी। उसका एक जूता बहां गिर पड़ा। राजपूत्र उस जूते को देख कर मोहित हो गया तथा उसने सैनिकों को प्रादेश दिया—कुंभारी को राज भवन में लाओ। सैनिक दूंढकर उसे बहां ले गये। सुन्दरी बालिका को देख कर राजपूत्र ने उसे महारानी बना दिया। यह देख कर सौतेली मां बहुत दुखी हुई। एक विद, पिता के शाख में टाम प्रपने पिता के घर भाग। उपर से प्रवेश सौतेली मां ने कहा—पेड़ से नारियल के फल तोड़ कर याचकों को बांटो। जब वह वृक्ष पर चढ़ी तब सौतेली मां ने बूक को काट दिया। सबसे रोटी हुई राजा को कहते लगी ह। मेरी पुत्री नारियल के बृक्ष से भग गई और गई है।

पिरी हुई बालिका को उठाकर एक बृहद स्त्री प्रपने घर ले गई। तथा उसका उपचार भी किया। कुछ दिनों के बाद वह स्वस्थ हो गई। इसरो सौतेली मां अपनी पुत्री की राजभवन ले गई तथा राजा को कहते लगी मेरी पुत्री को महारानी बनाओ। राजा ने उसको प्रार्थना स्वीकार करती।
एकदा राजा सृणमयों वनं गतः। पश्यत एव तस्यान्धकारः सर्वतः प्रसूतः। तस्मिन्नेव वने बिद्वृहे स प्रज्वलन्त दीपकमेकं क्यलोकयत्। बहुकालान्तरं स तत्र प्राप। नूपेन कथितमहमहाश्र राजां विश्रामितुमिच्छामी। वृद्धा स्त्री राजः स्वागतं कृतवत्। तत्रेव टामनाम्नी महाराजीं विलोक्य नूपः समयविस्मयाःस्वितो भूखमानन्दितः। महाराजीतुमुखात् विमातः कृतं सर्वं वृत्तान्तं श्रुतः नूपः प्रकृतिः सन् सैनिकानादिदेशस्य श्रस्या विमातिरं तदुद्हितरुम्बः बद्धवा कारागारे निक्षिप्तः सर्वा। पुनः कृत्स्मामन्दिरस्था विमाता व्ययारप्यत्-भगवतो गृहेविलम्बोष्टिः परं नाम्याय:।
एक दिन राजा शिकार खेलने वन में गया देखते-देखते सर्वत्र शरी-कार छा गया। उसी वन में कहीं दूर उसने एक जलते हुए दीपक को देखा। बहुत समय बाद वह वहाँ पहुँचा। राजा ने कहा—मैं यहाँ राज्यी में विश्राम करना चाहता हूं। वृद्धा श्री राजा का स्वागत किया। वहाँ टाम को देखकर राजा को श्राश्चर्य हुआ भ्रूण और बहु श्रानन्दित भी हुआ। महारानी के मुंह से सौतेली मां के द्वारा किया गया सारा वृत्तान्त सुनकर राजा कृपित हुआ भ्रूण और सैनिकों को श्रादेश दिया। इसकी सौतेली मां को भ्रूण उसकी पुत्री को कारागार में ढाल दो। कारागार में पढ़ी माता ने विचार किया, भगवान के घर देर है श्रवणेर नहीं।
11. निर्धनावन विस्मरत

इटलोदेशस्य श्रेष्ठकथा

करिमशिचस्त्याने तयो भ्रातः सहैव निवसनति। तेषां गृहे फलवाने-को वृक्ष भासीत्। तेजळकस्त्य सर्कारेत् सरदा तिष्ठति। एकदा स्वर्गस्यो देवदूतस्तेन परिकृष्यायमाणो भिक्षुकरपेयाप्रावोचच्च-महां फलमेकं देहि। ज्ञेष्टो भ्राता स्वभागस्य फलमेकं प्रदत्तवान्। देवदूतस्तस्माहिनिर्गतः दितीये दिने पुनरुप स देवदूतो भिक्षुकरपेय समागतः फलमेकं यथाचे। तेनापि स्वभागस्य फलमेकं प्रदत्तम्। अपरस्परम् दिने प्रातः स देवदूतः साहुरुपे समागतः सर्वं भ्रातस्तथावासन। सायुः प्रोचाच-मया सह चलत, तयो भ्रातस्तेन सह प्रचलन्तो नदीपार्श्वमाययुः। साहुरुप्वाच-याचतां किमिच्छसि? ज्ञेष्ट्ब्राह्मण जगद्द-कियतसुष्ट्रास्थादिन नदीजलं सदिराह्पे परिषागं महेनृः। तत्कालमेव नदीजलं सदिराह्पे परिषागं तम। सायुः प्रोचाच-तवदीयेच्छा परपूर्णा, परं निर्धनान्या विस्मर।

सायुध्यात्ममां सह प्राचलदेवकस्मिन्विशाले प्रांगण्यं प्राप, यथ कपोता: ग्रामयक्यानन्वादन्। सायुः प्रा—याचतां किमिच्छसि? स उवाच—इमे कपोता: यदि मेषपुपे परिषागं भवेयूस्तस्ति हुष्टस्त स्वातः। तत्कालमेव विशालं प्रांगणं मेवैर्नित्तम्। सायुः प्रोचाच—तवदीयेच्छा पूर्णाः, परं निर्धनान्या विस्मर।

तदनन्तरं प्रचलनसायुः लंधुर्भ्रातरसुवाच-याष्टां किमिच्छसि? सोजवद्त श्राहिमिच्छापि धर्मपरायणा हिन्यम्। सायुः प्रोचाच-संसारे केवलं तिस्रो धर्मपरायणा: हिन्य: संति तासु हे विवाहिते तृतीया च राजपुत्री यथा द्वी प्राणकुमारी विवाहं करुं मित्वम्। सायु राजान् स्वमनो-मिलायमकथयत्। राजा अंक्तेव्यवह्वङ्गुहा इव स्थितः। सायुः प्रोचाच—द्राक्षालात्यास्तित्व: शाखा: समानय। तासु नयावामेश्वरं नामसं पृष्टकुष्टा लिखितवा राष्ट्री हुष्टपलव निशाचतयत्। प्रातिर्यः शाखायं द्राक्षाकेवलान्तम्यं लगिथि मति तेन सह राजदारिकायं विवाहों भविष्यति। राजा तत्स्वीकृतम्। तेन लघुर्भ्राता सह तस्या विवाहं स्वंवतः। तेन स्वदेशं प्रति निगेता।
11. गरीबों को न भूलो

बटली की अपेक्षा कथा

किसी स्थान पर तीन भाई साथ ही रहते हैं। उसके घर में एक फलवाला ढुंगा था। उनमें से एक भाई उसकी रखबाली के लिए हृदेशा रहता था। एकबार स्वर्ग के देवदूत ने भिक्षुक के रूप में उनकी परिक्षा करने के लिए पूछा—मुम्मे एक फल दो। ज्येष्ठ भ्राता ने अपने हिस्से का फल उसे दे दिया। देवदूत वहां से चला गया। दूसरे दिन वह देवदूत फिर भाया और भिक्षुक के रूप में फल मांगने लगा। उस भाई ने भी अपने हिस्से का फल उसे दे दिया। दूसरे दिन देवदूत भर देवदूत साधु के रूप में भाया उस समय सभी भाई वही थे। साधु ने कहा—मेरे साथ हों। तीनों भाई उसके साथ चलते हुए नंदी के पास पहुँचे। साधु ने कहा—माँगो, क्या चाहते हो। ज्येष्ठ भ्राता ने कहा—कितना भलच्छा होता यदि यह नंदी का जल शराब के रूप में बदल जाता। उसी समय नंदी का जल शराब के रूप में बदल गया। साधु ने कहा—तेरी इच्छा पूरी हो गई, परस्तु गरीबों को मत भूलना।

साधु दोनों भाईयों के साथ भागे चला। और एक विशाल मेंदान में चढ़ा जहां कबूतर दाना चुग रहे हो। साधु ने कहा—माँगो, क्या चाहते हो। उसने कहा—दूजे कबूतर यदि भेड़ों के रूप में बदल जाते तो क्या हो भलच्छा होता। उसी समय विशाल मेंदान भेड़ों से भर गया। साधु ने कहा—तेरी इच्छा पूरी हो गई, परस्तु गरीबों को मत भूलना।

तदनत्तर भ्राणे चलते हुए साधु ने छोटे भाई को कहा—मांगो, क्या चाहते हो। उसने कहा—मैं धर्मरियास्त्र स्त्री को चाहता हूं। साधु ने कहा—इस संसार में केवल तोन धर्मपारियास्त्रियों हैं। उनमें दो का विवाह हो चूका है तीसरी राजपूत्री है जिसके साथ दो राजकुमार विवाह करना चाहते हैं। साधु ने राजा को अपने भने की इच्छा बतलाई। राजा सोच में पड़ गया कि श्रव क्या कहते। साधु ने कहा—राजपुत्र की तीन डालियां लाने। उन तीनों में इन्के प्रलय प्रलय नाम लिखो और राजी में बनाये गये। राजाने लगे लगे उसके साथ इन राजपुत्रों का विवाह होगा। राजा ने यह स्वीकार कर लिया। उस छोटे भाई के साथ उसका विवाह हो गया। वे अपने देश की ओर लौट प्राये।
एकवर्षानन्तरं देवदूतेन विचारितम् भूमी गत्वा द्रष्ट्यामि ते । भावः कि कुर्यन्त? भिक्षुकः पूणे स ज्येष्ठांश्रातरमाज्याम् । साधुः प्रोवाचः चक्रक मेकं सुरां प्रयच्छ । प्रकृष्टत: सन्त स प्रोवाचः-बरम् । गच्छ शीघ्रं नाहं मूल्येन विना सुरां ददामि । दूतः ऋष: सन्त स्फातोचतः-त्वं निर्जनान्वित: स्मृतवानसि, पूर्ववदूं वृक्षरक्षां कुर्यं । तत्कालसङ्गें ततस्थाने नदी प्राकृत्त ।

दूतो मेषपालेऽ परीक्षितुभु निर्गतः । भिक्षुकस्तत्र गत्वा प्रोवाचः-पातूः किच्चः दुःग्ध प्रयथच्छ । स उवाचः-नालसेभ्योः हृदं दुःग्ध प्रयथच्छामि । ऋषोऽदेवदूतो जगादः-त्वमि निर्जनान्वितस्मृतवानसि पूर्ववदूं वृक्षस्य रक्षां कुर्यं ।

दूतः श्रीमपेव लघुभ्रातूः परीक्शार्थं निर्गत: कानने यथृ र ज्ञुट्जे व्यवसत् । भिक्षुकः प्रोवाचः-महा सिद्धिच्छोजनं प्रयथच्छ ।

लघुभ्राता प्रोवाच यद्वपि निर्जोगा वयं पुनरपि भवानश्र स्थितवा स्नेहेन निवसतु। तस्य देशं स्वलोकः दूतः प्रोवाचः-भा शुच:, तवं निर्जनान्वी-स्मृतवानसि, ते कल्याणं भविष्यति। दूतकृपया ह्युट्जस्याने विशालः प्रासादः संवृत्तः। अनेके भूत्याश्रेष्ठततः पर्यंतिमारवध:। ऋषोऽभिकुकः स्वाशीमिस्तः व्यवर्धयन्त्राः-तुष्मीशवरेण सम्पत्तिवितशिरीता यावतवं निर्जनानाः साहाय्यं करिष्यसि तावतः सम्मतिरियं तव पाश्चे स्थास्यति। देवदूतकृपया तदन्तरं स ससुखं न्यवसत्।
एक वर्ष बाद देवदूत ने विचार किया पृथ्वी पर जाकर देखूंगा कि वे भाई क्या कर रहे हैं? भिक्षुक के रूप में वह बड़े भाई के पास भ्राया। साधु ने कहा-एक प्याला शराब दो। ऋग्वेद से वह कहले लगा देवनूकु। शीघ्र यहां से चले जाओ, मैं बिना मुल्य के शराब नहीं देखा। देवदूत ने कुछ होकर कहा-तू गरीबों को भूल गया है। पहले की तरह अपने पेड़ की रक्षा करो। उसी समय उस जगह नदी बहने लगी।

देवदूत ग्राम गदरिये की परीक्षा करते निकला। भिक्षुक बहां जाकर कहने लगा। पीने के लिए कुछ दूध दो। उसने कहा-मैं भालसी को दूध नहीं देता हूं। कुछ होकर देवदूत ने कहा-तू भी तर्कों को भूल गया है। पहले की तरह ही पेड़ की रक्षा करो। देवदूत शीघ्र ही छोटे भाई की परीक्षा के लिए निकल पड़ा जो जंगल में भोपड़ी में रहता था। भिक्षुक ने कहा-भूले कुछ भोजन दो।

छोटे भाई ने कहा-यदचिप हम निर्धन हैं फिर भी भ्राया यहां सुख-पुरावंक रहते हैं। उसकी गरीबी को देखकर देवदूत ने कहा-शोक मत कर, तू गरीबों को नहीं भूला है, तेरा कल्याण होगा। देवदूत की कुपा से भोपड़ी की जगह विशाल महल बन गया। भ्रान्त नौकर इमर उधर घुम रहे थे। कुछ भिक्षुक उन्हें भारीबाद देता हुआ कहने लगा। तुम्हें ईश्वर ने सम्पत्ति दी है जब तक तू तर्कों को सहायता करेगा तब तक यह सम्पत्ति तेरे पास रहेगी। देवदूत की कुपा से इसके बाद भी वह सुखपूर्वक रहा।
12. मत्स्यस्य माया
कनाडादेशस्य श्रेष्ठकथा

tरंगः: सह हृदयन्ती मंजूषा। समुद्रतत्तमुपागता चीवरे: समुद्राधिताच। महज्जूषायं द्वारपि तौ संजाहीनावास्ताम। किच्छवकालान्तरं फिलिपेन दृष्टं शतस समुद्रोपकण्ठं कथमागतं: ?। प्रात: फिलिप: स्वमनि स्वास्थ्यतः व्यायाम कुशत्री च साधनः प्रासादः स्वात्तिहि सुष्टु मवेछ। तत्कालमेव तत्र सुमुखः प्रासादः समुद्रस्य। सर्व धीवरः ध्रुवधर्मचकितः: सञ्ज्ञाता:। सक्यत्तमरोध्यः फिलिपं धीवराः: समुद्रस्य राजानां स्वीकृतः।

एकदा सामन्तपुष्टिः फिलिपस्वात्मकोपयतं भवानु स्वाभावः कथम न परिवर्तयः। तत्कालमेव फिलिप: सुन्दरो राजपुत्रः: सञ्ज्ञातः। नास्ति समर्पित स पूर्ववर्तिनिः। फिलिपः मनसि स्वास्थ्यतः सामन्तश्च धर्मचकितः। परासवम तानह सहिष्येः। परं मत्स्यवचनानुसारं पख्वीकुश्य समर्पित स्वल्पः: समोवशिष्टः।

एकदा सामन्तसुता प्रासादे समुपविष्टा चारीतः। तथा दृष्टा यदेका नौः समुद्रे निमज्जति। तद्विद्यिते धीवरा नावं समाक्षरः: प्रासादस्मृत्य-मानीतवतः। प्लेओस्पिनु केवलं भ्रो वात्रिणशवासनु: तेषुपि सामन्तसुतायाः: पारिवारिकः ते अभ्रामाय निर्गतः परं अभ्रावतेन नौ समुद्रकामसि निमित्तः। तदृष्टवा सामन्तसुता संजाहीना सञ्ज्ञातः।

शिशिरोपचारेण प्राप्तस्रं: सामन्तोपि स्वाजामातुर्वें विलोक्य विस्मतो यातः।

किच्छवकालान्तरं फिलिपेन तत्सागतः। सामन्तः: प्रोश-भवस्यं जामातरं प्राप्ताः क्रुद्धवाक्षोंसिः। भवानु मत्तकुतेपि प्रासादेमेकमणेव निमिपितू येनाः स्वसुमुद्रतात्तचावह भवतं स्वोत्तरराहिकरिण शिष्येः। फिलिप यावनमनसि व्यायारयं तावदेव सुसुमानु प्रासादः समुद्रस्य।

लोकाविष्ट: सामन्तः: फिलिपं स्वोत्तरराहिकरिण क्रुद्धवातः। निश्चिते समये तथविवाहं सम्पन्नः। फिलिप: सामन्तं वामेवं सक्तस्य समुद्रोपकण्ठं निनया। फिलिपो यावनमनसि व्यायारतावदेव रत्नराशयस्त्रांग्पितिः।

सामन्तः: प्रहृतिः सञ्ज्ञातः।
12. मछली की कटामात

कनाडा को शेष कया

लहरों के साथ नाव को लकड़ी की पेटी समुद्र के फिनारे भा गई। धीरों ने उस पेटी को छोला। उस पेटी में वे दोनों बेहोश पड़े थे। कुछ समय बाद फिलिप ने होश ाने पर विचार किया कि मैं समुद्र के पास कैसे अगराय? आत्मकाल फिलिप ने विचार किया—यदि यहां बाढ़ महल बन जाता तो। उसी समय वहां सुंदर महल बन कर छःा हो गया। सभी धीरों ने फिलिप को कहने पर विद्यक समुद्र का राजा बवीक र र लिया।

एक दिन सामन्त की पुत्री ने फिलिप को कहा—प्रपनी श्राष्ट्री के क्यों नहीं बदल लेते। फिलिप उसी समय सुंदर राजपुत्र हो गया। फिलिप ने मन में विचार किया—सामन्त ने हमारा जो सापान्त किया उसे मैं नहीं सहन करूंगा। परस्तु मछली के कथनानुसार जब पांच वर्ष में थोड़ा सा समय बस गया है।

एक दिन सामन्त के पुत्र के महल को छूत पर बैठी थी उसने देखा कि एक नाव समुद्र में बूँढ़ रही है। उसके इशारे से धीरों नाव को खींचते हुए महल में ले आये। इस नाव में ही केवल तीन लोग थे। वे सामन्त के पुत्र के परिवार के ही। वे घूमने के लिए चिकने थे किंतु प्रापें ने उनकी नाव को समुद्र में डूबा दिया। यह देखकर सामन्त की लकड़ी बेहोश हो गई। जल आति छड़क कर जब उसे होश प्राया तब सामन्त को प्रपने जानाटा की सम्पत्ति देशकर श्राष्ट्र बुथा।

कुछ समय बाद फिलिप भी वहां भा गया। सामन्त ने कहा—श्राप जैसे जानाटा को पाकर मैं वाता हूं। श्राप मेरे लिए भी एक महल यहां पर बनवा। वह सामन्त के पुत्र के श्राष्ट्र का विधाह श्रापके साथ कर डूंग श्राइ भापको श्रापना उत्तराधिकारी भी बना हूं। फिलिप ने मन में विचार किया श्राप के महल बन कर छःा हो गया।

लोह में श्रापकर सामन्त ने फिलिप को श्रापना उत्तराधिकारी बना दिया। निश्चित समय पर उनका श्रापाह भी हो गया। फिलिप सामन्त को घन से सत्कार करने के लिए समुद्र के किनारे लें गया। फिलिप ने घन घन में विचार किया तब वहां रत्नों का ठेर लग गया। इससे सामन्त प्रस्तु हो गया।
फिलिप: प्रोवाच-श्रव्हं भवतामुत्तराधिकारी भूत्वा स्वकते व्यं निर्वाह्यामि। भवानश्रैव ससुखं निवसतु-इति कथयित्वा फिलिपो सामन्तकार्यं प्रार-व्यवान्।

द्वितीये दिने प्रत्यूषे जाते मत्स्यकथनानुसारं पञ्चवर्षा गुणयतानि। साम्यतं मत्स्यकथनानि प्रभाबद्धीनानि सीम्यतानि। श्रासादोधि विलुप्तो रत्नानि च विलुप्तानि। एतदीक्ष्य सामन्त: प्रमच इवामवत् परं स किमपि कतुःश्च शक्नोति। तस्योत्तराधिकारी फिलिपो राज्यसूखमनुभव नास्ते। विनित्रं सत्सुवं विशेषविलसितम्।
फिलिप ने कहा था कि भ्रापक उत्तराधिकारी बनकर अपने कर्त्तव्य का पालन करता है। भ्राप यहीं पर सुखपूर्वक रहिये। ऐसा कह फिलिप ने भ्रपना कार्य भारम्भ कर दिया।

भ्रप दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही मछली के कथनानुसार पांच वर्ष पूरे होने बाले थे। समय पूरा होते ही मछली के वचन प्रभावहीन हो गये। महल के सभी रत्न लुप्त हो गये। यह देखकर सामन्त पागल सा हो गया लेकिन भ्रप क्या कर सकता था। उसका उत्तराधिकारी फिलिप राज्य के सुख का अनुभव कर रहा था। विचि का विधान विचित्र हुआ करता है।
13. वीटकुमारः

पूर्तगालदेशस्य श्रेष्ठकथा

श्रासीदेखा वृद्धा। तस्यास्तिसस्कर्ष्यस्याः नृस्यस्तथंकः पुत्रः। ज्येष्ठा पुत्री यावदुवानस्मु यवत्सा विलुप्ताः। द्वितीया पुत्री स्वयंसनीमन्वेष्ट्वे गता सापि तत्षेष विलुप्ता एवं कनिष्ठापि। वृद्धा नितरं व्यस्तत्। मातरः मुहुः हुँिविलप्ती विलोक्य पुत्रः प्रोबाच-मातः। किमयं हुःते? जननी सर्वोऽयमकथाय। पुत्रः प्राहं-यावच्छित्तिरं श्रोतिष्ये तात्त्वाच्छित्तम्। प्राप्तानुस्तो गृहाः। प्रस्थित:।

बालश्रमकर्ता मार्गः प्रचलनः त्रीन्दुः युवकान्तः कलहायमानानपश्चर्यः। तेन पूर्वस्तेष्टे प्राबोधनः। ब्रह्माण्डः नाना तिरंगः वस्तुऽन्यायसम्प्रस्तरम्। एकामुखः कुम्भजातिकं शिरस्त्रादेशम्। उपायः भारस्तित्व जनों यत्र कुश्य परं शक्तिः। कुम्भकर्ता शर्माः। द्वाराधिकों चोद्दाट्यः। शक्तिः। शिरस्त्राणात्ते सवर्णेऽश्च्छन्ते। शक्तिः। शक्तिः। ब्रह्माण्डः कालत्तः। ब्रह्माण्डः शक्तिः। शक्तिः। शक्तिः। शक्तिः। शक्तिः।

बालकः प्राहं-प्राहं प्रस्तरमेकं सिरामि। यः सर्वप्रथमं प्रस्तरमान- 

विसयति ते एवृु स्तु निप्रस्ताविति, इत्युक्त्वा बालकः प्रस्तरं प्राक्षिप 

पत्तः। तयो युवाः प्रस्तरमानेनुमाणानुः। बालकोंपि वस्तुत्यादय द्वृतं 

प्रार्थवतः। क्षणेऽनि स यावद गगनमुखाः। तावदुपुर्वः कथमपश्चर्यः। कुम्भक 

या दुर्गमुद्वाद्य दुर्गमम्ये युक्तीमेकामत्तक्तमपश्चर्यः।

बालकं विलोक्यं विस्तिता सा प्राबोधस्तु श्रेरे। त्वम्म प्रत्यामयर्ते।

भगिनीं विलोक्यं भ्राता भृः तु तुलः। भगि निजगानं तवावं राजस 

श्रेष्ठकेरः मन्त्रे वा वर्षवमकरोऽर्थुः। ऐसं भाषमाण्योऽस्त्योरवृंकः समायातः। 

भृः भगिनीयाः। प्राहः मा मैथिः। प्राहं शिरस्त्रां धारयामि। येन सम न 

कोऽपि द्रुतं शक्तिः। सहसा कारात्मकगङ्गानंृकः समायातः। स एवंवृत्त 

प्रारीतः। तूर्मोए राजकूमारकृं दृत्वं प्रोबाच-कोशं समागतोस्तिः। 

प्राक्षिपं स्वरूपम्। श्यायां पर्यंत्विनोः।
13. वीरकुमार
पुरावाल की शेषत कथा

एक वृद्ध स्त्री थी। उसके तीन पुत्रियां थीं। प्रोद्र एक पुत्र था। अन्य पुत्र बालक ही जाकर जब पुत्र चुनती है तब प्रकाश मान कहाँ से लुप्त हो जाती है। दूसरी पुत्री तथा कृष्ण पुत्री भी इसी प्रकार लुप्त हो गई। वृद्ध स्त्री बहुत श्रद्धालु विलाप करने लगी। माता को बार-बार विलाप करती देख पुत्र ने कहा है माता! क्यों रो रही हो! माता ने सारी कथा सुनाई। पुत्र ने कहा--"उन्हें हूं दूं देखने का ध्यान देकर कहूंगा। माता की भाषा पाकर वह घर से चल पड़ा।"

एकबार बालक जब मांग में चल रहा था उसने तीन भाइयों को संगठित हुए देखा। बालक के पूरुषों के ने कहने लगे। अब तो मां को समय हमारे पिता ने हृदय तीन वस्तुएं दी थी। एक जूता, एक पाया त्वर एक टोपी। जूता पहन कर मनुष्य जहाँ चाहे वहाँ जा सकता है। चाही से सभी दर-बाजे बोले जा सकते हैं। टोपी पहनकर मनुष्य सभी को देख सकता है। वह सभी कोई नहीं देख सकता। श्रद्धा हमारी निर्णय कर दीजिये।

बालक ने कहा--"मैं आपस पर दोस्त हुं।" जो सबसे पहले पट्थर तो यही वह तीनों चीजों प्राप्त करेगा। ऐसा कहकर बालक ने पट्थर फेंका। तीनों युवक पट्थर लेने की दीड़। बालक भी वस्तुएं लेकर शीघ्र दौड़ा। क्षणों में ही वह जब प्राकाश में उड़ा तब उसने एक किताब देखा। बालक ने किताब को लोक कर उसने देखा कि एक प्रशंसक युवक बैठी है।

बालक को देखकर शांतचर्चित होकर वह कहने लगी गरे! तू यहाँ कैसे आ गया? बहिन को देखकर माई बहुत प्रसन्न हुआ। बहिन ने कहा--"तुम्हारे बहनों को एक राजकुमार ने मंगर यह ब्राह्मण कर रखा है। वे ऐसी बातचीत कर ही रहे थे कि बहनोंका गया। हरी हुई बहिन को माई कहने लगा--हरे मत। मैं टोपी पहन लेता हूं जिससे मुझे कोई नहीं देख सकता। प्रचारक खिड़की से एक पक्षी गाया। वहीं उसका बहनों का है। वह शीघ्र ही राजकुमार का रूप धारण कर कहने लगा--यहाँ कौन शाया है? स्वर एवं रूप से उसने बालका जल्द मिला।"
श्रावसुः स्वचालिनी निर्गतः श्रावसुः स्वचालिनी निर्गतः। उः प्राहं संकेते समाप्तिते तव कार्ये सिद्धं अवश्यत्यनन्तरं विशालमेकं दुरं ग्राप्य यज्ञ तस्य भगवी न्यवसत् स्वराज्ञकुमारेण सह। तस्मात्राभिवृत्त्य स कनिष्ठं महाभगवीनन्त्रेषु निर्गतः। गमनकाले स बालकायं स्वदं दत्वा प्राहं प्रयां तव साहाय्यं करिष्यति। स भगवीः पार्श्ववापेदे यथाशक्तिः।

तत्तद्यतमासख्छन्नं गाहं वर्मेकमासीत्। गाहं वरस्य कोशी चाब्रु मुखी भगवी चास्ते। भार्तरं विलोकय सा प्रोवाच भार्ते। मोचय मामस्मात्। राक्षसश्चार्थस्थो भया सही विवाहं कतृ समिक्षित। भार्ता प्रोवाच-भगवी। यदा राक्षसश्चार्थमाक्षिणित तदा मध्यास्तेहं प्रदशंयन्ती तं पृच्छ, तत् मृत्युः कथं महिष्यति। तद्विवाहं विवाहं करिष्यो।

तत्त्वनेव समूपस्थितो राक्षसो मीषणान्तरं। भगवीः समाश्रेष्ठरं राक्षसं स्वमृत्यूः रहस्यं व्यज्ञातपत्। स प्राहं-प्रस्तेको समुद्रतले काष्ठम-ज्ञुप्पा। कस्यं कपोली समुपविष्टा चासीत्। काष्ठमेज्जूपात्रात्वादृध्यत। तदन्तः मद्वत्र मन्मत्तेको विश्रेण्यतं तदैव मस्म भविष्यतं मृत्युः। कन्या प्राहं-विद्विन्द्रान्तसं महं विवाहं करिष्यामि। भार्ता राक्षसवधार्थमुपान्त धारित्व। समुद्रतलं प्रबिंश्ते मस्त्यश्च निसायं साहाय्यं तर्कं। मस्त्यराजं सर्वार्थं मस्त्यादित्तं काष्ठमेज्जूपातमेतम्। स्वकुञ्जिकक्षा बालकस्मात्मुक्क्षुड़वितवाम्। प्रणदमादाय भगवीनांपामेवं पादे।

किचिचत्कालान्तरं राक्षसं समागतं हस्तं बालिका प्राहं-श्रद्धा राश्री विवाहो भविष्यता। किचिचत्कालं विश्रममतु भवान्। राक्षसो बालिकायं उत्सनं सुप्तं।। प्रवसं प्राप्य आता राक्षसस्त्र शिरस्वति निधायाण्डभ्रोट्यत्। क्षेत्तोत्वं चीकारं प्रकृतं राक्षसो भूमावपतत्। राक्षसस्त्र वेभवमस्वाद-यन्त्यन्ते तत्रवं ससुं न्यवसन्।
बालक दूसरी बहिन को ढूंढ़ने निकल पड़ा। बहुतों ने अपने पक्षी के शरीर से पंख निकाल कर कहा—संकट प्राप्त पर इससे तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा। वह एक विशाल किले में पढ़ता हुआ उसकी बहिन राजकुमार के साथ रहती थी। वहाँ से वह छोटी बहिन को ढूंढने वाला दिखा। जाते समय उसके बालक को अपना दांत देकर कहा—यह तुम्हारी सहायता करेगा। वह किसी तरह अपनी बहिन के पास पढ़ता।

वहाँ एक घर्घरी गुफा थी। गुफा के कोने में रोती हुई बहिन बैठी थी। भाई को देख कर वह कहते लगे वह्रे भाई। मुझे इस राक्षस से सुक्रदायो। वहाँ रहते वह राक्षस मेरे साथ विवाह करना चाहता है। भाई ने कहा—बहिन! जब वह राक्षस तथा मूर्ति प्रेम दिखाती हुई तुम पूछना कि तुम्हारी मृत्यु कसे होगी। तभी मैं तुमसे विवाह करंगी।

उसी समय भयंकर राक्षस वहाँ प्रायत। बहिन के आग्रह से राक्षस ने अपनी नृत्य का रहस्य बता दिया। राक्षस ने कहा—समुद्र के नीचे एक संदूक है। उसमें एक कबूतरी बैठी है। संदूक को उससे देखकर उसने कबूतरी का अंडा लाकर चला। सिर पर रक्षकर जो उसे फोड़ा तब तेरी मृत्यु होगी। कन्या ने कहा—तीन दिन बाद में विवाह करंगी। भाई राक्षस को नहीं करने के लिए जूता पहन कर समुद्रतल में पढ़ता गया। उसने मछली का दांत निकाला और उससे विवाह चाहता मांगी। मछलियों के राजा ने सभी मछलियों को लकड़ी का सन्दूक लाने का आदेश दिया। अपनी चाकी से बालक ने उसे खोला। अंडा लेकर बहिन के पास भ्राया।

कुछ समय बाद राक्षस भी भ्राया। हुससी हुई बालिका कहने लगी—भ्राज रात विवाह होगा। भ्रापु कुछ समय के लिए विश्राम कर ले। राक्षस कन्या की गोद में सो गया। श्रवसर पाकर बालक ने राक्षस के सिर पर अंडा रख कर तोड़ दिया। क्षणभर में ही चिंता भ्राया। राक्षस मृत्यु पर गिरे पड़ा। राक्षस के वैभव का उपयोग करते हुए वे बहुत सुखपूर्वक रहने लगे।
१४ मूख्य भूपति:
मिथ्यवेशस्य ओषधकथा

चौर्यकर्मिणि निमुएः कविचन्द्र: करिमपतिनुद्र: भवने विवेशः। गवाक्षमाग्ने यदा स कशं प्रवेष्टुमिच्छित्ति तदैव सहसा गवाक्षकाष्ठकपतनानात्स्य पादो भगः। प्रत्यक्ष धरिन छहस्ववर: कराकोशानामकस्य राजः समक्ष-मन्त्रच्छुतु प्रावोचच्च राजनू। प्रहु चारः। ह्यः राजवहिमेंक गृहमविं गवाक्षपत्तनान्मय पादो भमः। कराकोशास्वीत्कारः कुरवन् प्रहु भ्राकारय शीघ्रः गृहपतिमुः।

भयविह्वलो गृहपति: राजसभामानीतः। कराकोशः प्रहु-तव गवाक्षदेशिनं चौरस्यास्य पादो भगः। कम्पसामो गृहपति: निबेदयति देव! नाथ ममपराणः। काष्ठकारस्पायं दोषः। प्रकुपितो नुपति: प्रहु-काष्ठकारभारमायत, रक्षा पुश्चा: पुस्बं बद्धव्य राजसभामानन्यः। काष्ठकार: प्रार्जसः: तस्थः। नुपति: प्रहु-गृह-पितना गवाक्षकिरिन्यां प्रभूतं धर्म व्ययौवटुति तवाव्यहारनेन चौरस्य पादो भगः: काष्ठकारः प्रावोचच्च-राजनू। नाथ मम दोषः। यदाहुं गवाक्षे कैलं संयोजने सलनस्त्वदेव कार्य रक्ष-वस्त्रायुता सुन्दरी दृष्टिपथमायाता: तां चीक्ष्य विमूहोः सम्बाटः। अनवाधानस्य कारणामेततू।

प्रकुपितो नुपः सुन्दरीमानेितुमादित्यत। यदा सुन्दरी राजवहारपुपाग्नात् तदा नुपः: प्राह-यदि तवं रक्तवस्त्रायुता नामविध्यस्ताई हृ चौरस्य पादो भगतो नामविध्यमणः। सम्याना सुन्दरी: प्राह-राजनू। नाहं दोषमाग्नि सीन्द्रि तु बिधाती प्रदत्तं, रक्तवस्त्रायुति तु रजकेया रक्षातिनि। नुपः: कुदः सनू प्राह-शीघ्रमेव रजकनास्यायत्। राजपुष्पः: क्षणेन रजकमानीतवर्त्तः।

नूपो गर्जनु प्राह-ग्रहे रजक! त्यत वस्त्राग्नि कथं सुन्दरराग्नि रक्षातिनि देश काष्ठकाररक्तवस्त्रायुतां सुन्दरिणि विलोक्य विमूहः संभाजः। रक्तस्तूष्णीभेय तस्थः। नुपः: कुदः सनू प्राह कथं तुष्णी स्थितः। कथं नोचरं देदाति?
14 मूर्ख राजा

सिखा की अेंशै कथा

चोरी के काम में तिपुसँग कोई चोर किसी मकान में घुसा। बिड़की के मार्ग से जब वह ककरे में प्रवेश करना चाहता है तब प्रचारक बिड़की के लकड़ी के गिरने से उसका पैर टूट गया। दूसरे दिन पैर से लंगड़ा चोर कराकौश नामक राजा के पास आकर कहते लगा राजन्। से चोर हूं। कल रात में एक घर में घुसा। बहुँ बिड़की के गिरने से मेरा पैर टूट गया। कराकौश चिल्लाता हुआ कहते लगा, उस घर के द्वार को बुलाओ।

समयपत्र पर के स्वामी को राजा की सभा में लाया गया। कराकौश ने कहा—तेरी बिड़की के कमजोर होने के कारण इस चोर का पैर टूटा है। कांपते हुए गृहपति ने निवेदन किया राजन। इसमें मेरा धर्मराश नहीं है। इसमें बढ़ई का देश है। कोखित होकर राजा ने कहा—बढ़ई को बुलाओ। सिपाही बढ़ई को वांछकर राजसभा में ले आये। वह हाथ जोड़कर खड़ा रहा। राजा ने कहा—गृहपति ने बिड़की बनवाने में बहुत घन खर्च किया। तुनहरी ग्रासावरणी से चोर का पैर टूटा है। बढ़ई ने कहा राजन। इसमें मेरा देश नहीं है। जब में बिड़की में कील लगा रहा था तब कोई लाल वस्त्र पहनी हुई सुन्दर स्त्री मुखे दिखाई दी। उसे देखकर में मोहित हो गया। कील ठोकने में भ्राम न देते का यहीं कारण है।

कोखी राजा ने उस सुन्दरी को बुलाया का भ्राम दिया। जब सुन्दरी राजसभा में आई तब राजा ने कहा—यदि तुम लाल वस्त्र पहनी नहीं होती तब इस चोर का पैर नहीं टूटता। हृदंती हुई सुन्दरी ने कहा—राजन। इसमें मेरा कोई देश नहीं है। सोन्दरीयों को मुखे ईंधन ने दिया है। लाल वस्त्र रंग रंगे ने रंगे हैं। कुठे होते हुए राजा ने कहा—शीघ्र ही उस रंग रंगे को बुलाओ। सिपाही करामत में ही रंग रंगे को ले आये।

गरजते हुए राजा ने कहा—सारे रंगे। तुने वस्त्रों को इतना सुन्दर क्या रंगा इसीलिए लाल कपड़े पहनी हुई सुन्दरी को देखकर बढ़ई मोहित हो गया। रंग रंगे चुप हो रहा। कुठे होकर राजा ने कहा—तुम चुप क्यों हो, उत्तर क्यों नहीं देते हो?
रजक: कारगानि वदति किन्तु नृपः समाजाभ्यति—रजकमें शूल-मारोपयत। संयोगेन रजकः प्रलम्बश्चासीत् कारागृहस्य द्वारं लु लघु। रक्षापुरुषा रजकं कथं द्वारे समवलम्बवेयः। ते राजानेत्र्य श्रोचुः—राजनू! कारागृहस्य द्वारं लघुं वजंते रजकशङ्क लम्बः। प्रतस्तं शूलमारोपयितुमसमध्री। वयम्। प्रकुपितः सनुः नृपति। प्राह—समादेशस्तवन्यथा। भविष्यते नाक्ति। प्रतः कमपि खर्वं रजकमानीय शूलमारोपयत।

राजाजया रक्षापुरुषा: खर्वं रजकमन्निष्यन्यन्त्रचरनू। संयोगेन खर्वो रजको मिलित।। तं बद्धवा कारागारमानयनू। स वराकश्चोत्कारं प्रकुपर्वनू। प्राह—नास्ति ममाप्राध।। किमर्थं मा शूलमारोपयति नृपः। परं राज-पुरुषास्तस्तय परिदेवनं नाश्युष्वनू वलातं शूलमारोपयन्।
रंगरेज कारए बताता है किन्तु राजा भ्राजा दे देता है कि इस रंगरेज को दरवाजे पर शूली चढ़ा दो। संयोग से वह रंगरेज लम्बा था तथा कारावास का दरवाजा छोटा था। ग्रब सिपाही उस रंगरेज को दरवाजे पर फांसी कैसे लगाते? सिपाही राजा के पास जाकर कहने लगे—राजन्! कारावास का दरवाजा छोटा है और रंगरेज लम्बा है अतः हम उसे शूली पर कैसे चढ़ावें। कृछ होकर राजा ने कहा—मेरा आदेश व्यर्थ नहीं जा सकता है। अतः किसी छोटे रंगरेज को लाकर शूली पर चढ़ाए। राजा की भ्राजा से सिपाही छोटे रंगरेज को दूंढने लगे। संयोग से छोटा रंगरेज मिल गया। उसे बांधकर वे कारागार में ले गए। वह बेचारा चिल्लाता रहा कि मेरा कोई सपराध नहीं है। राजा मुझे शूली पर क्यों चढ़ा रहा है? परन्तु सिपाहियों ने उसका विलाय नहीं सुना और जबदंस्ती उसे शूली पर चढ़ा दिया।
১৫. সূর্যস্য প্রকাশঃ

অলাক্ষাদেশস্য শত্তকথা

পূর্ণ অলাক্ষাদেশশাচার্য্যকারানুতি স্মর্তিত্তু জনা: সূর্যস্য প্রকাশ ন দৃষ্টিত্তু। তথায় কর্মশিশিজ্ঞানুগ্রহে কাকশ্চকির্দো ন্যায়তে। কাকশ্চায় সর্বেষাং প্রিয়প্রত্যর্পর্থাচার্য্যে ত্তু। গ্রামাশ্চায় কাককথিতানু সাপ্তাচারানামূপান্‌।

একদা কাকঃ সমুদেত্তত্তচার্য্য সর্বে জনাস্তমেত্যায়পাপ্তস্তু কথঃ অরুণাং সমুদ্বিমোদস্তু। কাকঃ প্রাহ গ্রহণমূ ভূমিভূমিতোল্লিতঃ যদি বভব্বতঃ সর্বে চান্ত্রাচারানামূবস্তু। প্রকাশস্য দর্শনমপি ভবন্ডীনু ইত্যাদি।

গ্রামীগায়তস্তমপ্রাপ্তকি ভবান্তু প্রকাশস্য দর্শনমকরমতু। কাকঃ প্রাহ অহুদেকদা সমুদ্বিদ্যাং বুদ্ধশচার্য্য। প্রকাশী বীক্ষী চার্য্যচর্চকিতেন মহা দৃষ্টঃ পত্তি মুনি প্রাঙ্গ প্রকাশঃ চান্ত্রাচার্য্যকারানু। কৃতে মাত্রা বভব্বতঃ। যথ্য তু দুর্ভাগ্যাৎ

সর্বে চান্ত্রাচারারে জীবাম। মাত্র চার্য্যচর্চকিতা জনাৃতু তদৃস্তঃ প্রস্তুতঃ ভবান্তু প্রতিমাসনপ্তু। স্বপ্রতিমাসঃ প্রকাশস্য ব্যবস্থান করমতু।

তেৃ প্রতিতো দ্঵িতীয়ে দিনে কাকঃ প্রকাশস্য চৌর্ভদ্রু নির্গর্ভিতনূ। প্রাহ হে গ্রামাশ্চায় জনানিতাত্য স্বপ্রতিমাসনপ্তু ভান্তু ভবান্তমূপামূ নিকুপীয়া

নির্গর্ভিতনূ। গন্ধনার্যতানু। মত্যার্থায়নস্ত কেনাপ্যায়াশা ন করত্তুন্তা।

ইত্যাদি কাকঃ প্রস্তুতত:।

মহতা বেগুণ কাকঃ পূৃবেষ্যা দিষ্প প্রাঙ্গনতু। দুরাদেব প্রকাশস্য দ্রাঘাম বিলোম্য প্রধুনি। সনু বেগুণভূততমতু তথ্য প্রাপ্তো যথ প্রথমে কল্পনাকাল কর্মকাল সম্ভাবনামাচার্য্য। কাকাস্তক্ষণে নিম্নমুপত্ত।

তত্ত্বাধিলয়া দ্বুস্মুষ্টয় দীর্ঘকাল যাদ্বপথপ্ততু যথঃ। প্রকাশে কিন্তু তথা ক্ষপচার্য্যকারান্তু। সহস্রা বালিকা গানঃ সমীপানাগত। গানাক্ষ পিয়া

নন পুনঃসাধ্যায়ন রস্তুত। কাকো ভবান্তমূপৃষ্টমান প্রাপ্ত তদৃস্তে একে বৃহৎ এক বৃহৎ এক বালিকা শিশুচাচকঃ সর্ব কথা চান্ত্রাচারানু প্রকাশ

ঃ লক্ষ্যায়নপ্ততু।
15. सूर्य का प्रकाश

प्रलास्का कौं था क्या

बहुत पहले प्रलास्का देश ग्राम्मकार से ड़का हुआ था। लोगों ने सूर्य के प्रकाश को देखा हो नहीं था। वहाँ किसी गांव में एक कौंवा रहता था। यहू कौंवा सबका प्रिय एवं चुटकुला था। गांव के निवासी कौंवे के समाचारों को सुनते थे। एक दिन कौंवा बड़ा दुःखी था—लोगों ने उसके पास जाकर पृथ्वी आप दुःखी क्यों हैं? कौंवे ने कहा—मैं इसलिए दुःखी हूं किंग आप लोगों को सर्वदा अन्नकार में रहना पढ़ता है। आपने कभी प्रकाश के दर्शन भी नहीं किये।

गांव के लोगों ने उससे पूछा—क्या आपने प्रकाश के दर्शन किये हैं? कौंवा बोला—मैं एक दिन उड़कर बहुत दूर गया। प्रकाश को देखकर अश्वशय्चकित होकर मैंने देखा कि उस प्रदेश में बारी बारी से रात और दिन होते हैं। दुर्भाग्य से हम लोग तो हमेशा अंधेरे में ही रहते हैं। उसके इस वृत्तान्त को सुनकर अश्वशय्च में पड़े हुए लोगों ने कहा—आप प्रतिभा सम्पन्न हैं। आपनी प्रतिभा से प्रकाश की व्यवस्था कीजिए।

जब वह कौंवा, गांव के लोगों द्वारा प्रेति होकर दूसरे दिन प्रकाश को दूंढ़ने के लिए निकला तब कहने लगा है ग्रामवासियों। मैं लोगों की भलाई के लिए आपने परिवार का साथ आप लोगों पर ढालकर जा रहा हूँ। यह कार्य बहुत कठिन है। मेरे लौटने की कोई आशा नहीं करना—ऐसा कहकर कौंवा चल पड़ा।

कौंवा बड़े बेग से पूर्व की ओर चला दूर से ही प्रकाश की छाया देखकर प्रसन्न होता हुआ उड़ता हुआ वह बहुत पहुँच गया जहाँ सूर्य का गोला था। सूर्य का गोला उस समय मकान की खिड़कियों में लटक रहा था। कौंवा उस मकान में पहुँचा। पास के पेड़ पर बैठकर बहुत देर तक देखता रहा कि यह प्रकाश कहां से फैल रहा है और कौं अन्नकार को फैलता है?। प्रचारक एक बालिका खिड़की के पास आई। खिड़की के बन्द करके से फिर अन्नकार छी गया। कौंवे ने भवन की छत पर बैठकर देखा कि उस घर में एक बुढ़ा और एक बालिका एक बालक है पर्वत कमरे में प्रकाश के अन्नके गोले हैं।
काकः शनें शनें: गृहुदारमाजगाम। सप्कसं: स्वेद्ध्रजालेन काकः रेसु-रूपं दधार। सा बालिका प्रत्यहं जलमानेतुं गृहानिर्गितम्भं रम। तद्भवेवपि सा निर्गता परं शीघ्रमेव द्वारमपावृत्तं क्रतवति। यदा बालिका जलमानीय प्रत्यागता तदवं काकः “था-का-टी, टाकाटी ना-का-टी-श्रो” मन्नं पदरत्वा प्रस्तररूपं दधार, समुह्वदीय बालिकावस्त्रेशु सम्मनो गृहुं प्रविवेश।

तद् गृहुं प्रकाशणेन देवीध्यानमायसे। एकस्मिन्स्वार्णयं के बालकः शेते तमस्तित्वं: कीडनकानी प्रहीक्षानिव्याससन। प्रस्तररूपधर: काको निर्गत्वं बालकस्य कण्या प्राधिक्षत। तस्करामेव बालो वेदनया चुकोष। र्षतं बालकं विधि सर्वं व्याकुलं: सम्प्ज्ञातः।

कर्णस्थितं: काकः बालकं प्राह तवं कीडनार्थं सूर्यगोलकं याचस्व। बालकं प्राह स्वमातरसू-देहि महां सूर्यगोलकं कीडनाय। रज्जुरागितम् गोलकं गृहीतवा बालको नितरां प्रहुष्टः। श्रिनेकानी दिनानन्ति व्यापातानि। प्रस्तररूपधर: काकस्तथैववातिष्ठत। एकदा वृद्धं बालिकं महं गृहानिर्गितं। मन्नपाठेन प्रस्तररूपं परित्यज्यं काकः काकः सम्प्ज्ञातः।

बालकहस्तादृः रज्जुमार्गिण्यद्य काकः समातपतद्। प्रकाशगोलकं व्रजतं विधि साहस्त्रचुक्रोश। रोदनशब्दं श्रुत्वा माता सत्वरमेव गृहं प्रविष्टाः परं बालकहस्ते प्रकाशगोलकं नापश्यतु। हृम्यपूर्णमार्गं तथा छृं यत्कोड्कि खः: प्रकाशगोलकेन सह ध्रुवावति। वृद्धश्चावस्मार्गं तस्मात् वातस्तु परं विफलं सन् प्रत्यनिवृत्तः।

भृशं सन्तप्तं: काकं: स्वदेशं शलास्कं प्राप प्रकाशगोलकेन सह। प्रकाशगोलकं स पवनस्तथायां हृडप्रस्तरशिलायामवस्ततु। प्रकाशं विधि जनाश्चाश्चाच्चर्चित्कित: काकसमीमागतं तं प्राशंसु। तद्भवादेव शलास्कः-नगरे दिनस्य प्रादुर्भावो जातं इति तेषां विश्वासः।
कौआ बेबी घर के दरवाजे पर भ्राया। पंखवाले कौवे ने अपने जाहू से रेत का रूप धारण कर लिया। वह बालिका प्रतिदिन जल लाने के लिए घर से निकलती थी। उस दिन भी वह निकली परतु निकलते ही उसने दरबाजा बना कर दिया। जब बालिका जल लाकर लौट रही थी तभी कौवे ने "था-का-टी, टा-काटी, ना-का-टी-धो" नामक मन्त्र पढ़कर पत्थर का रूप धारण कर लिया। उड़कर बालिका के वस्त्रों में चिपक कर घर में प्रवेश किया।

बहू घर प्रकाश से जगमगा रहा था। एक सोने के पलंग पर बालक सो रहा था उसके चारों ओर बिजली बिजली झड़े थे। पत्थर का रूप धारण करने वाला कौवा वस्त्रों से निकल कर बालक के कान में चुस गया। उसी समय बालक पीड़ा से चिंतित लगा। रोते हुए बालक को देखकर सभी व्याकुल हो उठे।

कान में बैठे कौवे ने कहा—तू खेलने के लिए सूर्य का गोला मांग। बालक ने अपनी माता से कहा—मुझे खेलने के लिये सूर्य का गोला दो। रस्ती में पिरोकर हुये सूर्य के गोले को लेकर बालक बहुत प्रसन्न हुआ। अपने किन्तु बीत गये। पत्थर के रूप में वह कौवा बाहर रहा। एक दिन बुद्ध अपनी पुत्री के साथ घर से बाहर गया। मन्त्र पढ़कर, प्रसन्न का रूप छोड़कर कौवा बह गया।

बालक के हाथ से रस्ती छूनकर कौवा उड़ा। प्रकाश के गोले को जाता हुआ देखकर बालक चिंतित। रोने का शब्द सुनकर माता ने शीघ्र ही घर में प्रवेश किया, परतु ब्रह्मानंद के हाथ में प्रकाश का गोला नहीं था। भवन की छत पर चढ़कर उसने देखा कि कोई पक्षी प्रकाश के गोले के साथ दोबारा रहा है। बुद्ध रोड़े पर बैठकर उसके पीछे दौड़ा, किन्तु विफल होकर लौट भ्राया।

प्रकाश के गोले के साथ वह कौवा, बहुत दुःखी होकर अपने देश प्रलास्का पहुँचा। उसने परबत की मजबूत चट्टान पर उस सूर्य के गोले को बांध दिया। प्रकाश को देखकर लोग चकित हो गये और कौवे के पास प्रहारक उसकी प्रशंसा करने लगे। उस दिन से ही प्रलास्का में दिन होने लगा—ऐसा वहाँ के लोगों का विश्वास है।
पुरा सिसलीद्वीपस्य सेराख्यूजनामके नगरे हैं मित्रे प्रतिवसत: सम। रामस्तथा पेशियसः। दुरंसिनितजलवतेषां मैत्री प्रगाढ़ श्राशितु। तत्सिनु काले सिसलीद्वीपे कुष्ठेको नृपति: शासनकरोतु तस्य नाम राजनीतिस्य श्राशितु। तस्य नाम अवशेषान जना प्रकर्मकतु। राजनिवि विवर्ध-मानं तस्य कौश्यं विलोक्य दामनः कुष्ठो जातः स राजी निदेषयताया उप्त-ताया तिल्लायकमरोतु। कुष्ठो जात्यनोस्य: समझाप्यतु यदेनं ब्रह्म कारागारं पत्यत्त। राज्यमहस्यापराषे स मृत्युवद्धः प्राप्तवान।

मृत्युवद्धसमाचारं शुभा पेशियसः प्रधावनू राजसमां प्राप येन स स्वमित्रभाषामनस्य साहाय्यं कतुं शक्तयताः। यदा स राजसमां विवेश तदा दामनं राजानं सानुनं अनुवादते। राजनु: मृत्युवद्धभाषो समानितमका समीहा वर्तिते वर्षं पञ्चव्याजदिनानां कृते स्वपरिवर्तायेण साधं समुद्रपरं गन्तुमित्यथाम।

कुष्ठो नृपति: प्राह-विह्रोहिनूः। नाहं मूर्तं। तवं मां चुलयत्वः पलायनं कार्यसे ? नैतिकसम्भवम्। यदि तव प्रत्यागमनं यावकोप्यभ: कारागारे स्थानं समुद्रतो मथर्दवता तवं पञ्चव्याजदिनां गृहं गन्तुं शक्तथो। यदि तव समये न समागमिष्यसि तत्त्व कारागृहसो जनो दण्डभागेभ: मविष्यति।

नृषो व्याचारयं- कस्यापि करते न कोडिस्य स्वभास्यानु तत्कथित। दामनस्य मृत्युवद्धं न कोडिस्य स्वीकरिष्यति तथा स गृहं गन्तुमिष्यं न शक्यति। परं चिंतं मेलं दामनस्य पितः पेशियसः प्राह-राजनु। श्राहु स्वमित्रस्य स्थाने कारावासं स्वीकरोम्। यदि स न प्रत्यागमिष्यति तदाहं मृत्युवद्धभागेभ: सविष्याम।

मित्रस्य कृते लावेदानानां समुद्रतों विलोक्य जातं स्तवयो राजा। तथा स्वयाचारयं तदादृशयं जना भ्रमिः जगति। विबंधे स दामनं नाम कारागाराद्। विमोचये पेशियसं कारागृहे क्षिप्तवान्।
18. घनिष्ठ मिलता
सिसलीद्वीप की अंदेश कथा

बहुत पहले सिसली द्वीप के सौराष्ट्रीय नाम नगर में वो मिन्नर रहते थे। उनका नाम डायनोसस था। दूरबंद में मिले हुए जल की तरह उनकी मिन्नता प्रभाव थी। उस समय सिसलीद्वीप में एक कूरा शासक शासन करता था। उसका नाम हायनोसस था। उसका नाम सुनने से ही लोग कापते थे। प्रतिवेदन बढ़ती हुई उनकी कूरता को देखकर डायनोसस खूब हो गया। उसने राजा की निर्देशित श्रीर दुष्टा की निन्दा की।
डायनोसस ने कोई में भारकर भारा दी कि इसको बांधकर जेल में बाल दी। राजधोर के प्रपराध में उसे मृत्युदंड दिया गया।

मृत्युदंड के समाचार को सुनकर पेशियस दौड़ता हुआ राजसत्ता में पड़ा। ताकि वह प्रथम मिन्नर डायनोसस की सहायता कर सके। जब उसने राजसत्ता में प्रवेश किया तब डायनोसस विश्रूपक कहू रहा था राजन! मृत्युदंड प्राप्त करने वाले मेरे प्रश्निम इच्छा है कि मैं पन्थ्र दिनों के लिए प्रथम परिवार के साथ समुद्र पार जाना चाहता हू!।

राजा ने कुपित होकर कहा—है वित्तरूपिणी! मैं मूँह नहीं हूं तुम ठहरकर भागना चाहते हो? यह सम्भव नहीं है। यदि तुम्हारे लौटने तक कोई कारागार में रहने को तैयार हो तब तुम पन्थ्र दिनों के लिए घर जा सकते हो। यदि तुम समय पर नहीं आदर्शों तो जेल में पढ़े अभ्यतियों को सजा मिलेगी।

राजा ने विचार किया किसी के लिए कोई प्राण नहीं त्यागेगा। डायनोसस के मृत्युदंड को कोई स्वीकार नहीं करेगा तथा वह घर भी नहीं जा सकेगा। परन्तु एक विचार घटना घटी—डायनोसस के मित्र पेशियस ने कहा राजन। मैंने प्रथम मित्र स्थान पर कारागार जाने की स्वीकृति देता हू। यदि वह नहीं लौटेगा तो मैं मृत्युदंड का साधी होऊँगा।

उसे मित्र के लिए प्रार्थनाएं देने को तत्पर देख डायनोसस दंग रह गया। उसने विचार किया ऐसे लोग भी इस संसार में विद्यमान हैं। उसने डायनोसस को जेल से छोड़ दिया श्रीर पेशियस को जेल में बाल दिया।
दिनाति व्यतीतादि। मृत्युदंडवस्त्र समयः समीपमागतः। पेशियसः कारारूढः व्याचरयतु यदि डामनस्य प्रत्यागमने विलम्बो भवेत्तति हि सुष्ठू स्वातः तेन तत्स्थाने मृत्युदंडवस्त्र प्राप्यासि येन जगद्विजानीयात् प्रणाद्य-मैत्री कीदृशी भवति।

इति डामनो जलयाने विचारयन्त्रास्ते यदहं यथासमयं तत्र न प्राप्यां-मि तांहि सम प्रययितः दण्डभारभविष्यति। वस्तुतः श्रनुक्लेन वायुना विलम्बः सञ्ज्ञातः। यदा डामनो न प्रत्यागत स्तं राजा पेशियसं प्राहुः तत्र सङ्का निरुपणो घृतेष्वास्तित् त्वामत्र निर्णययः कारारूढः हास्यभवति। अथूहा लव्येऽव मृत्युदंडभारभविष्यति। स्वभिरस्य निन्दा श्रोतुमानिच्छापि स प्रोवाच-श्रनुक्लेन वायुना विलम्बो जातः। नाति मन्नित्रेण घृतहः। आद्यतः पेशियसो वषोऽयां समानीतः। तत्समयेद्विः स प्रहस्वात्रस्ते। नृपति: समा-जापयत्र् मृत्युदंडश्रद्धातुम्। तत्तथायेव द्वादश्वित्र द्वृगता-विरम, विरम, समागतोऽहम्।

सर्वं जनास्ततिपथ्येव दद्रूषः तेल्स्थू-श्रवमार्श्या प्रवाचनं, भूलिंघस-रितं, प्रभुत्र इवाष्वात्वा नियतनं। डामनम्। स प्राहु इवरस्यानुकम्प्याः यथा-समयं समुपपत्तितोऽस्मि। स राजानू प्रार्थयत् –स्वप्रतिज्ञानुसारेणाः प्रत्या-गतोऽस्मि मन्नित्रस्य स्थाने दण्डभाग्यं भवामि। मृत्युदंडभाराम् स्वभिरस्य विलोक्य पेशियसो मृशं हरोद तथा व्यलपु हा शिक्षु स्वभिरस्य प्राप्यान् आतुमहसमयोऽस्मि।

डामनपेशियसो मैत्रीं विलोक्य नृपतिवधकितं सञ्ज्ञातः। स प्राहु-युवयो ने कोस्तिपि दण्डभारभविष्यत। युवयो: प्रणालें मैत्रीं न कदापि विष्ण-रिष्यास्यहृदम्। अथूहा प्रभृति युवयोऽस्तृतीयः सङ्का भवाम्यहृदम्। नृपस्य निर्णयेन सर्वे मृशं सन्तुष्टा: सञ्ज्ञातः।
बहुत दिन व्यतीत हो गये। मृत्युदंड का समय समीप आ गया। पेशियस ने जेल में ही विचार किया यदि डामन के ब्रान्त में विलम्ब हो जाय तो कितना प्रचंड हो ताकि मैं उसके स्थान पर मृत्युदंड प्राप्त कर लू। जिससे दुनिया जान सके कि प्रगाढ़ मेत्री कैसी होती है।

इस्ते डामन जलयान में विचार कर रहा था यदि मैं ठीक समय पर नहीं पहुँचूंगा तो मेरा प्रययान दंड का भागी होगा। वास्तव में वायु के अनुकूल न होने से विलम्ब हो गया। जब डामन नहीं लौटा तब राजा ने पेशियस से कहा तुम्हारा मित्र बड़ा चालक और घूटै है जो तुम्हें यहां डालकर जेल से भाग निकला। घब तुम्हें ही मृत्युदंड मिलेगा। अपने मित्र की निन्दा को नहीं सुनने की हंगामा से यह कहते लगा। वायु के अनुकूल न होने से विलम्ब हुआ है। मेरा मित्र घूटै नहीं है। जरूर में पेशियस को फांसी के पास ले जाया गया। उस समय भी यह हुंस रहा था। राजा ने मृत्युदंड की बाजी दी। उसी समय दूर से ही आवाज प्रायी, रको, रको, मैं आ गया हूं।

भी लोग उस भोर ही देखने लगे। उन्होंने देखा कि डामन घोड़े पर जड़कर दौड़ता हुआ धूल से धूसरित, पागल की तरह आ रहा है। उसने कहा-ईशवर की कुप्पा मैं यथासमय उपस्थित हो गया हूं। उसने राजा से प्रश्न की-अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मैं लौट श्राया हूं। मेरे मित्र के स्थान पर मैं दंड का भागी हूं। अपने मित्र को मृत्युदंड मिल रहा है। यह देखकर पेशियस बहुत रोया और विलाप करते लगा हा धिक्कार है। अपने मित्र को प्राणों के बचाने में प्रसाद हूं।

डामन पेशियस की मेत्री को देखकर राजा चकित हो गया। वह बोला-तुम दोनों में किसी को भी दंड नहीं मिलेगा। मैं तुम्हारी प्रगाढ़ मित्रता को कभी भी नहीं मूलंगा। ग्राज से तुम दोनों का मैं भी तीसरा मित्र हूं। राजा के निर्णय से सभी बहुत प्रसन्न हुए।
পুরা পেশ্বের একার শান্তিবালী রাজা রাজ্যপাল থাকলেন। কূটের আলাদা সাগরায় প্রস্তুত সামগ্রী বর্তমানায়। সন্দেশবাক্সু রাজার রাজ্যপরিচর্যা সম্পন্ন বৃত্তমূল্যবান। হুলাচীর নামনামক্ষারে রাজো বিশ্বাসপাত্রাচারী ছিলেন। তবুও কোনো দীর্ঘস্থায়ী ব্যাবস্থা তাদের প্রচার ও সংস্কৃতির মহাকালী সন্দেশমূল্য ব্যস্ত হয়ে গেল এবং সে নৃত্য নাভিপূর্ণ সন্দেশমূল্য যথস্থিত। অনন্ত মধ্যে সন্দেশের অধিকর্ষণ করে যায় জানা যায়।

তবুও বিশ্বাসপ্রচারের বিলোক্য রাজা তথম হারায়। নৃপস্ত ব্যবহারনগোত্রী-সন্দেশ শরীরপূর্ণের যদি বিলম্ব স্থানাধিক প্রতিষ্ঠানের ক্ষেত্রে নাশনায়ক অবস্থায়। একবার নৃপস্ত সন্দেশ নীতি তার বাবুষা গ্রহণ করতে হয় কিন্তু নিশ্চিত বক্ত নিমন্ত্রন করতে। কবিতানন্দ প্রতিক্রিয়াস্বরূপ সরল নিত্যকালীন ইচ্ছা রাজানি নিমন্ত্রণ সংস্কৃতি চারু প্রাচীন হয়। একবার রাজা সন্দেশ নীতি নিত্যকালীন প্রক্রিয়াস্বরূপ গ্রহণ করতে। বর্ষা প্রাচীন সমাজর বুদ্ধির মেরু প্রস্তর প্রতিষ্ঠা সহজভাবে গ্রন্থাভাবিক বা সহজভাবে মানান তদন্ত গ্রন্থাভাবিক নিত্যকালীন প্রক্রিয়া করে।

হুলাচীর তনেভ বৃদ্ধায়া: কৃত্র হা টজলকেম্বরচয়ত তস্যা: প্রাচীনমূল্যের চিন্তার তার বিশ্বাসের বিত্ত জা আর মানে প্রাচীন হয়। বৃদ্ধা হলাচী-প্রজ্ঞ নামকর মনসন্ধিক কান্তির রূপান্তর প্রাচীন করতে। বৃদ্ধা হলাচী তস্যা মহাস্তুসঃ, ধাতু প্রাচীন হলাচী করতে। কন্ধমূলকলন্ধী মূর্ত্ত স্বরূপ প্রাচীন হয় এবং বৃদ্ধা চাহিদাতে বৃদ্ধাচলমাত্র। কৃত্র চাহিদাতে বৃদ্ধাচলমাত্র। মূর্ত্র তস্যা মানে প্রাচীন হলাচী স্বরূপ প্রাচীন হতে।

তত্ত্বত্ত্ব বৃদ্ধ তত্ত্ব প্রাপ্ত্ব প্রাচীনত্ব, প্রাচীনত্ত্বা বৃদ্ধাচলের চাণ্ডিকালিকী, পরমার স্বরূপভূত এবং স্বাধীন বহু হিন্দুদের গ্রন্থাভাবিক নিত্যকালীন প্রাচীন।
17. मन का जादू

पेषू की अथितकथा

बहुत पहले पेषू देश में एक शतिशाली राजा राज्य करता था। उसका ताज्जाल बहुत दूर तक फैला हुआ था। संदेशवाहक राज दरबार में भाकर सभी सूचनाएं दिया करते थे। हुलाची नाम दूत राजा का विशवसपत पाता था। वह हुलाची बड़ा दयालु था। हुलाची जब माँग में दीनों को देखता था तब उनके सेवा में लग जाता था। और वह राजा के महत्त्वपूर्ण संदेश सूत जाता था। संदेश न मिलते पर हानि भी हो जाती थी।

हुलाची की ऐसी हालत देखकर राजा उसके लिए कोश करते लगा। राजा ने उससे कहा-यदि संदेश भेजने में बिलम्ब होगा तो हुलाची को बड़ा दिया जायेगा। हुलाची चुप ही रहा परन्तु वह भ्रमन स्वभाव परिवर्तन नहीं कर सका। एक बार वह राजा के संदेश को लेकर जव गया तब माँग में कोई व्यक्ति भेजोश पढ़ा था। चाहता हुआ भी राजा के संदेश को लेकर पहाड़ी माँग से जा रहा था। वर्षा शारदम हो गई। उसने एक बूढ़ा को फिसलते हुए देखा। पत्तरों की चोट लगने से वह बूढ़ा भेजोश हो गई। यदि हुलाची बूढ़ा को सेवा करता है तो संदेश भेजने में बिलम्ब होता है परन्तु जब तक बूढ़ा स्वस्थ नहीं होती तब तक में नहीं जा सका। उसने यह निश्चय किया।

हुलाची ने वहाँ बूढ़ा के लिए एक भोजप्रीति बनाई। उसकी शारीरिक चिकित्सा करके, उसको स्वस्थ करके वह भ्रागे चल दिया। बूढ़ा ने उसको शायरीबाद देकर, भ्रामसन्ध किया। संदेश भेजने में बिलम्ब होने से हुलाची मन में भयभीत हो गया। राजा की आश्रा से हुलाची को देश निकाला दे दिया गया। हुलाची बहरहाँ से निकल गया। कह-पूज-मल खाकर वह भ्रमन पैट भरा करता था। हुलाची को वैसे के रूप से वह उसकी तेजा में लग जाता है। एक बार उसने वन में पूर्वते हुए एक भोजप्रीति को देखा। भूले हुलाची ने उस भोजप्रीति से निकलती हुईं बूढ़ा को देखा। वह बूढ़ा वही थी जिसे हुलाची ने फिसलते हुए बचाया था। बूढ़ा न उसे पहचान लिया तथा उसने उसे भोजन कराया। वह हुलाची जब भोजन कर रहा था तो उसकी आंशियों में भ्राम श्र के गये। क्योंकि उसने बहुत दिनों के बाद पैट भर भोजन किया था।

तदनंतर उस बूढ़ा ने उसे जूते दिये। शारीरिक में पड़े हुए हुलाची को बूढ़ा ने कहा-मैं जादूगरही हूं, परीमकार में लगे हुए, स्वार्थसमिति,
त्मामदायाविन्दम्। सजजनस्तवं पादश्रणं परिचाय यत्रकुत्राप्युद्धीय गत्तु समथों मध्यित। हुलाची वृद्धा धन्यवादान्वितीय समुद्धीय राजः पावर्वेपदे। नृपस्त पून: सद्देशवाहुकार्य नियोजयामास्। स क्षणोनेव पादश्रणं परिचाय सन्देशं प्रैशृध्यचारयेत्। तस्य कार्यं जूतपति सूर्यं तुतोष।

एकदा हुलाची समुद्धीयाग्न्यच्छत्। सहसा रक्तरक्षितं जनमधो विलोकयामास्। हुलासी तस्य प्राध्यायिकी चिकित्सा विश्वास पुनःश्वां प्राचेतः। विले सङ्काते नृपस्तमद्ध्यशत्। हुलाची व्याचर्यतः श्रावं स्वकायं करिक्यान्ति, रिक्तसमये दीनानां सेवाः। एकदा स समुद्धीय गच्छतास्ते सहसा तेन विलोकितं यत् भूमाववातात्। स पुनःश्वार्यतुं चित्तेन्द्र परं साफळ्यं नाप। स व्याचर्यतः पादश्रणाः प्रभावः परिसमातः सदैव सा वृद्धा भाक्तत प्राह च-नृतसु सम्भवति। सा स्वयं पादश्रणं परिचाय समुद्धयितुं लम्भा। परं हुलाची नोड्डितुं शशाक। वृद्धा प्राहः श्रेणि रहस्यमेतत्। तदैव हुलाची सम्मुखमभयत् यद्येकः कपोतो रक्तरक्षितो भूमी पतितः। दयांः स तस्य प्राध्यायिकी चिकित्सास्मकरोत्। पूनः पादश्रणं परिचाय हुलाची समुद्धीय गतः। सहसा हुलाची भूमाववतातार्थ वृद्धा: पादश्रणं तस्य प्राध्यायनवाह नामवर्मन विनाश्चवाना। विनिमया वृद्धा प्रावोचुतं-कर्षं वतस? हुलाची प्राह-विनाशंतंबद्ध्म हुलाची प्राह-प्रावोक्तिविन्दम्। यदहूं कथमुद्धीय गतः। यदहूं मनस्यकरोम्-रक्तरक्षितं कपोतं विश्वास समुद्धयित्कार गतां हुलाची नोड्डितुं शशाक। मदोऽ मनः कपोतं प्रति संक्षण्डमायी। प्रधुनाहु पादश्रणोंन विनाशि कार्यंष्टत्तकतुं प्रभावमिः।

प्रहस्तती वृद्धा प्राह वतस-समृचितं तेन कथमं। मनोबलसमुखे न कापि शक्ति: प्रभमवि। तवं निर्जरं दीनानां सेवां कुरु तेन ते कल्याणं सपत्स्ये। तदाग्रहुति हुलाची सर्वविषय कार्यं विशवाय परोक्षसे संलग्नः। प्रधुनाहु स दीनां सेवे, भजरामरो देववदु हुलाची लोकेश्किनु तिष्ठतिति प्रेनिवासिनां विशवासः।
महान राजा/71

ध्यक्त को दूँढ़ रही हूं, ब्राज सीं तुम्हें श्राप्त कर लिया है। तुम सर्जन हो, इन जुलौसे को पहनकर तुम जहाँ बाहों चढ़ा उठकर जा सकते हो। हुलाची ने वृढ़ा को धन्यवाद दिया और उठकर राजा के पास पहुंच गया। राजा ने पुरुष उसे सबसे अपराधिक के कार्य में नियुक्त कर दिया। हुलाची क्षय-रचन में ही जूलौते पहनकर संदेश लाता और ले जाता था। उसके इस कार्य से राजा बहुत प्रसन हुआ।

एक बार हुलाची उठकर जा रहा था। प्रमाणक उसने निचे देखा कि एक ध्यक्त खुद से सना हुआ पड़ा है। हुलाची उसकी प्राथमिक चिकित्सा करके फिर द्रागे चल दिया। ध्यक्त हो जाने पर राजा ने उसे दण्ड दिया। हुलाची ने विचार किया—मैं धर्म पार्वा कार्य कहूंगा, खाली समय में दीनों की सेवा करूंगा। एक बार वह उठकर जा रहा था कि उसने प्रमाण देखा कि वह धर्म पर उत्तर रहा है। उसने फिर उठने की चेष्टा की परतु वह सफल नहीं हो सका। उसने विचार किया—जूलौते का प्रभाव समाप्त हो चुका है। उसी समय वह वृष्डा पकड़ हुई और कहने लगी—वह नहीं हो सकता। वह स्नायु जूलौते पहनकर उड़ने लगी, परतु हुलाची नहीं उड़ गई। वृढ़ा ने कहा—क्या इसमें कोई रहस्य है? तब हुलाची ने विचार किया कि एक कबुतर रक्त से रंगा हुआ पृष्ठी पर पड़ा है। द्वारा हुलाची ने उसकी प्राथमिक चिकित्सा की। पुनः जूलौते पहन कर हुलाची उठकर चला गया। प्रमाणक हुलाची धर्म पर उत्तर गया। वृढ़ा के जूलौतों को उसे देखते हुए हुलाची ने कहा—हे माता! मैंने इन जूलौतों की बल्कि नहीं है। धार्मिक में पड़ा हुई वृढ़ा ने कहा—क्या? इकी पृष्ठी? हुलाची ने कहा—मैंने जाना कि मैं बैठे रहा था। उससे मन में विचार किया—खुद से सने हुए कपोल को छोड़कर में उड़ना चाहता था तब मैं उड़ने नहीं सका। मेरा मन कबुतर में लगा हुआ था। धर्म में जूलौते के बिना भी यह कार्य कर सकता हूँ।

हृदय हुई वृढ़ा ने कहा—पुनः! तुम्हारा कहना ठीक है। मनोवल के सामने कोई शक्ति नहीं टिक सकती है। तुम निर्मल दीनों की देखा करो जिससे हुलाची कन्याएं हो सकें। उस दिन से हुलाची ने सबी कार्य छोड़ दिये और यह परोपकार करने में लग गया। धर्म भो यहू दीनों की देखा करता है। श्रेष्ठ-प्रस्तर देवताओं की तरह हुलाची धर्म भी इस लोक में परोपकार कर रहा है, पैरु देश के निवासियों का यह निष्कास है।
१८. ऋग्वाचरणमुक्तः

भारतवर्षस्य श्रेष्ठकथा

कृष्णविध्वंसरे एक: श्रेष्ठी न्यवसतु दूसरथा जना: समागत्य ऋयणं नीत्वा प्रवचन्त्यानु । यदा तेषां पाश्च बनमागच्छत्रदा ते श्रेष्ठिने बनमयच्छतान्। श्रेष्ठि द्वीरद्रान कारणेत्यथ सुदूरं धार्मिकसिद्धं सम्बन्धत: । एक्य द्वै चतुरौ तथा बच्चकृ तत्वाशंकमाजमूल: । तौ श्रेष्ठिनं रघुच्छायेन रूप्यकारणं कृष्णरूपेण वाचित्वन्ति। वृद्ध: श्रेष्ठी तेषां गृहसंकेतादिक रघुच्छ प्रोवा भ-ऋग्लेपां वर्ण तु दास्यामि गुब्धां क्रमा धनं प्रत्यावर्त्तिणय: ? तेषेन्द्रे बंसीनामक: प्रोवा-वयासीघा। श्रेष्ठी पुनस्त्वसेव प्रस्थर गृहसान्त् तेषु दृतियो: छोटेलाल-प्रोवा-वन्यसिन्धु जन्मरि।

बंसी तथा छोटेलालने विचारितम्य यच्छो धौती नासमयं धनं प्रदात्यति किन्तु श्रेष्ठी स्वकोषाधिकारिण प्राह एती वान्यसिन्धु जन्मरि धनं प्रत्यावर्त्त्यत । इति लिखितवा वेदाम्यं वर्णं प्रवचन्त्यान । तौ इल्याकरे विचारव धनं नीत्वा ग्रामाम प्रचालिती । मायं श्रेष्ठिनो मूर्तेतां प्रति प्रहसन्ति तौ निशिच-न्यायस्ताम्य । मायंद्रय एवान्यकार: सम्बन्धतः । कृष्णपापस्वाम्यकारे विविधार्थेण गर्भुर नाचकुस्ताम्य । तौ कस्यचिक्रकल्य गृहं गतो त्रेवं स्वकम्बल प्रसायं प्रदताति।

पाश्च एव कृष्णकल्य कृष्णो बद्री । अग्ररार्यगिन्तो बंसी चीकुर्वन्तु प्रबुद्ध । यतो हि तौ वृषभो मतुयंवतु वार्त्तलापे संस्कारवास्ताम् । स छोटेलाें प्रवोध प्रोवा-पश्च मृथभो मतुयंवतु संवदन: छोटेलालस्त्यो: शंवार्द्र नूत्वा चकित: सम्बन्धतः । एको वृषभ: कक्ष्यति सप्त-ग्राव्योदर-मन्तिमा राज्य: । यतो हि मया पूर्वसिन्धु जन्मनि कृष्णकादस्मातु द्विषतं रूप्यकारणं कृष्णरूपेण गृहीतं। तक्षितजन्मनि ताति रूप्यकारणं तस्मै प्रवातुमहस्म: । पूर्वसिन्धु जन्मनि श्रमं कृष्णय शया द्विषतं रूप्यकारणं प्रदत्ताति । तव मम मृत्युस्वितारं हितातः वृषभ: प्राह-संयोगस्तावदां कौदायो यतो हि तव एव मम मृत्युरपि सिविता । मयापि पूर्वसिन्धु जन्मनि पन्नान्तं रूप्यकारणं कृष्णकादस्मातृ कृष्णरूपेण गृहीतानि । प्रातेवागत्य कशिरज्जन: पञ्चाशुद्रुप्यकेषु मास्मातृ क्षेयति-तदु गृह्व प्राप्या शव एव
किसी नगर में एक सैठ रहता था। दूर-दूर के लोग उसके पास श्राकर कर्ज़ लेकर जाते थे। जब उन कर्जदारों के पास धन आता था तब वे सैठ को धन दे देते थे। इस प्रकार वह सैठ धन देने के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गया था। एक बार दो चतुर ठग उसके पास पहुंचे उन्होंने सैठ से पचास रुपये कर्ज़ के रूप में मांगे। बुढ़ा सैठ ने उनके घर का पता पुक्का श्राकर कहा—कर्ज़ के रूप में मैं धन तू दूंगा किंतु तुम कब धन लौटाओगे? उनमें से बंसी नामक व्यक्ति ने कहा—बहुत जल्दी लौटा देंगे। सैठ ने फिर वही बताया कि चल दूसरे ठग छोटेलाल ने कहा—हम दूसरे जन्म में तुम्हारा धन चुकायेंगे।

बंसी श्राकर छोटेलाल ने विचार किया कि सैठ हमें धन नहीं देगा किंतु सैठ ने अपने मुनिसेम से कहा—ये दूसरे जन्म में धन लौटायेंगे। यह लिखकर इनके हस्ताक्षर करते लौटाए। मार्ग में सैठ की सूचना पर हैंसते हुए वे निष्कम बालकों जा रहे थे। मार्ग में ही अश्वकार हो गया। कुढ़ा-पक्ष के संबंध में वे जंगल के रास्ते से नहीं जा पाते थे। वे बंसी किसान के घर गये श्राकर बहुत पर अपना कमबल छोड़कर सो गये।

समीप ही किसान के बेल बंगे थे। बंसी चिल्लाता हुआ, अनन्य में पड़ा हुआ जाग गया क्योंकि वे बेल मनुष्य की तरह वायुची बन गए थे। उसने छोटेलाल को जगा कर कहा—इन बेल मनुष्यों की तरह किसान कर रहे हैं। छोटेलाल भी उनकी वायुची मुनकर चकित रह गया। एक बेल कहा था—यह हमारी अर्थव्यवस्था राजि है क्योंकि बैंसे इस किसान से पूर्व जन्म में दो सौ सप्तदश रुपये लिए थे वे उस जन्म में उन रुपयों को उसे न देते। इस जन्म में परिश्रम करके मैंने दो सौ कर्ज़ उसे दे दिये हैं। कल मेरी मृत्यु होगी। दूसरे बेल ने कहा—यह कैसा समय है क्योंकि कल ही मेरी मृत्यु होगी। मैंने भी पूर्व जन्म में इस किसान से पांच सौ रुपये कर्ज़ लिए थे। प्रातः काल श्राकर कोई मुर्गा पचास रुपये में इससे खरीदे। उसके घर पहुंच कर कल ही मेरी भी मृत्यु हो जाएगी। दूसरे
मम मृत्यु मंविता। द्वितीयो वृषभः प्राह-पुनस्तव वृषभरूपेण तृतीयं जन्म भविता। प्रथमो वृषभः प्राह नहि पूर्वसिद्धनन्दन मतः पञ्च्राष्ट्रदृष्टो रूप्यकारिणै गृहीतानि द्वितीयेन वृषभेषण कथितमहो। भावाय्यां अङ्गमुच्चारितिः किय-तक्ष्टमनसूतस्वतः?

वृषभयोवरिः श्रुत्वा चाश्चायंचितकै भयदृः तौ रात्रि निद्रा न लेभाते। प्रभातः सम्बजातः। उत्थाय तो ददृशतु यदू वृषभो चासं खादतौ तिष्ठतः। ताम्यां विचारितम-स्वप्नोप्यमायिताम् दृष्टो भवेत्। कि वृषभाविः संव-दतः? - यदा ती वस्त्रार्पिः परिधाय गन्तुमनावास्तामु तावताम्यां दृष्टं यदेको वृषभः सहसा पृथिव्य्या पथात तथा मृतः। गृह्यपति: क्रष्को गृह्यपति-रूपेण परं तावतं वृषभो मृतः। क्रष्को विलपन्नास्ते। तावदेवान्या: पुरुषः समागतः। स क्रष्कमुवाच-वर्ग-वृषभस्य किय-मूल्यं वर्तते?। पञ्च्राष्ट्रदृष्टो रूप्यकेषु स वृषभं चिन्कीर्ष्ट्रति। वृषभं नीत्वा यावदसौ मागेन सरती तावदेव तस्य वृषभस्यापि मृत्यु: सम्बजाता।

भयदृः तौ सागरदेव श्रोणिनं प्रत्याययतूः येनात्यसिन्नु जन्मनि कष्टं न स्यात्। ताम्यामनुभूतमासिप्रत्यक्षं दृष्टसभिः।
बल ने कहा-तब तो तेरा बैल के रूप में ही तीसरा जन्म भी होगा। पहले बैल ने कहा-नहीं उसने पूर्व जन्म में सुभसे पचास रुपये लिए थे। इससे बैल ने कहा-श्राहो! हमने कज्ज़े चुकाने के लिए कितना कष्ट भोगा है?

बैलों की वार्ता सुनकर भयभीत उन दोनों को रात मंगर नींद नहीं श्राई। प्रातः काल हो गया। उन दोनों ने उठकर देखा कि वे दोनों बैल घास खा रहे हैं। उन्होंने विचार किया-हम दोनों ने स्वप्न दंशा होगा। क्या बैल भी कभी बातचीत करते हैं? वे वस्त्र पहनेंकर जाना ही चाहते थे कि उनमें से एक बैल श्रवणक पृथ्वी पर गिरा और मर गया। उनका मालिक किसान घर से बाहर निकला किन्तु तब तक वह बैल मर चुका था। किसान बिलायत कर रहा था। इसने में ही एक प्रधन पुरुष भाग गया। उसने किसान को कहा-इस बैल का कितना मूल्य है?। पचास रुपयों में वह उस बैल को बेच देता है। बैल को लेकर जब वह मार्ग में जाता है इसने ही में उस बैल की भी मूल्य हो जाती है।

भयभीत वे मार्ग से ही सेठ के पास लौट भ्राये ताकि उन्हें इससे जन्म में कष्ट न भोगना पड़े। क्योंकि उन्होंने यह अनुमति कर लिया था और स्वयं देख भी लिया था।
१४. निर्धनस्त्य पणः

चौदेशस्य भोज्यकथा

चौदेशे चांग वृं नामकमकेऽकः प्रदेशोद्भवति। तस्मन् प्रदेशे तांग्रो-लिन-हर्षिन नामकमर्गं स्थानं विद्यते। प्रसिद्धमुखः स्थाने भगवतो बुद्धस्य विशालमेव मन्दिरम्यस्त। सुरस्य मन्दिरे भगवतो मूर्ति: सून्दरतरा, मूर्तिरियं विभिन्नातुतुष्टिनिमित्तमस्यीषु। यदा कोषपी दर्शनार्थमागच्छति मूर्तेः हस्त्योः पुष्पार्ण भार्ययति स्या।

मूर्तं वंक्षस्यलोपरि चौदेशस्य लघुतमः पुष्प: “कृष्ण” स्पष्टेः पेशेणांकितः तोडति। प्रस्तु पर्यथा सम्बन्धे एका विचित्रा कथा चौदेश् विश्वुत्ताति। प्रसिद्धमुख मन्दिरे यदा न कापि मूर्तिरासीतत्वा चिनितो मन्दिरार्थकः स्वर्गीयमाहूः कथयन्त्यस्य विभिन्नवदुशंभितं मूर्तिः निमातूं मृत्युमेव बालते बालुकां तु कुर्वितं, पुष्करलातुतुम सूतियिर्यं निर्माणधित्यस्य। आभिर्मिति कथयित्वा सर्वं शिश्याः वायुसंग्रहायं प्रचलिता: रथविरुद्ध भद्रस्य पार्थते एव एका वनी महिला न्यवसत्। तस्या: सेविका “तिन-नू” नामनी बलिका चासित। प्रसिद्धमुख जत्त्व अनात्य सा बलिका। एकदा सा राजभर्सं तं परं श्राप्यो, प्रसन्ना सा तमादाय स्वर्जनेऽचु न्यवचनात।

एकदा मन्दिरार्थकः शिश्यः स्वामिगृहमागतो धनसंग्रहार्थम्। स्वामिन्त्रा वंसौरजताताभूपितादिवनी शिश्याः समपितम्। सर्वं धर्म स्थ-नारोः शिश्यों यदा गतुसिधेश तदा बलिका प्रोचाच—भगवतो बुद्धस्य मूर्तयं श्रद्धमेव किंपि दातुमिल्हाम, इति निवेच भोतिवतो सा तं केशनां-मकं परं श्राप्यत्यत। धर्ममहस्तितोक्तम तामसुयाः तिरुश्चकार। शिष्येश्वर-प्रमाणिता बलिका विश्वस्यकाबोण सङ्कयं सलग्ना। सा व्यचारयतु-सङ्कारी मयामानु बुद्ध: तन्मूलों यद्य मदीस्यास्य पराश्योष्योगः स्वार्थाः प्रथममहं बलिका वान्ते।

सर्वं शिश्याः पुष्करं बालुकाः कथा सर्वं निवृत्ताः। प्रहयते मन्दिरार्थकः सर्वं बालुकिरं प्रधानः मूर्तिप्राप्ने (ढांच्या) निरात्यतम। किं-चतुर्भितकालान्तरं यावतप्रश्यति मन्मूति: कुञ्जा निवृत्ता चासित। द्वितीयाचार-
14. गरीब का पैसा

चीन की श्रेष्ठ कथा

चीन देश में चांग चूं नामक एक प्रदेश है। उस प्रदेश में तापिन-लिन
हसिन नामक एक स्थान है। इस स्थान पर भगवान बुद्ध का एक विशाल
मंदिर है। सुंदर मंदिर में भगवान बुद्ध की मूर्ति श्रीर भी सुंदर है। यह
मूर्ति विभिन्न चालुक्यों से बनाई गई है। जब कोई दर्शनार्थी दर्शन करने के
लिए आता था तो मूर्ति के हाथों पर पुष्प समपित करता था।

मूर्ति के वक्सस्थल पर, चीन का सबसे छोटा पैसा "कैश" स्पष्ट रूप
से अर्जित है। इस पैसे के सम्बन्ध में चीन में एक विचित्र कथा प्रचलित
है। जब इस मंदिर में कोई मूर्ति न थी तब मंदिर का महंत चिंतित हुआ।
उसने अपने शिष्यों को कुलकार कहा कि रात्रेक घाटियों को मिलाकर बनाई
जाने वाली मूर्ति के लिए भ्राप्त लोग घाटु संग्रह करे। बहुत धर्मिक माता
में घाटु प्राप्त होने पर ही यह मूर्ति बनाई जा सकेगी। सभी शिष्य अपनी
स्वीकृति देकर, रथों पर बैठ कर, घाटु संग्रह के लिए चल पड़े। मंदिर के
पास ही एक घनी महिला रहती थी। तिन-नू नामक बालिका उसकी
सेविका थी। वह बालिका इस संसार में अर्थता थी। एक दिन सड़क पर
उसे यहाँ कैश मिला। प्रसन्नता से उसने उसे अपने कपड़ों में बांध लिया।

एक दिन मंदिर के महंत का शिष्य घन संग्रह के लिए स्वामी के
चर भाया। स्वामी ने सोना, चांदी, ताम्र, पीतल आदि घन शिष्य को
दिया। सारा घन जब रथ पर रख कर शिष्य जाने लगा तब बालिका ने
कहा—भगवान बुद्ध की मूर्ति के लिए मे पी देना चाहिए हूँ।—यह कहूँ
कर हरित कुराई बालिका ने कैश दिखाया घर्तु घन के अभिमान से उस
शिष्य के बालिका का तिरस्कार किया। शिष्य के द्वारा अपमानित बालिका
उदास हो गई और अपने काम में लग गई। बालिका ने विचार किया—
भगवान बुद्ध समर्पण हैं, उनकी मूर्ति बनाने में यदि मेरे कौशल का उपयोग
हो तो मेरा जीवन धन्य हो जाय।

सभी शिष्य धर्मिक माता में घाटु संग्रह करके सभी श्रीर ले लौट
भाये। मंदिर के महंत ने घाटियों को गलाकर मूर्ति के ढाँचे में डाला।
कुछ समय बाद जब देखता है कि मूर्ति तो कुरुप श्रीर और चित्रित है। दूसरी
भि मूर्ति विक्षता एवासीत्। "मूर्तिराहूपे सून्दरतमे सत्यपि कथं मूर्ति विक्षता सज्जाता।" इति मन्दिराध्यक्षस्य बहुस्तो विचारितम्। सर्वानु प्रोवाच रे शिष्या: ? धातुसंप्रेहे चास्माभ: कापि शुृ टिरवश्यं च काचा सवेद्विन मूर्तिविक्षता सज्जातये तत्म: पृथवशं: कथयन्तु सबे धातुसंप्रेहुतान्तम्।

सर्वे शिष्या: स्वस्वयान्राच्छतान्त विस्तरस्य: आवयामासु:। अन्ते तस्य शिष्यस्ब वार: समायातो य: तिन-नू-स्वाभिगृहुः गतः।। गवितोस्य शिष्य: पुष्कलं धनं गुर्जे प्रायःछादत: सर्वं घटनां कथयतुभारभत। कथा घटनाः क्रोमे यदा "तिन-नू" बालिकाया उल्लेखः समागत र्तदा शिष्यः प्रहसनप्रोवाच तेन लघुतमेन पएँ न कि साविति विचारं न्ययक्षता सा बालिका मया।

तच्छु त्वा मन्दिराध्यक्षश्च मुक्तं हर्षपूर्तिमभवतु यतो हि स विक्षतमूर्ति रहस्यं जातवान्। गुरुस्तरं शिष्याय कुष्यनां प्रोवाच। सर्वं रहस्यं जातवानरसिम। येन वृटि विहिता स ममाने समुपस्थितोत्सित। शिष्यं विगृण्यनुः प्राहु-महुदपरास्यं त्वया, समद्विनो बुद्धस्य सिद्धान्तानां हृत्याकुता त्वया, प्राय:शिष्टतातृते न पापशुद्धि भौतिताश्र, गच्छ शीर्षं तं परामाणय, येन स्वत्ता मूर्ति निषिद्दा भवेतु।

विन्तो लयितंस्थायं शिष्यश्चाप्येक्षित्रिभिः शिष्य: सारं तदाजाजाम। बालिकामानलं क्षमायाचनानामकरोद्। प्राहु च-तव परं विना भवतो मूर्ति: न निर्मापितस्तु शकयते, शीर्षं प्रयच्छ स्वपरमाश्च।। तच्छु त्वा बालिकां मूषं प्रहुष्टा, प्राणेयोपस्य प्रियं स्वकंपशस्य सादरं सविनयं शिष्याय प्रायःछादत। यदा मन्दिराध्यक्ष: परंस्मित धातुद्वेगिनके पात्यामास तदा सर्वं: छट्टं भगवतो भवण्या मूर्ति निषिद्दास्तित। मूलर्वक्ष्यलोपरि बालिकाया प्रदत्त: पशुः स्पष्टर्वेश्यांकितोस्तित।
बार भी मूर्ति विकृत ही बनी। 'मूर्ति के ढाले के सुन्दर होने पर भी मूर्ति विकृत कैसे हो गई?' मन्दिर के महत्त्व ने श्रद्धालुं बार भी विचार किया। सभी शिष्यों को बुलाकर कहा-भरे शिष्यों! धातु संग्रह करने में भ्रष्टांत्रह कोई से न कोई त्रुटि की है। इसलिए मूर्ति विकृत हुई है। प्रत्येक श्रद्धालु धातु संग्रह के समाचार सुनायें।

सभी शिष्यों ने भ्रष्टा भ्रष्टा मात्रा वृद्धांत विस्तारपूर्वक सुनाया।

ब्रह्में उस शिष्य की भारी ग्रामीजण जो तिन-नूं के स्वामी के घर गया था इस भ्रमसानी शिष्य ने बहुत धैर्य भन लाकर गुरु को दिया था गुरु: सारी घटना सुनाना प्रारम्भ किया। कथा की घटना सुनाना प्रारम्भ किया। कथा की घटना के रूप में जब तिन नूं बालिका का उल्लेख ग्रामीजण तब शिष्य ने हुंधते हुए कहा—उस छोटे से झंडे से क्या होगा? यह विचार करके मैंने उस बालिका का तिरस्कार किया।

यह ग्रामीजण मन्दिर के महत्त्व के मुख पर प्रसन्नता छा गई। क्योंकि बालीका के विकृत मूर्ति का रहस्य जान गया था। गुरु उस शिष्य पर क्रोध करते हुए बोले—मैं सामूहिक गुरु से गुरु दिया हूं। जिसने तुम्हारे सामने उपस्थित है। शिष्य को दूर ले हुए गुरु ने कहा—तुम्हें महान्य श्रद्धारो प्रार्थना किया है, तुमसे समस्ती बुद्ध के सिद्धांतों की हत्या की है, प्रायश्चित्त के बिना पाप की शुद्धि नहीं होगी, शीघ्र जाख्म्रो भ्रष्टा उस क्षेत्र को लाओ। ताकि सुन्दर मूर्ति बनाई जा ली। नस्त्र भ्रष्ट लजित शिष्य भ्रष्ट है शिष्यों के साथ वहाँ ग्रामीजण।

बालिका को बुलाकर क्षमायाचना की तथा कहने लगा—तुम्हारे क्षेत्र के विना भगवान की मूर्ति नहीं बनाई जा सकती। ब्रह्मान्य क्षेत्र शीघ्र दो। यह सुनकर बालिका बहुत प्रसन्न हुई। प्रायोजनों से भी प्रया भ्रष्टा क्षेत्र को उसने शिष्य को आदर भरत एवं न सत्यपुर्व्सरक समर्पित किया। मन्दिर के महत्त्व से जब इस क्षेत्र को गलाए हुए धातु में डाला तब सभी ने देखा कि भगवान की सुन्दर मूर्ति बन गई है। मूर्ति के वक्षस्थल पर बालिका द्वारा दिया गया क्षेत्र स्पष्ट रूप में दिखाई देता है।
ब्रह्म व्यचारितः—पुनःस्मिरि कुट्रापि समृद्धि ध्यातुं शक्यते अन्त्यत्वा राक्षस स्तन चर्वतिष्ठति। पुनःस्मानेन सा स्वयं राक्षसमुपगतुर्विषयिकं परं पुत्रः प्रेमवाच! नाहं मस्यन्ते तवं प्रत्ययाधिपति प्रस्थुत स्वयमवहां राक्षसन समं युक्तं करिष्यामि। प्रहस्तति ब्रह्म प्राहः—कथं तवं कुष्टराक्षसेन्द्रेण युद्धं करिष्यसि?। पुत्रः प्राहः—नाहं मेकाकौ युद्धं करिष्यामि प्रस्थुत देशस्य सरेऽयुक्तः संयोगमं तं हृदिष्ठित।

उत्साहसम्पन्न पुत्रं वीक्ष्य ब्रह्म हृदश्रुतृणिमुःचन्तती प्रेमवाच गच्छे पुत्रः। भगवान् तव साहाय्यं करिष्ठति। ये स्वयं परिश्रममेव सन्ति सगवान् तेषामेव साहाय्यं विद्धाहति। बा खो मातुराशिं प्राप्य तस्मांसनिःग्नति।

चतुष्कमुपविष्टो बा खो स्वक्षुरं प्रस्तरे घर्ष्यति। यः कोषपित तस्मान् स्थिरं चर्वचति स त्पूर्वाद्धितः प्रस्तरे! बा खो, किमनेन करिष्ठति बालिश। गवर्भं बा खो प्राह—क्षुद्राराक्षसं हृदिते। किं भवतो सम साहाय्यं करिष्ठति? सर्वं तूष्णभिमेव भवद्रुतास्मांसनिःग्नता। न कोषपित साहाय्यं करोतीति विचार्य बा खो निर्जेनं वनं गत।। तत्र प्रचलनसु नागराजमेकं ददश। बा खो सर्वं बृहतं तं भवायासम। विषयंतुसो नागराज स्तंब तृं श्रुतं श्रुतं दयाकुलं सञ्जयं। नागराजेन प्रतिष्ठातं यत्सङ्गृहीं सर्पस्यं तव
बियतनाम की अशेष कथा

किसी गांव में बृद्ध स्त्री रहती थी। वहां नामक उसका पुत्र धीर, चीर एवं शान्त था। वह श्रद्धापूर्वक मां के साथ रातदिन घरेलू में काम करता था। उसका स्वभाव देखकर सभी प्रसन्न थे। बहुत दिनों के बीतने पर, इस प्रदेश पर एक राक्षस का सावधान झा गया। चार मुंह वाला यह काला राक्षस परिवर्त तीर्थ विशाल था। यह चार मनुष्यों को एक साथ ही चबा जाता था। उसके संग के सवेत हँसीकार मच गया। उसके नाम से ही सब मन हो गए। धीरे, धीरे उसने हाँसी की, नगरों को उजागर कर दिया। उस प्रदेश का राजा भी भाग गया। दर के मारे लोग भी इधर उधर उभार गए। केवल बेचारा वह खो माता के साथ कहीं भी नहीं जा सका।

बृद्ध स्त्री ने विचार किया। इस पुत्र को कहीं घर कर बचाया जा सकता है अन्यथा राक्षस उसे चबा डालेगा। पुत्र के स्थान पर वह राक्षस के पास त्याग जाना चाहती थी। किसी पुत्र के कहाँ—में अपने चलते तुर में नहीं रहेंगा। बल्कि राक्षस से युद्ध करूंगा। हंसती हुईं बृद्ध स्त्री ने कहा—तुम हँसने राक्षस के साथ युद्ध कैसे करेंगे? पुत्र ने कहा—में झेलता युद्ध नहीं करूंगा बल्कि देख के भ्रम बताकर उसे मिल कर उसे मारेंगे।

उत्साही पुत्र को देखकर बृद्ध स्त्री हृदय के प्रानु बहारी हुईं बोली है पुत्र! जा मंगवानू तेरी सहायता करेंगे। जो स्वर्ण परिधान होते हैं मंगवानू भी उन्हीं को सहायता करता है। वह जो माँ का आशीर्वाद लेकर वहाँ से निकल गया।

बा खो चौदाई पर अपने चाकु को पत्थर पर बिस रहा था। जो कोई उस रास्ते पर निकलता वह उसे पूछने गए हरे बा खो! तुम यह क्या कर रहे हो? वा खो ने गर्व से कहा—में कहाँ राक्षस को मारेंगा। नया भाग मेरी सहायता करेंगे? सभी भयभीत होकर वहाँ से भाग जाते थे। कोई भी मेरी सहायता नहीं करता, यह सोच कर बा खो चौदाई जंगल की चल दिया। जब वह जंगल में जा रहा था तब उसने एक नागराज को देखा। बा खो ने राक्षस की सारी कहानी उसे पुनर्गाइ। इस कहानी को सुन कर बिखेरे नाग को भी दया भा गई। नागराज ने प्रतिशा की कि सारी सांपों की तेजा तेरी सहायता करेंगे।
साहाय्य करिष्यति। वृक्षिकराजोपि साहाय्यं कत्‌ मक्षयत्‌, वनस्पति-योजपि साहाय्यार्थं सन्नंद्रा भ्रासन्‌।

निषिद्धते दिने समस्ता सेना राजमार्गं साधतरं ब्राह्मीत्‌। मध्यभागे बा खो सेनापतिरिव राज। सज्जिता सेना पर्वं प्रति प्रयाणं चकार यत्र राक्षसो न्यवसत्‌। मार्गे स्त्रियं पुप्पा राण चवर्‌। प्रगच्छन्ती सेना मार्गे एव तस्मान्‌। सममुखे बेगेन प्रवहन्ती काचीन्दरी समायाता। अन्तः शरीं सेतुनिर्मिताय निश्चयमकुर्वन्‌। गजा वृक्षानुत्पादणं नर्हां श्रावः, वानरा: प्रस्तराण्ति। भूगाला भल्लूकान्: सेतुनिर्मितिकुर्वन्‌। क्षणेनां सेतोहस्तपरि सेना प्रचाल।

किंतू चाल्लकारावृता रजनी समुपागता। उलूकान्: प्रोहित मार्गम-बोधयन्‌। खच्छोता: प्रकाशमकुर्वन्‌। अन्तः सेना राक्षसदुर्गं विबेश्य यत्र राक्षसो निधारित। काठिन्यन्दु दुर्गभेदनं कुत्वा सेना राक्षसं हन्तुं प्रयत्ते। रज्जुमिक सर्पा: राक्षसेनद्रं बवन्धु:। बा खो स्वकुमरेः तस्य वक्षस्थलं विद्यार्क्षाप्रवत्तितिव राक्षसांख्यं फरसुरभवत्‌। तत्क्षणमेव खगा वृक्षेषु गीतमगायन्‌। वृक्षा: स्वकरम्पलल्लो नन्तुं। सब स्थावरजंगसा: प्रमूंदिता। बा खो महोदयस्य बुद्धिव विस्तिता सम्भाता।
बिच्छिद्रों के राजा ने भी सहायता करने को कहा—वनस्पतियां भी सहायता के लिए तैयार थीं।

निश्चित दिन ग्राने पर शारी सेनां संहक पर चल रही थी। बीच में बा खो सेनापति की तरह शोभित हो रहा था। सजा हुई सेना पर्वत की द्वीर जा रही थीं जहां राक्षस रहता था। मार्ग में स्त्रियां पुष्पवर्ष तिथि रही थी। चलती हुई सेना मार्ग में ही रक गई। झामने तेजी से बहुत हुई कोई नदी भा गई। श्रन्त में सबने पुल बनाने का निश्चय किया। हाथियों ने पेड़ तोड़कर नदी में झालना प्रारम्भ किया, बन्दरों ने पत्थर। गीदड़ एवं भालू पुल बनाने लगे। क्षण मर में ही पुल पर सेना चलने लगी।

किन्तु इतने में श्रंचेरी रात भा गई। उल्लू उड़कर मार्ग बताने लगे। जूगनू प्रकाश करने लगे। श्रन्त में सेना राक्षस के किले में पढ़ुंची जहां राक्षस सोता था। बड़ी कठिनाई से किले को तोड़कर सेना राक्षस को मारने का प्रयत्न करने लगी। सांपों ने रस्सी की तरह राक्षस को बांध दिया। बा खो ने श्रंचने चाकू से सीना चीर डाला। काले पर्वत के समान यह राक्षस मारा गया। उसी समय पक्षी व्रक्षों पर गीत गाने लगे। व्रक्ष श्रंचने पत्तों रूपी हाथियों से नाचने लगे। सभी स्थावर-जंगम बा खो की बुद्धि को देख कर प्राणाश्चर्य में पड़ गये।
२१. मातुः प्रत्यागमनम्

जाम्वियादेशस्य श्रेष्ठकथा

पर्वतस्योपत्यायामेकसुमतजमासीतः। तस्मिन्नेका-कुःप्पा वृद्धा न्यवसत्। टोनी नामकस्तयाः पुत्र स्तथा सोमवीनामी पुष्टी चासितः। सन्तति मातुः सेवामरकरोऽडोमि तथा सोमवी राज्निनिवर्पोऽपिं परिश्रमम-कुश्ताम। एकदा तौ मृग्यार्थं वने भ्रमन्तो चासितं तदेव तौ कहणं चाश्वदनमस्यप्रगताम। तत्म्या दृष्टाद्येको वृकः पथिक्षयोपरिचाकमां कुर्वेश्ववः। टोनी तीर्णकेन तमहन्तुः। वृद्धः पथिकः टोनी ग्रहः-त्यथा मत्यार्थार्यः क्रुः। वद तव ककुमकारं करवावः। वृद्धस्विविप्नत्ता दशाः विलोकय टोनी विचारयाण्वः-वृद्धमेनं स्वगृहं नेष्यामि परं मन्माता तु चात्यात्तकोपना चासिते। टोनी ग्रहः-चलतु सवानस्वद्गृहम्। वृद्ध ग्रहः-सर्वभुरं जानामिः। तव माता चात्यात्तकोपना वर्तते। ग्रामचर्यः चकितः सोमवी व्याचारयतु कथमयं मम मातुः समन्वो जानाति।

वृद्धोऽयं मातावी चासितः। परिवतत्तवरूपं वृद्धं वीक्ष्य तौ मयः तौ संजाति। वृद्धः प्रोवाच—वस्तुः।। प्रह युवयो वीरयोः साहाययायं समागतोहस्त्वम् पूवं तव माता द्यालुक्षवासिते। तव पिता चाचाते खुवर्नमूः। तदन्ततमेको वन्यो मानव स्तव भातुः। पाश्वमापेश्वे।। स तव माता सहि विवाहं कतुः। मेच्चवतु पर ता तत्प्रसातान न स्वरीचकार खुदौ वन्यमानं। स्वभावाजालेन तां पंचं भूषणं चाकार तथा चाश्वपतू यत्तं स्वालाम्यां सह स्तेनेन वर्त्यते सति। तौ प्रस्ततमयी सन्निष्ठतः।। युवां वीरी मिलितवा स्वमातुः। आपं दूरोकरिष्यतः।। टोनी चोपायसङ्कृत्चततः।

मायावी ग्रहः—पर्वतस्यास्य शिखरे निर्मित्रविष्ठतः। तन्न्तरपानेन सा शापमूक्ता भविष्यति। परं पर्वतशिखरं गन्तुः। नाशितस्करमः। तत्र वन्या जीवा स्तथा रक्षासा वस्तिः। पर्वतस्य दक्षिणाभागे उदम्वरशृंखली वतिरं। तत्त्वमालामकामानी तत्र गच्छत तत्रभाविष्यज्ञ राक्षसं। किमपि कतुः। न शक्यन्ति। इत्यभिघात वृद्धो विलुप्तेऽभवत्।

गृहं प्रत्यागति तौ पर्वतशिखरं गन्तुं व्याचारयात्ताम्। प्रत्यचासे ट-भिषेता तौ उदम्वरशाखामकामानी पर्वतं प्रापतुः।। विकटं मार्गमूलिताय ताम्यां
21. माता का लौटना

जाकिया वेळा की श्रद्धाभावः

पर्वत की गाढ़ी में एक भोपड़ी थी। उसमें एक कृपड़ वृद्ध रहती थी। उसके पुत्र का नाम टोनी और पुत्री का नाम तोमबी था। सत्तान्त माता की भाषा करती थी। टोनी और तोमबी रातदिन परिचाय करते थे। एक दिन जब वे शिकार खेलने के लिए चूड़ में रहे थे, तब उन्होंने कहा कहाँ सुना। उन दोनों ने देखा कि एक भेड़िया किसी पत्तिक पर आक्रमण कर रहा है। टोनी ने एक तीर से उसे मार दिया। वृद्ध पत्तिक ने टोनी को कहा—तुमने मेरे पासों को रक्षा की है। केवल तुम्हारा क्या उपकार करते हैं? वृद्ध की बुद्धि हालत देखकर टोनी विचार करने लगा—इस वृद्ध को भगवान पर ले जाओ तो रत्नें मेरी माता से बुद्धि फैली है। टोनी ने कहा—आप हुमारे बारे मे बताएं। वृद्ध ने कहा—मैं सब कुछ जानता हूं। तुम्हारी माता बहुत फैली है। भाष्यकारिता को निश्चित सोमबा ने विचार किया यह वृद्ध भरोसा माता के बारे में कहते हैं?

यह वृद्ध पूरा जागूर था। बहुत हुए भेष बाले वृद्ध को देखकर वे समय बालरे उठे। वृद्ध ने कहा—पुजो! मैं तुम बोरों की सहायता के लिए आया हूं। यह पुजा वृद्ध हुई। तुम्हारे पिता की शिकार खेलने हुए गुड़ बुद्धि हुई। उसके बाद एक जंगली मनुष्य तुम्हारी माता के पा आया। उसे चाहिए माता से विचार करना चाहिए। परन्तु माता ने उसके प्रस्ताव को नहीं माना। बोधी उस जंगली मनुष्य ने भगवान बालें से उसे लगड़ा तथा कृपड़ बनाई ग्रीर श्रो श्रो श्रो श्रो श्रो श्रो श्रो श्रो श्रो श्रो श्रो। वृद्ध बीर निश्चित कर प्रभाव का आप डूर कर सकते हो। टोनी ने आप डूर करने का उपाय बुद्धि।

जागूर ने कहा—इस पर्वत शिकार पर एक भवन है। उसका जल पीते हैं यह आप मुक्त हो जायेगी। परन्तु पर्वतशिकार पर जाना सरल नहीं है। वह जंगली जानकर तथा राक्षस रहते हैं। पर्वत के दक्षिणी भाग में एक गुलर का वृक्ष है। उसकी होटी बाली लेकर यदि तुम वहाँ जाओ तो उसके प्रभाव है। राक्षस बुद्धि नहीं कर सकते। ऐसा कहकर जागूर वहाँ से लुप्त हो गया।

जब वे घर लौटे तो उन्होंने पर्वत पर जाने का विचार किया। भाराकार शिकार के बहुते वे गुलर की बाली लेकर पर्वत पर पहुँचे।
इह्त यत्पुर्ववस्त्यां दिशि निर्भर: प्रवहति यावती पात्रे जले प्रपूरवितंपागच्छतां तावतः भीषणा ध्वनिभ्रूङ्गता। क्षणेऽन्त पर्वतः प्रकृतमित्यमारेभ। पदप्रस्थल्यनेन सोमवी निर्भरस्य जले प्राप्ततु। मयाकुन्ता: दोनी जले चोटुम्भरपरिं तत्त्याज। तत्त्वशमेव अंभावातो विलुप्त:। शान्तो निर्भर: पूवेंतल्ये प्रवहतु। दोनी सोमवी निर्भरादु विहिरानयतु। जलमानीयं यदा सायं तै प्रतिनिवृत्तिती तदा मागेव वुका स्तयोनुपरि चाकमण्डकुर्वेनु। उदुम्बरशाख्या वुका: पलायिता।। क्रमे चाजगरवेत्ति विलित: दोनी पदें पदे प्रस्थल्यश्री तज्जलं रक्ष।

राष्ट्री तै स्वगृहं प्राप्तु।। तै स्ववृद्धां मातरं निर्भरजलम-पाययताम्। तज्जलपाणेन सा पूर्ववत्स्वस्त्या समजाता। स्मृतमयीं मातरं प्राप्याच तै भूषं प्रसंदितती। दोनी यावतु गृहस्य पृष्ठभागं प्रति पश्चित तावतस मायावी प्रहस्थास्ते। दोनी मायाविन: सवें वृत्तं स्वभारं निवेदवयामास। माताणि: मायाविन: कुलश्चां ध्वनिज्ञपतु। मायाविन: प्रभावेशा तदुत्तजं स्वण्ड्रासादतं परिवर्तिततम। मायावी तामुदुम्बरशाख्यानी प्राक्षिपत।। शाखाप्रज्ञुबलनसमकालमेव पवंतशिश्वेदादु घुम-ज्वालानिर्गतः। मायावी श्राह पवंतस्थं सवें राजसाश्चांघुना संस्पर्शंभूताः।। दोनी तथा सोमवी स्वमात्रा सह सुखेन तस्थतु।
कठिन मार्ग पार करके उन्होंने देखा कि पूर्व दिशा की श्रौर एक छररा बहता है जब वे पाक में जल भरने के लिए भरने के पास गये तब उन्हें भयानक भ्रांवाज सुनाई दी। क्षेत्र में ही पहाड़ हिलने लग गया। पैर फिसलने से सोमबी भरने के जल में गिर पड़े। अभयोत्त टोनी ने जूल में गूलर का पत्ता ढाला। उसी समय श्रांची समाप्त ही गई। शान्त भरना पहले को तरह ही बहते लगा। टोनी सोमबी को भरने से बाहर लाया। जल लेकर सायंकाल जब वे लौटे तब मार्ग में मेडियोन ने उन पर भ्रानकर कर दिया। गूलर की झाली से मेड़ियों भाग गये। शाने एक भ्रानकर मिला। टोनी कदम-कदम पर फिसल रहा था फिर भी उसने उस जल को बचा लिया।

रात्रि में वे अपने घर पूृं चे। उन्होंने वृद्ध माता को उस भरने का जल पिलाया। उस जल के पीने से वह पहले को तरह ही स्वस्थ हो गई। स्नेहमयी माता को प्राप्त कर श्राज वे बड़े प्रसन्न हुए। टोनी जब घर के पीछे की श्रौर देखता है तब उसने जादूगर को हंसते हुए देखा। टोनी ने जादूगर के सम्पूर्ण बृजाण्त को अपनी माता को सुनाया। माता ने श्री जादूगर के प्रति अपनी कृतजल हता बताई। जादूगर के प्रभाव से वह भोपड़ी महल के रूप में बदल गई। जादूगर ने उस गूलर की झाली को प्रस्तुत में झाल दिया। जब झाली जलने लगी तब पहाड़ पर से धुए को लपट निकली। जादूगर ने कहा—पवित्त के सभी राक्षस श्राज प्रसन्न हो गये। टोनी श्रौर सोमबी अपनी माता के साथ सुख से रहने लगे।
रोमदेशस्य अरोपकथा

पुरानो रोमदेश दोमीटियननामककथेकः सम्राट् व्यवस्तू। स बुद्धिमानो न्यायप्रियत्वशासीत्। तथ्य शासनकाले न केवल स्तेनकमरः साफल्यं भेजिके। दण्डमथेनापराधिनो बेपन्ते स्म। एकदा कसाख्यित: सम्राट् केनापि व्यवसायिना समाहृत:। द्वारपालं प्राह कः कोठ्रौ भो: ? व्यवसायी बृहदेन वस्तुनि विन्ध्येतु समागतोस्मि। द्वारपालन सहु व्यवसायी नृपतिक्षं प्राविशात्। सम्राट् त प्रच्छल्ल्यथा विक्रेतु तु किमानीलम्?

व्यवसायी प्राहः मत्यपेशी त्रयः सिद्धान्तः सत्यं वे तत्कर्ष झालेन च परिपूर्णः सत्यं तानहि विन्ध्येतु समागतः। सम्राट्साहायः द्वद्वेषां कियन्तां भविष्यति ? व्यवसायी दृढः एकसहसरस्वर्णयुधः। नृपति: प्राहः यद्यः सिद्धान्तः कोढ़िः लाभो न भविता तथ्य मद्दीयं धनं तथा परिवर्तत्वचः। व्यवसायिना तदुरीक्षतम्। सम्राट्साहायः कथयं के तव त्रयः सिद्धान्तः ? व्यवसायी बृहदेन

राजनौ। “यत्किमपि कार्यं करोतु भवानु तत् सवं परिशामं विचारं करणीयम्” त्रयं प्रथम: सिद्धान्तः। “राजसामग्री परित्यज्य नान्यने भवद्यां गतव्यम्” त्रयं द्वितीयः: सिद्धान्तः। तस्मिन् गृहे नातित्यं स्वीकरोतु यथिन् गृहपति बृहदस्तप्यति च युवति। स्थायं तृतीय: सिद्धान्तः। नृपतिश्रेष्ठकसहसरस्वर्णः प्रदाय निष्कर्षिती जातः। नृपेतराज्जया त्रयः सिद्धान्तः।

न्यायप्रयोगं सम्भावितविचिन्त्यतस्करारस्तस्तत्र श्रवण: सम्भावताः।

tे व्यचारयन्-येनकेनायप्यन्यनायस्य बिनाश: स्थान। ते प्रचुरं धनं दला राज्यो नापितं स्वपञ्चपातितं न व्यददुः। नापित: प्राहः कौरकर्मण्यवसरं प्राप्ताहं तत्स्य श्रीवाने झेत्यास्मि। नापित: कौराय नृपतिश्रेष्ठं प्राप्त कौरकर्मणि च प्रवृत्तः। नापितेनावलोकितं नृपतिश्रीवायं यदस्त्र विविधमासीततस्मि। लिखितमासीतू सवं कार्यं बुद्ध्यं विचारं करणीयम्।
बहुत पहले रोम में डोमीटियन नामक एक सम्राट् रहता था। वह बुद्धिमान् एवं न्यायप्रिय था। उसके शासन में चोरी आदि करने वालों को कोई सफलता नहीं मिली। दण्ड के स्वयं श्रवराजी कॉप्टे थे। एक दिन राजा उन्हें कमरे में बैठा था कि किसी ध्यापारी ने दरवाजा खटखटाया ध्यापाल ने कहा—यहाँ कौन है? ध्यापारी बोला—वस्तुएं बेचने के लिए आया हूं। ध्यापाल के साथ ध्यापारी ने राजा के कक्ष में प्रवेश किया। सम्राट् ने उसे पृूख—तुम बेचने के लिए क्या लाये हो?

ध्यापारी ने कहा—मेरे पास तीन सिद्धांत हैं जो तर्क एवं ज्ञान से पूर्ण हैं उन्हें बेचने के लिए मैं आया हूं। सम्राट् ने कहा—बताओ मैं इनका कितना मूल्य होगा? ध्यापारी कहते लगा—एक हजार स्वर्ण-मुद्राएं, राजा ने कहा—यदि इन सिद्धांतों से कोई लाभ नहीं हुआ तो मेरा बन तुम्हें लौटाएं होगा, ध्यापारी ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। सम्राट् ने कहा—बताओ तुम्हें कौन से तीन सिद्धांत हैं? ध्यापारी ने कहा—

राजन्। भ्राप जो मी काम करे, उससे पहले उसके परिसर दो। विचार करके—यह पहला सिद्धांत है। राजमार्ग को छोड़कर श्रवण नहीं जाना चाहिए—यह दूसरा सिद्धांत है। उस घर में भ्रातिध्य स्वीकार न करो जिसमें पति वृद्ध हो एवं पत्नी युवती हो—यह तीसरा सिद्धांत है। राजा एक हजार स्वर्णमुद्रा देकर निश्चित हो गया। राजा की भ्रातृ ने इन तीनों सिद्धांतों का सर्वसंह मन्त्र किया गया।

यह सम्राट् बड़ा न्यायप्रिय है यह सोच कर सभी बोर उसके शर्त बन गये। उन्होंने विचार किया—जिस किसी तरह से इसके समाप्त कर दिया जाय। उन्होंने बहुत श्रवण करके राजा के नाई को बुधकर में भिड़ा लिया। नाई ने कहा—हजारत करने समय स्वस्त पाते ही मैं उसका गला काट लूंगा। नाई हजारत करने के लिए राजा के पास पहुंचा बौर हजारत करने लगा। नाई ने वेदाय—राजा के गले में जो नस्व बंध है उससे लिखा हुआ था।
स कर्मविश्वास व्यक्ति यथा राजान मारविषये तत्थि तद् विपकस्तु विनाशकरोत्त प्रभुता, कृष्णाध्यक्ष स्वतःविवित्त-प्रतोज्जित् सर्वधिक बदिक करिष्यामि, सक्रीय विचारे विनिष्ठामि, इत्यति तत्करो दक्षे कम्पमानानि विलोकय सम्बन्धावं किमश्रेण सम्बन्धासि लयम् ? करी समुद्रीन्द्र स्वाहितमि नापित: सविनयः प्राह-राजन् कस्मस्व माम्। कीतोऽहने अबद्धार्थाभिषेकं परं वस्तुतिरिद्वात्यक्षाराशि वाचित्वं भवत्तस्तस्य मयेनं इशा सम्बन्धा, कस्मस्व माम्। 

सभाभु पनसि व्यक्तरत्र्व-प्रथम्मनि सिद्धान्तेनाध्यक्षु भवेत्र सक्रीयम् । तत्करे विचारतित्व मानसामि: साधकामवाप्तम्। अत्यतिप्रभुत्रिः पद्याक्षरं करणीयम्। तैविशिष्युतिः-परशव: सभाभुवथोपमानेन पथा चायन्वयनरं गतियति तत्थि चार्कमणि कुववा ह्वात्स्वामि:। सभाभु न्याय्यानि नगरवाचस्यार्थम् । शत्वम् प्रतीक्षायामेवाननु, ददा राजा राजामार्गिलसु-पन्नासमाप्तवत्। अनुचरवः प्राहु: अनेन पश्चा वयं श्रीमभेव तल्लंगरं प्राप्तमावः। सभाभु पनसि व्यक्तरत्र्व-प्रथम्माणे भवत्तचं सर्वदा प्रस्तव सिद्धान्तस्य पचले विनाश्यामि यदि केस्वि लघुपथ गलतुमिद्वेकोमहावर्गं गच्छन्ति। 

केचन रोकानकुशा लघुमाणेयं निर्माता:। श्रवर्ध्रमु: ससायगमे ते निस्वा: परं सभाभु निर्भीयं नगरं ग्राम। समाचारमिन्त श्रृवत्वा विनिष्ठानी राजा व्यक्तरत्र्व-डत्तोथप्रयानिः सिद्धान्तेन मद्विया रक्षा हताः। शर्वि नृपतिवार्थवर्षरं प्रतीक्षाम्याय आसनन्। सभाभुवथोपमानेन नगरमाल। नृपतिवर्षितमु गृहे स्थित: तमाव तु हनिष्ठामो वैष्णवार्थ: निश्चित: श्रवर्ध्रमु:। बथव्य सर्वं प्रबन्धजातं च सम्प्रदातितमु। नृपतिवार्थवर्ष्याय श्वेतक्षोऽय्यतं परिष्ठतं गृहे बायात: तस्मिन गृहपतिबङ्गृहस्था पली च मुखित। यदा नृपवे बृहस्पतिपरष्टतव तेन पुष्टं भो बृहु! कि तब पली वहते?। बृहु: प्राह-वचेते मद्विया पली। नृपाराज्या नवनिचवन-स्थाना सुधरी नृपतिसमस्या समुपामता। तां विलोक्यक नृपति ज्योतिः सिद्धान्तं समर्थात। स भुजवानु हृद-वृहदन्तित्वस्य सर्वं: प्रवेच: सम्प्रदाति: नायान भवानं करंतसे समुचिता व्यवस्ताध्युता करतुः शवक्ते। नृपति: प्राह-ब्रह्म तृट्यवनेन समाचारयेऽरं नाना विनिष्ठायेः।
उसने मन में विचार किया—यदि मैं राजा को मार डूंगा तो उसका फल विनाशकारक होगा। तौर पर मैं भी कार्य करूंगा। सभी विचार करके कह गए। इस प्रकार कह कर उसके हाथों को देखकर समाजान्तों ने कहा—क्या राजा तुम रोगी हो? हाय जोड़ कर नाई ने नसरापुराकार कहा—राजनु। मुझे क्या करो? मृत्यु हेतु ने ग्रामके वच के लिए धरीदर है परन्तु वस्त्र में लिख हुए मकरों को पढ़कर, डर के मारे मेरी यह दशा हुई है—ग्राम मुझे क्या कर दें?

समाजान्त ने मन में विचार किया। पहले सिद्धांत ने ग्राम मेरी रक्षा की है। चोरों ने विचार किया—हमें सफलता नहीं मिली है—और कोई पढ़वान करता बाहर है। उन्होंने विचार किया—यदि राजा शब्दशील हो तो इस मार्ग से किसी अन्य नगर जाएगा तो उसे ग्रामके करके मार डालेंगे। समाजान्त नगर की वातान के लिए निकल पड़ा। शत्रु प्रतीक्षा ही कर रहे थे। तब राजा ने सड़क से जाते हुए एक पगड़ी धारी है। नौकरों ने कहा—इस मार्ग से हम शीघ्र ही उस नगर में पहुंच जायेंगे। समाजान्त ने मन में विचार किया। हमेशा राजमार्ग से जाना चाहिये। मैं इस सिद्धांत का पालन करूंगा। यदि कोई पगड़ी से जाना चाहूंगे तो जाने।

कुछ सिपाही पगड़ी से निकल गये। शत्रुरूपों ने ग्रामके करके उन्हें मार दिया। परन्तु राजा सकुशल नगर में पहुंच गया। इस समाजान्त को धुंधर राजा को ग्वालीमय हुआ और उसने विचार किया।

दूसरे सिद्धांत ने मेरी रक्षा की है। शत्रु, राजा की हृत्या करने के शब्दशील को धूंढ़ रहे थे। दूसरे बार, राजा किसी नगर में पहुंचा। राजा जिस घर में था हृत्या है उसी में उसको मार डालेंगे—शत्रुरूपों ने यह निश्चय किया। राजा की हृत्या के समी प्रवर्त्क कर लिए गये। राजा प्रतिक्रियात्मक स्वीकार करने के लिए जिस घर में ग्राम था उसका मालिक वृद्ध था और पत्नी युवती थी। जब राजा ने वृद्ध को देखा तब उन्हें पूछा है वृद्ध! क्या तुम्हारी पत्नी है? वृद्ध ने कहा—मेरी पत्नी है। राजा का आगा देने वाले मुजुपलों पत्नी को राजा के सम्मुख लाया गया। उस युवती को देखकर, राजा ने हीसरा सिद्धांत याद किया।

उसने नौकरों से कहा—शिष्य ही मेरे निवास का प्रबंध श्रेय दें।

नौकरों ने कहा—मैं तो कहीं भोज्य! मैं रहूँ यहाँ परन्तु यहाँ विश्राम नहीं करेंगा।
तत्क्षणमेवात्यस्मिन् भवने नुपतेराजसस्य व्यवस्था विहिता।
भ्रातिभ्येनोथे से केचन भृत्यास्तगैव तत्स्यः । रात्री गाढ़न्यकारे शशवः
समागताः। सर्वनसारायनः। प्रभाते नगरे जनेः । श्रुतं यंत्रस्मिन् भवने सर्वे
जना लुण्ठके हुंका । ईश्वरस्य क्रुपया राजा तत्स्मिनऽबसरेदि सुरक्षितः
सन्नाते । व्यवसायिनस्त्रृत्यीयेन सिद्धास्ते तस्य रक्षा सन्न्याता । इत्यं
स नुसति स्तान् सिद्धास्तानुसूच्य शास्तिपूर्वं राज्यमन्वितेन्।
उसी समय किसी श्रन्य भवन में राजा के रहने की व्यवस्था कर दी गई। श्रातिथ्य के लोभ से कुछ नौकर वहाँ से ठहर गये। रात के बजने श्रन्यकार में शत्रु श्राये और सभी को मार गये। प्रातःकाल नगर में लोगों ने सुना कि उस सब्बन में सभी लोगों को छुट्टों ने मार डाला है। ईश्वर की कृपा से राजा उस समय भी सुरक्षित ही रहा। व्यवसायी के तीसरे चिदांत ने उसकी रक्षा की। इस प्रकार वह राजा उन सिद्धांतों का प्रचुरस्वरूप करता हुमा शातिपूर्वक राज्य करता रहा।
23. क्रक्ष: श्रुगालय

युकेनदेवस्य श्रेष्ठकथा

एकदा कशिचत्र श्रुगालो मधु खादितमच्छुतिं स्म। प्रतिदिनं मांस-
भक्षणाहितरोज्यं सन्तज:। मधुमक्षिकायां छत्रे गतवा किंचित्मधु
चाहुन्द्रादयायम्-इत्युक्तवा प्रचलितो श्रुगालो यावत् करेणा मधु निस्सार-
यति तावदेव मङ्किकः: छाहाद् बहिरागत्य श्रूगालशरीरे लगना: तत्क्षण
पलायितुकाम्: श्रुगाल: प्राह—मधु मधुरं किंतु मङ्किकः: कदच्यः।

श्रुगाल: स्वावसामागत्य श्रुप्तः तस्य नासिका शोषयुक्ता
सम्बाजातः। शायानस्यं व्यचारयतु यदहु अभवमलक्रृतं सह मिलि-
ण्यामि। स मद्यीनं मधुमक्षणते छच्छो प्रपूर्वतल्लं क्षम:। यतो हि क्रक्ष
मधुप्रयोगे वर्तते। तत्स्य गृहे त्ववश्यमेव मधु मिलिण्यतीति विचारं
श्रुगाल: क्रक्षां प्राह—नमस्ते श्रुगाल! नमस्ते। क्रक्ष: प्राह—चिराद्
वृस्तोडसि। श्रुगाल: प्राह—यदात्रेऽमृतं तव भाता मृत्तस्तदाध्यक्षति मृत्त-
प्रिवस्वाम्यं क्रक्ष: प्राह—प्रहुमप्येक्काकी जीवन याप्यामि। त्वमज्जैवागच्छ—
श्रवां सुखेन निवसिष्यावः।

द्रावेभ तौ सुखेन निवसत:। क्रक्ष: प्रत्यथं वरं गत्वा श्रुगालय
मांसमानयति। श्रुगालस्य मधुभक्षणेऽप्र्येक्यस्य नावाबधी प्रपूरिता। एकदा
श्रुगाल: प्राह—एकदा किंचित्मधु चानीयतामू। मद्यीन प्रवलेिज्ञा वर्तते
मधुभक्षणाय। क्रक्ष: द्वितीये दिने बनान्मचुनो द्वे क्रक्षे समान्यतू प्राहु
च श्रुगालमू। छत्रेमेक शीतकारे ‘शादाम’, छत्रेमेकमधुनाः। तावाकठं
मधु पीतवत्ती।

क्रक्षस्तु सरल: परं श्रुगालश्चक्तुरः। हर्म्यपृष्टःशापितं मधुन: छत्रं
खादितुं लालायिति: श्रुगाल: परं हर्म्यपृष्ठे कवं गच्छेद्यः। क्रक्ष: कथर्य-
म्यति तवं कथं हर्म्यपृष्टं गतं?: यदा मध्यचोपविष्ट: श्रुगाल: स्वपुरुषं
भित्ती प्रहुरति तवं क्रक्षा कथितं कसामदुःध्वनिनिरिं निस्तरित। श्रुगाल:
प्राह—पार्श्ववति युंहे पुष्ट: समुपर्षो वर्तते। ते मामाहुक्षणित्यः
इत्युक्तवा श्रुगालो हर्म्यपृष्ठं गतं:। वाकठं मधु पीतवा प्रतिनिवृृत्तः।
23. रीछ गौर गीदड़

यूकेन की श्रेष्ठ कथा

एक बार कोई स्त्रुगाल शहद खाना चाहता था। प्रतिदिन मांस खाते उसे प्रतिवक्ता हो गई थी। मधुमक्खियों के छते पर जाकर कुछ शहद खाता हूै—ऐसा कह कर स्त्रुगाल चल पड़ा। जब हाथ से शहद निकालता है तब मक्खियां छाते से निकल कर स्त्रुगाल के शरीर से चिपक गई। उसी समय भागने की हृदय वाले स्त्रुगाल ने कहा—शहद मीठा है किन्तु मक्खियां कह्रीं हैं।

स्त्रुगाल श्रवणे निवास पर शाकर सो गया उसकी नाक सूक गई। उसे हुए उसने विचार किया कि भले ही मैं रीछ से मिलूंगा। वह मेरी शहद खाने को इच्छ नूैया कर सकता है वहीं कि रीछ ने कहा को शहद निकालेंगे। उसके घर में प्रवेश ही शहद मिलेगा। यह विचार स्त्रुगाल ने रीछ को कहा—कहरेश्वर! नमस्ते। रीछ ने कहा—बहुत दिनो में तुम्हें देखा है। स्त्रुगाल ने कहा—जब से तुम्हारा भाई परा है तब से मरे हुए की तरह रह रहा हूै। रीछ ने कहा—मैं भी भक्तेका जीवन व्यतीत कर रहा हूं। तुम यहां श्रवणे जाओ। हम दोनों सुख से रहेंगे।

वे दोनों सुख से रहेंगे लगे। रीछ प्रतिदिन बन में जाकर स्त्रुगाल के लिए मांस लाता था। स्त्रुगाल की शहद खाने की इच्छा अभिम तक पूरी नहीं हुई। एक बार स्त्रुगाल ने कहा—एक बार कुछ शहद लाईगे। शहद खाने की मेरी प्रकाश इच्छा है। रीछ कूसरे दिन बने शहद के दो छते ले आया और स्त्रुगाल को कहा—शहद का एक छता सवेरों में खायेरो और एक छता अभिम। उन दोनों ने पेट भर शहद खाया।

रीछ सीधा था परन्तु श्रृगाल चतुर था। मकान की छत पर रक्त डूरा श्रृगाल का छुट्टा खाने के लिए लालचहिरा श्रृगाल ग्रह छुट पर कैसे जावे। रीछ कहेगा—तू छुट पर कैसे गया? जब छात पर बैठे श्रृगाल अपनी पूंछ से दोबारा पर चोट मारता है तब रीछ ने कहा—यह भ्राताज कहां से था रही है? श्रृगाल ने कहा—पास के घर में पुत्र उत्पत्त हुआ है। वे मुक्ते बुला रहें हैं। ऐसा कहकर श्रृगाल छुट पर गया। पेट भर शहद पीकर लौट आया।
कृष्ण: प्राह-तस्य समुदयमहाय पुष्टस्य किष्माम कृतम्? श्रुगालः प्रत्युत्तम तस्य नाम "कम-कम-खुरचा" इति कृतम्। द्वितीये दिने मथ्यो-परर्वत: श्रुगालः स्वपुच्छेन पुनः भिति प्रहरिति। कृष्ण: प्राह-व्यवनिरियं कस्मान्निर्गच्छति? श्रीप्रेमेव श्रुगालो बृहते पार्श्ववर्तिनो गृहे पुष्टि चैका समुद्वन्ना वत्तेन-ते मामाहू वयन्ति-इत्युक्तवा श्रुगालः शीघ्रं हस्य-पृष्ठं गत: श्राकड़ं मधु पीतवा प्रतिनिवृत्तः।

कृष्णो बृहते-बालिकाया: किं नाम कृतम्? श्रुगालः प्राह "कम बचा" इति नाम कृतम्। तृतीये दिने पुनः भिति श्रुगालः प्रहरिति। कृष्ण: पुनः प्राह-कस्मात्वद्वनिरियं निर्गच्छति? श्रुगालो बृहते-पार्श्ववर्तिनो गृहे पुष्टि चैका समुद्वन्ना। ते मामाहू वयन्ति। इत्युक्तवा हस्य-पृष्ठं गतवा सर्व मधु पप्पो। निबृत्य याबद्धागच्छति तावतू और्ख्योः कथितं-किष्माम कृतं पुष्यः। श्रुगालः प्राह "सफाचट" इति नाम कृतम्।

किर्मिचकालानन्तरं और्ख्यस्येच्छा मधुपानानाथं ज्ञाता । स याबद्ध हस्य-पृष्ठं गच्छति तथा पक्षमिः-सर्व मधु केन चतितम्? इति विचारः और्ख्यः प्राहः रे श्रुगालः। तवया सर्व मधु चतितम्। प्राहं स्वाम हस्य-प्रविष्टे-इत्युक्तवा और्ख्यः। तं प्रति प्रधावितः परं चतुर: श्रुगालः प्रवाहवन् शीघ्रं मेव निकुञ्जे विलंबः स्वकालं यापयामास ।
रीछ ने कहा—उस पुत्र का क्या नाम रक्खा? श्रृगाल ने उत्तर दिया—उसका नाम "कम-कम-खुरचा" रक्खा गया है। दूसरे दिन खाट पर बैठकर श्रृगाल बप्पनी पूछ ये फिर दीवार पर चेक चारता है। रीछ ने कहा—यह श्रावाज कहां से श्रा रही है? शीघ्र ही श्रृगाल ने कहा—पास के घर में एक पुत्री उत्पन्न हुई है वे मुझे बुला रहे हैं। ऐसा कह कर श्रृगाल शीघ्र ही छुट पर गया। पेट भर शहद पीकर लौट गया।

रीछ ने कहा—बालिका का क्या नाम रक्खा? श्रृगाल ने कहा—"कम-बचा" यह नाम रक्खा। तीसरे दिन फिर दीवार पर श्रृगाल ने चोट मारी। रीछ ने फिर कहा—यह श्रावाज कहां से श्रा रही है? श्रृगाल ने कहा—पास के घर में एक पुत्री उत्पन्न हुई है। वे मुझे बुला रहे हैं। ऐसा कहकर वह छुट पर गया श्रीर सारा शहद पी गया। लोट कर जब बाया तब रीछ ने कहा—पुत्री का क्या नाम रक्खा? श्रृगाल ने कहा—"सफाचट" यह नाम रक्खा है।

कुछ समय के बाद रीछ की इच्छा शहद खाने की हुई। वह जब छुट पर जाता है श्रीर देखता है कि सारा शहद कौन चट कर गया? ऐसा सोचकर रीछ ने कहा—श्रीर श्रृगाल! तू सारा शहद चाट गया। मैं तुम्हें मारूंगा—ऐसा कहकर वह श्रृगाल पर लपका फरलू चतुर श्रृगाल दौड़ता हुआ भाड़ियों में छिप गया श्रीर बप्पना समय बिताते लगा।
ब्रम्हं देश का एक व्यापारी था। उसका नौकर परिश्रम तथा
सत्यवादी था। वह रातदिन काफे करता हुआ दफना सयया जितता था।
एक वर्ष तक काम करते पर भी व्यापारी ने उसे बेतन नहीं दिया। वह लोग कर कि नौकर बेतन लेकर कहीं चला न जाय। दूसरे तरफ दीसरे
वर्ष भी व्यापारी ने बेतन नहीं दिया। प्रत्येक में नौकर ने मन में विचार
किया और कहा—मुझे वहाँ काम करते हुए तीन वर्ष व्यतीत हो गये
hे परन्तु डाॅज तक धार्मने बेतन नहीं दिया। मैं दूसरी जगह जाना
चाहता हूँ।

व्यापारी कंजूस था। उसने तीन पैसे निकाल कर दिये। नौकर
पस्त्य होकर बंग रासे से गा रहा था। रासे में एक बीना खिला
और उसने कहने लगा। भाव बहुत खुश कहते हैं प्रापको कोई चिंता ही
नहीं है। नौकर ने कहा—मैं स्वस्थ हूँ, युवक हूँ, मेरे पास बेतन है।
बीसे ने कहा—मैं आई! मैं निर्वहन हूँ और बुड़ हूँ। तुम्हारा बेतन मुझे
दे दो। इस दिन नौकर ने बीसे को बेतन दे दिया। उसकी उदारता
वाला प्रसन्न होता हुआ कहने लगा। मैं तीन वर्ष देकर तुम्हारा
स्वस्त करना बुढ़ाता हूँ, वर्दन माँगौं। नौकर ने कहा—मुझे गुलेल
दो। दूसरे वर्ष में एक श्राब्जी को जिसकी जीविते से लोग नाचने लगे।
तीसरे वर्ष में—मेरी श्राब्जी कमी निकल न हो। ऐसा ही हो—
यह कह कर बीसे अनुप्रयोग हो गया।

इस व्यक्ति ने जाते हुए सारे में वृंच के बीच एक ग्रामी को देखा
जो डाली पर बैठे पक्षी को देख रहा था। नौकर को देखकर इस व्यक्ति
ने कहा—यदि तू इस पक्षी को मार कर गिरा देगा तो मैं तेरा स्वस्त
करूँगा। उसने गुलेल से पक्षी को पृथी पर गिरा दिया। पुस्कार
नहीं दे सकने के कारण वह व्यक्ति लवक्षित हुआ और माँगा था?
गया। नौकर ने दफना सारांगी बजाई। सारांगी की धावाज मुझे
वह नाचने लगा। कांडे से उसका शरीर पायल हो गया। वह दिलाता
हुआ कहने लगा—क्या करने के सारांगी मत बजाओ। वह सोने की
मोरों को बैली लो और सारांगी बजाना वचन करो।

मोरों की बैली को लेकर नौकर चा रहा था। पीछे से दौड़े
hुए व्यक्ति ने उच्च त्वर से कहा—प्रत्येक धूल ठहरो—तुम्हें मैं दिलाता
hूआ वह जज से कहने लगा—इस कुष्ट
श्रान्तिदेकः शर्मान्देशस्य व्यवसायः। तस्य भूतःपरिसंभवितः सत्यःब्राह्मणः। स राजनिष्ठः कार्यः प्रकृतिवृत्तूः समयवित्वाह्यति समः। वर्षेमेकं कार्यं प्रकृतुवेने तस्मै व्यवसायी वेतनं न प्रायःच्छः यतो हि मूःतः वेतनं नीत्वा कुञ्जचिद्ध गमिष्यति। द्वितीये तथा तृतीये वर्षाणि व्यवसायी वेतनं न प्रायःच्छः। तत्रते मृत्यो मनस्य व्याचर्यादक्ष्यत्च समाः। कार्यं प्रकृतुवः तीर्थिं वर्षाणि व्यतीतानि परम्परावर्धं तत्त्वा वेतनं न प्रदत्तम्। प्रहस्यत्च गन्तुमिष्यतं।

व्यवसायी कुःपएशाचारीतः। स श्रीम पणानु निष्कायः प्रायःच्छः।
भूतः व्रजस्वी मृत्यु वनराग्निगणं गच्छस्वास्तोतः। भागं वामनशचेक्षतम्पूर्णाः। कथां महाभारतं भूमं प्रवर्धितं च। चिन्ताविरहिताः। भूतः प्राह—स्वस्त्रोऽहुः युधिष्ठिरः, महायाजवान्कं वेतनं बदते। वामनः प्राह प्राहः। निर्धनोऽहुः, वृद्धाः, महाः देहिः तव वेतनम्। द्वालुर्सी वामनाय वेतनं प्रायःच्छः।

tस्यदये वामनसुल्टः। भूतः प्राह—वर्षाये। सत्करोऽस्मि त्वामाः, वाचस्वः।
भूतः प्राह—कगमारकं (गुलेल) प्रायःच्छ। द्वितीयवर्षे वायुवनस्मेकं
प्रायःच्छ येन जना नित्तं। स्थूः। तुलीये वरे—मदीया प्रार्थना कदापि
निष्फला न स्यात्। एवमस्तु हित्युक्तवा वामनश्वास्तुद्वैः।

गन्धाक्रसी मार्गस्य वृक्षाथ्यस्तानामयीकरणां विस्तारप्रयत्नः। शालाकंतं कगम—
बलोकयति समः। भूतः विलोक्यः जतेनान्तेन कथितं यदि तवं खगमेन् हुत्वा
पाठविष्यति वेदवामस्तं सत्करिष्यामि। कगमारकेन स खगं भूतः न्यायात—
यत्। गुरुस्कारप्रदानामानावेन लिजजतो विजुलपन्तुः निकुञ्जेष्व विलुप्तः: सः।
भूतः स्वच्छायस्तवाद्युततः वायुनःध्वनि भुवा स नित्तुमारिः। कण्ठकैस्तस्य
शरीरं रश्वक्षं स्तरां रश्वक्ष्यर्य स्मुः॥। वीर्य न स प्राह—क्षिप्या
वायुनाग्रावति मा कुः। मर्त्यार्थिनिर्माण गुहाण निवारिः वायुवादनम्।

स्वर्णिनिकरं नीत्वा भूतः प्रचलितास्ते। पुग्धतः प्राचवच जनः
प्रोचवचाच विष्ठे र वर्ते। तलामहं न्यायालये दर्शिष्यामि। चीतुरन्तः
स न्यायार्थिष्प प्राह—हुष्टेनान्तेन सम कर्मनिकरं पुग्धित निगृहः त कारा—
गारे निक्षिपतु मवान्। निगृहीतो भृत्यः प्राहः—मया नास्य स्वर्णनिकरं गृहीतं स्वेच्छयः चानेनैव प्रवत्तम् मया तु केवलं वाचयन्त्रं वादितम्। क्रुपसां जनं तत्स्वभावं च विलोक्य व्यायाधिपो मृत्येवेव दोषभागिनमपि। न्यायाधिपस्तद्धमागारिष्टवान्।

भृत्यः सूतागृहमानीतं। स न्यायाधिपस्ववदत्—मरणात्यूँ पूरय सदीयामिक्ष्याम्। न्यायाधिपः प्राहः—कारसि त्वान्तिमेष्टा। भृत्यः प्रोवाच—प्राहं मम वाचयन्त्रं वादयतुमिक्ष्यामि। न्यायाधिपात्यूँ चीतकु-वेन्तु जनः प्राहः—नाशापयतु मवान् वाचयन्त्रं वादयित्तम्। न्यायाधिपः प्रोवाच—प्रत्तितमेष्टा तु पूरणीया वराक्ष्याय।

वाचयन्त्रक्ष्यानि श्रूत्वा सर्वं नस्तितुमारत्वा। वधिकोषपि नस्तितु-मारे। एवमुत्कूर्तस्तं भृशं परिश्रमिता। क्षमायाचनं कुर्वन् न्यायाधिपः प्राहः—प्राहं त्वं प्राष्णात्मेण सत्करिष्यामि, निवारयं वाचयल्पादनम्।

भृत्यः प्रह्ष्यितः सन्तं जनं प्राह—सत्यं वद—त्वंया कुतः समासाधितम् कन्तकनिकरसम्। जनोद्यं कम्पत्वान् प्राहं—मयं तु कन्तकनिकरं चोरितं परं मवता तु स्वकलया, समासाधितम्। न्यायाधिपः स्तं चौं चारं काराकारे न्यक्षिपतु भृत्योप्य प्रह्ष्यितः कन्तकनिकरं गृहीतवा स्ववृहु गतः।
ने मेरा सोना लूट लिया है प्राप्त इसे पकड़ कर जेल में डालिये। बल्दी बनाये गये नौकर ने कहा–मैंने इसका सोना। नहीं लिया बल्कि इसने अपनी इच्छा से यह सोना मुम्बे दिया है मैंने तो केवल सारंगी बजाई थी। उस क्रजस्व ब्यक्ति के स्वभाव को देखकर जज ने नौकर को ही दोषी ठहराया। जज ने नौकर को फांसी देने का श्रद्धांजलि दिया।

नौकर को फांसी घर में लाया गया। नौकर ने जज को कहा। मरने से पहले मेरी एक इच्छा पूरी करो। जज ने कहा–तुम्हारी अन्तिम इच्छा क्या है? नौकर ने कहा–मैं मेरी सारंगी बजाना चाहता हूँ। जज के बोलने से पहले ही उस ब्यक्ति ने चिल्लाते हुये कहा–प्राप्त इसे सारंगी बजाने की श्रद्धांजलि मत दो। जज ने कहा–बेचारे को अपनी अन्तिम इच्छा तो पूरी करने दो।

सारंगी की श्रद्धांजलि सुनकर सभी नाचने लगे। जल्लाद भी नाचने लगा इस प्रकार नाचते नाचते वे थक गये। क्षमा मांगते हुए जज ने कहा मैं प्राप्त देकर तुम्हारा सलाह करता हूं तुम सारंगी बजाना रोको।

नौकर प्रसन्न होता हुआ उस ब्यक्ति को कहने लगा। सत्य बोलो। तुम्हें यह सोना कहां से मिला। कापते हुए उस ब्यक्ति ने कहा भीने सोना चोरा है परत्तु प्राप्त णे अपनी कला से सोना प्राप्त किया है। जज ने उस चोर को जेल में डाल दिया। नौकर बहुत प्रसन्न हुए शरीर सोना लेकर अपने घर गया।


24. कुमारी वाह वाह

मलाया की श्रेष्ठकथा

पहले मलाया देश में एक पुरुष रहता था। उसकी एक रंगी तथा एक पुनी थी। बचपन से ही माता-पिता अपनी पुनी की प्रसाद किया करते थे। इस संसार में वाह-बाह जैसी सृजन शालिका नहीं है। अपनो प्रशंसा सुनकर उसे सी प्रसिद्ध मोहा। बहुत बर्ष व्यतीत हो गए। माता-पिता ने विचार किया कन्या के लिए किसी रूप श्रीर योद्धन से युक्त वर की श्रावधक्कता है।

श्रेष्ठ लोग विवाहहेतु कन्या की याचना करने श्रावे परन्तु कन्या खिड़की से ही कहा देती थी—यह वर मुखे पतिन नहीं है। ठीक समय पर कन्या का विवाह नहीं हुआ—यह देखकर सभी लोग चिन्तित थे। बहुत दिनों बाद, जब श्रेष्ठो माता-राज्यों में बैठी थीं, कन्या ने कहा कि मैं ने विवाह करने का निश्चय कर लिया है। मैं चमकी ले सूर्य के साथ विवाह करूंगी।

माता श्रावधक्क में पड़ गई श्रीर और कन्या से कहने लगी, कहां भगवान सूर्य और कहां तुम। क्या श्रावधक्क किसी रंगी ने सूर्य से विवाह किया है? पुनी ने कहा—आप दोनों ने ही तो पहले कहा था कि इस पृथ्वी पर तुम्हारे समान कोई सूर्य नहीं है। यदि मैं विवाह करूंगी तो सूर्य के साथ ही। रात थी माता पिता ने विचार किया कि हमसे अपने पैरों में स्वयं कुल्हाड़ी मारी है। इस कन्या का विवाह तो किसी कूर पुरुष के साथ कर देना थाहिए जिससे यह उसके वश में रहे रहे।

राशि में सभी सो गये। प्रातःकाल देखा कि कन्या अपने कसरे में नहीं है। सभी लोग चिन्तित होकर उसे दूंढ़ने को घूमे किन्तु कन्या नहीं मिली। कन्या सूर्य को वरणा करने के लिए चल पड़ी थी। श्रेष्ठ दूर-दूर वह बचने को पार करती हुई परन्तु गृह में सूर्य उसकी दृष्टि से ग्रेस्टल हो गया। कन्या ने प्रतिज्ञा की कि मैं सूर्य के साथ ही विवाह करूंगी। इससे दिन सूर्य के तेज प्रकाश से जलती हुई थी। दूर-दूर वह कन्या अपना प्रसिद्ध माता तक नहीं लयाम थी। दिन सूर्य के तेज प्रकाश से उसकी
कुमारी वाह-वाह

मलायावेदन्य श्रेष्ठकथा

पुरा मलायादेशे एकः पुष्पो न्यवसति। तस्य तेजः चंका सुम्भा चासीति। बाल्यादेशे तौ स्वपुर्या: प्रांशासमकुश्लाम्। नासिन्न लोके वाहू वाहसह महासुन्दरी बालिका वर्तते। स्वप्राप्तसां श्रृवंकती साप्तभिमानिनी सम्भजाता। ब्रह्म वर्षीर्षि ध्वन्तीतानि। वाहू-वाहू रुपयोवनसप्पञ्चा सम्भजाता। पितारी व्यनित्वतात्मः कन्यायः कुले रुपयोवनसप्पञ्चस्य वर्यावशिष्यकतः वर्तते।

विवाहाकुं श्रीमके जने कन्या याचितुमागच्छन् परं गवाहातन्त्राया जूले-नाग वरो महां रोचते। विवाहसप्तपुरुषे कार्याणि कन्याया विवाहो न सम्भवत इति विलोक्य सवें जना चिन्तितावचासन्। बहुदिनान्तरं कन्या महानसे एकाकारिन्स्य समातरं प्रोवेच भया विवाहस्य निशच्यः कृतोपस्तः। श्रीम क्षशामाने सूर्येऽना सह विवाहूं करिष्यामि। श्रास्त्रमेच-व्यक्तित जननी स्वतन्त्राय प्राहस: कऽ भागवान् सूर्यः केव तवसः। किमचाथिरि क्यापूर्णे सहां विवाह कृतः? पुज्ञो प्राहस: भवतोम्यामेव पूर्वं कथित-मासीवासस्ति लक्ष्ममा कार्यास्ति सूर्येऽने सुवन्तत्वः। यद्यहूं विवाहं करिष्यामि तथे सूर्येऽने साकमेव। राजा चिन्तितां सितारी ध्वचारयात्मः प्रावास्यां स्वयंमेव स्वपाद्योः कुटाराधातः कृतः। प्रस्या विवाहस्य केनापि कृते रेण सह कंत्यः वेणेयं तस्य वशविच्वतिनी स्वजीविन्यायपेतेः।

राजा सर्व प्रस्यातः। राजदृश्यं यत्थूऽ स्वंक्ष्याय नासित। चिन्तिताः सर्वेदार्थं प्राज्ञाय अभमुखे परं नासार्यायामसुः। कन्या सूर्येऽने वरणारी प्राचरलोव गहनगीरिकानाम्यन्तिवाहं परम्नाति गत्वा भृगुया ह्येटरिगोचरः सम्भायाः। साध्विनागतवाति सूर्येऽने साकमेव विवाहं करिष्ये। श्रष्टि दिनें सूर्यस्य तीक्ष्यप्रकाशेण प्रज्ञालनी साह विष्ञ्वलापि स्वाभिमानं न जावः। सूर्यस्य तीक्ष्यप्रकाशे तस्या नेत्रभयोति विलुप्ता। पषभृष्टा सा प्रज्ञालनी गाते काने विलुप्ता। भयानुः सा चोलुम्बी व्यलपत्त्या हन्त। इत्यः स्वघुमेव अर्जुनिक्ष्यामि, मातरं पुष्च्छामि-कथमहं
विपक्षस्वता सम्बन्धाता?। नेयमध्य ताधुः रूपवती सम्प्रति सा कुर्क्रा सम्बन्धाता । न ताय कोषपि परम्परिनिवृत्त । तस्या गर्द्धपि विनिष्ठः । वानरी-भिवाकृति वसाना सा वृद्धेऽए साक्षे विवाहं कुलवती ।

सर्वेन जना स्तां वानरीति नाम्ना प्रावोधनः । सां तृष्णामेव तस्थो स्वाजीवनमध्य व्यतीयाय । तस्याः सन्ततयो मर्कटाकृत्यश्चासनः । यदि सब्बतिः स्तत्मिन्नू देशे गमिष्यतिः तहः तत्र हक्यन्तिः यत्त्र वुक्कमुर्पविशय सा वाचापि सूयः ब्यन्ती तिष्ठतीति तत्रत्यानां विश्वासः ।
नेत्रों की ज्योति लुप्त हो गई। रास्ता भूलकर वह कन्या किसी स्वयंकर वन में खो गई। भयभीत होकर चिल्लाती हुई कन्या विलाप करते लगी कि हा! मैं ग्रापने घर जाना चाहती हूं—माता को पूजूंगी—सुभ पर विपत्ति क्यों ब्राह्मण?। ग्राप यह कन्या उतनी सुंदर भी नहीं रह गई थी। उसे कोई भी न पहचान सका। उसका श्रविष्मान भी समाप्त हो गया।
बन्दरों की तरह श्राकृति वाली। उस कन्या ने श्राकिर एक वृद्ध से विवाह किया।

सभी लोग उस कन्या को वानरी के नाम से पुकारते थे। वह चुपचाप ही रहती ग्राप न जीवन व्यतीत करती थी। उसकी सन्तानें भी बन्दर की श्राकृति की थीं। यदि ग्राप उस देश में जाके तो देखेंगे कि वह कन्या बहां श्राज भी वृक्ष पर बैठकर सूर्य को पुकारती हुई बैठी रहती है—बहां के लोगों का ऐसा विश्वास है।
२६. "विधातु विवेकः"

इंग्रजीतेश्वर स्वेतकाहार

एकसिध्वासने तरिसः सखःः (एका हंसिनी, एका कुकुटी, एका वर्तकी) न्यवसने। तिसः एवातम्यां बुद्धिमयोधमान्यता व वर्तकी प्राहः
शारीरं तु मद्दिन्य सुदर्दं किंतु स्वपादयो देशां विलोकः विधातुः वुः बिधितं प्रत्युदासीनाहिः।

कुकुटी प्राहः-श्रुतमपि विधातुः बुः बिधितं शये, रूणं तु मद्दिन्य मलो
हरं परं वाचिः 'कुकुटी-कू' कर्कशा विढःते। यदा कोपिः सीतागानाय कथ-
यति तदा भ्रमवंशाप्रत्यपर्वर्धनी निसर्जति।

प्रते हंसिनी प्रोत्साह-स्वतःः। सबवली सवं सवं तुवं निवेदया-
नासतुः। मद्दिन्य सुखः लक्ष्यं का कथा। मम पेदेहे विपुलनाः केशानुपात
विधातुः कं बुः बिधिता? यदा जनं मा प्रहुस्ति तदा मम केशानीचं समु-
लायतमति। इत्यं तिःः सक्षयो विक्रस्वविधातां दौषे गाधिपणुः।

एकदा विधाता विक्रस्वविधाताम निर्गच्छत। आत्मनित्यं श्रुतः वा
विधाता विक्रस्वविधाता व्रहः-श्रवः। प्रातार्यं पूवर्ष्यं दिविः मुखः करतः, नेने
निमिलो तिष्ठत दुःखार्यणव्र प्रकारपयत सर्वसां मनोरथनाः पृति भैविग-
यति। ब्रह्मणो वचनं निश्चयं सर्वसताः। प्रहुस्ताः: यथा-कथाकिंचित्तादिहं
याप्पमासुः।

प्रत्यंश्ये सम्जाते सर्वसतंथवाकार्वेनुः। सर्वसताः पूवर्णमनोरस्तः
सम्जाताः। हंसिनी केशविर्हित स्वशारीरं वीक्षण, कुकुटी मधुरं वायणं
तथा वर्तकी स्वशारीरं वीक्षण मूः प्रहुस्ताः।

किन्नितानानंतरं हंसिनी द्वायाखुपविष्टवा परं सा शोतनं
चुह्वोः। सा समुखं तरिः मृणं शुद्धवोः। हंस: कुकुटी द्वायाधवासना-
हृर्दयत्र 'द्रिद्धि द्विः टुट न न न नी' चाचते। प्रहुस्तपूवव्यं ध्वनिः मुख्ता
शावकम दूरं पल्लवत:-ः। इतो वर्तकी कौरवस्त्री स्मारानां सरोवरं प्रविष्ठा
किन्तु ततैः नापायमास। तिःः सध्यं मृणं प्रतत्ता: पुनः पूवर्ष्यं दिविः
मुखं कुत्त्रा विधातां प्रापायत्तत्वः। विधातुः: कण्या तापतवत्तसम्प्रजाता:
धार्मिकनेव तासामिच्छापूवत्वत्रिः। तिस्सोभिः सध्यं स्वाधीन्य नुः साहूः
याप्पमासुः।
24. विधाता का विवेक

इंग्लिश की श्रेष्ठ कथा

किसी निज़ीन वन में तीन सखियाँ (एक हुसी, एक मूर्गी, एक बतकी) रहती थीं। वे तीनों ही स्वयं को बुद्धिमत्ता मानतीं थीं। बतकी ने कहा—वारी पर मेरा सुनदर है किन्तु अपने पैरों की हालत देखकर विधाता की बुद्धिमत्ता पर मुझे दया भाती है।

मूर्गी ने कहा—मैं सी विधाता की बुद्धिमत्ता पर हंसती हुई। रूप तो मेरा सुनदर है किन्तु वास्तवी “कूहक़ुदू कूँ” जैसी हक्काघर है। जब कोई गीत गाने के लिए कहता है तब मेरे मुंह से फटे बांस की तरह भ्रावाज निकलती है।

बतकी में हुसी ने कहा—बहनो! तुम दोनों ने अपना अपना दुख हुनाया। मेरे दुख का तो कहता ही क्या? मेरे शरीर में इतने अशुद्धियों उत्पन्न कर विधाता ने मेरी सी बुद्धिमत्ता प्रकट की है। जब लोग मुझे पकड़ते हैं तब मेरे शरीर को मैं उतारा देते हूँ। इस प्रकार तीनों सखियाँ विश्व के बनाये अली विधाता को देख देंगे लागी।

एक दिन विधाता विश्व अभयारण के लिए निकले। अपनी निर्देशन कर विधाता ने हुसी कर कहा—वह ग्रीत्वथा सुरू कर दिशा की ओर मुख करके, पांस बन्द कर खड़े रहकर अपनी इलाज प्रकट करें तुम सबकी इलाजाली की पूर्ति होगी। बतकी के वचनों को मुनाकर वे सभी प्रसाद हुईं। जैसे तैसे उन्होंने वह दिन तो बिताया।

वारी होने पर सभी ने बेहतर ही किया। सभी की मन की हिरासत पूरी हो गई। हुसी के अन्तिम रात्रि अपने शरीर को देखकर, अपने अपनी मधुर भ्रावाज को देखकर कुछ वर्तकी अपने पैरों को देख फर बहुत प्रसाद हुई।

कुछ समय बाद हुसी की दीया में भैंटी रात्रि वह सभी ने तिहर गये खिलाने लगे। इस समय हुसी मुख्तंता पर बहुत दुख निकला। इतने दुरुस्ती गायन को “टिट टिट दुं, दुं दुं ना ना नी” कहते पुकार रहित थी। इस व्यवस्था के उसकी सत्ताओं के लिए उसकी हालत नहीं सुना था—बतकी से व्यवस्था कर दूर भाग गई। इतर बतकी बड़ी हुई स्वान के लिए सरोवर में गई। इसके तौर पर तो नहीं। दोनों सखियाँ बहुत दुखी होकर, पूर्व की ओर मुख करके विधाता से प्रार्थना करते लगी। विधाता को कहा दे वह पहले की तरह हो गई। भाष्य है हिन्दी इलाज की पूर्ति हुई। दोनों सखियाँ ने पुनः अपना जोर सुखस्वरूप विधाता।
एकदा मृगपति: स्वज्ञेष्ट्ट्युतमवादीम्—तात ! कोंपि न जानाति यदि कदा सिंधे ? पक्षश्चांस्युद्धमास‍कदा भूवि चापतिष्ठति को वेति ?
मन्मृत्युरूप्तलं तवेव कान्तनस्त्रस्त्व शासन करिष्टीति विचारस्य पूर्वसेव सुयोगी भव। शासनस्य राजसुद्राँ तव जनि जिता चारिस्मलेव सुवा साध्यात्: दुमांद्रुबहि: किमपि न तव वेति। अतश्रास्मिन्दुवहिनित्यावलोकेय प्रजानां समस्या:-
लोकमय्यां जनभारानाच। ज्ञानभर्य लोक-व्यवहारस्य।

चूर्णपितु बच्चनाति शुक्ला सिर्द्धिः: यवस्यो जातो राजगृहनित्यन्त-शास्त्रस्तमानमुद्रां लाल्याधिकार।।
दुमांद्रुबहि: राजसो नवत्वं सम्क्षत् न पर्याचिनोत्त। पर्याचिकस्तः राजभवनां संक्षरक्षितस्मूहः इव, विरूपान्तः
इव। स न पर्याचिनोदु बुद्धिमत्तं मेधाविन्यजनं हुपि तु मूर्खसंगतिः समाप्तिः।।

स गर्दभमंगली चानन्दमन्त्रवन्नालेः। राजकूलस्य सम्प्रज्ञारकं चार्य गर्दभा सुमुद्धेतामामो सिर्द्धिःशुरुपि समुखः तस्तस। सहस्वकालं याप्यवास्।।
सन्तो शत्रु रत्निशिवशो: तस्मां कार्यकलापा गर्दभमिव सम्भवता:।।
एकदा अभ्रमस्य शूकवस्तिः जगाम सब शूकवच्चित्तेष्ट।।

एकवर्षिन्तयं स पितूः पाषवमापेदेः। युवराजस्य सवं चतुर्जातं शुक्लवा चेष्टिति नावं विलोक्य सं भृः शूशोऽच।।
पितुर्‌्रिकार्यं शत्रुवा युवराजः: प्राह—वधिष्केव सवानातान्मुद्रे पातः पातयति। श्रवं सुभोजयो नृपो
भवितं, कौशलेन च राजकृत्यस्य सम्चालनं करिष्ट्वान्ति। श्रवं नितर्वान्
बुद्धिमात्रेभुजरो धूर्तर्वेष्ट च सम्भवतः।। स्वसुस्त्रस्यायम्‌सरसमाकपक्ष्यं भृगुपति:। सत्तुष्टं नवाजः कृतं: समासातिता शुरुकाश्चिते तवमाः।।
युवराजो शूके—
गर्दभार्यां शूकरायार्को संसिद्विवष्मे स्वसस्य।।

तथ्यथुता मृगपतिभूषां संकुः: समोवाच—ग्रहे बालिश ! न त्वमा
मस्तकमनासुतां बुधजना निषेधिताः।। न त्वमा मद्यशिक्षोत्तराधिकारी
सिंह प्रोट उसका पुत्र

दाना को अंटकक कथा

एक बार सिंह ने भापने बड़े पुत्र से कहा—पुत्र ! कोई नहीं जानता कि मैं कब रहा हूँ । कौन जानता है कि पका हुआ श्राम कब पूँछी पर निरंजन । मैं ने मृत्यु के बाद तुम इस वन का शासन सम्भाला गया—यह सीधे कुठे योग्य बना चाहिए । इस राजस्वन में तुम्हारा जन्म हुआ और इसी में तुम युवा हुए । तुम यह गर्व जाते कि किरदेके बाहर क्या हो रहा है ? तुम ने किरदेके बाहर निकलकर प्रजाओं की समस्याओं की देखी, लोकमतों का निरीक्षण करो, जनभावना को समझो । लोकव्यक्ति का ज्ञान प्राप्त करो ।

ब्रह्म पिता के बच्चों को सुनकर सिंह का पुत्र प्रसन्न हुआ, राजभवन के निरंजन से स्वयं मुक्त होने के लिए वह लालाखित था । दुर्भाग्य से वह राजा की भावना को प्रभावित तरह नहीं समझ सका । प्रभ युक्त था, वह युक्त करना चाहिए ? यह सोचता हुआ, सीधे तरह उस राजस्वन से निकल पड़ा । उसने किसी निदमान् व्यक्ति को नहीं दूंबा बल्कि वह मूसों की संगति में बा पड़ा ।

वह गांवों की संगति में प्राणवन का प्रणवन करने लगा । राजभवन के धन सम्पत्ति राजपुत्र को पाकर गांवों बहुत प्रसन्न हुए । सिंह का पुत्र भी सुखपूर्वक उनके साथ प्रभाव समय बिताने लगा । वह ने सिंह पुत्र के सभी ब्रजा-कलाप गांवों जैसे ही हो जाये । एक बार वह भूमिया बुद्धिमान् व्यक्ति को नहीं दूंबा बल्कि वह गांवों की संगति में बा पड़ा ।

एक वर्ष बाद वह पिता के पास जूता । युवराज के सभी भावनाओं एवं कार्यकलापों का देख कर वह बहुत दुखी हुआ । पिता के भावनाओं का समझ कर युवराज ने कहा—घर में प्राण प्रथम में तुझी कर रहे हैं । मैं सुधिमान् राजा बनूंगा, भवानी से राज्य के कार्यों का समाप्तिकरण करूंगा । मैं बहुत ही विदमान्, चतुरु-घरू गो गया हूँ । अपने पुत्र की आत्मसंकल्पना सुनकर सिंह प्रसन्न होता हुआ बोला—वे गुरुए तुझे कहाँ से प्राप्त किये ? । युवराज कहता है—गांवों व सूखरों की सभी में मैं एक वर्ष तक रहा ।

यह सुन कर सिंह को बहुत कोष्ठ प्रभाव प्रोट बोला—प्राये सुख् । त मेरे कथानुसार विद्वानों के पास नहीं गया, तु मेरे राज्य का उत्तरा—
भविष्यसि, गच्छ चास्माश्रीचैः सहो चानन्दमनुभवत्कालेष्यं कुरु । स्वपितरं सन्तप्तं विलोक्य चात्मग्लानिना सन्तप्तोन्यं युवराजः प्रेरितः पुनः सहजनानन्वेष्ट्वम् । कृशला बुद्धिमन्त्रो जना युवराजं न तुष्टुवः । गुरुगौरं स्तस्तस्य भर्तीनामेव व्यद्धुः ।

बुद्धिमत्ता चोलकेन स मिलितः । उल्लक्षस्तमशिक्ष्यायत्—विपदि वैयं वा यार्य पुञ्जकः शक्तिरहिते सत्यपि परिष्कर्मवास्यांसः कुरु य प्रहुमशक्षीकायां दिनचयां विलोक्य युवराजस्वास्थ्यचरितः सम्भाजः प्रहो ! प्रहरिनिर्माले परोपकरणे प्रवृत्तः । इत्यं सत्तुष्टं सनूः सः पितुः पार्शवं माजगाम । मृगपति: सूक्षमेशक्षया स्वसुते व्यवहारपरिवर्तनं व्यलोकयत्। तत्त्संगतो स भुजकालं याप्यामासः ।

एकदा मृगपति युवराजं स्वपाश्वेशमाकार्यं प्रोकावच—श्रागच्छ पुष्टः ! प्रहार्गच्छ। सम जीवनस्त्यात्निम्: समयः सन्निकटो वर्तन्ते। प्रहो विश्वसिमि वाहूः यत्वं प्रजाताः। कुशः सूक्षमां व्यवस्थियाः नृपः सम्भाजः। राज्यसुखमनुभव, मदने भूयादिति कथयित्वा मृगपति: परासुरभवत्।
विकारी नहीं हो सकेगा, यहां से चला जा, नीचों के साथ ध्यान का प्रश्न करता हुआ धर्म प्रयास समय बिता। धर्म पिता को इस प्रकार दुःखी देखकर, स्वयं भी दुःखी वह राजकुमार फिर सजनों की खोज में निकला। कुशल एवं बुद्धिमान व्यक्तियों ने उसकी प्रशंसा नहीं की श्रद्धा की निन्दा ही की।

पहले वह बुद्धिमान उल्लू से मिला। उल्लू ने उसे शिक्षा दी विपत्ति में वे रखकर, हे पुत्र! शक्ति रहित होने पर परिवर्तन का प्रयास करो। मधुमक्खियों की दिनचर्या देखकर पुत्र शासन आश्चर्य चकित हो उठे गये। ये रातदिन परोपकार में लगे रहते हैं। इस प्रकार प्रसन्न होता हुआ वह राजकुमार पिता के पास भ्राया। सिंह ने बड़ी बारीकी से देखा कि उसके पुत्र के व्यक्तित्व में परिवर्तन हुआ है। धर्म पुत्र की संगति में वह बहुत समय तक रहा।

एक बार सिंह ने राजकुमार को धर्म पास बुलाकर कहा है पुत्र! इहाँ भ्रायो। मेरे जीवन का प्रतिम समय निकट है। मुम्मे भ्राज विश्वास हो गया है कि तुम भ्राकों के लिए सुयोग, कुशल एवं न्याय-प्रिय राजा बन चुके हो। तुम राज्यसूचक का प्रतिनिधि करो, तुम्हारा कल्याण हो। यह कह कर सिंह के प्राणपक्षे उड़ गये।
२८. तत्सत्याया: रहस्यम्

पोलैंडदेशस्य श्रेष्ठकथा

इति कथा तस्य सप्तयोग्यासीति, यदा सर्वो पश्चातो मेत्रीपुर्वे कृष्णस्य।
एकदा चैकस्मिस्मरसे कृक्कुराशवाचायनगरस्थानकृक्कुराशवाच भाषनमयान्।
जातिगतसम्बन्धने कृक्कुराशवान्त तथा गमनमाध्यमस्य लक्ष्यातमस् किंतु ते ते नासे
पाषवं महत्वपूर्णविन कर्मज्ञात्यासान्त। सुरक्षिते स्थाने कर्मज्ञानी निशिष्य
ते गतुमूच्छन्न िर पुनरात्मिति तत: पुरुषतिः स्थानम्। सर्वं विचारन्यान: संजाताताः।

कश्चिदता कृक्कुर: प्राहु—वघसम्मिल्लिष्ट िनन्दरे कर्मज्ञानी निशिष्य
गच्छाम: श्रन्ये प्रोचु:—नैतक्तकतुः शक्यते यताकौं रहस्यमेवेददु विषाणीयात्। द्वितीयः प्राहु—कोमिन्दः पाण्वे निशिष्य गच्छाम:। सर्वं प्रोचुः—
नैतकतुः यूक्त चौरस्त्रायं श्रेष्ठं। प्रप्रधः प्राहु रक्षापुरुषस्याने निशिष्य गच्छाम:। सर्वं प्रोचुः हृत्। श्रसमिनु युगे रक्षापुरुषवान्ति को विश्वासः?
श्रन्य: प्राहु—कथन वर्य कर्मज्ञानि सह्रेत्न नीत्वा प्रचलामः। द्वितीयः प्राहु—
नहिः, नहिः, सारां जलज्वरवेणे कर्मज्ञानि विन्न्दानिः भविष्यति।

तत्सः तत्सः नैतक्तेन बृहस्चेकः कृक्कुरो जोष्यस्यान्। सः: किच्चिद्दक्तुमयेष
सर्वं तत्सः दिशि नियनानि चिन्न्षुः। बृहः कृक्कुर: प्राहु—कर्मस्मिनरु
विश्वासितुः तु वर्य विवाहः। विश्वाससबसेत्रेत् जागत: कार्योऽरूपम् प्रवर्तति।
सर्वं प्राहुः—तत्तं सत्यं मते को विन्न्दासयोः। बृहः उताच—विन्न्दासेषु
विश्वासः कर्मणि:। तीत्रे धा स्वरेण सर्वं विरोधं प्राचकनु: परस्ते
पक्षविपस्ये मतग्रान्यु वस्त्रजातः। प्रववलहुमते सिद्धानाह्य कर्मज्ञानि
प्रदत्ताचि।

विन्न्दा: कर्मज्ञानि दु: प्रर्तीतानि परं तेषाः समकर्षायिः पेतां पुरुषायाः।
प्रश्च आसितः। ते समासायायायायः। एको विन्न्दा: द्वमतं प्रकटा—
कृक्कुराशु हृष्यपूर्णे कर्मज्ञानि निशिष्यन्तु भवस्तः। श्रन्य: प्रोक्तं—यदि
वर्णतं कर्मज्ञानि चार्द्रीकृत्र्ष्यविष्यति तत्ति कृक्कुराशवाचायनु विन्न्दाः
विष्यति। प्रप्रध: प्राहुः—भूलिनिः निशिष्यन्तु भवस्तः। कर्मज्ञानि। सर्वं
प्रोचुः—नहिः, नहिः, कर्मज्ञानि निन्न्दानिः भविष्यति। एको बृहस्चेकः
विन्न्दा: प्राहु—विन्न्दासेषु उपायविकर्षित यत्क्राहं ज्ञात्यायं कर्मज्ञानि पार्थिवानिः
कृमेज्यासमितिश्चरं रक्षा कर्मणि। सर्वं चैकस्मिस्मे प्राहु:—सादुसाधु,
साधु, एवमेव कर्मज्ञायम्।
२८. श्रद्धा का रहस्य

पोलेंड की अवधारणा

यह कथा उस समय की थी जब सभी पशु मित्रतापूर्वक रहते थे। एक बार किसी नगर में कुत्तों ने पशु पर नगर के कुत्तों को निम्नवाला दिया। जलितक-सम्बन्ध होने के कारण कुत्तों का भाग बाहर आवश्यक हो गया तिन्तु उनके पास महत्त्वपूर्ण वस्तावों थे। उन वस्तावों ने किसी किर्मिष्ठ स्थान पर रहकर जाना चाहते थे परन्तु वह चुराक था। सभी इस विचार में दूब गये।

किसी कुत्ते ने कहा—हमें इस पुराने मन्दिर में वस्ताव रखकर जाना चाहिए। दूसरे ने कहा—असा नहीं किया जा सकता क्योंकि इस रहस्य को कोई जान लेगा। दूसरे कुत्ते ने कहा—वस्तावों को सेट के पास रख कर हम बचें। सभी कुत्तों ने कहा—यह सेट चोर है, ऐसा करना ठीक नहीं। प्रथम कुत्ते ने कहा—इस वस्तावों को धारण में रखकर बचें। सभी कुत्तों ने कहा—इस गुप्त में सिपाहियों का क्या विश्वास ऐसे कुत्ते ने कहा—क्यों न हम इन वस्तावों को साथ लेकर ही चलें। दूसरे ने कहा—नहीं, रास्ते में वर्सी से वे वस्ताव नष्ट हो जायेंगे।

उस समय में एक बृद्ध कुत्ता जपचार बैठा था। उसके कुछ कहना चाहा—सभी ने उस प्रोत् धनी छोटा बाली। बृद्ध कुत्ते ने कहा—हमें किसी पूरी तरह विश्वास करना ही पड़ेगा। विश्वास के बल पर ही संसार के कार्य चलते हैं। सभी ने पूडा—तो श्रापके मत हे कोन विश्वास के योग है? बृद्ध कुत्ते ने कहा—विलियाँय पर विश्वास करना चाहिए। सभी ने तीनों स्वर से इसका विरोध किया परन्तु वस्ता में इस मत के पास विश्वास देने वाले विलियाँयों को वस्ताव सींपे गये।

विलियाँयों ने वस्ताव तो से लिये तिनतु उनके सामने भी उन वस्तावों की सुरक्षा का प्रयत्न उपरस्थित हो गया था। उन्होंने सभी दुआ दी। एक विलिया ने प्रश्नाये मत प्रकट किया कि श्राप छत पर वस्ताव रखे हैं। प्रथम विलिया ने कहा—यदि वर्षा-कूत्त में हमें वाणिज्य सींप गये तो कुत्ते हमें छाड़ खायेंगे। दूसरे विद्वान ने कहा—वाण वस्तावों को जमीन में गाड़ दें। सभी ने कहा—नहीं वस्ताव नष्ट हो जायेंगे। एक बृद्ध विद्वान ने कहा—कड़ी के सन्दूक में वस्ताव वालकर हमें बारी-बारी उनकी रक्षा करनी चाहिए। सभी ने एक स्वर से कहा—ठीक है, ठीक है, ऐसा ही करना चाहिए।
स्नेहजित्स्वा तथैव चन्द्रः। क्रमेन ते कर्जानां रक्षयन्तश्चासनः।
बहुनि दिनानि व्यपगतानि । प्राण्तः शीतकालः समागतः । नाशार्कविच
कुक्कुरा निवृत्ताः । दरभे शीते रात्रि जागतुः । ते काठल्यन्तमयवनः।
पुनरेका संसदाध्योजिता । एको विडालः प्राहः—कक्षन्न कर्जान्येततानि
गुप्तस्थाने निक्षेपथ्यानि र्य् इः । बृद्धो विडालः प्राहः शम्मते तु मृष्काः
एवं विलेषु कर्जानान्वि निक्षेपेः । बुद्धेनानेन साध्वक्तं, सर्वं तो ध्वनि
चित्तस्त ।

मुषकः स्ववक्तस्तेषां प्रस्तावः । विवरस्तु चैकस्मिन्मकोणे न्यक्षिपन्
ते कर्जानान्वि निश्चयन्ताश्च जाताः। क्रमः शोतस्य प्रभवो बृष्टिज्ञातः।
मूमिक्विवरेष्वपि मूषकः कप्पमानाश्चासनः। यदा शीतलशायाः से
कभुपुजया नाबिन्दनू तदेव गृहस्यकस्य मृष्कस्य इति: कर्जेछ्वपततः।
स प्राहः—कक्षन्न यवं कर्जेषु गृहः निर्माणिक्ष्यामः। इत्यत्र कुते सति निश्चयप्रच
शीताक्षा भविष्यति निमजजत्वा कुते तुः गृहस्यावधारः। श्रनया चोक्त्या ते
शरीर कर्जेषु चिपिषुः।

रिक्ते चित्ते दुबृः योभ्य भवन्ति । किविवङ्गननान्तरं ते कर्जानानि
कतिलुमारभन्तं यतो हि “स्वभावो मूर्धिन बरतेंते।” शीतकालोपि
व्यपगतः। बुमुखितात्से कर्जेजप्तार्थिणि भोवक्तुमारबवल्लतः। शनैः शनैः
पञ्चायपि समाप्तानि।

वसन्तत्त्वं समुपातेकुक्कुरः प्रतितनिबृत्ता:। सवब्रतः से स्वकर्जं
जान्यानेनु विडालवस्तौ तदन्तरं मृष्कविवरवमुःप्रा:। तत्र हण्डशः।
कतानि स्वकर्जान्येवलेोक्ये ते मृष्कः एकः। एकः ते मृष्केक्ष्माकः।
कक्षः। विडालेष्वपि ते चोगान्विता निपेतुः। यथाकथाभिन्तेषां
तात्कालिकं युधं तु समाप्तं किन्तु तंशं शाश्वतिको विरोधश्चाचावधि
प्रचलति।
सब ने मिलकर बैठा ही किया। बारी बारी से वे दस्तावेजों की रक्षा करने लगे। बहुत दिन बीत गये। सरदार में सरदार भाग गईं। कुछ अभी तक भी नहीं लौटे। सरदार सरदार, रात में जाने में, उन्हें कठिनाई का प्रभाव हुआ। फिर एक समय बुलाई गई। एक बिल्ली ने कहा—इन दस्तावेजों को गुप्त स्थान पर चला न रख दिया जाय। बृद्ध बिहारी ने कहा—मेरी राय में तो इन दस्तावेजों को चूहों के बिल में रख दिया जाय। सभी भोर से भावाज भाई, कि यह बृद्ध बिहारी, ठीक कह रहा है।

चूहों ने भी उनका प्रस्ताव मान लिया। उन्होंने दस्तावेज बिल के एक कौनी में हाल दिये भोर वे निर्दिष्ट हो गये। लगातार सरदार का प्रकोष्ठ बढ़ता ही गया। कभी के ब्रन्द बिल में चूहे कॉप रहे थे। जब सरदार से बचने का उस्त अपात नहीं मिला। तब एक झूठी चूहे की विडंड उन दस्तावेजों पर पड़ी। नहुं कहुं लगा—क्यों न हुम इन कागजों से घर बना ले? ऐसा करते पर निश्चित ही जुलाई, सरदार से रक्षा नहीं सकेगी। “डूबते हुए को तिनके का सहारा” इस उद्धरण के प्रसन्नार वे चूहे उन कागजों में बुझ गये।

“खाली मन शांत रहना का घर होता है।” कुछ दिनों बाद वे उन कागजों को काटते लग गये क्योंकि उनका यह स्वभाव ही है। सरदार सी बीत गई। जब उन्हें भूख लगी तब वे उन दस्तावेजों को खाने लग गये। बीते भीरे वे दस्तावेज समाप्त हो गये।

वसंत शृंखु के बाद पर कुछ बीते। सर्वप्रथम वे अपने दस्तावेज लाने बिहारीयों को बस्ती में गये, उसके बाद चूहों के बिल पर पड़े। चूहे आपने दस्तावेजों के टुकड़े देख कर उन्हें बहुत झिककर कोड आया। उन्होंने चूहों पर भागकर कर दिया। कोड में धारक वे बिहारीयों पर भी भागकर करते लगे। जिस किसी तरह उनका उस समय का युद्ध तो समाप्त हो गया किसका निर्देश चलने वाला विरोध भाज तक विस्मय हुए।
इष्टोत्तेश्यावेशस्य श्रेष्ठकाकाः

एकदा वोहारियानामः कशिच्छरी यासं कुवंनू कुपपाश्रेष्ठ-माज्ञागम। तत्र तेन भोजनं क्रतमः। जलमानेतुं गावतस कुप्पपाश्रेष्ठ-मागच्छस्ति तावस्तः कुपपान्तरातः। अजसवदक्षमृ हृदयः। यात्रच सुः कुपे विभोगवत्तमकरोत्तवावेष्ठपाम्। शूक्ष्मप्रापेतश्च भक्ति-विच्छजलमात्से। वोहारिया व्रजस्वेणि रज्जुमायोज्य विर्हीनिन्द्रासनयाय यल्लमकोरोः। तद्वैः कवित्वुः कुनामा व्यवहारी तथागतः यस्य पाश्चे बहुवश्वोप्ती प्रासनः। स वोहारियामुच्छस्तु श्रापि वत्सं त्वपिनानिवाराण्याशर्मांम जलमः। वोहारिया प्राहः कुपेदिश्चन्तु यज्ञिक्षिच्चालिं विचर्ते वस्तुतोस्यस्मावुः। ततस्मकमेव वोहारिया प्रजां विर्होनिन्न्तासितवान्। प्रजाः छठवा व्यवहारी प्राणयचकितः संवेदः।

कुनामा प्राहाः-कथमसितम् भूषे ब्रजः सम्यके तथ्यस्व बस्ता निद्रास्तः। वोहारिया प्राहाः-रात्रिः प्रजास्त्रं कुपेदिश्चन्तु श्रिवास्मि प्रातः क्रमा भ्रमा निश्चितेः, रज्जुवा तामां विर्हीनिन्द्रास्यामि। तस्महः कुनामा वर्णतः। सनू प्राहाः-यवि मत्याश्चेत्तिपि एततः। कुपो भविता तत्षि। किच्चित्वातान्तरं कुनामा बृः ते यवं तवं कुपेनम् महां प्रदास्यसि तत्षि। भवते प्रभुतमांनं दास्यामि। ब्रह्मेनांहूः कि कारिन्यानि-वोहारिया प्राहाः-एकस्मिन्नो कुपद्वासमात 365 भ्रमा: निःसरति। व्यवहारी मनसि व्याचारयत् यवंह पंडुर्य: कुपेनम् केष्मायम् तत्वंपि न कापि हर्नाः। कुनामा भूः ते, प्रहुस्थार्युः गृहाण्या, कुपेनम् महां प्रयच्छ। वोहारिया किमपि विचित्त्वानम् प्राहाः यवि तुम्यं रोचते कुपेयों तत्वं हृदयं गृहाण्या। कुनामा प्रहुष्टः। सनू प्राहाः-तव कल्याणं विद्व्योऽनु देवः। उष्ट्रानीतवा वोहारिया यदा सनामिष्येश तदा कुनामा तस्याभिधानम्पृच्छतु स प्रतिवदतः "मेंक ह्यांतोऽसुः।" इत्युक्तवा वोहारिया दक्षिणां दिश प्रति सत्त्वरेव प्रचारः। वोहारिया स्वस्वास्तविकः नाम नोचचारं "मैं कहा गाहूः" इत्यववत्—व्यवहारी रहस्यमञ्जाळैव मनसि प्रहुष्ट भ्रासीतः।

व्यवहारी सायने शृङ्गेश्वरे कूपे निपात्यामास। प्रातः यावतः कुपे प्रश्यति तावन्नकामजां तत्र छठवा व्याचारयत् कि मया
हुज्जदोनेशिया की ज्योतिषकथा

एक बार बोहारिया नामक कोई पुरुष यात्रा करता हुआ कुए के पास पहुँचा। वहां उसके भोजन किया। जब उन्होंने कुए के पास भ्रमण करते थे तब उन्होंने कुए के पास पहुँचने के बाद उन्होंने कुछ रोजमर्रा करते थे। बोहारिया ने बकरी के सींग में रस्ती खाकर उसे बाहर निकालने का प्रयत्न किया। उसी समय कुनामा नाम का कोई व्यापारी हुआ गया जिसके पास बहुत से ऊट थे।

उसने बोहारिया से पूछा—प्यास बुझाने के लिए जल है? बोहारिया ने कहा—इस कुए में बोझा बहुत जल है। वास्तव में वह बकरी का कुमार है। बोहारिया ने उस व्यापारी के सामने ही उस बकरी को कुए से बाहर निकाला। बकरी को देख कर बोहारिया व्यापारी चिनकर रहा गया।

कुनामा ने कहा—इस कुए में बकरियाँ कसे उत्पन्न होती हैं और क्यूँ उन्हें बाहर निकालते हैं?। बोहारिया कहने लगा—रात में बकरी का सींग इस कुए में बांटता है तो प्रातःकाल एक बकरी उत्पन्न हो जाती है। राजस्थान में उस बकरी को बाहर निकाल लेता हूँ। यह चुनकर कुनामा नामक व्यापारी चकित होता हुआ कहने लगा यदि मेरे पास भी ऐसा कुमार होता हो।। कुछ समय बाद कुनामा ने कहा—यदि इस कुए को मुझे बेच देगा तो मैं तुम्हें बहुत वरिष्ठ व्यापारी बन दूंगा। बोहारिया ने कहा—प्रातः में भया कहना।। इस कुए से एक वर्ष में 365 बकरियाँ निकलती हैं। व्यापारी ने मन में विचार किया—यदि मैं 6 ऊटों से इस कुए को बरीद लूँ तो भी कोई हानि न होगी। कुनामा ने कहा—6 ऊट ले लो और मुझे यह कुमार है। बोहारिया तुरंत व्यापारी करता हुआ कहने लगा—यदि तुम्हें यह कुमार विचार लगता हैं तो इसे ले। कुनामा प्रसन्न होता हुआ कहने लगा—मंगलवार तेरा कल्याण करे।

ऊटों को लेकर बोहारिया जब जाना चाहता था तब कुनामा ने उससे उसका नाम पूछा, बोहारिया ने उत्तर दिया—मेरा नाम ‘मैं कहाँ नाजू’ है। यह कहकर बोहारिया शीघ्र ही दिशा की ओर चल पड़ा।

बोहारिया ने शपथ वास्तविक नाम न बताकर ‘मैं कहाँ नाजू’ यह कहा था किंतु व्यापारी इस स्वप्न को नहीं जानता हुआ भी मन में प्रसन्न था।

व्यापारी ने साम को एक सींग कुए में डाला। प्रातःकाल उठकर जब उसने कुए में एक बकरी भी नहीं देखी तब वह विचार करते लगा।
कापि जूटि, क्रत भवेत। द्वितीये दिने स: बहुनि जीत्रज्ञापूज्वथेश्व कृष्णे
न्यापलयवृज्ञ परे न तरिक्स्मन्तजः। जूरितपाणे न्यायार्धित तूनेति मलिा
स तमसे पुष्पादुजुज्राममगन्धु। एकं ग्राममुपृपुं श्रे: राहु प्रपि तुम्हें
सुविशिष्ट काशिति “धृवक हानाजु” मानक: पुरुषः? सवे प्रोजूः-विभानवेन
उत्तमं प्रकरोत। सवे जना वाचवादनतिपरा: सम्ब्रजाता। अक्षरिस्ति
श्रीमेघिषि स तथैव उत्तरं श्रुतं विषण्या: सन् स्वगृहं प्रतिनिध्वतः।

tथः जूरितन्यासिष्वानथ वास्तविकमर्थम्जाति। वाणस्य निवर्तिते ताव-
म्जामवः रक्षापुश्वि: स निजःहति: न्यायाधिपिपवः प्रापितः। न्यायाधिपिपेन
पृष्टः स सवे वत्तात्मकावृहदयतः। गुप्तचरेन न्यायाधिपिन: सतर्कितो यतः
वोहरियानामकः कवित्रु पुष्पाणादय ग्रामेदिस्तम् समायातोऽसिति।
न्यायाधिपो व्याकार्यस्येव स धूतः।

न्यायाधिपिन: रक्षापुश्वान सम्प्रेष्य तमाकारसात यतु कवित्रु “मैः
क्या करूः” प्रामाण: तत्या सहु मिलतुपरिच्छिन्ति, तत्र श्ौः च चल
न्यायाधिपिपवः। वोहरियातत्सरामेव न्यायाधिपिपवाभासः। न्याया-
विस्तारमुच्छति कि भाष्यमस्य सवः? वोहरिया प्रत्यविद्धतु सवः: “मैः
क्या करूः” प्रसिद्धसम्बन्धे किमधी जानिति?।

श्रास्त्र: अः सवे सम्प्रेष्य जानामि। तस्वीरमेव व्यवहारिस्ये उष्ट्रानु
सम्पर्य पूहः प्रतिनिधितवः। भन्वथा ग्रामेदिस्तम्यातिषि भविष्यता।
वोहरिया व्याकार्यपत्तन न्यायाधिपिपेन सवे बूळं परितः । स: क्षमां
यातिकास्त्राणां विषयं प्रकाशन छल। कुनामाच न्यायाधिपियथमवादनः
न्यायार्थः। गार्गोगमेश्वरोऽस्य स्वास्त्रा नुकंडाय चौध्य जनः प्रोजू: अत्रैव
तूच्छया प्रकरोतु (यहीं नाचो, यहीं नाचो)। प्रयुक्ता व्यवहारी प्रथृष्ट
प्रासौद्द्रानुप्राय। वस्तुतः स वर्तितस्मातः। सवे जना: करतालिका-
कालवाद्यनु।
कि सुभस ने कोई चुटी ही गई होगी। दूसरे दिन उसके बहुत से सींग इकट्ठे किये और कुए में गिराये लेकिन उस कुए में बकरियां उत्पन्न न हुईं। इस घटना में सुभस निश्चित ठग लिया है, यह सोचकर उसे ढूंढने के लिए वह एक गांव से दूसरे गांव में गया। एक गांव में पहुंच कर उसने कहा—क्या श्राप लोगों ने “भैं कहां नाचू” नामक किसी पुरुष को यहां देखा है? सभी ने कहा—श्राप यहां नाचें—सभी लोग बाजे बजाने लग गये। दूसरे गांव में उसे ऐसा ही उत्तर सुनने को मिला तो वह दुखी होता हुआ श्राप भरपने बढ़ लौट गया।

उसे घटना के वास्तविक नाम को नहीं जानता हुआ जब वह लौट रहा था तब रात में उसे सिपाहियों ने पकड़ लिया एवं न्यायाधीश के पास पहुंच बिख्यात दिया। न्यायाधीश द्वारा पूछे जाने पर उसने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। गुप्तचर ने न्यायाधीश को सूचना दी कि वोहारिया नामक कोई पुरुष 6 ऊँटें के साथ इस गांव में श्राप हुआ है। न्यायाधीश ने विचार किया कि यह वही घटना है।

न्यायाधीश ने सिपाहियों को भेजकर बुलाया कि कोई “भैं क्या कहूँ” नामक पुरुष तुमसे मिलना चाहता है, तुम शीघ्र न्यायाधीश के पास जाओ। वोहारिया उसी समय न्यायाधीश के पास श्राप का दिया। न्यायाधीश ने उसे पूछा—श्राप क्या काम है? वोहारिया ने उत्तर दिया—श्राप “भैं क्या कहूँ” इस समय में कुछ जानते हैं?

हां, में सब कुछ श्राप में सब कुछ श्राप तरह जानता हूँ। तुम शीघ्र ही दूल्हारी को ऊँट सौंप कर खाने गांव में श्राप जाने उस कुणामा मंदिर (कारावास) के भेदमान बनाए। वोहारिया ने विचार किया—इस न्यायाधीश ने सब कुछ जान लिया है। वह क्या मांग कर श्राप ने गांव की श्रौर चल पड़ा। कुनामा ने न्यायाधीश को श्राप की जान है अब वोहारिया है। जानें जान श्राप अब कुनामा को देखकर लोगों ने कहा—तुम्हें नाच न करो, श्राप श्राप में सब कुछ जाने लग गया। तभी लोगों ने हायों से उत्तर लेने लगाईं।
30. ऋष्णुपृमा राज्ञी

turkendeshasthya adhikatha

ईरानवेदशे पुरा चौको नूपो न्यवसत्। तत्व सिस्वः प्राणप्रिया बाळिकाकाळास्तु। ता विवाहार्यायः स्वभावः। तत्कालिनकायात्तृत्तायेक नूपस्तासा हस्तेषु धनुष्यं दत्त् प्रोभव वस्त्रा बायेको यन्त पतिभवति तनेषु तत्वा विवाहों भविष्यति। एकथा: कुमार्या बाणेश्वरामात्यमवेखपत्तू। ब्राम्हायुप्रेम तस्य तस्या विवाहः सम्यजातः। द्वितीयायाय वायः कर्त्तियार्याय व्यवसायायो भवने व्यपत्तु तस्या विवाहः तस्युण्मेषा सह क्रतः। तृतीयायाय: कुमार्या वायः कान्ये काण्डविविषकुमारने व्यपत्तु। नृपविचित्रितस्या जाती द्वारा काण्डविविषकुमारसा पुरुषेः सह कन्यायाय विवाहः कथं प्रकुऽर्यात्। तृतीयायाय कन्याय पुनर्वण योक्त्सकलथायु परें कन्या तत्त्व मेंते। तस्या विवाहः काण्डविविषकुमारेण वह भम्भुव।

राजकुमारी सहस्य काण्डविविषकुमारेण गुह्मागताः। काण्डविविषकुमारेन विमेउः स्त कथं सा मद्य गुह्म निववमिश्याः। परे ना नायुः तन्त्र नावसश्रास्ते। तो द्वारा विशाभोधज पुष्पमालाभर्षिलक्ष्मकाहृ। एवंहस्तामयां भोजनं निर्मित्य परि भोज्यामास। काश्त्यानि झेतुमणि सा भन्ना सह निन्वमः। इस्य निर्ज्ञम संघाता तो निन्वानि गायमास्तुः। बहुमणि निन्वानि न्य्योत्पानि। किल्लावत्कशालान्तरं राजायुक्त कन्यामेकां प्रवैतुः। तद्या शीतकालशचासितः। कन्यान्यप्रियायोश्वेदस्त्राण्याय नासान्। एकदा हिमपारोधश्वेतेऽत्थिपुष्पः प्राचारूমः। तद्यथे सा कन्याया रक्षायेन गुह्म निवाषणात्।

मध्यहस्तवसीतृतः कन्यामंकमारोपम सा चोपविष्टास्सितः। सहस्य सत्य हृदयवसीतृतं तद्भवः। त्रित्य: प्रकाशः प्रवृत्तः। प्रकाशपरिभेषितः। कन्या: प्राणुवमानः। उत्तरदारमात्यम ता: समुपसित्वस्य: ता: स्वहस्ताः। संकेतसबिनः। सहस्य तद्यथे राजामनवुः परिखण्ड सुम्वस्तुन्नपयी विपरिष्कारानि। तिन्नत: कन्या वरे दत्ता प्रधानोरोचारा: सम्यजाता:। ततासा वरे सातीवरुष्यायुक्ताः जाता। यदा सा रोधिता तवा तात्रश्च नामां मुक्तातपान्यः। यदा सा इसति तद्या सर्वं: पुष्पाध्यक्षसनाः। यदा सा प्रवचनि तवा चाराखु व्रतिस्त्री श्रवणं प्रात्सर्वमूः। तद्यथा।

dेव माता तत्नाम वर्तानीति तमः।
30. अनोखी रानी
तुक्तै की भ्रष्ट कथा

बहुत पहले ईरान में एक राजा रहता था। उसके प्राणों से भी प्रिय, तीन बालिकाएं थीं। वे सभी विवाह योग्य हो गईं। उस समय के रिवाज के बानुसार राजा ने उनके हाथों में धनुषबागा देकर कहा, जिसका बागा जहां गिरेगा वही उसका विवाह होगा। एक पुत्री का बागा वजीर के महल पर गिरा। वजीर के पुत्र के साथ ही उसकी विवाह हो गया। दूसरी कन्या का बागा किसी व्यापारी के भर्ती में गिरा, उसका विवाह व्यापारी के पुत्र से कर दिया गया। तीसरी कन्या का बागा वन में, किसी लकड़हार के घर में गिरा। राजा चिन्तित हो उठा कि लकड़हार के पुत्र के साथ कन्या का विवाह कैसे किया जा सकता है? राजा ने तीसरी कन्या को फिर बागा छोड़ने को कहा किन्तु कन्या ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। उस कन्या का विवाह लकड़हार के पुत्र के साथ हो गया।

राजकुमारी प्रस्ताव होकर लकड़हार के घर था गई। लकड़हार के पुत्र रहा था कि वह उसे घर में कैसे रखेगा। परंतु वह सुखपूर्वक उसे रखने लगा। उसने भोगड़ी को साफ़ कर पुष्पमालाओं से राजा दिया। अपने हाथों में मोहन पकाकर पति को खिलाने लगा। बहुत पति के साथ लकड़ी काटने भी जाने लगा। इस प्रकार परिश्रम करके वे दोनों अपने दिन बिताने लगे। बहुत दिन बीत गये। कुछ समय बाद राजपुत्री ने एक कन्या को जम्मा दिया। उस समय सर्दी की। कन्या को पहनाने के लिए उनकी वस्त्र भी नहीं थे। एक दिन बाद गिरी, ठंडी हुआ चलने लगी। उस दिन राजपुत्री कन्या की रक्षा के लिए घर पर ही जहर गई।

दोपहरी हो गई, राजपुत्री कन्या को गोद में बिखाकर बैठी हुई थी। प्रचारक उसने देखा कि उसकी भोगड़ी के चारों ओर अपने पकाकर पति के दरबार पर भा गई। उन्होंने अपने हाथों से छक्का किया। वह भोगड़ी प्रचारक राजस्वत बन गई। घर की सभी वस्तुएं बदल गई। वे तीनों कन्याएं उस कन्या को बर्दान देकर प्रस्ताव हो गई। उसके बर्दान से यह कन्या भी श्री श्री गुरुओं से बुकता हो गई। जब वह रोती थी तब उसके भाष्करों से मोटी गिरते थे, जब वह हंसती थी तब तब एक पुष्प बिलकुल जाते थे। जब वह चलती थी तो पृथ्वी पर हृदय चाक उग ब्राह्मण थे।

उस दिन से माता ने उसका नाम बरदानी रख दिया।
सायं काण्डचिकेता बनात्मतिनिवृत्तं। उत्तजस्याते नूतनं भवनं विलोक्य विस्मृतिस्तोभवत। किमाः पार्थं विस्मृत्वाविनति प्रीत्वाचवरेण प्राह! राजकुमारिः क्षेत्रभ्रमनंतरपर्यंतव्य न विस्मृत्वावलिः। सा सर्वं बटसामकदश्यं हर्षेपु नृस्यानसी नितराः सूक्ष्मेऽ। कालस्य गतिः विचित्र्या कर्ष्ट्येऽपि। वर्दधानीक्या पितुभवेमानी वदृश्ये। पिताः प्रवचरयताः कदाचिते वर्दधानी राजसी भूत्वा कर्मोपाधेह् राजभवनो नामित्यति। तस्या: गुणानां धनराः सर्वं प्रसुतं। नृस्यानको व्याचारवतु कथम् कन्यामिमां स्वपुन्तवघूं विषाणवणामि। नृपः व्यस्तस्तवांन नीवता तत्तदगतवान्। ते सहु चैका वुढ़तापशीत्। कन्याया: सौन्दर्यं विलोक्येवेया सा मृष्णं प्रत्रत्वा, सा व्यचारवत् कथल मदोया कन्या राजसी मदेव।

विवाहदिवस: समीपमातं। निधिते दिवसे राजा कन्यामातेलूं वृढ़स्थिष्यतं। वृढ़ा चतुरा चासोल। सा बिशिकाउं सुसज्जितवती। एकस्यं बिशिकायं सा बस्त्राक्षुरं पुरंकं स्वकन्यामयम्यापद्यायाः। स्वमुच्चारणान्तु कन्याकावमाकुं सा रूप्यक्प्रदानास्तुतः। ते सर्वं वर्दधानीं मुखूः प्राप्। शिविराः विलोक्यं पिताः परितुष्ट। पिताः वर्दधानीं कण्यायामयम्यास्य मूहं प्राप्तो। शिविराः चिन्तुः चिन्तुः चिन्तुः चिन्तुः। प्रचलनं गहनं काननं समागतम्। सहसा वृढ़ायां वर्दधानिं विशिष्ट कर्ष्ट्युत्त। वृढ़ा बिशिकातो बहिरागता। तस्या हस्तयो रज्जवश्वासान्। तथा वर्दधानीं बहिरागताः। वर्दधानीं चूकोष परं तत्र न कोष्पार्थसीतू य स्तस्या: साहाय्यं विद्यायाः। तस्या हस्तापादी रज्जुमिः परिवेष्ट्यं, ताः काण्ड-काण्डपूजायाः निशियं भारवाहिके बदे चिन्तुः। स्वपुन्तयुः शिबिकामाती बुढ़ा राजभवनं प्रत्यागता। राजा कन्याया: व्यवाधलज्ञकर।

हिौंसे मूलते चिन्तवाहे जसे।

हिौंसे दिने राजपुरुः वश्वं प्रवर्षनागम। तेन मनस्य बिचारितमालीते यदु वर्दधानीं यथा विधुमुहाविनिताः भविष्यति तदा हृदनेन मुक्ताक्षणां निम्निष्टिताः। अभेदुः। अर्थं न किमि वृष्ट्वा स व्यवाधलयु किंतु दसे साधूऽ कार्यमक्षवाहीतू। सो बीसकृत्नं ब्रीवाच-कार्यस तवम्? बुढ़ा द्वारा तस्यसृः त्रीवाच-इयं वर्दधानीं तत्र पल्ली वर्तते। सार्वेण क्षः वर्दधानिः पूवणं न कृत्यांस्तः: भाषागते प्रदच्छतः। एकवर्षलम्बरं आपिनिमुखेते पूववेतुः निस्वध्यव-इति भृवुः राजपुरुः स्तृथाः।
लकड़हारा साम को बन से लौटा। भोपड़ी की जगह नया भवन देखकर वह चौकित रुक गया। वह नोर से चिल्लाया—कि किया मैं दास्ता मूल गया हूं। वहाँ ने सारी घटना सुनाया। हर्ष से नाचता हुआ वह चिल्लाने लगा। काल की गाड़ी बड़ी विचित्र होती है। वरदानी कन्या पिता के घर में बड़ती रही। माता पिता ने विचार किया कि कभी वरदानी रानी को बनकर किसी राजमुख में आयेगी। उसके गुहायों की चर्चा सवार फैल गई। एक राजा ने विचार किया—इस कन्या को मैं पुढ़दुख कर्मों न भनाएं। राजा अपना प्रस्ताव देकर वहाँ पहुंचा। उसके साथ एक बुढ़ा भी थी। कन्या की सुन्दरता को देखकर बुढ़ा जलमुंग गई। उसने विचार किया। मेरी कन्या रानी कोई न बने?।

विवाह का दिन पास गया। निश्चित दिन आते थे राजा ने कन्या को लाने के लिए बुढ़ा को भेजा। बुढ़ा चालाक था। उसने दो पालिकायों सजवाय। एक पालिका में उसने दस्तादूसरों से सुशिक्षा, अपनी ही देवी को बिहार कृतया घूमते में नयं बेड गई। पालिका दोनों बालों को उसने हपये देकर प्रसन्न कर दिया। वे सभी वरदानी के घर पहुंचे। पालिका देखकर माता पिता प्रसन्न हुए। दोनों पालिकायों ने पलंड गई। बालक घूमते घूमते चलते चलते ठीक जगल गया। अद्भुत बुढ़ा की दशाओं से पालिका दोनों कुंद गई। बुढ़ा पालिका के बाहर प्राप्त हुई। उसके हाथों में रस्सियां थी। उसके पालिका बाहर निकाला। वरदानी बिहारी पर्यटन घर में चढ़ी गई। तब उसके हाथ पर्दों को रखों से बांधकर, उसे लकड़ी की पेटी में डालकर पालिका दोनों बाले वन में फँक दिये। बुढ़ा अपनी बढ़की बाली पालिका को देकर राजा को बनाया। राजा ने कन्या का स्वागत किया। शुभ मुहूर्त में विवाह हुआ।

इसे दिन राजपुत्र पत्नी के समीप गया। उसके मन में विचार किया था कि वरदानी जब पिता के घर से निकली होगी तब उसकी शाखों से मोती भरे हुए। परन्तु वहाँ कुछ भी न देखकर उसके विचार किया। कन्या वह सब कुछ भूत था? वह चिल्लाता बुढ़ा बोला—बुढ़ा कौन हो? बुढ़ा शीघ्र हो उसके पास जाकर बोली—यह वरदानी बुढ़की पत्नी है। राजकीय इससे बनकल्याण का पूजन नहीं किया इसलिए उस्मह ने उससे आप दिया। एक वर्ष में वह आपसीत होकर पहुंचे। तब राजकुमार चुप हो गया।
हत्वो वने वरदानी चोलकुंबती भूषं सन्तप्ता, काष्ठमञ्जूषायाः निकिष्टा, विधिविधात सर्वभिः स्मितं व्यचारयत्। पान्थेनैनेन सा बहिन्निष्ठा। रूपवतीं कण्यं विलोक्य पान्थक्रान्ताय विचकित्: सन्तप्तः।

तस्या वदनेन मौद्धिकः पलाणो काष्ठमञ्जूषायाः वसुतान्यायाः। पान्थः जैलस्यात्। वरदानी तेन सर्वं वृद्धान्तमकथयत्। पान्थेः वृद्धशासीद्यप:-

तः कण्यं स स्त्रा० महामाययत्। निर्विनेशः वृद्धं मौद्धिकः विचित्रेण द्वीणी संभुः। एकदा सः कण्या: कृते स्त्राण्यायान्ययत्। वस्त्राणि विलोक्य वरदानी हृदितं नारङ्गाः। तत्कालमेव सर्वं: पुष्पाणि विकिर्षिताः। विस्मितं वृद्धं विलोक्य वरदानी प्राह—पुष्पाण्येतानि समानवने सिद्धितं वध्वान।

स पुष्पाणि विक्षेतुः राजभवनं विवेशा। तस्मिनले काले राजपुन्त्री- विचित्रेण तत्त्वातिन्यित्वं स विचित्राणिं पुष्पाणिः विलोक्य व्यचारयत्। यद्-संधेन कथेतेकों पुष्पाणिः समुद्रः। भस वर्णाणि पुष्पाणिः कृत्वा वृद्धं राजभवनमाययत्। ग्रामणयथी पुनयुगमन्त्रं पुष्पण्याद्य। कुलः समान- साधितानि पुष्पाण्येतानि। वृद्धस्तूणाः तस्यः।

राजपुन्त्रस्याग्रहे श स वर्णं वृद्धं विवेशवास। रहस्यनेत्रद्राजपुन्त्रे परिज्ञातं वृद्धाया:। श वृद्धं तथा वृद्धं कारारारे निकिष्टाः। स्थायितवमस- भार्ष्या वरदानी-पार्ष्वमाजगाम। यदा वरदानी राजभवनमायसाद तदा सवं नाम पुष्पबृंडितरमवत्। शुभे मुहूर्तस्तः राजपुन्त्रस्य विवाहः सन्तप्तः।

समस्तं राजभवनं पुष्पेराच्छार्डितमभवत्व। राजपुन्त्रः ससुः स्वजीवनं वाप्पयामास।
हवर वन में वरदानी चिल्लाती हुई दःःखी हुई, लकड़ी की पेटी में पढ़ी विचार करने लगी यह सब विचि का बेल है। किसी मुसाफिर ने उसे बाहर निकाला। वह रूपवती कल्या को देख भाष्यार्थ में पड़ गया। उसके रोने से लकड़ी की पेटी में मोटी बिखरे पड़े थे। मुसाफिर ने उसे जल पिलाया। वरदानी ने मुसाफिर को सारी कथा सुनायी। वृृढ़ मुसाफिर सन्तान रहित था। वह कन्या को अपने घर ले गया। वह निधन वृृढ़ मोटी बेचने से घनी हो गया। एक दिन वह कन्या के लिए वस्त्र ले गया। वस्त्र देखकर कल्याणी हसने लगी। उसी समय सब श्रीर पुष्प बिखर गये। भाष्यार्थ में पड़े हुए बृृढ़ को वरदानी कहने लगे-इन पुष्पों को राजभवन में बेच भाष्यो।

वह बृृढ़ पुष्प बेचने के लिए राजभवन में गया। उस समय राज-पुष्प शिकार से लौट रहा था। उसके इन विचित्र पुष्पों को देखकर राजपुत्र ने विचार किया कि इस समय ये पुष्प कैसे खिल गये। जब पुष्प खराबकर वह बृृढ़ को राजभवन ले गया श्रीर कहने लगा फिर पुष्प लेकर भाष्या। ये पुष्प भ्राप कहाँ से लाये? बृृढ़ चुप ही रहा।

राजपुत्र के श्रायार्थ पर उसने सारा बृहतात्त कह सुनाया। राजपुत्र बृृढ़ के रहस्य को जान गया। उसने बृृढ़ को श्रीर नकली वधू को जेल में डाल दिया। स्वयं घोड़े पर बैठकर वरदानी के पास भाष्या। जब वरदानी राजभवन पहुंच ची तब सबौं पुष्पवृष्टि होने लगी। शुभ मुहृद म्याने पर राजपुत्र का विवाह हुआ। सारा राजभवन पुष्पों से ठक गया। राजपुत्र सुखपूर्वक भ्रापना जीवन बिताने लगा।
31. निरक्षर: कार्तीणिकः

श्रवणेश्वर श्रेष्ठकथा

पुरा श्रवणेश्वर काशिनाथमकः कौशिक नरो व्यबसातृ। सोंती दीर्घचूर्ती, तस्य गृहिणी जार्जा नामी चालीत। जार्जाशब्दस्याः हिंदी "दीड़ड़ा" भवति। गृहिणीसा सर्वदा विचार्यति सम भन्नम परिवर्तित किमिधि कार्यं कृयतु तरे सर्वदा कथयति सम इति तथाकार्यं नाहू करि शक्नोमि। नित्येऽऽ रन्न रिक्तमभूतः कथर्धृष्टकार्यं प्रचलने-दिवनि सा चिन्तिताःसीत। पर्यन्त कासिमः प्रह्सून्योक्ताच नाहू किमिधि वेदिम कि कार्यं करारामि? जार्जा प्रहार-वृंचतस्याम समाविनः श्रेष्ठस्य ये राजामागेंधु जयानाकार्यनि।

जार्जार्जालं मतनां श्वात्र कासिमेन विचारितं वददु ज्योतिश्वदर भूत्वा स्वदिशानाम जार्ज्योन यापथिर्यामि। जार्जा प्रहार-वृंचतनि मिथ्याशुरूऽर्जनि व्यवहारेि कदाचित्व विपत्तिरारपित्याधि। प्रभाते कासिम परितो जनसम्बं रख्यात। एकं प्रहार-आवातः। गदल कि निमित्ते भवानास्थ। गंगार्जेन स्वरेासा कासिमः प्रहार-हा राज्नी सन्तवर्षेि चेष्टावर्षे धुपा धुपा प्रह्सून्य ज्योतिरिविवामयास्य रख्यात। जनानूः वचनोन्तुं शोभनश्चौपियसंबंधित इत्यय्यता जना निर्यता।

एकेका जनशैकः कासिमं किमिधि प्ररूच्छ। तत्प्रचारितणथा स विपद्धि नसुमुक्तः सञ्चित। स सर्वेश्वर कासिमस्य प्रशानामकारोत । "रक्ष रक्ष मज्जीवान" इति बीजकृतलीती तस्य पादयोः पपात। कासिमः प्रहार-समस्तं वृश्चिकः कथय मामू। सा प्रहर-सवं वृत्तं निबेदायाः मृत्युपुकेपतिश्चामि। कासिमः प्रहर-रहस्यभावान वदाहं किमिधि घोषपद्यामि। तिही को मथि विशवासं करिष्यति? सा रहस्यं कथयितुं लग्ना। प्रहार नृपस्य राजभवनेि दाशिश्चेष्ये कार्यं करोमाः। एकेका स्नानगृहाः परिवर्त्या राजः स्वर्णमुद्रिकसं यमा लयया। लोभाविश्टेन मयं मुद्रिका चोरिता। राज्नेिते सा मुद्रिका चालीव प्रियासीस्ये तेनोद्वोशित यस्य पार्वे मनुष्येति भिक्षिणि स मृत्युपुकेः पतिश्चामि।

कासिमः कर्जेि मिथ्यारेखा प्रकृतवन्तु प्रहार यदि तं स्नानौस्ये ष्टे मुद्रिकांनिकृप्ते शक्नोमि तिही तथा वितंति: समानितेमेय्यति। सुखटु, सुखोत, इति कथयित्वा महिलेयं तस्मापिवर्त्या।
31. मूर्ख ज्योतिषी

अरब की अंकेट कथा

बहुत पहले अरब में काशीम नाम का एक मुन्युष रहता था। वह बहुत सालसे था, उसकी पत्नी का नाम जारदा था। हिस्से भाषा में जारदा शब्द का प्रयोग दिखा होता है। जारदा विचार किया करती थी कि ये रा पति कुछ कार्य करे लेकिन वह सबका कहां करता था—इतना बड़ा कार्य में नहीं कर सकता। पूर्वजों का वह अवसान होने के ही। लेकिन काशीम ने इसमें यह कहा—मैं नहीं समझ पा। रहा हूं कि मैं क्या कार्य कहूँ। जारदा ने कहा—आपसे जागूर बच्चे हैं, जो सड़कों पर लोगों को इंटरनेट कर लेते हैं।

जारदा द्वारा फटकारे पर काशीम ने विचार किया मे ज्योतिषी बन कर अपने दिन आसानी से बिता लेता हूं। जारदा ने कहा—इस सूत्र द्वारा पर तुम पर कभी विपत्ति नहीं सकती है। प्रातः काशीम ने एक खुश सड़क पर अपनी चादर बिजा दी। काशीम के चारों ओर जंगल की भीड़ लग गई। एक ने कहा—साई! अराज अपने क्या कर रही हैं? काशीम गहरी ढोकर बोला। कल रात मुख पर ध्वनि की क्षुर हुई—मैं मस्तिष्क ज्योतिषी हो गया हूं। लोग यह कह रहे कर चलते बने कि लोगों को धुमे का तुमने कुछ उपाय सोच लिया है।

एक बार एक व्यक्ति ने काशीम के कुछ गुड़ उठाए। उसके द्वारा बताये गये उपाय से उन्होंने विपत्ति से छुटकारा मिल गया। उसने काशीम की सब जगह प्रशंसा की। इतने में भूमिका बचाया, भूमिका बचाया, इस प्रकार चित्रलताओ हुई एक स्वीकार काशीम के प्यारों में गिर गई। काशीम ने कहा—सारा ढूँढता मुझे सुनाया। स्वीकार यदि मैं सारा बचाने सुना हूं तो मुझे फौसों लग आयेगी। काशीम ने कहा—हरसथ को बिना जाने यदि में कोई घोषणा कर दूं तो कौन मुझे पर विवाह करेगा। वह स्वीकार बताये लगे कि मैं राजकुमार में शासन के रूप में कार्य करती हूं। एक बार राजकुमार हुई। राजा के सारे मुंह भर वह अंगुठी बुझा ली। राजा को वह अंगुठी बहुत प्रिय थी उसने घोषणा करवा की कि जिसके पास अंगुठी मिलेगी उसे फौसे दे। जायेगी।

काशीम कान्ज एक मुंही रचा दण्डने लगा और बोला यदि दूर स्थानकर के घड़े में अर्धूती बाल लक्ष्य ही जायेगी। ठीक है, ठीक है, यह कह कर वह स्वीकार कहा देने लगी।
कासिमो गगने बैंट बुलवा कर्णे रेखा कूदनु प्राण-प्रहाण: कथयति यति मुद्रिका स्वामगुरुसे विशाले ग्रहे निपतिताङ्गति। सत्यं मुद्रिका घटाविन्यगत। नृपति: प्रहणित सन् पुरस्कृतवान् कासिमस। एकदा राजस्का राजमंजरयः कोणाराच्छोरः स्वर्णमुद्रिका प्रहोरयू। नृपति: तबरं कासिमसकारामास। समाचारसः श्रुत्वा कासिम: प्रहष्टिऋषिपि नितरं विष्टामापेदे प्राण च। तैत्तिकचन्द्र सरङ्ग वर्तते। वीचं कालं यापुरु शारण: तह भव वाता करणयोऽदेशकण्या नृपः प्राण ४० विन्यासर्वायं भव व्रैत्यते चोराक्षमवेश्याय नो बेदं भवानुं मृत्युसुसैं निपतित्यति।

स सत्यरेव स्वाहूं प्रायात् जाराक्षमवेश्यायं भोवाच।
सीभावात् चोरारां यवत्यापि ४० भासात्। चोरारां प्रवणप्रवनायां व्रैत्यात्-नृपति: चोरानवेश्यायां व्रैत्योतितविन्द कासिम निपुलान। 
योऽवेदसदः चूतान्तं स नूः कथयते त्वरेदन्वेदे कोषिप कदमुखासारं क्षणभारु। ४० चोराबकेह: तदसुहृपार्बारसे। गवाक्षान्तिधार गजनु: चोरेश्वर भव तयोऽदेशकण्या नृपः: वाताः। कासिमो जारादं कथयनास्ते-राजि: 
सब्जाता, चत्वारिशदेश: एको निपतितान। प्रवाहसु चोराधिपति गत्वा प्राण महाराजं। कासिम: सब्र वृत्त नो जानाति।

चोराधिपति विष्णुवादन: सक्षात्। प्रहणितम ददे चापरस्चीरै गवाक्षानेश्वौ गजनुः शुभ व्यवाहे चत्वारिशतमेश: द्वितीयो निपतितान।
तुषारीये सवः चोरा एकदम कासिमसकानं प्राप्त: भवानु! पार्हं न। सब्रः: स्वर्णसुदा ववः प्रयात्तिक्याम: भवान: मृत्युवेद्यान्तीखाय च। 
कासिम: प्राण भवन्ति सवः धनं वश नितारियितानं तस्मान महा निवेदनतु,। इत्यां सत्यां रक्षा महिसः। चार्यस्ववेद्यकामेः। दिनानि ध्यतायात्ति, राजः: समस्तं धनं राजाकोष सम्पादनम्। प्रहष्टिऋषिपि नृपति: 
कासिम राजयोतितविन्द पदे निमुक्तबानु: राजा तन्त्रवादाय भवानमपि प्रददौ। कासिमस्य दैवं विनयमु, परं जारादं सिघक्षणं जानाति- 
प्रज्ञाया साता कियत्वाण्डे यात्रानुिन्य स्थायियति।
भुष्म ज्योतिषी/129

लग्दे गूढ़ी बोने का बृत्तान्त सब जगह फैल गया। बाबा ने अपनी सबी से कहा कि मेरा पति प्रसिद्ध ज्योतिषी है। उस सबी ने दूसरी सबी को कहा। कुछ समय बाद राजा को पता लगा, राजा ने कासिम को राज-प्रभाव में दुलाया।

कासिम ने बाकाश की ओर देखते हुए, कागज पर रेखा बनाते हुए कहा—सितारों का कहना है कि तुम्हारी लग्दे गूढ़ी स्तनांतर के विशाल घड़े में घिर गई है। घड़े से लग्दे गूढ़ी निकल गई। प्रसन्न होकर राजा ने कासिम को पुरस्कार दिया। एक बार राक्षने चीरों ने राजा के खजाने से स्वर्गीय चुरा ली। राजा ने शीघ्र कासिम को दुलाया। यह समाचार सून कर प्रसन्न कासिम चिंतित हो उठा श्रोत कहने लगा। इस समय में कुछ कहना सरल नहीं है। लम्बे समय तक मुझे सितारों के बात करनी पड़ेगी। राजा ने कहा—मैं तुझे 40 दिन का समय देता हूं। तुम चीरों का पता लगाओ, नहीं तो तुझे फांसी दे दी जाएगी।

कासिम शीघ्र घर गए। उसने बाबा को यह घटना सुनाय। सौभाग्य से चीरों की संख्या भी 40 ही थी। चीरों के सरदार ने अपने चीरों को कहा कि राजा ने चीरों का पता लगाने के लिए प्रसिद्ध ज्योतिषी कासिम को नियुक्त किया है। जब तब वह हुमारे बारे में राजा की कुछ कहे उससे पहले ही उसके घर के पास आकर उनकी बातचीत हमें सुननी चाहिये। 40 चीरों में से एक चीर कासिम के घर के पास पहुँचा। चीर ने खिड़की के पास आकर उनकी बातचीत सुनी। कासिम अपनी पत्नी। बाबा को कह रहा था रानी ही गई है। 40 में से एक गुरुर रहा है। वह चीर दौड़ता हुआ सरदार के पास पहुँचा और कहने लगा—कासिम हम सब के बारे में सारी बात जानता है।

यह सुनकर चीरों का सरदार कहकर हो गया। दूसरे दिन दूसरे चीरों ने खिड़की के पास से जाते हुए सुना कि 40 में से दूसरा गुरुर रहा है। एक दिन सभी चीर चुपचाप कासिम के पास पहुँचे, मनन्द! हमें बचाओ, हम सभी स्वर्ग मुझे बोटा दें। कासिम ने कहा—आप सारा जन जहाँ डालों वह स्तन मुझे बता दो। इस प्रकार आपकी रक्षा हो सकती है। चीरों ने यह बात स्वीकार कर ली। दिन बीतते गये राजा का सारा जन खजाने में पहुँच गया। प्रसन्न होकर राजा ने कासिम को राज-ज्योतिषी बना दिया। राजा ने उसके रहने के लिए महल दे दिया। कासिम की निर्धारता समाप्त हो गई। परन्तु बाबा दीर्घी तरह जानती थी कि बकरी की मां कब तक बैठी रहेगी।
एकदा नृपति: स्वातितिथिमि: सहोपविष्ट प्रास्ते। कासिमोधि
तत्रोपस्थितः। सहस्र राजा स्वमुर्णि बद्धवा प्रोक्तं कि वर्तते मम
मुनिदेवगान्मू। उहिन्ते भूतवा चित्तुवर्तन् स प्रोपावच—जार्दि। जार्दि।
मृतोदस्ति प्रवजन्तकोशहुम्। तच्छु त्वा नृपति: स्वमुर्णिसुद्धास्तितवान् सत्यं
तथा जार्दि (ढिल्ला) भ्रासीतु। कासिमः प्रसन्नो भूतवा नन्तुमारेरे।
एकदा जार्दि कासिमं प्राहू—केवलमेकेनोपायेन तब रक्षा भविष्यति। स
प्राहू कथम्?

जार्दि भूते—भवान् नृपतिमाकार्यं कथयतु—यदीश्वरेण सदीया
भाषारकितपूर्वता। कासिमस्य सन्देशं भूत्वा नृपतिरश्वारूढ्यस्तंत्रस्यमनि
समागत। जार्दि प्रोपावच—सत्यभोगिश्वरेणापूर्वता। कासिमस्य शक्तिः
तथाः सत्यवचनेन नृपति: प्रहस्तोपत्रस्य भूतिः सम्ज्ञात:। नृपेरा कथितम् यः सत्यं
भूते स महएँ रोचेन। भवतो यथासंख्य सजीवान्त्य याप्यतं मदीये
राजभवने।
एक बार राजा अपने मेहमानों के साथ बैठा था। कासिम भी वहाँ था। प्रभातक राजा ने अपनी मुट्ठी बांधकर कहा कि मेरी मुट्ठी में क्या है? दुखी होकर कासिम चिल्लाते हुए कहने लगा—हे जारदे! हे जारदे! मैं ठग भाज मारा गया। सुनकर राजा ने मुट्ठी खोली, सचमुच उसमें जारदा (चिड़ड़ा) ही था। कासिम प्रसन्न होकर नाचने लग गया। एक दिन जारदा ने कासिम को कहा—केवल एक उपाय से तुम्हारी रक्षा हो सकती है। कासिम ने कहा—कैसे?

जारदा बोली—आप राजा को बुलाकर कहें कि ईश्वर ने मेरी ज्ञान शक्ति सुभूत हो जीन ली है। कासिम का सन्देश सुनकर राजा, धोड़े पर बैठ कर, उसके घर आया। जारदा ने कहा—सचमुच ईश्वर ने कासिम की शक्ति झूठ न ली है। उनके सत्य वचनों से राजा प्रसन्न हो गया। राजा ने कहा—जो सत्य बोलता है वह मुझे बहुत प्रिय है। आप दोनों भोरे राजकुमार में सुखपूर्वक रहें।
32. नारिकेल-कृषि:

फिजीडीप्पस्य भेषजकथा

एकदा केलासवासी भगवान् शिवस्वामयो पार्वत्या सह समुद्रवाया कुल्भन् लोमोलोमोहीपमुनुप्रस्तः। द्वावेद हृषपते विहरल्लाहस्ताम्।

हृष्यस्तिन् कशिचनाथो शुक्को न्यव्वस्तु तिमोदीनामः। सोलीवेन निवर्णवभाससि। समुद्राधव मस्त्यानाथीर्ष्येन पर्वतेयम्: कन्दमूलतःकलंहायाद।

स्वस्वसर्व प्रवृत्तस्ति रस। तिमोदी गायायेसमुद्रे महता कौशलेन नाग्मन-चालयत। फिजीडीप्पस्य नैकोदपि नारिको नाववस्थावलने ततसः।

एकदा केनाहृष षिनकलाविण्यकोवीपि गवर्णितितस्थितिमोदीनाधीनिकं परार्जेतुं चिन्चेत्तं। तेन कत्थितम्-अस्तनाथ्यात्स्वस्त्वानात् सार्द्वो वीतिलेबुद्धीप्य य सूडः प्राप्यति स एव बिजेता गण्यते चाल्यया। विजर्यते निकूटस्तो ध्रुवचदमण्डपं त्यापित्याः दशनावः प्रदातव्यः। द्वावेद तस्तके दिवसां कालंच्च निर्षार्वितन्ती।

नित्यशते दिवसे नारिको स्वस्वसातन्त्रः संयोज्य स्वजितश्चातां प्रारम्भतम्। किष्णवाकलान्तरे सागरे भूषिति महावात: प्राचक्रतन्।

द्वावेदविपङ्कारे सागरे भूषिति महावात: प्राचर्यतन्। द्वावेदविपङ्कारे

तिमोदित्युवकस्य नौ: समुद्रज्जले न्यमथायत। गायत्रि नाम् पुनः संयोज्यति

तावदनिनक्तानिकं: पुष्क्रं गृहातुं विजीवं च बभुव। परार्जितितस्थितो

पूर्वत्रितशातं सर्वं स्वीकार। फित्ताप्रकाशस्वितायो गृहानितान्त:।

हृष्यात्माः विना मस्त्यानाथी प्रहितुं स नाशकोतु कन्दमुकलानाथ्यातने-

त्युम्। बुभुकितस्य ततत्स्य जल्वारिः दिनानि व्यतीतानि। पचाम्बे दिनेपिषे

य ध्रुवयोरोदननन्विकुवन्नित्वते विचर्चा। प्राधुनास च चलितमुपि न

शशाक। एकस्य बुकस्यादः समुपरिबत्य मोचे: रोदितुमारवः।

इसो हृषपते विरुक्ततो चाँदनारीश्वरौ तदरण्मनुप्रस्तो। कस्यापि

रोदनमजस्त्यनकोर्ष् पार्वती शिवं तत्र गन्त्वमहार्ष्यवस् किन्तु भगवान् भूत-

नाथ श्वानान्तरस्य कल्यानरोदनेतापि न डकर्ष्टु:। पुनः पुनः कश्यापरोदन-

न्यन्ति निषाम्य डकर्ष्टु:। पार्वती महता ग्रहोष्ठं शिवं तत्र अपरायामास यज्ञ

तिमोदी वरोद। तिमोदीदशाः विलोक्य मृत्तिनायः प्रावच-वल्स कः गतो

तव हुस्तो, कथवच विलपसि। तिमोदी सर्वं घटनमश्रावयव्यः।
32. नारियल की खेती

फिसी को शेष कथा

एक बार केलाशवाही विवाह माता पारंपरी के साथ समुद्रतल करते हुए लोमलोमो द्रीप में पहुंचे। वे दोनों द्रीप के किनारे घुम रहे थे। इस द्रीप में तिमोदी नामक एक अनाव दुलए रहता था। वह बहुत ही निर्भय था। समुद्र से मछलियां पकड़कर तथा पत्तों से कपड़े मूल फल लाकर वह अपने पेट मर्मा था। तिमोदी गहरे समुद्र में बड़ी कुदालता से अपनी नाव चलाता था। फिसी द्रीप का एक भी नाविक उसके समान नाव नहीं होता। एक बार किसी घनी नाविक के साथ उसका परिचय हुआ। भ्रमित घनी नाविक तिमोदी को पराजित करना चाहता था। उसने कहा—अपनी नाव के साथ, इस द्रीप से बीतीलेख द्रीप तक जो पहले पहुंच जायेंगा उसे विजेता गिमा जायेगा। जो दुर्भागा उसे अपने द्रीप जोते वाले के पास भ्रमण के रूप में रखते होंगे और इस नाव के ही होंगे। उन दोनों ने इसके लिए दिन तथा समय भी निधन कर दिया।

निधन दिन आने पर दोनों नाविकों ने अपनी अपनी नाव के साथ विजय यात्रा श्रार्थम कर दी। कुछ समय बाद समुद्र में शीत्र ही श्रांति लग गई। दुर्गे नायक के कारण तिमोदी की नाव समुद्र के जल में डूब गई। जब वह नाव को पुनः जोड़ता था तब तक घनी नाविक बहुत दूर निकल गया है और विजयी हो जाता है। हार कर तिमोदी ने पहले की सभी शरीर स्वीकार कर ली। विजय में डूबा हुआ तिमोदी घर से निकल पड़ा। श्राब बहु हाथों के विना मछलियों भी नहीं पकड़ सकता था और कपड़े मूल भी नहीं ला सकता था। खूब से भड़कते उसे 4 दिन हो गये। पांचवें दिन भी वह श्राप्यहरुण ना करता हुआ इसर उभर धूम रहा था। श्राब बहु चल भी नहीं सकता था। वह किसी बूढ़ा के नीचे बैठ कर उन्हें स्वर में रो रहा था।

इसर द्रीप के किनारे धूभते हुए शिव-पारंपरी भी उस बन में पहुंचे। किसी की रोने की श्रावाज शुनकर पारंपरी ने शिव को वहां चलने को कहा किंतु महारानी शिव श्रावाज के कहरे-रोड़ भी देखते नहीं हुए। बार बार रोने की श्रावाज शुनकर पारंपरी दिव्य हुई और श्रावाज-पूर्वक शिव को वहाँ ले गई जहां तिमोदी रो रहा था। तिमोदी को हालत देखकर शिव ने कहा-बतस! वुड्स्टोर श्राव बहु भे और दुम क्यों विलाप कर रहे हो ?। तिमोदी ने सारी घटना शिव को सुनाई।
वर्ष वृस्तान्तां निशान्य शिवोपि कह्यावशाचार्यकर्मः। शिवः
स्मायाय तथा भृगभावतेन फलायाविविष्करतः, सूमि स्वपावशार्या-
मायेऽग जलपारा विस्फोटयामास । निर्मलां शीतलां जलादारं विविषाव-
फलानि च विलोक्य तिमोदी हुर्षनिनतः शिवं प्रति स्वाबाहिने क्षुद्रं सादशंस्यतुः।

श्रीमातिर्थार्थरति सस्मालिनिओ वर्ष तिमोदी तत्स्य वृस्तायाः। शिवस्य
भक्ति प्रकृतेन समालिनः शब्दः। किंचिदक्लान्तिं वां नावद्या सः
शिवः पूनं स्तवर्षण्यामागः। वृक्षावर्षस्तादु व्यासमर्गः तिमोदीवन्यायः।
स्वदेशोऽन्न स्मालिनः शिवः स्वभक्तं तिमोदीं कुलायामकरोऽत्।
शिवो भक्त समालिनं दर्शनेन वर्षवत्सली यत् तथा इंगुः फलात श्रुणि कृपि कुरु येषौ जलेन फलमयि
सहृद्युज्ये उपशेषे। आश्चर्याचिनितः। तिमोदी भक्तवत् प्रणामः। शिवः।
किल्लम तत्स्य वृक्षाः। हस्तास्या च शिवा कथमहृ तेषां वृक्षां श्रुणि
कह्यं समयं श्रुणि। शिवः।

श्रीमातां शिवः शिवा सः कृप वद्या। सर्वे सुषुप्तं भविष्यति, इति
कृपाविवाहो वान्ताया सः हुर्षस्या चाल्याधि। शिवः कृपाविवाहोऽस्याः। स्मायाय
गणानेखणयन्या वान्यायामादेशाः, वसः। कथा कृपाविवाहोऽस्याः।
शिवाय, फिजिमाथ्यं, भक्तिवर्णां तिमोदी नारिकेलकुप्रिनिवेशे निर्धिष्य
श्रोणी समालिनः।

"श्रीमाति सर्वदीयः श्रीरोपायः" इत्युत्त्वा निर्तर प्रताय गरापति
त्रियां विपि प्रतस्यं यथा तिमोदी तपस्वत्स्वार्थात। विन्याविनिर्दितिसाने
मीनं गुप्षणं तेन: युवेन्य नामकर्षण। शिवाय, गुप्षणं तेन: श्रीमोक्ति
नारिकेलदस्तिवा विशेषणविकुल्यविशेषण व्यवहाराद्ध्विमि। तिमोदी एकसामा-
नारिकेलकुलादेशकर्मनि पलन कस्मु मुख्यायानुनिवाकर । यस्मेन् यस्मेन: प्रशान्त-
महासागरस्त्वं वर्जु स्वेच्छा फलस्याः कृपि विद्याताः। तिमोदी फलानि
विशेषाधिक्षेत्रीय पृष्ठन वनमयि कस्मु मुख्यायामास । तेन यस्मेन् कृपिनि
नाबिकसनानि नाबः प्रत्यावर्षस्तु । विवाहस्य कृपा शुचिन स्वकालं गापायामास॥

कथ्ये तत्स्य शिवः विशेषार्थी वर्षे। भ्रातशेषव नारिकेललक्षण्याः
विपि तेन्त्राष्टेः भविन्नति तथा शिवशिवरसि। जातायुः फलेशमिनु वदिः
स्मुतप्रायाः। कृपादति कर्केमार्ग्यपि तिमोदीकुलादेशकर्मां गत्वावयानुयानयार्याः।
स्मुतप्रायाः कर्केमार्ग्यकर्नागश्च स्मुतप्रायाः। कृपिनि विशेषाधिक्षेत्रीय वनमयि विद्याते, इति विशेषाधिक्षेत्रीय शिबायामास॥
सारा वृलाभ सुनकर शिव भी करणावश कॉप उठे। शिव ने श्रापनी माया से बांधी चलाकर वहां बहुत से फल प्रकट कर दिये, जमीन में पैर मारने से जलाहार उत्पन्न कर दी। निर्मल, कोतल जलाहार तथा श्रापनी प्रकार के फलों को देखकर तिमोड़ी हुईं से नाच घटा। शिव के प्रति उस्ने भावभक्ति प्रदर्शित की।

शिव-पार्वती शरू हैं दिनक न्यून तिमोड़ी उस वृक्ष के नीचे शिव की मस्ति करता हुआ समाविष्ट हो गया। कुछ समय बाद पार्वती के साथ शिव भी उस जंगल में पहुंचे श्रोर उन्होंने वृक्ष के नीचे ध्यान-यम-तिमोड़ी को देखा। शिव ने दर्शन देकर ध्यान-तिमोड़ी को क्षति कर दिया। शिव ने अपने मठ तिमोड़ी को भाविक पिया कि तुम ऐसे फलों की बेटी करो जिनमें जल तथा फल साथ ही उत्पन्न हो। आकाशबाय में पहुंचे तिमोड़ी ने भगवान को पूजा-संबोधन। उस वृक्ष का नाम क्या है? हाथ श्रोर वैलों के बिना में उन वृक्षों की बेटी कैसे कर सकता हूं?

श्रापनी शिव ने कहा-वस्त्र। चिनता मत करो, सब ढील हो जायगा। ऐसा कह कर शिव-पार्वती प्रसन्नध्यान हो गये। शिव ने कैसक बढ़ कर अपने पुल गदेश को भाविक पिया कि हे पुल। केवल प्रदेश में जाओ, वहां हो नारियल का फल लेकर, किसी दीवार में रहने वाले सत्ता प्रवर तिमोड़ी को नारियल के छवि के बारे में निर्देश देकर श्रापनी कहा जाता है।

“आपकी श्राज्ञा विरोधिय है” ऐसा कहकर शिव का प्रश्न रहा। गणेश उस दिशा की श्रोर चल पड़े जहां तिमोड़ी तपस्या कर रहा था। नस्तना देते युक्त तिमोड़ी ने गणेश जी को बार बार नमस्कार किया। शिव के पुल गदेश ने तिमोड़ी को नारियल बोने की विद्या बतातियार श्रीर कैलास की श्रोर लौट पड़े। तिमोड़ी ने एक नारियल के फल श्रापनी ने बारे में नारियल देखा किये। वहीं-वहीं प्रसातमहासांगर के सभी हीरों में इस फल की बेटी का विस्तार किया। तिमोड़ी ने नारियल के फल बेचकर बहुत बन सी कमाया। उस वन हो उस्ने धनी-नाभक की नावें सी लौट दीं। आपना जीवन भी किया तथा पुलःपुलःपुलः पूजारे लगा।

यहां कहा जाता है कि शिव के तीन नेत्र हैं। इसीलिए तो नारियल के बी तीन नेत्र होते हैं। तथा शिव के सिर की बटाड़ी की तरह नारियल में भी जटे होती हैं। गणेश जी के केक्ड़े में बैठकर तिमोड़ी के पास गये भे इस कारण सभी केक्ड़े की पीठ पर गणेश जी की मूर्ति किराजमल है-कीर्ती दीवार के ऐसा विश्वास है।
33. मानवताया: परिचय:

पाकिस्तानवेशस्य अष्टंकथा

सिन्धुप्रांतस्य सक्षरनामके नगरे चनिकश्वेको न्यवसत्। तस्य पाश्चिनि: बहु: प्रासादः सेवार्थं; सूर्याष्यचासनः। तज्जीवने कस्त्यापि वस्तुनो न्यूनता नासीत्। प्रश्वमार्श्च स प्रासादवान्तसादं व्यचरत्। एकदा रात्रि यदा स प्रासादपाश्र्ये पर्यंत्सर्वे तदा समागम्यं वृद्धिमेक ददशं। वृद्धस्य वस्त्रार्थे जन्मितिनानि धर्मं स च भार:। धनिकं विलोक्यासौ भारं मुनि न्यायः प्रयत्नव्रोधव्रचा, श्रीमन् न परिवर्तनोऽहम्। यदि भवनातां श्रविति राजारथः विखर्मिष्ये। धनिकः प्राहु-नेयं धर्मशाला, यदि भवनां सम किमपि वस्तु चोरविध्यति तत्तः। इति श्रुत्वा वृद्धशाचर्ययं-चकितः स्वभारं धर्मं निवाय तत्स्मात्प्रचलितः।

प्रथमकारावृत्ता रजनी, प्राकाशे मेधा गर्जन्ति, यदा कदा जलवी-न्द्रोपेपि निपतन्ति, भूमिवाटस्यापि संते न परिश्रांत्वश्चायं बृहः। किदिन्चकालान्तरं धारासम्पाये जलवर्षिण्यं प्रारम्भ किंतु बृहः प्रश्चलाते।

बहुनि दिनानि व्यदीतानि। एकदा धनिकः वस्मिनः सेवकेः सह सने विनितश्राकेतार्थम्। प्रश्वमार्श्च स मुगमलववादस्य कुटेश्वरि प्रयतने हरिं इत्यतः प्रथहतु न शरास्क:। मार्णि विप्रत्त्वं शीर्षणे बनेक बोध्याम। प्रभत-स्त्तस्य चार्यकारावृत्ता रजनी समायता, भूमिवाट: प्रारंभत, न कोशिपि तज्जीवं ष्ठतेत्स्य साध्यस्मकरिष्यत्। परिश्रांत्वश्चायमश्वादवार्तायं बृहाः। समुपक्विष्य:। बृहोऽपि न्यवतः, बीत्यश्चायं हस्तस्तो हथ्यावत्।

किदिन्चकालान्तरं बर्षा प्रसान्ता, नभो निर्मलचचार्यवत्। दिस-हस्तश्चत्क्रकेऽऽतिष्ठति चार्यमवाओपि बृह्यभाषा नागतो धनिकस्य, केनायं धनिको गौत्राः धायात्। इत्यधुः नान्तस्ते धनिके दूरार्थको नर: समागमः, प्रहस्तस्य प्रगमनः धनिकं प्रोचाच-कर्त्वं समाधु भृष्ण प्रतप:। धनिकोपिपि सर्वं कथामश्चायवत्। दयालुरसि धनिकं स्वोटेजमान्यत्। स: प्रोचाच प्रर्जाह्व स्वरुपंकार्य नाम निवासामि स्वाधनं भोजनं कृत्वा विश्वस्य-लाम्म। धनिक: प्राहु-ममाश्चवस्य कि भविता? दयालुरं प्रोचाच-प्रभाते
33. मानवता का परिचय

पाकिस्तान को भेष देना था।

सिवा भारत के सक्षर-नामक तालाब में एक घनी पुष्कर रहता था। उसके पास बहुत से महल तथा तेज़ी के लिए नींदकर थे। उसके बीच में किसी भी चीज की कमी न थी। वह घोड़े पर बैठकर एक महल से दूसरे महल में जाता था। रात में जब वह चढ़ने महल के पास घुम रहा था तब उसने अपनी श्रीर भारत हुए एक बृद्ध को देखा। उस बृद्ध के बल पड़े पुराने थे तथा शिर पर बोझ था। घनी पुष्कर को देखकर उसने प्रपना बोझ पृथ्वी पर बाल एवं प्रसाम करता हुआ कहते लगा श्रीमती! में था गया हूँ, बृद्ध श्रावनी भावा हो तो वहूं विश्राम कर लूँ उस घनी पुष्कर ने कहा, यह तर्कशाला नही है, श्रावन शरीर कोई चीज जुरा लो तो। यह चुनकर वह बृद्ध चकित रह गया, श्रपना बोझ शिर पर रखकर वहाँ से चल पड़ा।

रात ब्राह्मणी थी, अकाश में बादल गरज रहे थे, जब कभी जल की बूंदें भी गिरने लगतीं, श्रावनी गाने का भी बयान था, वहू बृद्ध था। श्रावनी ने कहा, भव समय वाह मृत्तला वर्षा होने लगी। विनयु वह बृद्ध चलता जा रहा था।

बहुत दिन व्यतीत हुए। एक बार वह धनिक श्रपने मित्रों तथा सेवकों के साथ शिकार बेलने के लिए निकल पड़ा। घोड़े पर बैठकर वह मूर्त के पीछे भागा। प्रसाम करने पर भी वह हृदय को न पकड़ सका। रात में भाव कर वह घरने बन में अटकने लगा। घूसते-घूसते ब्राह्मणी रात हो गई श्रावनी गाने लगी, वहूं कोई न था जो उसकी सहायता कर सके। शक्ता हुई वह घोड़े से उतर कर बृद्ध के नीचे बैठ गया। श्रावनी ने हंग गिर गया। घोड़ा भी दंडक उच्चर उठाकर गया।

कुछ समय बाद बर्षा श्रावन हुई। अकाश साफ हो गया, दो हजार रूपये में बरीदा हुआ घोड़ा श्रावनी ध्रवधनिक को नहीं दिखाई दिया। जिस पर बैठकर वह घर चला जाये। इस प्रकार जब वह धनिक दु:खों से सन्तप्त हो रहा था तब हूँर से एक भादर भावा हुई दिखाई। वहूं हुंसते हुए, प्रसाम करते हुए कहा-श्रपन बहुत धनिक दु:खी कही है। धनिक ने श्रपने कारण कथा सुनाई। वह दयालु पुष्कर धनिक को श्रपने बोझने में ले गया। उसने कहा यहाँ में श्रपने बृद्ध माता-पिता के साथ रहता हूँ। ध्रवधनि करके विश्राम कीए: धनिक ने कहा, -मेरे घोड़े का कथा होगा? इस दयालु पुष्कर ने कहा, सुवह होने पर
सम्बन्धिते सति तवाश्वसने चावेरविध्वासि तत्व सहायकानापि। धनिकः
प्रसन्नचालामुन। दयालुर्य धनिकः तुर्गसमपायनतुग जैकतिये धनिकः प्रसन्नचालामुन?
दयालुः प्राहं-प्रजायुद्धकेलतु। तत्तत्वेण कति जया विचारने? एकैह, तद्दीर भवनिषो न पिवंकीति कि तुर्गसमपायनतु?
दयालुः प्रत्येकदत्र-मम पिता तथा मां प्रत्युत्तर यदुद्धमय मक्केरमाति देत्ये प्रदेशसमपायनतु।
प्राहं मम पितु स्वत्वैकः पुजः।

धनिकेन कवितं, सति मधवान् देवता-इति प्रदेशसमपायनतु धनिकः प्रसन्नचालामुन।
तसम्यसुमुकते दयालुर्य सूरी सा चावेरविध्वासि प्रवाहित्य प्रसन्नचालामुनस्वाध्ये निर्गतं।
प्रभाते सति प्रशस्ववेद्यायामस्वाध्ये प्रवाहित्य प्रसन्नचालामुनस्वाध्ये साधकः।
राज्ये दशस्त्रसमपायनतु सा चावेरविध्वासि प्रवाहित्य प्रसन्नचालामुनस्वाध्ये साधकः।
प्रभाते धनिकेन दशस्त्रसमपायनतु महाजनदेवं चार्याय यदुद्धमय मक्केरमातिदेत्।
पिता प्रत्येकदत्र सोमं प्रवाहित्य प्रसन्नचालामुन।
पिता प्रत्येकदत्र सोमं प्रवाहित्य प्रसन्नचालामुन।

पुजः पितूः संदेशसमपायनतु वोक्तवात् तुच्छत्वा धनिकेन कवितं
प्रवाहित्य प्रसन्नचालामुन। तीर्थं प्रतिविधेषविप्रायाष्टमण्ये महतात्मनस्तव पितूः देशसमपायनतु कथं यूहं गम्भियामि।
ममं सम्प्रसूः परिवाचारसमपायनतु परायणः।

धनिकेन दशस्त्रसमपायनतु से एव बुँदो यथा: यतिरिक्ष्मा ग्राहेत निक्षम्य
पूर्वं बुँदासदपायवेदान्त्ये। मया निर्मतिसमपायनतु तमासुक्ष्मस्वाध्ये।
वृद्धेतनानं मानवतात्या परिचयं दत्ता। निरतामुक्तातोस्मि।
मूर्यं लश्चितं प्रवाहिते चित्रलयमणं पिता प्रोवाचार-ब्रह्म वाह्यरूपसमपायनतु निरंतरमणं यदुद्धमय प्राणमक्षितं प्राणसमपायनतु संस्कृतमणं जोतजित्वो भविष्यां।

परं भवतमानप्रवाहेण निन्योक्तिस्य स्वस्वमणं वस्तु।

सास्कारे वोशस्ति भवानिषीति कथितत्वा धनिकस्वस्य वर्णयो सुःगो।
कथितो: चावेरविध्वासि वास्तविक सुः कुमार।
स मनसि व्यवित्तवति-महाजन-चावेरविध्वासि
कथितत्वा धनिकस्वस्य महत्वमणं वृद्धासमपायनतु।
तुम्हारे घोड़े को भी बुढ़ लाऊंगा तथा नौकरों को भी। धनिक बड़ा प्रसन्न हुआ। इस पुष्प ने धनिक को हृदय पिलाया। धनिक ने चकित होकर पूछा यह क्या है? पुष्प ने कहा यह बकरी का हृदय है। तुम्हारे पास कितनी बकरियाँ हैं। उसने कहा एक ही है। वह आया लोग बुढ़ नहीं गिते हैं? दयालु पुष्प ने उत्तर दिया देरे पिता ने आया मुझ कहा आया घूम कहा है आया घूम धर्षित को देना। मैं धनिक पिता का एक ही पुढ़ हूं।

धनिक ने कहा आया वास्तव में देवता हैं ऐसा कह कर वह हो गया। उसके सिर जाने पर यह दयालु पुष्प ग्राहाम जलाकर उसके घोड़े को बुढ़कने निकल पड़ा। जब माता ने कहा तो मेरा पुढ़ धर्षित के घोड़े को बुढ़कर ले प्राया है तब वह भी भी बौढ़ की सेवा में लग गई। प्रातः काल धनिक ने देखा कि उसका घोड़ा नहीं धर्षित है। धनिक पर जाने की इच्छा वाले इस धनिक ने कहा में तुम्हारे पिता से मिलना चाहता हूं। उसके दर्शन करके ही मैं घूम जाऊंगा। पिता ने उत्तर दिया प्राया होता यदि मैं उससे नहीं मिलता। मैं धर्षित का अन्नदार नहीं कर रहा हूं। मेरे बच्चों में धर्षित सच्चाई का भाव है। पुढ़ ने कहा मैं नहीं जान सका कि अन्नदार में भी धाराबहार कैसे चिप्पी हुआ है?

प्राय मैं उस प्रश्न को नहीं उत्तर दूंगा। पिता ने कहा-कहाना कि मेरा पिता बुढ़ है एवं बाहर नहीं था सकता।

पुढ़ ने पिता का संदेश धर्षित को मुखाया। यह सुनकर धनिक ने कहा इस पवित्र लीर्थ में। धर्षित सेवा में लगे हुए, महाभार-तुम्हारे पिता के दर्शन किए बिना मैं कैसे घर जाऊं। जिसका सारा दर्शन ही धर्षित सेवा में लगा हुआ है। तुम्हारे पिता के दर्शन से मेरा जीवन लफल होगा। धर्षित के भ्रात्र ब्राह्मण करने पर पिता सोपड़ी से बाहर निकला।

धनिक ने देखा कि वह दूर बुढ़का है जो दिन पर बोट रखकर पहले मेरे महबूब के पास गया था। मैंने भावकार कर इसे निकाल दिया था। इस बुढ़ ने मानवता का परिवर्तन देखकर मुझे पहले उपकार किया है। धनिक को बहुत ब्रह्मक लक्षित देखकर पिता ने कहा मैं इससे सेवा सोपड़ी से निकला चाहता था कि ब्राह्मण पहले की जब्ता को दमदार कर लक्षित होगी। लेकिन ब्राह्मण के ब्राह्मण से मैं सोपड़ी से निकला हूं। धर्षित सुख करें।

ब्राह्मण साकार हेतु देवता हैं। यह कहकर धनिक उसके पैरों में गिर गया। साकारों से पवित्रताप के वांछु संग गिरा रहा था। उसने मन में विचार किया। मेरे महबूब से इसकी सोपड़ी का लाभ गया। धर्षित सहचर हैं जहां साकार मानवता का निदास है।
३४. बौकीमहोदयस्त्य घोटकः

दक्षिणी-श्रमरीकादेशस्य श्रेष्ठकथा

हैद्राबादीं बौकी तथा मैलिसनामकी हैं श्रातरी न्यवसामुः। बौकी सरलहुद्धी विनीतविशाःतु परं मैलिसशचतुरस्त्रीक्षुषुकृतः। मैलिस-श्रिदलवलनन्यायानु वर्तचत्तम शम। एकवा बौकी स्वकृष्टिस्यायनं नगरं नेतुमैर्ख्येत्रं नासित्तप्तायूँ घोटकः। ऋणारुपेण तदुग्रस्तमातुतें सः स्वविचारार्थमार्जगम। मित्रेः कथितं, मद्यग्रस्तस्नु पलायितं वादाविष्णु व तमस्तेषु समायेः। बौकी प्रोवाच-कथमहुः स्वातन्त्रप्रमुः नयाः। मोसा प्रत्युवाच, टाउसेंटमहोदयस्यायां संघृतारुपेणानाघ। बौकी प्राह-प्रपानश्रुटेः वोटकस्य मूल्यमहिकं कथित्विषयज्ञ, लोभाविष्णुः चायम् वार्तकरार्थमायिण। सृष्टिनिश्चितम् घोटकमाने निर्णयः। टाउसेंटस्तु स्विधोकटं प्रशंसमानं। प्रोवाच-प्रस्य घोटकस्य भाषक: केवलं पर्यच्छमाणाः। परमस्य श्रेष्ठो मानवमस्तकतुल्यभाराराधिको भारस्वर्य न पातनीयः।

बौकी प्राह-मत्याचं सु केवलं पर्यच्छमाणाः। पवित्राः। पवित्राः माने। टाउसेंटस्तु: प्राह-प्रशन्ताः श्रो वाचत्वः। श्रीनिवासान् बौकी चाश्वामानीवत्वाः। प्रभाते यात्स भापाणं गन्तुमुखतोभुतात्वात्तन मोसा हस्तो गद्यभूमिकार्थ माणुवचक्त्वम्। मोसा प्राह हृ षः अश्वरात्री गद्याः प्रत्यागणात्। तत्व कार्यं गद्यभूमिकार्थ चरित्यित्व, प्रत्याबर्त्तम् टाउसेंटस्य घोटकम्। बौकी प्रोवाची वृद्धश्रुवचं सम पवित्राः जन्म पवित्राः प्रत्यावर्त्तिष्यित्वे। यात्सबौकीं तथा मोसा परस्परं वार्तालापमुक्ताः तावदेव मैलिसनाग्य कथितम् मा नयतु भवानुप्राह माणु टाउसेंटमहोदयात्तव धन प्रत्यावर्त्तिष्यित्याः। तत्वं त्वा बौकी प्रस्यस्य सर्वजयः। बौकी-मैलिसस्य मलिस्या। टाउसेंटगृहम प्राप्तः। तत्व गत्वा मैलिस: प्राह-वनमस्तमानेतुमाणात्। टाउसेंट: प्रोवाच-घोटकस्तु भ्रांशुवृक्षाः निबद्धचाहित, भरमविष्णुकृतम्य महां प्रश्नानुभवस:।

मैलिस: प्रत्युवाच, क्षणं तिष्ठतनु, श्रीमकवलोक्षयामि यत्क्रियश्चोऽनं घोटकः। टाउसेंट: प्रोवाच-घोटकस्य सम्बन्धे पूर्वमेव निश्चितता वाचाः।
34. बौकी का घोड़ा

दक्षिणी अमेरिका की भूमिका की श्रेष्ठ कथा

हैटी द्वीप में बौकी तथा मैलिस नामक दो भाई रहते थे। बौकी सरल हदय तथा चिन्ता था लेकिन मैलिस बड़ा चतुर तथा तेज़ बुढ़ा वाला था। मैलिस छूल कपट करके दूसरों को ठग देता था। एक बार बौकी अपने बेटे के र्माना को लेकर मेरा लिख उसके पास घोड़ा नहीं था। वह प्रथम सिन्हा के पास उसके भाई को किराये लाने गया। सिन्हा ने कहा—मेरा गधा तो भाग गया है। हम उसे भरा तक भी नहीं दूंढ़ पाये हैं। बौकी ने कहा—ब्रह्म में अपना भान बाणार में कैसे ले जाऊँ? मौसा ने उत्तर दिया, टाउसेंट का घोड़ा किराये पर ले गया। बौकी ने कहा—वह वृद्ध बुढ़ा कुंजस है, घोड़े का सुधिक किराया मागिया। वह लोभी तो बातचीत करने के लिए पैसे मांगना चाहता है। नहीं चाहता हुं। र्माना भी वह घोड़ा लेने को चल पड़ा। टाउसेंट ने अपने घोड़ों का प्रशंसा करते हुए कहा—इस घोड़ा का भाण्डा केवल 15 सिंके हैं। परन्तु इसकी पीठ पर तुम उठाना ही बोक रखना जिन्तना भाद्र के सिर पर रक्षा जाता है।

बौकी ने कहा—मेरे पास तो केवल 5 सिंके हैं। 5 सिके छीन कर टाउसेंट ने कहा—केवल 10 सिका कल दे देना। नहीं चाहते हुए भी बौकी ने घोड़े को किराये पर ले लिया। रात काल जब वह बाणार जाने के लिए तैयार हुआ तब उसने गधे की पीठ पर बैठकर भाग दिए हुए मोसा को देखा। मोसा ने कहा—कल आधी रात में गधा लौट भागा है। तुम्हारा काम इस गधे के चल जायेगा। टाउसेंट के घोड़े को लौट दे। बौकी ने कहा, वह बुढ़ा ने तो 5 सिके को नहीं लौटायेगा। जब बौकी ने बोका—सोसा इस प्रकार बातचीत कर रहे थे तब मैलिस भी बहाँ दूर भाग देते लगा, धार मुझे वहाँ ले चलो, मैं टाउसेंट से तुम्हारे लिए किसके लौटा दूंगा। यह सुनकर बौकी प्रसन्न हो गया। बौकी ने तो मैलिस सिलकर टाउसेंट के पर पहुंचे। वहाँ फिर कर मैलिस ने कहा—हम घोड़ा लेने भागे हैं। टाउसेंट ने घोड़ा घोड़ा ग्राम के पेड़ के नीचे बंधा है। लेकिन बकाया घन तो घाय मुझे दें।

मैलिस ने कहा—मैलिस घोड़े ठहरिये, मैं देखता हूँ कि यह घोड़ा कैसा है! टाउसेंट ने कहा—घोड़े के बारे में मा कुछ पहले ही तब हो गया।
सम्बंधजाता। मैलिस: पुनः प्राह-क्षण्ठ तिष्ठ, स्वदेशायुक्तकाल्पापनलिका (फीता) निष्कास्याश्रवस्य पृष्ठपापने संगतः। पुनः बौकी प्राह-घोटकस्य पृष्ठभागे तव कुऽ 18 इंचपरिपित स्थाने मल्लते च 15 इंचपरिपित स्थान नास्ति, पृष्ठभागे मैलिसस्य पत्नी चाग्रतस्तु, बौकीमहोदयस्य पत्नी सम्पुस्तायस्यति। टाउसेंट: प्रोवाच-यूंच चत्वारो न ममाश्वपृष्ठ समुपवेष्ठां शाक्ष्यस्य। मध्य एव मैलिस: प्रोवाच, श्रस्म्दबालकाः कुशोपविष्टा भविष्यति? श्रमाँ जातं, जीन बौकी श्रव्यश्च प्रीवायामुर्पविष्टो भविष्यति। एतचूँत्वा टाउसेंटो विष्णुवदन: सक्षुजात: प्राह-च-यूंच सवेन मूखा: किमयमवः सवान्नेतुः शाक्ष्यति?

मैलिस: प्रोवाच-नान्ह किमपि वेदिथि, वयं मेलापके कयं गर्मियायः? यदि पूर्वमेवायुक्तस्य सम्बन्धे वातर्ति निश्चितता तत्त्वेव घोटकं तु वयं नेष्यायः। श्रन्तथाः न्यायालयं गमिष्यामः। तच्छुः त्वा टाउसेंट: प्राह-कुपया तव पञ्चप्रणालीत्वा कदा: सम्बन्धविचछेदं कुऽ। तच्छुः त्वा मैलिस प्रोवाच-किं पञ्चदशपणेः नामसुद्राताः चाष्वस्य?। वयमयमियोगार्थं न्यायालयं गमिष्यामः। अश्वं विलोक्य बौकी सहसा प्रोवाच-ग्रे। सत्यतामही कुशोपविष्टा भविष्यति, तां तु विस्मृतवानसिम।

टाउसेंटस्तु तेषा धूर्ततां विलोक्य, दीर्घं निश्वस्य, पञ्चदशपणां-न्यायन्यूः प्राह-पञ्चवादुङ्गरमपसरस्तु भवन्त।। इत्यूक्तवा श्रव्यपृष्ठमाहं तीव्रगत्या प्रजाबन्न टाउसेंट: तस्मात्पलायितं।
चुका है। मैलिस फिर कहने लगा—शोड़ा ठहरे—यह कहकर उसने अपनी जेब से फीता निकाला श्रीर घोड़े की पीठ नापने लग गया। फिर बौकी कहने लगा, घोड़े की पीठ पर तुम्हारे लिए 18 इंच स्थान है, मेरे लिए 15 इंच स्थान है। पीछे की श्रीर मैलिस की पत्नी श्रीर श्राय की श्रीर बौकी की पत्नी बैठेगी। टाउसेंट बोला—हम चारों मेरे घोड़े की पीठ पर नहीं बैठ सकते। बीच में ही मैलिस बोल उठा, हमारे बालक कहां बैठेगे? श्राये में समभ गया, जैन बौकी घोड़े की गद्दन पर बैठ जायेगा। यह सुनकर टाउसेंट बड़ा दुःखी हुआ श्रीर कहने लगा—तुम सब मूर्ख हो, क्या यह घोड़ा सभी को लें जा सकता है?

मैलिस ने कहा—मैं कुछ नहीं जानता, हम तो में कैसे जायेंगे? जब घोड़े के बारे में सब कुछ पहले ही तय हो चुका है तो हम घोड़े को ले जायेंगे, नहीं तो हम न्यायालय में जायेंगे। यह सुनकर टाउसेंट कहने लगा—कुछ करके तुम्हारे पाँच सिक्के ले लो श्रीर मुझसे पीछा छुड़ाए। यह सुनकर मैलिस जोर से बोला—क्या घोड़े की बातचीत 15 सिक्कों में नहीं हुई थी? हम मुकदमे के लिए न्यायालय जायेंगे। घोड़े को देखकर बौकी अचानक बोल उठा—श्राय मेरी दादी कहां पर बैठेगी, मैं तो उसे मूर्ख ही गया।

टाउसेंट ने उनकी घूटिता देख ली। लम्बी सूंड़ स्तारा लेकर 15 सिक्के देता हुआ कहने लगा—श्राय लोग इस घोड़े से हुर रहिये। यह कहकर टाउसेंट घोड़े की पीठ पर बैठकर तेजी से दौड़ता हुआ वहां से भाग छूटा।
३५. प्रजाप्रियो नृपति:

संयुक्त-राष्ट्र-प्रामेरिकाधिकारी संपूर्णकथा

कशीिण्युपो बोष्यासमारूहलतूँ-रनेष्यूने हूरिएण्या: निवासस्थले ते राजः सन्ति, तान्यो हृत्विष्यति ते दण्डभागभवतिता। एको बालकचवासीदू चारो बीरश्च। शरस वाणेपि निपुणेर्षिवाय वनेष्यु पक्षियां वषाधकरोत्। तथय नामासीदरोबिनुहुँडः। एक्को राजः सचिवेन सहू तस्य मैत्री सम्बन्धाया सचिवोपधि भूषुद्धिकासूचलने निपुणा: परसं रोबिनुहुँडसमः। बाल-श्वाय मत्रोपधि निपुणा इति बिलोक्य मनसि विषेणसमीः तथा प्रशंसाः। तदेव सहमा ध्वनिन्द्रयष्या। सचिवः प्राहः-यदि तवं हूरिएणे मन्त्रियसि तदृढः पारितोषिकं प्रयत्तिस्वरूपः। रोबिनुहुँडः प्रत्युत्त्वः-राजः शासनं चैवस्य वोव्हांचिथिये। सचिवः प्राहः-नाहुं कसैनेचिथिपि किमपि कथाविषयायां।

नृपतिश्च मदुवशवर्ती वर्धते।

जातिविवाहो रोबिनः शरसच्यानमकरोत् मन्त्रिति हूरिएणमारूहलतूँ। सचिवः प्रोवाच-हूरिएणवेण तवमवुना दण्डभागभवताति। इत्थं तौ परस्तरयुद्धयदामशृः। रोबिनो धनुरारोपयनं जगर्ज कान्दिशीकः सचिवः पलायितः। रोबिनेन विचारितं नगरं गत्वा ममानिष्टं भविता चातो वनेच्छेव जीवनसाधनं करिष्ये। तेन सह बहुवर्णा जना: सम्मिलिता:। सर्वं दलबलसंयोजनं क्षत्रा यश तु तस्य तस्यः। रक्षापुक्ता श्रीपि तेस्यो बिस्मिलि

स्म। तस्य दलस्य चर्चं सर्वं श्रस्तू।

एक्को प्रत्यूळे व्यचरत्त्वते हस्तां बुद्धामेकाकमपश्यन राजमारंगं। कथं रोद्योति प्रत्यक्षवन्तश्च ते, सा प्रत्युत्त्वः हूरिएणहुतकैह मत्तुलौ राजी प्राशादप्तो प्राप्ततः; मत्तूः पूवामेव मूतः। निर्धेना दीना चाहुं पुराबयम् बिना कथं जीवनं भापि चिथिये। तन्नुब्धव्या जातिवाहो रोबिनः प्राहः-चित्तां माकुण्यात:। ततु पुष्क्र न प्राशादप्तमाजी भविताय, ततोः स्थाने चाहसात्मकविवर्धिनी ददाति। बुद्धा प्रस्ताया सती स्वगूंहूं प्रत्याग्निता।

रोबिनः शीर्षकेव स्वसहयोगिनीः समामाकारयामास, प्राहः च-सर्वं वचस्थानसमेतं गत्वा समवा भवतं, वदास्वं बिगुलवादनं करिष्ये तदा सर्वं निपुत्य प्रह्वत। रोबिनी राजमारंगं प्रति प्राचरतु तत शिखरौजकं
35. प्रजा का प्रिय राजा

संयुक्त राज्य-अमेरिका की अभेड़ कथा

किसी राजा ने घोषणा करवायी कि वह तीन में जो हरिशंश हैं वे राजा
के हैं। उनकी जो मारेगा उसे दण्ड मिलेगा। एक बालक जो बीर दीर्घ
वीर था। बाण चलाने में भी वह निदुष्ण था तथा वरनों में पशु-पक्षियों
का वध करता था। उसका नाम था रोबिनहुड। एक बार राजा के
सत्री के साथ उसकी मित्रता हो गई। सचिव भी बड़ा चलाने में
निदुष्ण था। परन्तु रोबिन के समान नहीं था। यह बालक मुक्त बी भी
निदुष्ण है यह देख कर मन में दुःखी होता हुआ। भी वह उसकी प्रशंसा
किया करता था। उसी समय, प्रजातन्त्र भावाज हुनायीं थी। सचिव ने
कहा—यदि तुम इस हरिश्चंद्र को मार देगा तो मैं तुम्हें इनाम दूंगा।
रोबिनहुड ने कहा—मैं राजा की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।
सचिव ने कहा—मैं किसी से भी कुछ नहीं कहूँगा। राजा मेरे बा में
हैं।

रोबिन को, उस पर विश्वास हो गया थियार उसने खौफ नहीं बांटी
चलाया, हरिश्चंद्र को मार दिया। सचिव ने कहा—हरिश्चंद्र का वघ करने
के कारण तुम्हें दण्ड भोगना पड़ेगा। इस प्रकार उन दोनों में भगाड़ा हो
गया। रोबिन दुनियाँ बढ़ा कर गरजे लगा। सचिव दर के मारे भाग
गया। रोबिन ने पिच्छार किया, नगर में बाकी मेरा बुरा ही होगा ब्रत:
जंगलों में जाकर प्रपना जोवन यापन करूँगा। उसके ही कारण उस
चलने लगे। वे सभी दल-जबल के साथ बहुत कहीं रहते। उसके दल की
सब जगह जरूरी होते लगी।

एक दिन प्रताप-बल जब वे चूमे रहे थे तब उन्होंने बड़ी खुशी पर रोटी
हुई। एक दूर बुड़ा को देखते। उनके पूर्ण-कवरो वह रहते हों? बुड़ा
ने उत्तर दिया, हरिश्चंद्र को मारने के कारण मेरे लड़कों की फासी लग रही
है। मेरा पति पहले मर चुका है। मैं निर्भर हूँ, पूर्णों के बिना प्रपना
जीवन कैसे बिताऊँगी?। यह सुनकर रोबिन को दर्शन दी गई। यही
बुढ़ा, चित्ता मत करो, तुम्हारे पूर्णों को फांसी नहीं बेहोगी। उनके
स्थान पर मैं बच्ची बल दे दूंगा। बुड़ा प्रसन्न होती हुई रोबिन बर लौट
गई।

रोबिन ने प्रशंसाएं अपने सहयोगियों की बुलाया और कहा—
सभी फांसी घर के पास तैयार रहो, जब मैं बिगुल बजाओं तब सभी
निकल कर हमला कर बेटा रोबिन सड़क की दीवार चल पड़ा। वहाँ उसने
दशवादतिथि मिश्रकण सचिव रोबिनः प्राहः-ववस्त्राण्युताय याहें प्रयत्न, 
मदुवनस्त्राणि च तें परिप्रेक्ष्य ताल्लों प्रस्तावितानि। नूतन-
ववस्त्राणि धाराविवा मिश्रकणः प्रत्येकः सम्पूर्णः। मिश्रकणकेश धृत्या 
रोबिनः प्राचार्यः। मार्ग शचिव भगवान्युताते मिश्रकणः सचिवः निरूङ्ख 
भिक्षाययाचः।

मिश्रकण सचिवाचकाराते सबूतां विलोकयां रोबिनच-किं बाञ्छ्यसि?
श्रववाचकालादेव न तरमनवेशवाचः। प्रागादपद्धति कारायं सम्प्राद्येवते,
किं तत्त्कारायणरिख्यसि। कथन वरिष्याचारः, मिश्रकणः प्रत्युवाच। 
शचिवः प्राहः। तन प्राहः, चल नया सहृ इत्युक्तवा मिश्रकणः ववस्त्राणि 
नोत्ताहात्। वचववाचे ववस्त्राणपुनरुपते पृथ्विरुपे, जनसुवादेः च विलोकय 
रोबिनो विस्मयापेत्।

शचिवः प्रोबाच-प्रर्वे मिश्रकणः। तात विचेचिते, सम्योगाधाराते। 
मिश्रकणः प्रत्युवाच-किं मृत्युदण्डार्थिरीवर्षप्रार्थिता न कियते, न कोडयु-
पदेशकचारः? नहिः प्रार्थिता तु कर्तव्य एव, प्रहमाकार्यपुद्धार्थकसू।
मिश्रकणो भूतित बिन्यमनवनकरोतू। बनुराचारणा: सर्वस्त्रत्र वनेरे-
सहयोगिनः। प्रसापू:। भगवानं प्रत्याचाराणि सचिवं विलोकृ तसं जहेसह:
रोबिनो पृथ्विरुपेन निमुः क्वतना कत्वा प्रोबाच, वषापुर्ण स्वमहूः गढळ:-
कामः।

रोबिनः सचिवतान्याय ववस्त्राणवानवयुः प्राहं-ददानां तव वर्ण 
विवातायमि। सचिवः पौनः:। पुनेन प्रयुक्तानमर्यादाचतव-तज्ज मानसातानाथः। 
रोबिनः प्रत्युवाच-यदि तव नृपति भिन्ने हुरीयाचे प्राप्तान्यादां न प्रादाय-
स्यसि तस्मां निमुः बिनुवनशं करोमः, श्रीसर्वत्त्व स्वमहूः सचिवत्त्वस्य 
प्रादयोः। पपात। रोबिनः वजन:। सहः पृणः:। कार्यान्वित विबेचः।

जनावित्याचारिणं नृपं सिद्धसनादनवानलय्यासां भवायत्वः। 
तस्तथाते च सुयोगः, प्रजाहितचिन्तकं नृपं वर्याहामसां।। रोबिनस्तवत्व 
वन्यविवानसमयायवित्तु। बनेयि व्यायार्थिर्मि प्राप्त:। कौटिः। प्रसूताः। एकदा 
रोबिनस्तवत्त्वेवनुसारां निमस्तः। तत् वृद्धो यतः कपिः सुदरो मुखः 
क्षत्रियस्य प्रायः। गणुनिविविवाय रोबिनः प्राहं-यतिकष्पि तव पायाः 
विचितते तत्प्राविष्यो, राजा सर्वं द्रष्यांते विवाहस्य तत्त्वं प्रायः। रोबिनो 
निश्चयसनसंतकोवयं तु नृपातः। तत् च च नृपत्त्ववच्च रोबिनः कार्यान्वित। 
प्राहं-सचिवसम्य नृपं विलोक्य परिवर्तनस्तृत्यहः।
एक मिश्रुक को देखा। मिश्रुक को देखकर रोबिन ने कहा—प्रपने वसन उतार कर मुझे दो, मेरे वसन तुम पहन। उन दोनों ने प्रपने वसन बदल लिये। मिश्रुक ने वसन पहन कर जस्ता ही गया। मिश्रुक का वेदना नियम बनाकर रोबिन चल पड़ा। रास्ते में सचिव भा रहा था। मिश्रुक ने सचिव को देखकर उससे भिखा मांगी।

पौड़े से उतर कर, मिश्रुक की बुराली पुर्वक देख कर सचिव ने कहा—क्या चाहते हो? मैं प्रातःकाल से ही उस थाने मैं की धूँढ़ रहा हूँ जो पौड़ी लगाने का कार्य कर सके। क्या तुम यह कार्य कर सकता है? मिश्रुक ने कहा—क्यों नहीं करंगा। सचिव ने प्रसन्न होते हुए कहा—मेरे साथ चल, वह मिश्रुक को फांसी घर की बोर ले गया। रोबिन ने जब फांसी घर में तब बृहदा के दोनों पूज्यों की बोर लोगों की सीड़ी देखी हो उसे बाहर उतारा।

सचिव ने कहा—बधूरे मिश्रुक। जबली करो, समय बित रहा है। मिश्रुक ने कहा—क्या घृप्पुर्वक से पहले देशवर की निर्माणा नहीं करते हो? क्या यहाँ कोई उपदेशक भी नहीं है? नहीं, प्रार्थना तो करनी है चाहिये। मैं उपदेशक को बुलाता हूँ। मिश्रुक ने निश्चित ही बिंगुल बजाया। घनुष लेकर रोबिन के सभी सहयोगी चारों बैठे। घनुष का यहां उस सचिव का सर्राथी देखकर सभी हृंसते होकर रोबिन ने बृहदा के पूज्यों की बजना-भक्ति करके कहा—सुखपूर्वक प्रपने घर जायंग।

रोबिन सचिव को लौकिक फांसी घर के पास ले जाकर कहते लगा—बधू मैं तुम्हारा वध कहूँगा। सचिव ने बार बार प्रतान करते हुए कहा है वनाथों के नाथ! मुझे छोड़ो। रोबिन ने कहा—यदि तेरा राजा अवश्य में दुर्बिक्षा में हुरियाओं के साथे पर फांसी की सजा नहीं देगा तो मैं तुम्हें वसन बदल दूंगा। सचिव ने कहा—हाँ ऐसा ही होगा, वह रोबिन के पैरों में गिर पड़ा। रोबिन प्रपने लोगों के साथ फिर जंगल में चला गया।

लोगों ने व्यायामारी राजा को सहिष्णु से उतार दिया और प्रमाण को भी। उस स्थान पर सुयोग्य, प्रजाजितितवत राजा का बौझ किया। रोबिन ने उसी तरह प्रपने जंगली जीवन बिताया। जंगल में भी व्यायामारी राजा की कौतुक फैल गई। एक बार रोबिन शिकार खेलने गया उससे देखा कि एक सुन्दर युवक घोड़े पर बैठ कर भ्या रहा है। धनुष निकाल कर रोबिन ने कहा—जो कुछ तुम्हारे पास है वो, राजा ने सब धन निकाल कर उसे दे दिया। रोबिन ने निश्चय
इदानीमयि केचि जनाध्याभारिः: सति तेषां नियमनं कृत्वा सुखेन राज्यं प्रकरोतु भवानू। तृप्त: प्राह—भवन्तो वनवासिनः शूराः, धनुविध्वंसविशारदाः कुशलाश्च। भवतां सहयोगं विषा कथं राज्यं सुराज्यं सहितमहतः। रोबिनो तृप्ति स्वावासस्थलमानीय विचिपूर्वकं स्वाध्यतं कृतवानु, प्रीतिभोजं दत्तं स्वजाते धनूः कौशलं प्रदशिष्टवान्।

तेषां सत्कारं स्वीकृत्यं तृप्त: प्राह प्रचलन्तु भवन्तो मश्सगरीम् स्व-योग्यतानुसारं कार्यं कुश्च, येन राज्यस्य समूहति: स्यात्। रोबिन-सत्तसहियोगिनुपेरा सह नगरं प्रविष्य समुखं स्वजीवनं याप्यामासुः।
किया कि यहू तो राजा है। सारा धन लौटा कर रोबिन ने क्षमा मांगते हुए कहा—श्राप जैसे राजा को देख कर मैं बहुत प्रश्न हैं।

इस समय भी कुछ लोग श्रत्वाचारी हैं उनका नियमन करके श्राप सुखपूर्वक राज्य कीजिये। राजा ने कहा—श्राप लोग वनवासी हो, शुरू हो, धनुषवास बिलास में कुशल हो। श्रापके सहयोग के बिना राज्य कैसे सुराज्य हो सकता है। रोबिन राजा को श्रापे निवास स्थान पर लाया श्रौर विधिपूर्वक उसका स्वागत किया, प्रीतिसोज देकर श्रापनी जाति का धनुषकौशल दिखाया।

उनका सत्कार स्वीकार करके राजा ने कहा—श्राप लोग मेरे नगर की श्रौर चलिये, श्रापनी योग्यता के अनुसार कार्य कीजिये ताकि राज्य की उद्यम हो सके। रोबिन श्रौर उसके सहयोगियों ने राजा के साथ नगर में प्रवेश किया और सुखपूर्वक जीवन विताया।
३८. धान्यचौर:

मूळस्थकोदेशावृत्त श्रेणीकरण

एकसिमा प्रामेये धरकः क्रष्को व्यवसतुः। क्रष्कस्य पार्वें वृः-शुमले धान्यक्षेत्राचायसे। स्वाध्यात्मकेन बिलोकय सृंखं श्रृःद्वंशचायं क्रष्कः। एकसिमा वर्षं क्रष्केषु दृष्टं वर्त्तम्य क्षेत्राकोपि चौरो निगुः साध्यमचरियतु। क्रष्कस्य चयः पुष्पा ध्राससेन्। ज्येष्ठाः पुष्पो दर्पणमिद्वारास्तां पृति कलसंस्फल सरलो विनितो प्रजायुःकारसितु।

एकदा क्रष्कः सर्वांचू पुत्रानाकारां शूँ-शूँ चौरां बदल्या वानेग्यति स मूलकृतार्थिकारी भविष्यति। तत्थुःत्त्वं ज्येष्ठः पुष्पः प्राच्यवर्मुशु-णिक्षं स्थले कृत्वा चौरात्मकेश्वरस्मूः। राजामाण्डलमुक्तनससूष्पाम्यर्जनम विश्रमितमुः। शिरस्वातोऽन्ते सन्ते झाव्याधास स श्रुःु रायमाणरात्ते। किलमूर्चकालाचार्यांशं श्रम्ब्राह्मणांदेन तत्सं निद्रा नुटता। स्वनामे प्रमाज्ञ्यां चाश्चर्याङ्कितं यावतं पृष्ठति तात्तस्मण्डुराच्छाय उपविज्यां प्रायससत्तू। ज्येष्ठपुत्रं बिलोकय सम्बूकः प्रासः मामप्र धान्यक्षेत्रे नये चौर-मन्वेश्वरहें तव साहाय्यं करिष्ये।

ज्येष्ठः पुष्पस्तं निर्मर्तसित्तूः प्रोवाच-गच्छ, गच्छ, तव मम भक्ति साहाय्यं करिष्यसि? इत्युः श्रम्ब्राह्मणोऽप्रयोगः कृपे व्यपातसत्तू। स प्रायत्तते यद् राजौ विनिद्रपुरुषः चौरातुः क्षेत्रं रक्तिकत्यागियम परे निद्रापरवशः सन्यायत:। प्रायत्विवः विलोकितय चौरायुःको धान्यमचरियतु।

द्वितियः पुष्प्रोपपिते ताब्राव क्षेत्रकस्यायं प्रचलितः। पिपासितां जलभावूः पात्र घावकृते धीपति ताब्रावसित्तूः पावे सम्बूकं बिलोकय चाश्चर्याङ्कितं सन्याजतः। सम्बूकस्तं प्रोवाच, मायूरप्र सहें नये, श्रम्ब्राह्मणार्ज्ञ्यां तव साहाय्यम विधायत। इत्युः श्रम्ब्राह्मणः शब्दायते। तस्य कर्कशस्त्रवर्णोऽधिवेश्न: प्राच्चलस्तवक्षेत्रं प्रति। क्षेत्रकोपामाहितय प्रती-क्षते चौरं परमस्फलसं सन्न र्वागृहं प्रत्स्थे।

तद्वितियक करिष्ये पुष्पः स्मरणस्य व्यचारायतृ-श्रवणप्रे प्रयत्यिषे, इत्युः श्रम्ब्राह्मणार्ज्ञ्यार्ज्ञ्यार्यां प्राच्चलस्तवक्षेत्रं भुष्मिणिकां भोजनमां नीतवा। कृप-
38. ग्रनाज का चौर

मनिकिरो को श्रद्धा कहा

एक गांव में कोई चनी किसान रहता था। किसान के पास बैलों
की चोड़ी तथा ग्रनाज का खेत था। अपने खेत को देखकर यह किसान
बहुत प्रसन्न होता था। एक साल किसान ने देखा कि कोई चौर रात में
उसके खेत से ग्रनाज चौर लेता था। किसान के तीन पुत्र थे। दोनों बड़े
पुत्र बड़े भ्रांपियाँ थे परन्तु खबर। छोटा पुत्र सच, नन्ना तथा दयालु
था।

एक बार किसान ने सभी पुत्रों को बुलाकर कहा—जो चौर को
पकड़ कर लायेगा वहू मेरा उत्तराधिकारी बनेगा। यह भुकंकर ज्येष्ठ
पुत्र बड़क चालवे में रख कर चौर को हूँड़ने गया। रात में मार्ग में
गिरता हुआ वहू किसी कुएँ के पास आया तब कि वहू विचार कर सके।
टोप से शाँक पालका वहू नीद में पुरुषार के लग गया। कृषि समय के
बाद में ईंधन के तरह उसकी नीद खुल गई। अपनी बोले बलक, आँतचंकित
होकर, जब वहू देखता है कि कोई मेंड़क उसके पास बैठा
है। ज्येष्ठ पुत्र को देखकर मेंड़क ने कहा—सुभा मेरी ग्रनाज के खेत में ले
चल में चौर को हूँड़ने में तेरी सहायता करुँगा।

ज्येष्ठ पुत्र ने मेंड़क को फटकारते हुए कहा—ता, ता, मेरी क्या
सहायता करेगा? यहू कहकर, मेंड़क को उठाकर कुएँ में बाल दिया।
उसने प्रयत्न किया कि उस रातमर जाकर चौर से खेत की रक्षा कर्ने
परन्तु उसे नीद था गई। जब उसने प्रातःकाल देखा तो चारों में चौर
ले ग्रनाज चौरा लिया था।

दूसरा पुत्र भी वैसे ही खेत की रक्षा करने के लिए बल पड़ा। इसे
प्यास लगी, जब यह जल लेने के लिए पात्र को खुए में बालता है तब
उस पात्र में मेंड़क को देखकर उसे आश्चर्य होता है। मेंड़क कहने लगा—
सुभा मेरे साथ तेज में चल, मेरे चौर को हूँड़ने में तेरी सहायता करोगा।
उसके कहने शब्द से दुःखी होकर यहू अपने
खेत की ओर चल पड़ा। खेत के एक कोने में बैठकर वहू चौर की हत्ता
जार करता रहा किन्तु असफल होकर वह लीट आया।

यहू देखकर छोटे पुत्र ने अपने मन में विचार किया कि मेरे भी
प्रयत्न करूँगा—ऐसा कहकर बड़क चौर भोजन लेकर चौर को हूँड़ने
मण्डक: प्राहुः कूफ्रेण्सिम्बर्तवते मायाप्रस्तरखण्डसें यथार्थ मनोरथं पूर्विष्यति।

कलिष्ठ: पुष्ण: कूफ्रे दृष्टि प्रलायं प्रोवाच, मदीया वत्सं चैवा कामना यदहुः चौरमन्वेद्यं सफल: स्याम्, कोऽधिब्धु निदर्याः सह मम विवाहः
स्वातः, प्रतिमुण्मये मवाने च निवसेयस्। किल्लक्ष्यागान्तरं सहस्रा
खस्यौन्यमस्य शाब्दस्तेन श्रुति:। शाब्दे प्रकुरव्वुः खनोत्यं तत्क्षोः। गतया
धायं शक्षयितुमारे। स मनसि ब्याचार्यत्वं भ्रमस्तिः धान्यं चोर्यते। सत्यभूजुम्बिका
विसार्य: यावस्तं हन्तुमुखतस्तत्वन्म्बुक: प्राहुः, विरम, इये
मेय तथा प्रेमिका वत्सं तत्क्षागामेव खरो मधुरश्वरेँ हायति। गायं
श्रुत्वा चणेन विषारितं वदियं मायाभिन: भापेया खर्र: सहजाता। न
भुज्यारा प्रत्येकं कोऽस्त्रेण्सिम्बं धायं चोर्यते।

किल्लक्ष्यागान्तरं मण्डको गाउँमारवम्। तत्क्षागामेव सं खर्र: स
सुदरीन्तकारुः परिसारः। सुदरोः कप्तं नीतवा स स्वगूः प्रति चक्षितः।
स्वपपक्षामगतो तेन दृष्टि यतू तदम् गृहं सुदरं भवन्ति भक्तम। कलिष्ठ:
पुष्ण: गृहमागत्य स्वप्तिरं सवं वृत्तजातं व्यवेदयत्। तच्छुः तथा सवं
चार्ययथोक्तित: सहजाता:। द्वौ ज्येष्ठ谢谢你阅读这篇文档。
चल पड़ा। कुछ के पास श्राकर, विश्राम करके जब मोजन करने लगा तब मेंड़क को देखकर प्रेम से उसका रूप दिखा श्रीर कहा—मित्र! कुछ खाओ। कुछ खाओ मेंड़क ने कहा—सुभे भी खेत में ले चल, मैं चौर को दूंढ़ने में सहायता करेगा, पुत्र ने कहा—क्यों नहीं, तू सहर्ष मेरे साथ चल सकता है।

मेंड़क ने कहा—इस कुए में एक जालू का पत्थर है जो तेरे मन की इच्छा पूरी कर देगा।

छठ पुत्र ने कुए में भांकर कहा—मेरी यह कामना है कि मैं चौर को दूंढ़ने में सफल हो सकूं, किसी सुन्दरी के साथ मेरा विवाह हो जाय, मैं किसी सुन्दर म्यून में रहूं। कुछ समय बाद उसने अचानक खानी के उड़ने का शब्द सुना। चहचहाता हुआ वह पक्षी उस खेत में जाकर अनाज खाने लगा। पुत्र ने मन में विचार किया—यही अनाज का चौर है—प्रेमी बड़ूंक लेकर जब वह उसे मारने को तैयार हुआ तब मेंड़क ने कहा—खो, यह तुम्हारी प्रेमिका है। उसी समय पक्षी ने मीठे स्वर में गाना आरआर्म किया। गाना सुनकर पुत्र ने विचार किया कि यह किसी जादूगर के शाप से पक्षी बना होगा। भूख लगने के कारण प्रति-दिन खेत से अनाज चौर कर खाता है।

कुछ समय बाद मेंड़क ने गाना आरआर्म किया। उसी समय उस पक्षी ने सुन्दर—कन्या का रूप दारा रण कर लिया। सुन्दर कन्या को लेकर वह अपने घर की श्रीर चल पड़ा। अपने घर के पास श्राकर उसने देखा कि उसका वह घर सुन्दर म्यून बन गया है। छोटे पुत्र ने घर श्राकर सारी बात पिता को सुनाई। यह सुनकर सभी श्राश्चर्च हो गये। दोनों बड़े भाइयों ने विचार किया कि हमने मेंड़क के वष्णु पर विश्वास नहीं किया।

पिता ने प्रसन्न होकर छोटे पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बनाया। वह भी श्रान्न्द्पूर्वक अपने दिन बिताने लगा।
37. वराकी-डोरबंका

चेकोस्लोवाकियादेशस्थ अधेष्ठकथा

कस्मिनिष्ठनु वनप्रदेशे एका वृद्धा न्यवसत्यः। तस्या द्रे सुते आस्तामः। कर्तिका डोरबंका च। कर्तिका बुद्धायः स्वकीया सुता डोरबंका च दंतकसुता। अथो गृहस्थ कार्यारङ्गः कर्तिका सम्भालयति। प्रक्षत्रा सरला 
डोरबंगा निर्मितिवस्तुः तयोरांजः पालयति। फूरा कर्तिका प्रत्येकः केशारोऽः। डोरबंका तुदेति।

ते डोरबंका केनापि व्याजेन गूढासिः सारवितुं कोनिक्यवास्तामः। 
एकदा शीतलं श्रीष्ट्यमहिमापि सम्भाजः। कर्तिका डोरबंकापर्वमायम् 
गत्य प्रोवाच-सत्ते जपाकुसुमास्माय सम्प्रत्येकः काननं गत्ता। शीता 
डोरबंका प्रस्तुवाच-भगिनः। श्रीष्ट्यो शीते कव प्राप्यन्ते कानने जपाकु-
सुमायः। कानने वृक्षेण पप्पायैव न विधाते, ततः कष्टयसि जपाकुसुमास्माय। 
कोधाविष्टा कर्तिका प्रोवर्ज्वाच-पुष्पायिः विना तथा गृहं 
नामस्थाप्तमः।

वराकी डोरबंका हस्ती काननं प्राप्ता, कव प्राप्यन्ते जपाकुसुमाय तद्वः। 
पुष्पायिः श्रीवषें ता चेतस्ततो विचार। किंचित्कालान्तरं 
तेनालोकितं यद्विजवाला। निर्जुनेश्वर्ति प्रसिद्धनमिति द्वारदशनः। 
समुपियत्या सर्वत्र। षौ दर्षननानन्निः तान्वीक्षणः सा समुपसार्स्यः।

कम्पमाना डोरबंका गृहस्वरूपः प्रोवाच-कि सकन्तो मध्ये क्रुपं 
कर्ष्यति। श्रीतेन विकृष्ट्यत्यां निर्येव, हुताशनसेवनाय भेदतिमो 
मनोरथः। तेषु बृहद्यान्तः समुदयाय स्वच्छरूपः तामाछ्छ्वा प्रोवाच-वस्ते, 
जनवरीसोः नामस्य, तव वदेषां बिलोक्य द्रवितोः, का तव, कस्मादः 
समुपागता कथ्वेव श्रीष्टिः शीते। मार्गतिल्व वल्ला डोरबंका स्वमातुः। 
मिन्याश्च समस्त वृद्धारङ्गः धार्यायमास। जनवरीसासः तत्कार्यः प्रतिवेदितं 
शुच्या वयाणः सरः प्रोवाच-वस्ते। तव साहास्यं विघास्यामः। मार्गसः 
मास्समाह्य स प्रोवाच भ्रातः। इवं कार्य तेनेव कत्वं बाष्कोपः, जनवरी-
37. बेचारी डोरंबंका

चंकोस्लोकारिकाया की श्रेष्ठ कथा

किसी वन में एक बुधा रहती थी। उसकी दो लड़कियां थीं कठिना तथा डोरंबंका। कठिना उस बुधा की लड़की थी तथा डोरंबंका उसकी दत्तकपुत्री थी। इसलिए गुड्डोल का कार्यमार कठिना संभालती थी। डोरंबंका स्वभाव से सरल थी वे दोनों उसे फटकारती थीं फिर भी वह उनकी आशा का पालन करती थी। कूर कठिना प्रतिदिन सारती हुई उसे दुख देती थी।

वे दोनों डोरंबंका को किसी बहाने से घर निकालने को कठिना थीं। एक बार हेममत भूषण में संयम हिमपात हुआ। कठिना ने डोरंबंका के पास आकर कहा—मेरी लिए गुड्डोल जंगल से गुड्डोल के फूल लेकर जा। बड़ी हुई डोरंबंका ने कहा, बहिन! इस संयमकर सर्दी में वन में गुड्डोल के फूल कहां मिलेंगे?। चोध में आकर कठिना ने जोर से कहा—बिना फूल लाये तू घर नहीं आ सकती।

बेचारी डोरंबंका रोती हुई जंगल में पड़नी, लेकिन वहां गुड्डोल के फूल कहां मिलते? फूलों को दुःखने के लिए वह इतना उबर धुमने लगी। कुछ समय बाद वह देख सका कि ग्राम की लपर निकल रहीं हैं। ग्राम के चारों ओर १२ व्यक्ति बैठे हैं। यद्यपि वे व्यक्ति बेचने में संयम कर फिर भी वह उनके पास गई।

कापती हुई डोरंबंका धीरे स्वर में बोली—क्या ग्राम लोग मुफ्त पर कृपा करेंगे?। सर्दी से कापती हुई में मर रही हूं। कृपा देकर ने मेरी श्रद्धा इच्छा है। उनमें से एक बुधा उठा, अपनी चारदेव से उसे दुःख कहने लगा पुत्र। मेरा नाम जनवरी मास है। तुम्हारी कुंद्रौ केवलकर में प्रविष्ट हूं। हे पुत्र! हम कौन हो, कहां से इस संयमकर सर्दी में आई हो, क्यों आई हो? डोरंबंका ने मायाविवृत्त होकर अपनी माता तथा बहिने के कारण मुझे बुझाये। जनवरी मास ने उसके कर्म बिलास को जुटकर द्यापूर्वक कहा—हे पुत्र! मेरे तुम्हारे सहायता कर लो, मार्ग माश को बुलाकर उसने कहा—भाई! इस कार्य को हम ही कर सकते.
प्रहृतिता डोरंका पुष्पाश्यादाय स्वगृहूँ प्रति प्रस्थिताः। स्वसभिनीमागण्यूति विलोकन कतिका प्रापच्चकिता स्वमातरं प्रोबाच, प्रये! कृत: समानीतानि पुष्पासि डोरंका। किमाँ चौद्री कार्य दूर्माविशामि नमूने बहुनुस्न दिनानि भयोषानाः। एकदा घुठां कतिका डोरंकां प्रोबाच समस्तेव वनं गत्वा मनस्ते बदरिर्फलानि भाग्यं, प्रत्येकं ग्रहं सिरे। तच्छुतः डोरंका वनं प्रति चचाल, मनसि विचारार्थास, असमये सम्प्रति कन्या प्राप्तने बदरिर्फलानि। डोरंका पुनः भ्रमलयि तन्त्रेय यात्र यत्र द्वादशयासि: हुताशनमुपवेचन्ते स्म। तामागताः विलोक्य जनवरीमासं: प्रोबाच प्रहे! इहुँ दुःखिता बालिका पुनरत्न कन्या प्राप्ता? सदती डोरंका प्राहु कतिकाया समाविष्टाः हृदयं बदरिर्फलान्यानेतुनुं सम्प्रति।

जनवरीमासं: जूनमासं प्राहु भ्रात:। डोरंकाया: साहाय्यं कुछ, जूनमासेन स्वस्तीकृति: प्रदत्। शह्सा तद्व बदरिर्फलानि सम्बासानाः। डोरंका कन्या नीतिव गृहं प्रति प्राप्त। बदरिर्फलान्यादाय डोरंका विलोक्य विस्मिता कतिका स्वस्तारं प्रोबाच भ्रम्यं कुतं: समसादिकानि बदरिर्फलानि। ग्रोहा विषयं कतिका डोरंकां प्रोबाच-कानकं गत्वा समस्तेव सेव-प्रस्थितां। इति कथयित्वा कतिका डोरंकां ब्रह्मं चन्द्रे बहुः निष्कास्यामास। सदती डोरंका पुनः कानन्त प्रति प्रचलिता। हत्यामां निराभां डोरंकां विलोक्य जनवरीमासं: पुनः स्त्रां प्रणुः सर्वं वृत्तान्तस्मृत। डोरंका प्राहु-कतिकाया सेवकान्यानेतुं सम्प्रेषिताः हृदयं। जनवरीमासं: सितम्बरसां प्राहु, भ्रातः! साहाय्यं कुछ बालिकाया: सितम्बरसां: प्रहृतिन: सनु सेवकानि समुदायार्थांकर। सेवकानि नीति डोरंका प्रहृतिः स्वगृहः प्रति प्रचलिता। प्रलाभादाय चाभिर्दूति डोरंका विलोक्य कतिकाया विचारितं स्वयंमेवाः कानन्त गत्वा प्रस्वतानि स्वेतः प्रस्वतानि समाहिरिप्रार्थम्-इत्युक्तः सा वनं प्रति प्रचलिता।
हो। जनवरी मास के अग्रदेश को सुनकर मार्च मास एक तारा शृंगर उस कार्य को करने की स्वीकृति दे दी। घरानक उन वन में गुड़ह्ल के फूल फिरते गये। वातावरण सुगमित हो उठा। मार्च मास ने कहा—बहिन! पुष्प चुनो, सुखपूर्वक अपने घर जाओ।

डोरबंका प्रसन्न होकर, पुष्प लेकर अपने घर के शृंगर चल पड़ी। अपनी बहिन को प्रातः हुई देसकर कार्यका भाष्यभागत होकर उन्होंने मामा से बोली बहेर! डोरबंका फूल कहभ से लाईं। इसे थोड़ा कृप्या फिर से काम करते को दूंगी। बहुत दिन बोत गये। एक दिन कालिका ने ठुल होकर डोरबंका को कहा—इसी समय वन में जाकर गोरे ले लिये बेर लाओ, उन्हीं तो मैं भर जाऊंगी। यहू सुनकर डोरबंका बन के शृंगर चल पड़ी, उसके मन में विचार फिरा, इस समय बिना ठुलु के, बेर कहा बिन्दू! डोरबंका घूमती हुई फिर बहुत पहुँची जहां बारह मास आया के लिये रहे थे। उसके भोजन की तूफ़से देशकर जनवरी मास ने कहा—करे! यहुं हुई बालिका फिर यहां आँखे राखी। रोती हुई डोरबंका ने कहा—कातिका के द्वारा बेर लाने का अग्रदेश पाकर नें यहां आई हूं।

जनवरी मास ने जून मास को कहा—भाई। डोरबंका के सहायता करो। जून मास ने अपनी स्वीकृति दे दी। घरानक बहां बेर उदय हो गये। डोरबंका फल लेकर घर की शृंगर बूढ़ी जगे। बेर लेकर आती हुई डोरबंका को देखकर कातिका भाष्यभाग में पड़ गई शृंगर अपनी माँ से कहते लगी। इसे में बेर कहां मिल गये।

कालिका ने देशकर कातिका के डोरबंका को कहा—मामी का तन में और कश्व के फल लाओ; ऐसा डोरबंका कातिका ने गले में हाथ लगाकर उसे बाहर निकाल दिया। डोरबंका फिर से जंगल के शृंगर चल पड़ी। नीरार तथा दुखी डोरबंका को देशकर जनवरी मास ने फिर लाए समाधान पूरे। डोरबंका ने कहा कातिका ने सेव-फल लाने के लिए मुझे वन में भेजा है। जनवरी मास ने विसम्बर मास से कहा—भाई। बालिका की सहायता करो। सितम्बर मास ने प्रसन्न होकर सेव फल उत्पन्न कर दिये। सेव-फल लेकर, प्रसन्न होकर डोरबंका अपने घर के शृंगर चल पड़ी। फल लेकर आती हुई डोरबंका को देशकर कातिका ने विचार किया—वन में निवास में जाकर बहुत से सेव-फल लेकर आँखे—ऐसा हुई। कातिका वहुं वन की शृंगर चल पड़ी।
शीतेन कम्पिता, दैने अभावते सा तत्तव प्राप्ता यूह द्वादशमासा:
हृताशनमुप्सेवन्ते स्म। रूपकेऽ स्वरेण कतिका प्राह-स्रापसरत, स्रापसरत,
प्रहमस्तिसेवन्ते करोमि, इत्युक्तवा तत्तोपविष्टा। रूपमर्वितायः कतिकाया
ध्वंबहारेष्वा जनवरीमासः कुद्दः सनू वने सहसा हिमपालमकरोत्। हिम-
भंभावालः सवेत्र प्रसूतं, कतिका भीष्यो हिमपाते विनष्टा। स्वयुता-
मन्वेष्टुं कुद्दा मातारपि वने विलपन्ती विनष्टा।

एकाकिणी डोरंका तस्मिन्नेवोत्तेज ससुखं निवसन्ती स्वजीवनं
यापयति। एकदा केनापि राजपुरशेरा तथा सह विवाहः कृतः। राजी
डोरंका राजप्रासादे सुखेन स्वजीवनसमयापयत्।
सर्दी से कांपती हुई, वन में चूमती हुई वह उसी स्थान पर पहुँची, बारहीं-मास ग्राम सेक रहे थे। क़र्किका ने बखी ग्रामाज में कहा—हटो, यहाँ से हटो, मैं ग्राम का सेवन करूंगी, ऐसा कहकर वह वहाँ बैठ गई। रूप की श्रा०भिमानिनी कर्किका के व्यवहार से जनवरी मास ःूँख हो उठा शौर उसने अचानक वन में बर्फ़ गिरा दी। वन में सर्वेण बर्फ़ की श्रांधी फैल गई। कर्किका इस भयंकर श्रांधी में विलीन हो गई। श्रांती पुष्पी को दूंढ़ने के लिए वृद्धा माता श्राई शौर वह मी उस श्रीशरा श्रांधी में विलीन हो गई।

होरबंका श्रेकली उस भोजद्वी में सुखपूर्वक रहती हुई श्रापना समय बिताती है। एक बार किसी राजपुत्र के साथ उसका विवाह हुआ। रानी होरबंका राजमहल में सुखपूर्वक श्रापना जीवन बिताने लगी।
३८. न्यायप्रियो धर्मगृहः

बगदादवेशस्य श्रेष्ठकथा

बगदादनगरे विश्वविद्यालो हसनउल-रशीदनामको गुह्ष्चावकश्तृ। तत्सम्बन्धे नगरे व्यवसायी वैको न्यावसनिरपत्यः। एकदा स स्वप्नमपश्यदू यदेको वृद्धस्त्वयर्भवाणस्य तं निर्मंसयति-वरे मूढः। तव मन्वकातीथौऽन्तो तीर्थऽञ्चार्थऽऽन्तो कथम गच्छसि। तदवदेनेन स यात्रां निरगातः। स्वप्नस्य वस्तुमातारि विक्रोयावविषयः। स्वर्णमुद्रा नीतवा कस्यचिं व्यवसायिनः पार्श्वमात्राप्रोवाच, भ्राता। अहं तीर्थऽञ्चार्थऽऽन्तो गच्छामि मम स्वर्णमुद्रा भवता सुरक्षितवः। व्यवसायी प्राह-मम वस्तुमात्ता रङ्ग क्रृतां निक्षिप। लोकः तथा क्रृतवा स्तिरातु तीर्थऽञ्चार्थऽऽन्तो।

सप्तवर्षिरि व्यतीतानि। भ्रलोक्ष्वाञ्जामहोदयो न प्रत्यागतः व्यवसायी तस्य स्वर्णमुद्रा हतुः भिष्मप्रकटः। एकदा व्यवसायिनो भायाय प्रोवाच-भ्रली-स्वाञ्जामहोदयो मृतो भवेदन्यथा। स कथमागत इति कथमिति मनवान्, परं यदि स प्रत्यागत स्त्रोतं कामिनुतरं दास्यति। इत्यपरां स्त्रोतं क्रृतवा न सुखमवत्सत्वत्ति भवानु परं लोकसंस्करो व्यवसायी भायायभिमातं तिरस्कृत्य स्वर्णमुद्रा नेतृऽ प्राचर्य भाषागारे। लोकसंस्करो जैतृशाकालानां स्थने नृत्तज्ज्वलनमात्रा निलक्षणभरित स्वर्णमुद्रा निलक्षणम् निलक्षणम् भार्याप्र-भृत्ता भारा न सत्तु तस्मिन् तास्त्रां निक्षिप।

संयोगेन द्वितीये तिने स्वाञ्जा-प्रली प्रत्यागतः स्वचौर्यं नियाहितं। भ्रली-स्वाञ्जामहोदया प्राहः प्राप्तो मम स्वर्णमुद्रा। अहं स्वाञ्जामहोदयो गतवा चाचर्य स्वर्णमुद्रा। अहं-स्वाञ्जा भाषागारं गतवा यावदू विलोकयति तावदू भलिता: स्वर्णमुद्रा। विशेषं सनं तत्त्वमात्राप्रोवाचसंस्करो न सत्तु तत्र मम स्वर्णमुद्रा। यदि स्त्रोतं निलास्तिः सुष्ठु, प्रावीदेः दास्यता। परं प्रावीदेयं चतुष्कृतं प्रयणां भवावः। व्यवसायी प्राह-काः। स्वर्णमुद्रा: न भवाय वेदिः, भवता क्रृता निखाताः। व्यवसायिनो वचांसि निशाम्य स्वाञ्जा रोदितुमारेः। विशेषं गतवा-मधि निरिक्ते द्वा क्रृतवा महा प्रयणु मम स्वर्णमुद्रा। व्यवसायी याचतिमि प्रत्युत्तरः।
३८. न्यायप्रिय धर्मगुरु

बगदाद की श्रेष्ठ कथा

बगदाददराग में एक हाल-उल-रसीद नामक विष्णुप्रिय-धर्मगुरु रहते थे। उसी नगर में एक व्यापारी भी रहा करता था, उसके कोई स्वतंत्र न था। एक दिन उसने स्वप्न देखा कि एक वृद्ध पुरुष उसके पास आकर उसे फटकारता हुआ कहता है छारे मूर्ख! तुम कहने की तीन वाक्य करने के बाद नहीं जा रहा है? । वृद्ध के भावाशय से वह तीन वाक्य—यात्रा के लिए निकल पड़ा। उसने अपनी दुकान की सबी वस्त्र बेच है। पौधों दो केवल बची हुई स्वर्गमुद्राएं लेकर वह एक व्यापारी के पास आकर कहते लगा भाई। मैं तीन वाक्या पर जा रहा हूं, मेरी स्वर्गमुद्राएं अर्थ आराम रक्षित टलें। व्यापारी ने कहा—मेरे भालगोवाम में, जहाँ कहीं भी तुम चाहो रहे दो। उसने भी स्वर्गमुद्रा—वहाँ रहे दो भी और तीन वाक्य का निकल पड़ा।

सात वर्ष बीत गये। प्रलीवाजा महोदय नहीं लौटे। व्यापारी उसकी स्वर्गमुद्राएं छोरना चाहता था। एक दिन व्यापारी की स्त्री ने कहा—आप कहते हो कि प्रली-स्वाजा मर गया होगा। नहीं, तो वह आज तक भा जाता? यदि वह भा गया तो आप उसका क्या उत्तर देगे? इस प्रकार प्रश्न पर वृद्ध सुनते नहीं रह सकते। परन्तु लोभी व्यापारी ने स्त्री की सलाह नहीं मानी, वह मान गोवाम से सोने की मोहरें लेने चल पड़ा। उसने बस्तन में वेदून फूलों के स्वाद पर नये वेदून के फल रक्ष कर सोने की मोहरें निकाल ली, घर आकर स्त्री की कह दिया कि उस बस्तन में तो सोने की मोहरें नहीं थीं। समय प्रथम ही जा न गये उनकी राशि बन चुकी है।

संयोग की वात थी कि दूसरे दिन ही प्रली-स्वाजा आ गया। प्रली की चोरी की बिखाने के लिए व्यापारी ने स्वाजा का खूब स्वागत किया। स्त्री ने कहा—मेरी मोहरें सुरक्षित हैं? व्यापारी ने कहा—सालगोवाम में जाकर प्रली मोहरें से प्राप्त। स्त्री—स्वाजा गोवाम में जाकर जब देखता है तो उसे सोने की मोहरें नहीं मिली। दुर्दर होकर वह व्यापारी से कहते लगा। वहाँ मेरी सोने की मोहरें नहीं हैं, यदि आपने निकाली हैं तो ठीक हैं, फिर मुझे लोटा देना, पर मेरी बाप मुझे उनकी रसीद दे दें। व्यापारी ने कहा—कौन सी मोहरें? मैं कुछ नहीं जानता, आपने कहाँ रखी की। व्यापारी के वचन सुनकर प्रली रोने लग गया। उसने विचार करते हुए कहा—मुझे गरीब पर दया करके मेरी मोहरें मुझे दे। व्यापारी ने जब कुछ भी उत्तर नहीं दिया तब प्रली ने कहा—मैं न्यायलय जाकर निर्णय करवाऊँगा।
न प्रावृत्ततदाता अलीमहोदयः प्राहः-प्रहः न्यायालयं गत्वा निर्जोयं कार-विषयामि।

साक्षियामभावे न्यायालयो न निर्जोयं करतुः शशाकः। एकदा द्वारः-धारमहोदयो धर्मंगुरः। वा विवेकानंदस्वरूपं स्वप्रेमिकानां प्रायतः। धर्मंगुरः रात्रिः बेलं परिवर्त्त नर्गरे ध्रुवितः, विलोकयति च प्रतिविं यत्रकोपः धर्मयां तु न करोति। धर्मंगुराः प्राधिन्यमंत्रिगः सह नगरे ध्रुमनास्ते, एकशं बालकाः। धिवंदितासानं तेन तत्र दृष्टं यदृः बालका:। समितिमायोप्यकर्यक्षितिः मित्राशिष्यः। ध्रुमनास्ते काहः धर्मंगुरः। भवतः द्वाराधरीमहोदयः। व्यवसायिनः न्यायार्थमार्गायतः। न्यायालीयशालीको गवीरमुद्रयः प्रोक्तः, व्यवसायी स्वपकः प्रस्तोतः। व्यवसायी-बालकः प्रोक्तः-न्यायाधिकृतः। सर्वे स्वाजामहोदयस्य मष्ठः मिश्याभियोगः। न समा तस्य स्वरुपः चोरितः। धर्मंगुरः प्राहः-प्रहः तत्परां उपरुक्तमिश्याभियोगः। किंचिदक्षमान्तरं पापः-मेलतनोभपर्यावरे बालकः।

न्यायाधिकृतः: प्राहः-अलो-द्वाराः तु कर्मयति तीर्थंत्रां गतस्य सम सतवर्षेण ध्यतितां तर्मस्मि नापो तु जैतुनकलमि नवानि दृढ्यते। केन कथं वा नृतं-जैतुन-फलामि पावेन निश्चितानि। तस्मिनः च वर्णं तन्त्र जैतुनकलिकों फलपरिprovedयां समाकारति। फल-विक्रिक्ति प्राहः-भयवः जैतुनकलमि तु नृतनाम चरनेन। व्यवसायी किंतु विद्वेषतिः निधित्वं न्यायाधिकृतः। किन्तु न्यायाधिकृतः रक्षापूर्ववाच्यादिविति, श्रवणे प्रस्तुति न्यायाधिकृतः। रक्षापूर्वका व्यवसायिनं नीलवा शूले समारोपवति, सवेय नामका स्तानकावादनवृक्कं विसंहवतः।

स्वप्रथामकावयं सहू धर्मंगुरः बालकां न्यायालयं निर्जोयं धृवतः सूर्यं मुद्ये। द्वितीये दिने धर्मंगुरः स्वधर्मस्थानेः ते व्यवसायिनं, प्राहः-द्वाराधरीमहोदयः बालकन्यायालीयी चान्यानु पौराणिकायालयाः। सर्वोपलक्षि किंतु प्रोक्तः-बालकन्यायाधिकृतः। सब्रेष्ठो समर्थः स्वयः व्यव-नागाण्डे प्रस्तोतः धवानु। तदृश बालकां समितिः संवंधितः।

सर्वेश्चित्तित्रिकोषम् चौरो व्यवसायी भृगुमवेशतः, तदनु विलक्षणः प्रारीभागः कुर्बूतं दया-भिषायस्तुतः परेण। धर्मंगुरः कवितमू-श्रृति-मारोपतः चौरो व्यवसायिनः। कलिष्कां धर्मंगुरो निपधिः भृगु मुद्ये। धर्मंगुरं व्यायाकारिनं बालको पारितोषिकः दत्ता सवेयं किमैसे।
गवाहों के द्वारा में न्यायालय भी निर्णय नहीं कर सका। एक बार गली-खाजा ने गरमगुरु के पास ध्यान धर्मनापवत्त प्रस्तुत किया। गरमगुरु रात में भेष बदलकर नगर में प्रतिबिंब चूम कर यह देखा करता था कि कहीं पर किसी पर ध्यान योग नहीं हो रहा है?। एक बार गरमगुरु ध्याने प्रवाहनमित्र के साथ नगर में घूम रहा था। उसने देखा कि एक स्थान पर बहुत से बालक खेल रहे हैं। बालक सभा बना कर कह रहे हैं ग्रहे मित्रों! इस नाटक में मैं गरमगुरु हूँ, ध्यान लोग गली-खाजा हो, उस नौर ध्यानपारी को न्याय के लिए यहाँ पेश करो। बालक—

न्यायाधीश ने गवाहों मुद्रा बना कर कहा—ध्यानपारी ध्यान पक्ष प्रस्तुत करे। ध्यानपारी—बालक कहाले लगा न्यायाधीश महोदय! गली-खाजा ने सुना पर भूख युक्तवर्ण लगाया है। मैंने उसकी मोहर नहीं चुराईं हैं। गरमगुरु ने कहा—मैं उस पात्र को देखना चाहता हूँ जिसमें मोहरे रखकर थीं। कुछ ही देर बाद बालकों के हारा वह गाम यहां लाया जाता है।

न्यायाधीश ने कहा—गली-खाजा का कहना है कि सात वर्ष पहले मैं टोर्च यात्रा पर गया था परवर इस पात्र में ठो जैतून के नये फल दिखाई दे रहे हैं। वे नये फल कहने गारू कैसे रख दिये इस पात्र में? उसी समय जैतून फलों के बेचने वाले को बुलाया गया। उसने कहा—भगवान! वे जैतून के फल नये हैं। ध्यानपारी कुछ कहता चाहता था किंतु न्यायाधीश ने खिलादियों को ध्यान दिया कि ध्यानपारी-ध्यानपारी को पार्शी पर लद्दा दो। सिपाही ध्यानपारी को पार्शी पर लद्दा देते हैं। सभी बालक लाही बजाते हुए ध्यान प्रेषलो समाप्त करते हैं।

जब ध्याने प्रवाहनमित्र के साथ गरमगुरु ने बालकों के न्यायालय का निर्णय सुना यह बहुत प्रसन्न हुआ। दूसरे दिन गरमगुरु ने प्रवाहन गरमगुरु में ध्यानपारी को, ध्यानपारी, बालक—न्यायाधीश को तथा नगरवालियों को खुलाया। जब सब भा गये तब गरमगुरु ने कहा—बालक ध्यानपारी—ध्यानपारी! सभी के सामने ध्यान, "न्याय का नाटक" प्रस्तुत करो। उसी प्रकार बहुत बालकों के सभा भी बनाई गई।

इस नाटक को देखकर ध्यानपारी बहुत अद्वितीय करते लग गया, रोते हुए, बिलास करते हुए, प्रार्थना करते हुए, उसने दया को भीष। मांगी परवर गरमगुरु ने कहा—इस बार ध्यानपारी को पार्शी दे दो। धली क्वार्शा, गरमगुरु के न्याय से बहुत प्रसन्न हुआ। गरमगुरु ने न्याय अनुसार बालक को धारीत्रिक दिया और सभा को स्थिर कर दिया।
38. सिद्धरेला-उपाख्यानम्

रुपु वैकम्सिन्नगरे जनश्रृङ्खले त्वयसत्। तस्य भार्य मृता, तेन विघवया सह विवाहः क्रतः। सा चाभिमानिनी निर्त्तजास्त्तीलुः।

विषवाया: पूर्वपात्रूं कन्ये चास्तामुः। तस्य जनस्यापि चैका कन्या सुशीला, मदुरमार्मिशी, मातृगुणानुरुपपास्त्तीलुः।

विवाहान्तरमिन्न-मानिनी विमातृः पुष्टीं तिरस्त्वकार यतो हि तस्यः कन्यके स्ववाल-रुपगुणेऽहुर्थी नित्तरे। तस्यः सा चेटीवद् व्यवहृति, सा भूमौ शेते तस्यः कन्यके पर्यक्यो। वराकी सा सर्वसहत, न कदापि पितरं किमण्य- कथयतु। ते कन्यके ताे “सिद्धरेला” नामता व्यवहृतः। मलिनवस्त्रा-बृहत्वाणि सा तयोरिभक्तरं शुश्रुः।

बहुरि दिनानि व्यवहृतानि। एकदा तत्तत्त्वेण राजकुमारः नृत्यस्य-योजनं क्रतं तस्मिनःपुष्टाः पौरा-निमास्तितः। ते कन्यके पिन निमन्तिते, एका प्राण-ग्राहः, नृत्यस्यमार्गोऽहुः स्वार्थावृतृः भांडुवा-स्तामकर-वस्त्राशिः परिवाश्चे, ब्राह्मणः ब्रवीति, ब्राह्मणगत्वा तिरस्त्वकारामापि। वस्त्राविशेषः समाकारिता ते ज्ञेष्कुतुः। वराकी सिद्धरेला भागिन्यो सज्जिकुतुः जग्न, ते सिद्धरेलामपृच्छ्यातापि तव नृत्ये सम्मिलिता भविष्यति, सा प्राण भागिन्यो। कन्या मामप्रसुः, किमहं वेषेणाते राजस्य गन्तुः, योग्यः। तत्चुत्ता त्वा ते प्रोम्भैंजेश्वरुः।

तद्विदमाजगाम, रूपगोऽपि कन्यके मुस्वजिते राजप्रासादं प्रति प्रचलिते, तयोरकंशोऽरोपये संवृत्य सिद्धरेला फूक्कत कोयतुमारवह। तस्या गृहा माता ब्रह्मरसं संवृत्ता। सा समागत्य शृङ्खलां कन्यां कारणं प्रचुःक्त निश्चिन्तनी कन्या प्राण-मदोपेश्चापि राजप्रासादे गन्तुः वर्तते परं न सन्ति मत्वाप्ये परिवर्तनाय वस्त्राशिः, माता प्राण-प्राहं सर्व प्रवन्धजाते करिषे, मा रोदी।

मन्तविलि माता कन्या फलमेकमानेह्मारिधेश। सा तत्तलं विन्ह्व्रत, मायाप्रदीतम् तत्स्थास्मकरोत्सा स्वर्पश्चावरहं तत्तलं स्वर्परथे परिवर्तितम्। तदन्तरे सा मृत्यक्षप-जरुषद्वारान्तिरुः कन्यामारिधेशवती।
उसके पहले किसी नगर में एक व्यक्ति रहता था। उसकी स्त्री मर चुकी थी, उसने बिंदबार स्त्री से बिवाह कर लिया। वह स्त्री प्रभुमानी एवं निर्लंघ थी। बिंदबार स्त्री के पहले पति से दो कन्याएं थीं। उस व्यक्ति के भी एक कन्या थी जो सुशील, मधुरमार्गी तथा माता के अनुच्छे ही गुरु-रूप बाली थी। बिवाह के बाद प्रभुमानी स्त्री ने सौंतेती मा की पुजी का अप्रमाण किया व्यक्ति उसकी कन्याएं स्वमार्ग, रूप तथा गुरुओं में उससे ही थीं। वह स्त्री उस कन्या के साथ दासी की तरह ब्यवहार करती थी। वह कन्या भूमि पर सोती, उसकी कन्याएं पलंग पर। उस बेचारी ने सब कुछ सहन किया, आपने पिता को न कभी भी कुछ न कहा। वे कन्याएं उस कन्या को विंदरेला के नाम से पुकारताँ थीं। मैंले वस्त्र पहनती हुई भी वह उनसे अच्छी लगती थी।

बहुत दिन बीत गये। एक बार वहाँ के राजपुत्र ने नृत्य का अभ्यास किया। उसमें प्रमुख नागरिकों को बुलाया। उन कन्याओं को भी बुलाया। एक कन्या ने कहा में नृत्य में सोने से मड़े हुए मानुका श्रीर स्तम्भकर नामक बालक को पहुंच गई। इसी कन्या ने कहा—मैं रत्नाकित टोयी पहुँच गी। उन्हें सजाने के लिए वस्त्र विशेष पुलाये गये। बेचारी विंदरेला भी बहिनों को सजाने लगी, उन्होंने कहा—माता तुम में नृत्य में समस्यित होगी? कन्या ने कहा—ये मेरी हुंसी उड़ाती हो? क्या में इस वेश को धारण कर राजस्वन जाने योग्य हूं? वह सुनकर वे जोर-से हुंस पड़ी।

वह दिन आया। रूप की प्रभुमानी कन्याएं सुसंगित-राजमहल की श्रीर बल पड़ी, उसकी आंखों से श्रोमल हो गई। विंदरेला फूट फूट कर रोने लगी। उसकी मरी हुई माँ बप्परा बन चुकी थी। वह बारे, उसने क्षया सं रोने का कारण पूछा, विश्वास लेती हुई कन्या ने कहा—मेरी इच्छा में राजमहल जाने की है किन्तु मेरे पास पहुँचने के वस्त्र नही है, माता ने कहा—में सभी प्रब्ध कर देती हूं। वह मत रो।

शीघ्र ही माता ने कन्या को एक फल लाने का आदेश दिया। उसने उस फल को काटा, उसने जाडू की छड़ी से उस फल का स्पर्श किया, स्पर्श करते ही वह फल सोने के रथ के रूप में बदल गया। इसके
सिद्धरैला: लोक विलोकय सर्व चक्तचकिता इत भक्षित-मारणा नातवीड़ हज्जूपूर्ण सुन्दरी बैठतूड़ूनी। किल्ल्यतकालानंतर समाहूळमागत्य राजपूनःस्तळा दह नितिमारे। तस्या नूत्तर विलोकय सम्भा स्त्रिया सज्जाता। स्वत्वाहार्काले सिद्धरैला स्वभिगम्योऽ: पार्श्व-मागत्य राजपूनःग्रहणस्तळूऽ: शिष्टाचारियोऽक्रम्यं तस्या सम्पत्तिवती। तद्वृत्तवाहिणीत्य विलोक्य ते विचारायमास्तः: कयमिंचर परिचितापि सेनें प्रद-वैकृतिः ग्याराचिनयायमाता, सत्यं सिद्धरैलामातृत्वचननानि संसमसाृती तपसाहु गृहृ प्रति विनिगता। प्रत्यागम ततो मांतरमुखवाच-पुनरिज्जुधि राज-पृष्ठो यथा भाष निलर्थुम। तदेव तेजिपि मृगविय गृहृ प्रत्यागम घाेरस्ताहः घाेरस्तायतम। सिद्धरैला नेते निमित्तलीब घाेरस्ताहार्तियती भाह च मृगिंत्या! श्रीरामिः सज्जाता किमावधिचिन्तयौ तवैवास्ताम?ौ ते प्रोत्यन्तैः यदि तव तत्र भवितास्तिः तह गृहृपः न प्रत्यागमतास्तिः। तत्र तीका राजपूनूऽका समायातात्तिशृः च चानित्वसुन्दरी। राजपृष्ठः सवर्षलं भडामापि तामायातुविनिगत्या।

सिद्धरैला प्राहृ-किमामहकपि ता क्षृं घाध्यामि, भविनि शरास्ते। मलुकते तव वस्त्रि प्रयच्छ वेघामहपि तव गत्युमागायमु-कुश्वा संरलाता वा निर्मित्यायती चाबेनेनाहूं वस्त्रार्की प्रयच्छामि तव मम वस्त्रार्की मलिनानि विवास्तिः, सिद्धरैला तुष्योमें सर्वेष शुद्धाः।

ह्विदेवामहपि सिद्धरैला पूवेषन्देव नूत्ये सम्मिलिता बृहस्पति। पूर्वव-देवदेव घृहपयो मिलिबौ तौ सवमें विस्तृत्या नूयन्त्री चास्तास्तिः। ग्रंहृरामिः सज्जाता। चहृता सिद्धरैला प्रवुद्रा सति गृहृ प्रति प्रलायितुमेक्षतू परं
बाद उसने कथा को बूढ़ी के निजरे को खोलने का आदेश दिया। उसके बोलने पर ग्रामिका 6 बूढ़ी बाहर निकले। माता के द्वारा दूर हो वे बूढ़ी घोड़ों के रूप में बनाकर गये। शब्द रथ कौन चलाये, यह उससे उपस्थित हुई। माता ने कथा से कहा—देखो निजरे में कौई बूढ़ी हो उसमें लम्बी सूखी बाला एक बूढ़ा था। उसने हाथ से छूकर उसे सारखे बना दिया। उसने 6 बूढ़ीबाला को हाथ के स्पर्श से दांतियाँ बनाकर पुडलों को कहा है मेरी प्रीत पुत्री। तो शब्द रथ पर बैठकर राजमहल जा परन्तु ग्रामिका रात में लौट आया। मैं निवृत्त हो ग्रामिका रात में लौट ग्रामिका यह प्रतिशा कर वह राजमहल की बोर चल पड़ी। ग्रामिकाओं ने राजमहल को चुनना दी कि एक जाकुमारी दरबारे पर आई हुई है।

सिंदरेला के सौदर्य को देखकर सभी चकित हो गये और कहने लगे कि ऐसी सुन्दरी हरने पहले कभी नहीं देखी। कुछ समय बाद राजमहल समा घर में ग्रामिका उसके साथ नाचने लगा गया। उस कथा के नृत्य को देख कर सभा स्वभाव रह गई। स्वभाव के समय सिंदरेला ने राजमहल द्वारा दिखाया गये पत्तों को, मिलिकार ने नाते उन दोनों बहनों को दिया। उसके बयान को देख कर उन्होंने बिचार किया—यह प्रारंभित होती हुई भी कैसे प्रपन प्रेम प्रकट कर रही है? ग्रामिका रात हो गई, शोध हो सिंदरेला माँ के बचनों को स्वरूप करती हुई वहीं से घर की बोर लौट पड़ी। प्रत्येक हफ्ते मां से कहने लगी—राजमहल पूरा: एक बार मेरे साथ नाचना चाहता है। इतने में वे बहनें भी लौट गईं, दरबार घटनाहीन लगी। सिंदरेला बालियाँ को पत्ती हुई दरबार खोलकर कहने लगी। बहनी: ग्रामिका रात बीत गई, क्या भी तक तुम बहीं थी? उन्होंने कहा—यदि तुम बहीं होती तो घर भी नहीं ग्रामिका। वह एक राजकुमारी ग्रामिका भी जो कुछ भूख नुकसान थी। राजकुमार सब कुछ देखकर भी उसे प्राप्त करना चाहता है।

सिंदरेला ने कहा—यह मैं भी मैं उसे देख सकती हूँ? मेरे लिए तुम प्रसन्न वस्त्र दे ताकि मैं भी बहां जा सकूँ। शराबयां जोख में ग्रामिका फटकारती हुई, अभावनित करती हुई बोली—मैं ग्रामिका कपड़े नहीं दूंगी, तुम मेरे कपड़े में ले कर देगी। सिंदरेला चुपचाप सब कुछ सुनकर रही।

सूरती बार मैं सिंदरेला पहले की तरह हो नृत्य से समस्यित हुई। पहले की तरह ही में प्रेमयाच में बंध गये और सब कुछ भूल कर नाचने लगे। ग्रामिका रात हो गई। ग्रामिनक सिंदरेला को चुनना आया,
विलम्ब: सम्मेर। सा त्वरित यदा तस्मात्मिन्निः च तदा तस्या: पाद-श्राभ्रेमकं तथा निपतितम्। सिंद्रेलां यदा राजभवनाद्व बहिरागत्य विलोकयति तावश तथा संज्ञां रथं न सारथि: न, परिचारिका:। सा स्वयमिद जीवांनवरवरा हरिगोमलकृतिमारकथा गृहं प्रति। राजपुष्क्र-प्रध्वर तामनुशाखवन भूतवानु सप्रद्व्य ति भवव्य विलोकिता पुष्क्रम धावमाना राजपुष्क्रिका सवाहना? ते प्रोचु: राजपुष्क्रिका तु नावलोकिता परनेका मलिनवस्त्रा प्राम्यवालिका धावमाना विनिगता।

नृत्यासिष्वृत्य ते भगिन्यौ पूर्ववदेव गृहमागती। सिंद्रेलां प्राह—सम्प्रति कुन्नांश्वभूद्वत्सव? ते प्रोचु:--सम्प्रत्यि राजकुमारिका समागता किन्तु चाउँ राज्ञिरपर्यंत तथा स्थित्वा सा वायुवेगेन धावती तस्माद् विनिगता। तत्पादविन्युः पादश्रेष्ठेऽनेव विलोकयनः प्रमत्त इव राजपुष्क्रः सर्वकालमसिरमेते।

एकदा राजपुष्क्रः समुद्रसहस्रासमकारयतु—द्व पादश्राणं यस्या: कुमारिकायाश्चवरवर्गमुष्ठ समायाति सैव राजपुष्क्रिका मन्त्रं य। राज-पुष्क्रस्त्या साद्रेव विवाहं करिष्यति। राजपुष्क्रिका: पादश्राणं नीवा गृहं गृहं प्राक्षरन्। तद् गृहं प्रति समागत। पूर्व पादश्राणं भगिन्यौ परिभाषात-वत्यी परं राजपुष्क्रिका: सिंद्रेलामेवावानिन्द्वीयुः मत्वा तत्सहारं-मयोजयन्त। सा सुदरी तत् सहभ्रेव द्वितीयपादश्राणं नि:सारे प्रदशिष्ट-गति। तदेव सिंद्रेलामेव: वातापि प्रकटिता भायायणीकया सर्व पूर्ववेवदेव ससर्जं। तदवैश्वर्य ममीयी लज्जावस्त्रमुख्यो तत्पादयो: निपततुः क्षामायचनाचाचक्रुङ्कासम्। सा भगिन्यौ क्षमापयामास।

राजपुष्क्रिका: सदरं, सविनयं सिंद्रेलां राजपुष्क्रपाष्ट्रमानिन्यं। परं प्रहिष्टो राजपुष्क्र: सिंद्रेलां राष्ट्री विचार ससुरं राज्यं बुमूवे।
सिंदरेला की कहानी/169

उसके पर की श्रोर भागना चाहा किन्तु विलम्र हो चुका था । वह जलदी जलदी वहाँ से निकलता चाहती है तब उसका एक जुंटा बहुं गिर जाता है । सिंदरेला जब राजभवन से बाहर गई है तब देखती है कि वहाँ न तो सजा हुमा रहा है न सारी है न दासियाँ हैं। उसने स्वयं भी पुराने वस्त्र पहन रखे हैं हरियाँ की तरह वह घर की श्रोर कूदने लगी । राजकुमार भी उसका श्रोर दीक्षा हुई नौकरों को पूछता है क्या ग्राम लोगों ने एक राजकुमारी कि रथ में बेठ कर दोखती हुई देखा । नौकरों ने कहा—राजकुमारी को तो नहीं देखा किन्तु एक ग्रामीण-बालिका। वहें कपड़े धारण करने वाले, दोखती हुई जा रही थी ।

नृत्य समाप्त होने पर वे बहिनें भी पहले की तरह ही घर लौटी सिंदरेला ने कहा—प्राण कैसा उस्मल हुआ । बहिनें ने कहा—प्राण भी राजकुमारी ग्राम थी किन्तु ग्रामीण रात तक वहाँ रहने के पश्चात वह हुआ की तरह दोखती हुई वहाँ से चली गई । उसके पैर में से निकले हुए जुड़ते को देखता हुआ वह राजकुमार, हर समय गाँव की तरह घूमता रहता है ।

एकबार राजपुत्र ने घोषणा करवाई—यह जूता जिस कुमारी के पैर में ग्रंथकी तरह भी जाय। उसी को राजपुत्री माना जाय। राजपुत्र उसी के साथ विवाह करेगा । सिपाही जुड़ते को लेकर घर घर घूमे ।

उस पर में भी आये । पहले तो जुड़ते की उन दोनों बहिनों ने पहला किन्तु सिपाहियों ने सिंदरेला की ही श्रद्धासुन्दरा मानकर उसके पैर में जूता पहनाया । उस सुन्दरी ने उस जूते के समान ही अपना एक जूता निकाल कर दिखाया । उसी समय सिंदरेला की माता भी प्रकट हुई । जादु की छट्टी से उसने पहले की सभी चीजें बना दीं । वह देखकर बहिनें शर्म से मुक्त गईं, उसके पैरों में लिये, कमा वापसा करने लगी । सिंदरेला ने अपनी बहिनों को कमा कर दिया ।

सिपाही बाबू के साथ सिंदरेला को राजकुमार के पास ले आये । राजकुमार बहुत श्रद्धा हुई । उसने सिंदरेला को रानी बनाया श्रोर पुरुषोंक राज्य का भोग दिया ।
४०. सूर्यस्य प्राप्ति:

ब्रजोल्केश्वर्य भक्तिकथा

एको नरो नास्तिकवाचारसीत्। एकवा सूर्यमालक्ष्य स्वयंप्रत्यक्षे
स्वाभवहत्। सूर्यं नीत्वा स स्वर्गमनवहूत्। पृथ्वीं वात् कारावतः सहस्रादा।
ते जनाशास्त्रविदा ब्राह्मणे ते विचारितं लगा यत्कथं
सूर्यस्य प्रत्यागमनं भवेत्। ये नृषिष्यां प्रकाशः स्वातः। जनाश्च स्वर्गकारं
कतुंशक्तुः।

रत्नलग्न्यां विचारशीलः। स सर्वानांनृ नृषिष्य—सर्वं वयं
मिलत्वा चापस्य निर्माणं कृमं।। तेन चापेन बागाणू नितिन्न्य नितिन्न्य
स्वर्गचन्द्रनाय सोपानस्य निर्माणं कृमं॥। येन स्वर्गमने विलम्बो न हमार।
तत्र श्राप्य सूर्यमानेिश्यामः।

सर्वं पश्चिमं रत्नलग्नेन समर्थनमकुर्वः। एको बलबान् मनुष्यः
काष्ठमालिनिः चापिनिःमाणः। सर्वं पश्चिमचापिनिः सल्यनः।
किल्लकालान्तरमेव ले चापस्य निर्माणं चकृः।। शार्कनामकाेंके
जलजलदुः वागाणानयेिनमांद्विश्वनते।

प्रथमः ब्राह्मण शार्काः विविधः। बागाणः गति विलोक्य सर्वं
कार्यवचनं चंकितः: सहजः।। प्राक्त:ोम्बोधेराण बाराण वीणयः सर्वं
विचारितं लगा कान्त्या स्थाने समप्राप्ति नस्मकः बार:।
केवलं धौविनामके
जलजलदुः चिन्तामण्डालः बरः बारः। कृष्ण सम्प्राप्तः।। शार्कः
कसादुरसारमन्या
निर्मो बागाणं चिन्षेय।। शेषोधि बाराणान्विन्निपत्ताः। इत्यादि ब्राह्मणाः
सोपानसांगं: समजः।

सर्वं जलजलदुः सूर्यं नृहितुः सोपानसांगं: गच्छन्ति चास्याः।
महायाने कौशिककौशिक: भूष भस्त्त्रत्स्ताः।। रत्नलग्न्य श्रीघ्रमोहः
सूर्यमालावचार्यलक्ष्य स्वातां श्रीसात्तांवमूहिन्तः।। सूर्यस्य तीर्थदेशी तथां
शरीरस्य बस्त्रो: एकाः: सहजः।। तदन्तरां सर्वं जनंकं तथां मनुष्यस्य
पार्श्वमालाङ्गायूण्य सूर्यां निबद्ध:।

ते सर्वं तं वहन्त्यामीन्तः ते प्रोचः—भो भ्रातः। श्रृंगारं—वयं
मिष्ठानं शारिरैं गच्छतः। किष्ट्य पर्याभारम्: सह चलितुः
शक्तिः। सु तेजसितमहेतारीूः मिष्ठानं मक्षियिः समर्पयति सम्प्राप्ती भवत्। सूर्यं
40. सूर्य की प्राप्ति

ब्राजील की ब्रेक्ट कथा

एक व्यक्ति नास्तिक था। एक बार उसने सूर्य को दूरकर भ्रमने भोजन में बन्द कर लिया। सूर्य को लेकर वह आकाश में चला गया।

पृथ्वी पर अब बेहाल था। जो लोग शास्त्रीय थे, वे विचार करने लगे कि सूर्य को पापस के पास लाया। जायं ताकि पृथ्वी पर प्रकाश हो सके और लोग भ्रमना कार्य कर सकें।

एक लाल चिड़िया बढ़ी विचारस्थोल थी। उसने सबको बुलाकर कहा-हम सब मिलकर घनूष का निर्माण करें। उस घनूष में बासा फंक पड़े कर स्वर्ग जाते के लिए सीढ़िया का निर्माण करें। ताकि स्वर्ग जाने में विलम्ब न हो। बहां जाकर हम सूर्य को लायेंगे।

सभी पक्षियों ने लाल चिड़िया के बारे का समर्थन किया। एक बलवान मनुष्य घनूष बनाने के लिए लगड़ी के आकाश। सभी पक्ष घनूष बनाने में लग गये। कुछ समय बाद उन्होंने घनूष का निर्माण कर लिया। उन्होंने शार के मालक जल-जन्तु को बाण चलाने का मदद किया।

शार्क ने पहला बाण फंका। बाण को गति देखकर सभी आक्षरण-चक्क रह गये। जब बाण आंखें से दोहरा हो गया तब दोबारा ने विचार किया कि हमारा बाण कहाँ चक पड़ा है। केवल बोंबे को पता चला कि बाण कहाँ पड़ा है। शार्क ने कहा-मनुष्य बाण भी फंके। बाण-फंके ने भी बाण फंके। इस प्रकार आकाश में बाण एं की एक सीढ़िया सी बन गई।

सभी जलजन्तु उस सीढ़िया से सूर्य को लाने के लिए जा रहे थे। वे आकाश के बीच में सर्दी से बहुत बाधित हुए। लाल चिड़िया ने शीघ्र ही सूर्य के पास प्रकाश घनूषे शरीर को सर्दी से बचाना चाहा।

सूर्य की तेज गर्मी से उसके शरीर का रंग लाल हो गया। इसके बाद सभी जलजन्तु उस मनुष्य के पास पहुँचे जिसने सूर्य को बाण रखा था।

उन सभी प्राणियों ने उस मनुष्य को टांगा चाहा, उन्होंने कहा-हे भाई! पुत्र हम पिठाइं खाने जा रहे हैं, क्या तू भी हमारे साथ चल सकता है? वह मुस्का था। पिठाइं खाने के लिए तैयार हो गया। सूर्य
तत्वेऽत्वां सादृः सः प्रचलिता। केवल जन्तवो भौतिक सूर्येऽ
गृहीतवा सोपानमार्ग्ये पृथिवीं प्रति प्रचेस्थुः।

ये जन्तवो मिष्ठान्तं महक्षितं तेन सह गता ते तत्वेऽत्वां स्थिता। सति
सम्प्रत्यपि। प्राण्ये जन्तवं पृथिवीमागत्य बाणानाकृष्टवन्तो येन सोपान-
मार्ग्य विलुप्त। सूर्यमधवश्चानीय जन्तवो व्यचारवन्त यत्सूर्योज्ञा साक्षिरित्यमाकाशे स्थापनीये येन पृथिव्यं प्रकाशं भवेत् इति निश्चित्ये ते
सूर्यमाकाशे स्थापणामासुः। यज्ञानापि वर्तमानो वर्तंते सूर्यं।

किरिक्तकालायन्तेऽर्न पृथिव्यं सभामेकाभाराकारितवन्त गृहमहोदयः।
सभायं थलचरा, जलचरा नभश्चरा जन्तवं समुपस्थिता प्रासन्न।
गृहेऽर्न प्रत्साहित्यम-यदु घोषेजन्तो नेत्रे निःशार्य नेत्रमेकन्जां
निवेशयामिन स्वेतेन, श्येन प्राह-नेत्रमेकः स्वेतेन निवेशयामि। इत्यं
घोषाजस्तुर्लव संवृत।।

ये जन्तवश्चाकाशे वासन् ते सम्प्रत्यपि तत्वेऽत वर्तंते, तत्वेऽत
विचरतिः, इति जन्तुना विश्वासः। तेषु स्केटनामकः पुच्छवान् मत्स्यो
वर्तते, भाकाशे यः पुच्छलतारकस द्वयशे स स्केट एवासीत् पूर्वम्।
ऋक्षश्चाच वराको ब्रह्मतारकप्यो गगने प्रकाशेऽ सम्प्रत्यपि। गगने
यस्तारकः सर्वाधिक प्रकाशेऽ स तस्य मनुष्यस्य नेत्रमेकं वर्तंते, यः पूर्वं
समुद्रे न्यवस्तु, एकमेव नेत्रमासीत्स्य। समुद्रदासी मानवश्चाचं सम्प्रति
न विचते प्रसिद्धसंसारः।
को वहीं छोड़कर वह उनके साथ चल पड़ा। कुछ प्राणी शीघ्र ही सूर्य को लेकर उसी सीढ़ी से पृथ्वी की शोर चल पड़ा।

जो प्राणी सिद्धांत खाने के लिए उसके साथ गये थे वे भ्राज भी बहीं हैं। दन्त प्राणी पृथ्वी पर भ्रा गये शोर उन्होने उन भ्राजों को जीने लिया जिससे सीढ़ी हट गई। सूर्य को नीचे लाकर उन प्राणियों ने विचार किया कि हमें सूर्य को भ्राकाश में इस प्रकार से स्थापित करना चाहिये जिससे पृथ्वी पर भ्राकाश हो। वह सोचकर उन्होने सूर्य को भ्राकाश में स्थापित कर दिया। जहां सूर्य भ्राज भी विद्यमान है।

कुछ समय बाद चौल ने पृथ्वी पर एक सभा बुलायी। सभा में धलचर, जलचर, नमचर सभी जन्तु उपस्थित थे। चौल ने प्रस्ताव रखा कि घोंघों की दोनों श्राखें निकाल ली जाय, उसकी एक श्राख में श्राख में लगा लूं, भ्राज ने कहा एक श्राख में श्राख में लगा लूं। इस प्रकार वह घोंघा श्राखा हो गया।

जो प्राणी भ्राकाश में रह गये थे वे इस समय भी बहीं हैं, वहीं घूम रहे हैं-सभी प्राणियों का ऐसा विश्वास है। उनमें स्केट नामक पुष्चकाली मछली भी एक है, भ्राकाश में जो पुष्चकलारा भ्राजकल दिखाई देता है वह पहले स्केट ही था। बेचारा रोज़ज भ्राज भी भ्राकाश में बड़ा तारे के रूप में चमक रहा है। भ्राकाश में जो तारा सबसे श्राख चमकता है वह उस मनुष्य का एक नेत्र (श्राख) है, वह मनुष्य पहले समुद्र में रहता था। उसकी एक ही श्राख थी। वह समुद्र में रहने वाला मनुष्य भ्राज इस संसार में नहीं है।
41. दौर भारती

अमेरिकादेशस्य भेष्टकथा

अमेरिकादेशस्य बने लूड़ इंडियन" नामका रक्तवर्णौं जना न्यवसन्। तस्मान् इरौक्सारखते दौर भारती ब्राह्मादायस्। नकूमा नामक- श्रेष्ठकोषवर्ण वीयत-नामकः। नकूमा बलिष्ठो व्यायामवियोगस्थस्य कनी- यान्। नकूमा देवलसादांबकारं सम्प्रायत्वानु वीयटस्तिक पशुपक्षिणां ध्वनिकमुखतृं मशकहोत्। नकूमा प्रत्येक मुखायथे वनमभण्डुः वीयटस्तिक नुक्तायथिः कुर्जस्तु गृहायायतोऽत्यतो हि नाशीस्व बलिष्ठः। सवगृहः एव पशुपक्षिण वोत्तालापं कुर्जस्तु स्वाकालं यापयति।

वीयतो भोजनपाप्चने पदुः। नकूमा तत्सिरितम् भोजन्य प्रसचत्त्या खाद्यत सम्। एकदा नकूमा मृगपति प्रत्यागतो भोजनसंक्रित्वं शयनाय सतिमकरोत्। वीयटस्तिक विंज्ञकितो सम्भवत। किचिन्त्यकलानलणात्तर तो प्रस्तुती। द्वितीयेन दिनेडपि तथेऽकरोज्येष्ठो हारताः।

विश्वामितीस्व वीयते: सबं रुष्यं शालोऽि व्रतिनिर्षित: सन् पशद्यामां सुप्तस्थाभारी रावण यावहिळोकितयत पत्नकमा शरतिः प्रज्वाल्य पार्थमक- मनो निवाय तस्मान जलमपायतस्य । उद्वर्ज्जलं विलोक्य चर्मसंति- कया पात्रं स्त्रृशक्षरितयत्—

बढ़ जा भाई बढ़ता जा,
मेरे बलेन, बढ़ता जा जै।

जाशक्तम्! पात्रं वृद्धिकात्मकसीं। पार्थमुख्यायं तस्मात्किंकितस्य
निःसार्यं, मूकत्वा पुनः प्रसुध्। सर्व साहस्यं जातवा वीयटोपी सुध्। द्वितीये दिने यदामका वनमभण्डतदा वीयते, नकूमा विभ्रिष्टरापवेमा- गाय विलोकितयत यत्रम् मूककस्चकेक: समुपविष्ट:। वीयते वैषयः लूड़ कविष्य केशक: स्वाभावायमभावत वीयते! जानास्यहं त्वं किमकोमनक:। यदि वपु तव भानु: कल्याणमिच्छति तांह पार्थमात्रेन निकिष्प्य स्वतियोगं कुर। इत्युक्तवा मूककस्चायं निर्गत।

किचिन्त्यकलानलणात्तर वीयते बिचारितस्य-पशुप्रायम् तात्पश्चे किमस्ति? पात्रे त्वेनाबलोकितो दौर भारती। स सप्तस्वोऽस्वस्वतेन
41. दो भाई

प्रामेरिका की अपेक्षा कथा

प्रामेरिका के बंधुओं में 'रेड इंडियन' नामक लाल रंग के लोग रहते थे। उनसे ही हरकत जाती के हो भाई थे। एक का नाम नकुमा था। दूसरे का नाम वीयट था। वह भी बहुत बलवान था। दूसरे भाई भी ही बलवान था। नकुमा ने देवताओं का लाखा से एक बांद्रा प्राप्त कर लिया था। वीयट पशु-पक्षियों का बोली सीख गया था। नकुमा प्रतिवेदन दिन शिकार के लिए जाता था और वीयट घर का काम करता था। घर में ही रहता था। वह बलवान नहीं था। शरण के बर थे। वह बहुत पशुपक्षियों के साथ वार्तालाप करता हुआ शरण समय बिताता था।

वीयट भोजन पकाने में चलता था। नकुमा उसके द्वारा बनाये गये भोजन को प्रसन्नता से खाता था। एक बार नकुमा ने शिकार से लाटा तब भी भोजन किये ही सोने को लचा गया। वह देखकर वीयट भाष्यवर्णक रह गया। कुछ समय पश्चात् उस दोनों से गये। व्यथित नकुमा ने दूसरे विन भी ऐसा ही किया।

प्रामेरिकाय में पड़े हुए वीयट ने, इस रहस्य का पता लगाने का निश्चय किया। वह बिस्तर पर गया। दूसरी रात में वह क्या देखता था, कि नकुमा भाग जाता है। उस पर एक बर्तन रखकर, उसमें पानी डालता है। वह पानी उबल जाता है। तब चमड़े के तल्ले से उब पानी को छूता है और कहता हैः—

बड़ा जा भाई वहता था,
मेरे बर्तन, वहता जा।

प्रामेरिकाय की बात है कि वह्ल बर्तन बड़ता ही जाता है। नकुमा बर्तन को छुटाता है और उससे कुछ निकाल कर फालता है पूनः सो खाता है। इस रहस्य को जानकर बीयट भी सो गया। जब दूसरे विन नकुमा बत में गया तब वीयट नकुमा के बिस्तर के पास गए और देखता है कि उसमें कुछ चूहा बैठा हुआ है। वीयट को देखकर चुप्पे ने प्रपनी भाषा में कहा—बहरे आई। मैं जानता हूं कि तू यहां क्यों भाषा है? यदि तू प्रपनी भाषा का कल्याणा चाहता है तो बर्तन को यहां रख दे और प्रपनी काम कर। ऐसा कहकर चुप्पे भी यहां से चला गया।

कुछ समय बाद वीयट ने चर्चा किया—क्या देखता हूं बर्तन में क्या है? उसने देखा कि बर्तन में दो बादाम पड़े हैं। वह बहुत गौरव
वृक्षचेकः प्राह-तद्वृक्षविषये चाहुं जानामि। प्रस्मात्सुदूरे वर्तंते चैव विशाला नदी। नवासांते वर्तन्ते वातावरणः। वृक्षवाणीविषये निर्मितिः। सन्म वातावः। किन्तु तत्र तृष्ण्यं दानवसमाजांको बकः। वृक्षसमां राक्षसश्रेणिको नियुक्तवान्तः। प्राहृ तत्वः तत्र नेतृं क्षमः। तदैव चैव महिली समुदायो रोच्चाच-पूणामारीपारां वीयं तत्र नेतृथ्यामि। जलसूक्ष्मः प्राह-तव कृते नदीं ततुं मांहुं नांवं संप्रदेशामिः। हृऊः प्राह-प्रहुं स्वादिञ्जयों पलं रास्मात्स्य वस्मायं बकोवं लोमसंवरणं न करिष्यति। एत्यनुसारः खः प्राह-प्रहुं जालमानेयामि परस्परिव्हदः। विखायो न पदमेकमपि निष्टतुं नस्तरति; इत्यं सर्वं पशुपक्षियाः। स्वस्व-स्वस्वन्तानिषिदे। वृक्षो मांगं दर्शायति प्रचलितः।
हुआ और उसने विज्ञार किया कि मेरा माई प्रतिदिन जंगल से दूरी से आता है, मात्र में ही भीजन पकाऊँगा। मेरा माई भी, मुझे बन्यवाद देगा और मेरा साथकर करेगा। किन्तु नाकूमा के मुंह पर यह और उदासी रेखकर वह मुझे होकर नाकूमा ने कहा और बीयटः। तुम्हारे यह क्या किया? मुझे मौत के मुंह में घूम दिया। तब बीयट के श्वासू बहु रहे थे, हुकूमे होकर उसने कहा है आत्। मेरे शराराख को क्षमा करो, मैं तेरे लिए बहुत शादीला ला दूंगा।

नाकूमा ने कहा- वे लाभार्थी बादाम नहीं हैं, वे जादू के बादाम हैं, वे बादाम मुझे भी ही निलागे, सब में कोई दूसरी चोंच खा भी नहीं लेता। निष्क्रिय ही तुम्हारी झूठें। वे मुझे मौत के मुंह में घूम दिया है। ऐसा कहकर वह विलाप करता हुआ सी गया। दुखी होकर बीयट भी लो गया।

शातकाल हो गया, नाकूमा चुपचाप वन की बीड़ चल पड़ा। बीयटी भी घर से बाहर प्रा गया। वन के किनारे पर एक नदी बहती थी। बीयटी ने वहां पर सभी पूस-पक्षियों को बुलाया। सारी बात उन्हें सुनाई और पूँछा यह जादू का पेड़ कहां है?

एक चेहरे ने कहा, इस बुढ़क के बारे में मैं जानता हूँ। यहां से बहुत कर एक बड़ी नदी बहती है। उस नदी के किनारे बादाम का पेड़ है। पेड़ के नीचे बादाम गिरे हुए हैं। किन्तु वहां एक बगुला रहता है जो जानक के समान है। इस बगुले को एक राकश ने रखा रखता है। मैंने तुम्हें वहां से जाकर कहा। उसी समय एक मौसूम उठकर कहने लगी मैं पीठ पर बिठाकर बीयट को वहां ले जाती, जब चूहे ने कहा-नदी पार कर रहे तो मैं तेरे लिए नाव बनाऊँगी। इस न कहा मैं जुने एक स्वस्वादिष्ट फल हूँगा जिसे पकाकर यह बगुला इस फल को खाने का लोभ न हाय पायेगा। एकनामक पक्षी ने कहा-नदी जाती भादर ब्रांजुंगा, वह बहु राकश उसमें बंध जायेगा तो एक कदम सो नहीं चल सकेगा, इस प्रकार उसी पूस-पक्षी अपनी अपनी चोंच लाये। बेडिया रास्ता बताता हुआ चल पड़ा।

बीयट नाक पर बैठ कर नदी के पार पहुँच गया। भीरे बीरे वहू बुढ़क की बीड़ तरफ़ करके उसी समय बगुला जाग गया। बीयट ने वहू फल उसके सामने बाला। बगुला उसे खाने लगा। बीयट को खूब मौका मिला तब वह बदामों को इकट्ठा करने लगा। भीरे बीरे बीयट बहां से निकल गया और नदी के किनारे पहुँच गया, उसने राकश के घर
वाचन: निर्गच्छन्तं वीयटं विलोक्यं बकश्चीत्तल्लुः मार्मरित, चीत्कारं श्रुत्वा रक्षसों जागृत:। रक्षसों तमनुद्रावं किन्तु जालनिबर्द्धः सन् तत्वेवापत्ततुः नद्या: पारमाण्वत्य वीयटोः महिष्मार्हवा वृक्षप्रदशितपथा पशुपक्षियं: साधुवादं दत्ता स्वगृहमागतः। वीयटं: स्वजयेष्ठमं आर्तुः पादयो वार्तादानूः न्यपातयत्।

नकूमा मायावी-वार्तादानू विलोक्यं चारस्वर्यचक्कितं: सन् भृगुं मुमुदे। महत्ता समुल्लासेन भृगुं आतरस्मालिलिं। तदन्तरं द्वार्ते भ्रातारो सुखेन निवसत्ती तस्मिन् गृहे कालं याह्यामासत्।
के बाहर ब्रपना जाल भी बांध दिया। वहां से जाते हुए ब्रीयट को देखकर बगुला चिल्लाने लगा, उसके चिल्लाने की भ्रायाज सुनकर राक्षस जाग गया। राक्षस शीघ्र ही उस भ्रायर भंडार किन्तु जाल में बंधकर वह वहां गिर गया ब्रीयट नदी के पार भ्रायर भ्रायर भेंस पर बैठ कर, झेड़िये द्वारा भताये गये मार्ग से, पशु-पक्षियों को भन्यवाद देकर, ब्रपपने घर भ्रा गया। ब्रीयट ने ब्रपपने बड़े भाई के पैरों में वे बादाम लाकर बांध दिये।

नकुमा ने जब इन जादू के बादामों को देखा तो वह भ्रायश्चर्य में पड़ गया भ्रायर बहुत प्रसन्न हुआ। बड़े उल्लास के साथ उसने ब्रपपने भाई को गले से लगा लिया। इसके बाद वे दोनों भाई, सुखपूर्वक ब्रपपने घर में रहने लगे।
42. ग्रामविकल:

ईरानदेशस्य भेदनविरुध न द्विभावम्

कशीचापिको व्यापारस्त्रयतां यत्र महत् तत्रप्राप्ति अन्यत्र गतवा महत्त्वम् विविधवातः। एकदा तन विचारितं यतेहरानदेशे चन्दनस्यम् सुल्टनमधिकं भवति प्रतस्तेन चन्दनेन स्रीतं, तद्विद्रोहं तेहरानगरं प्रति प्रतस्तेन।

तव कोष्ठिक चन्दनविष्कृतं तु दर्शनेन न्युनस्तु, तेनु नूठनचन्दनापूर्वकाः

कस्यागमनंध्वतं यदा श्रूतं तदा विचिन्तितं धर्मस्य नमरकातरस्मि प्रतिदतानिन्वृतिः। स्यादिति विचिन्त्य चन्दनकान्तानीयापूर्वकः पार्श्वेन तातु दशुमारे, ओरजिकात्श पावित्ति। अयुमापिकाश्चक्षां

शृंखलं किति: सन् प्राह सो भ्रातः। मया श्रृंखलासनो यते हरानदेशे

चन्दनस्य सूल्टनमधिकं मिलति, यत्रो मया समस्तपञ्चस्वंचन्दनमेव कीर्तम।

तेहराननरश्चापिकं प्राह-भ्रातं। महत् श्रीप्रसं संवृत्तम, ग्रत्र तु

चन्दनस्य सूल्टन न किमपि विहयते, धर्माये भवानु यमानि। सोक-प्रस्त्र नौराशाह्चापिकं विलोक्यायं प्राह मा। शुचं, भवानु मातातिथि, अहं सवातं सब्दायं करोमि। तव समस्तृ कण्यासाया भ्रातो, औरजिकात्श नगरत्यतिकं वस्तुं कृंतु मिष्णुति, भवानु तशीतवा स्वदेशं गच्छन्तु।

परम मया सहानुचलस्वं चक्षुः कार्यो यतो हि मतसारस्त्रय जना मामेत

तत्त्वात् तत्र नातापित्यति।

वराकाशापिकं प्रतिज्ञापने हस्तक्षरभद्रकार। अयुमाङ्गे स

रथयायु निर्गतः, स तत्र चन्दनस्य सूल्टन युष्टवान्। जसे, कथवितम्-तेहरान

नगरं तु चन्दनस्य सूल्टन ग्रत्रकद् वत्तेन। अन्यत्र यदा स अयुमाङ्गे

विनिर्गतस्तत्वा तत्र जसे: शतरंजकीदाः संलक्षा ग्रासनो स च भ्रात-भ्रामपि

कीर्तितुमिष्ण्याति, तत्र प्रावोचन्न-विजेतुश्चाचार्यापलनमास्त्रयं वत्तेन।

“विनाशकाले निर्गरितुकुटियाः” इत्यायामात्रमुघुत्वापिकाश्चार्यत

पराजितः सत्रंजकीदाः मापि। विजेता प्रोचाच-समुद्रस्त्रय जलं पिव, आप्पिक्रेन कथवितम्-अयुमाङ्गे विनिर्गतस्तत्वं कतरु शक्यते। इतिय तन्त्र तत्तयोः

कल्हो जनसम्महं जाति। जनसम्महं शृंखलं कित कश्चित्कारः प्रोचाच

जूनमयमापिकाः भूते, सम्मेव मम तेत्रस्वोरोत्यतं तदेव कोष्ठिक कीर्तितुमिष्ण्याति।
42. व्यापारी

ईरान की श्रेष्ठ कथा

कोई व्यापारी व्यापार किया करता था। जहां जो चीज कम कीमत में मिलती है उसे खरीद लेता है और प्रत्येक ले खाकर महंगी बेच देता है। एक बार उसने विचार किया कि ईरान में बच्चन का मुल्क श्रवण होता है। तत्त्व: उसने बच्चन बरीद लिया उसे बेचने के लिए वह ईरान की श्रेष्ठ चल पड़ा।

वहां बच्चन बेचने वाला कोई व्यापारी पहले से ही रहता था, जब उसने इस संस्य बच्चन बेचने वाले व्यापारी के प्राण का समाचार मुनावत विचार किया कि इस व्यापारी को कैसे दायर किया जाय? वहां लोग वह बच्चन की लकड़ी लेकर उसके पास राक जलाने लगा, और उनमें रोनें रोने चला लगा। इस व्यापारी ने आश्चर्यचकित होकर कहा है साहब! मैंने मुनावत कि ईरान, में बच्चन का मूल्य अच्छी मिलता है, प्रत्येक सारे बच जाता है खरीद लिया।

ईरान के व्यापारी ने कहा-साहब! उसने बहुत गजब कर दिया। वहां बच्चन को कोई कीमत नही। व्यर्थ ही भ्राप यहां भारी हैं। शोक-ब्रस्त एवं निर्माण व्यापारी को देखकर इसने कहा, चित्ता मत करो, भ्राप मेरे बेहमार हो, मैं भ्राप की वहांता करता हूँ। तुझ्हारा सारा बच्चन में सेवा लेता हूं, ईरान में सेवा जो कोई चीज सरीजा लो परसूं भ्राप को मेरे साथ यहां एक जुड़ता करना होगा क्योंकि मेरे परिवार के लोग भुम्बे यहां ऐसा नहीं करते।

देखिए व्यापारी ने उस प्रतिष्ठा पत्र में हस्ताक्षर कर दिये। वह दुष्कर्ण के लिए गलियों में निकल पड़ा, उसने वहां बच्चन की कीमत पूर्ण की, लोगों ने कहा ईरान नगर में बच्चन का मूल्य हीरा के समान है। दुसरे दिन जब वह दुष्कर्ण को निकला तब वहां कुछ लोग शतरंज खेलते हुए दिखाई दिये। उसने कहा-मैंने भी देखना चाहता हूं, उन्होंने कहा-ही जोते बाले की भ्राजा का पालन करना भारत स्वतंत्र है।

"विनायक के समय मनुष्य को बुढ़ि उलटी हो जाती है" इस कहावत के भ्रमुक यह व्यापारी शतरंज खेल में भी जारी अर्थव्यापारी ने कहा-यह भ्रमुक कार्य कैसे किया जा सकता है। इस प्रकार वहां उन्हें भगवा हो गया और भीड़
प्रस्तारहस्तः प्राहः-समािषोकवनेन प्रस्तारसमलोनेन चोरितम्। विनिता
घटनाः विलोकणाय नापितोको विस्मितः सनातनः स्वरुपाय ध्वनिकरूपानाते।

विनिता तत्वां स निवसति तत्त्वाभिनियम्य चापारिकम् दशां
विलोक्य तं कथ्यतिमुराचे-नगरिमं लुंधकान् तस्क्यरायानव निवास-
र्यामु करणे ये ये लुंधकाः सन्ति तेषां युगं बंदंते चाच्यं धूर्षं कोडि।
स एव वर्षानापदः समुद्रं तार्कं निविदिता। त्यथा लुंधकावेशं वृत्तवा
तत्त्व गन्धः, तत ते लुंधकाः प्रापि आकारिण्यत्वता, धन्वपुरुषः पुरस्माः
ततेल्या। प्रदाश्यति तद्भवाण पुरूषकं धूर्षं, अहेतुले अविष्कारत।

दराक्षारिणोक्सदुनः सर्वायं वृत्तवा निक्षिप्तकोऽसे स्वतः। सर्वायं पुरुषोत्।
पूर्वो तेह्रुस्तम्न जस्यनिवितर्तरम् वासात्म्य प्राहः
स्तत्त्व कृष्णाबिन्दुः कृष्णालं कथायितम् धूर्षा कृष्णालं वस्त्रादे-पुँढ।
तस्य स्थायिकम् तत्स्य पाषे
निवद्व: त्या अतिशामणे विलिनित्तं वज्ञानावस्याय विलिनित्तं निष्ठतं परिवर्तत्तितु शकनोति
शकनोति मभाविति, यदि गतिसु" नीमकं बीकं बिन्दवस्त्राने
पहिर्विद्विवितुं कथाप्रमितात तर्कं त्तं किं कारिण्यत। चिनितस्तोतिक
व्यवसाये प्राहश्च तत्त्व पृथ्वय नस्लिक्ष्ये विचारश्चायं नागविष्कारत।

तदनंतरं मुखरवकेंद्रः सभागत्व प्राहः यत्वे नात्त् ज्ञानम्। तच्छुः
त्वा श्रद्धा वस्त्रादे, यदि गतिसार्वविदकं कथाप्रमितां-स्थद्वा समुद्रस्य समूद्रां
श्राजलं पातु त्तं शकनोगति किनितु धूर्वं वस्त्रानु समूद्रं निपतत्तं विनिवसन्नद्विना
जलं श्रातरोधयुः, तथावतानु किं कारिण्यत। चिनितस्तोतिकं प्रोचाव तत्स्य
पृथ्वय मस्तिष्के विचारश्चायं नागविष्कारत।

त्तं वृत्तवं स्वतिग्रेन धूर्वयास्थस्य क्षत्रं कृष्णं भाविताम्-प्रायः प्राहः-गच्छे
प्रायः: कथाप्रमितां-पहिर्विद्विवितुं कृष्णालं प्रहरस्यायोवस्य निर्मितिः
क्षम। किनितु वदिौ प्रहरस्यायोवस्य निर्मितिः किनितुरं वास्यथा सश्रद्धा
तस्य प्राहः-स्वद्वस्य मस्तिष्के विचारश्चायं नागविष्कारत।

काणेनार्थि संसागत्व कथितः, वृत्तं श्रुत्वा प्रायः प्राहः-गच्छे
प्रायः: कथाप्रमितां-पहिर्विद्विवितुं वस्त्रान्तर्स्वस्य निपतावस्य तत्स्य
स्तत्त्वान्तरं निपतत्तं तोलयानं नान्म धास्याबिन्दुः तस्य किनितुरं वास्यथातिः,
इति श्रुत्वा निमित्ति कार्यः प्राहः-स्वद्वस्य मस्तिष्के विचारश्चायं
नागविष्कारत।
एकसित हो गई। शीर्ष में से निकल कर किसी काने बादशी ने कहा— निचले ही यह व्यापारी पूछते है, इसी ने मेरी शांख चुराई है। इसके बाद ही एक पुरुष चित्तलाता हुआ, हाथ में पताका लेकर कहते लगा— मेरा पताका का पायजामा इसी ने चुराया है। इस विचित्र घटना की देखकर यह व्यापारी चकित रह गए। और अपने साथियों की विचारणी लगा।

जिस होटल में वह रह रहा था उसके प्रवर्तक ने व्यापारी की हालत देखकर उसे कहना भारम निया— वह नगर लुटेरे तथा चोरों का निवास स्थान है। खुदाए में जो जो की लुटेरे हैं उनका पक्ष कोई प्रत्येक पुरुष है। वह सभी को बात में से बचाने का मार्ग बताता है। तू भी लुटेरे का वेष धारण कर वहाँ जा, वहाँ वे लुटेरे भी बचायें, प्रत्येक पुरुष जो हलाहए उन लुटेरों को देखा उसे अपने उपवके सुनना, उससे तेज जवाव लिया।

जांच पर व्यापारी तदनुसार ही लुटेरों का वेष धारण कर एक कीन में जा कर बेठ गया और सब कुछ सुनने लगा। पहले तेह्रांच का चन्दन-विक्रेता ने आकर कहा, वह कुछ भाग उसने किया था, प्रेमी में कहा— सुलभ! वह तो सब का भी हमसे बात में पता गया, तुम्हें प्रतिक्रिया में लिखा है कि भाग चन्दन के बदले कोई भी चीज बदल सकते हो, यदि वह चन्दन के बले “पिस्टूल” वक्तने की कहां तो तू क्या करेगा?

विश्वसनीय होकर व्यापारी ने कहा, उस फूलों के मस्तिष्क में यह विचार नहीं भाग्या।

इसके बाद शातरंज बेलने वाले ने आकर कहा, जो उससे भाग किया था। वह झुंझकर प्रकट ने कहा, वांछ वह व्य्वापारी कहे कि वे समुद्र का सारा बारा पानी पी सकता हूं पहले भाग समुद्र में घिरती हुई नदियों का जलर राको, तब भाग क्या करेंगे? उसने शास्त्रीय से कहा— कि उस फूलों के मस्तिष्क में यह विचार नहीं भाग्या था सकता।

तदनुसार शातरंज बेलने वाले ने आकर बाला प्रसादक में कहा— वह यह व्य्वापारी कहे कि में इसके लिए पत्तर का पायजामा बनाने को तैयार हूं यदि वह पत्तर का धारण लाए दो तुम क्या उत्तर दोगे? उनके कहा— उस सुन्दर के मस्तिष्क में यह विचार नहीं राखेगा।

काने व्यक्ति ने भी आकर सारा ज्यादा भलाक मुहभा, प्रकट ने कहा यदि व्यापारी कहे भाग अपनी शांख निकाल कर तोले वह प्रांक का नाप मेरी शांख के बराबर होगा तो अपनी शांख छूंगा, तब तू क्या उत्तर देगा? यह झुंझकर काना व्यक्ति शास्त्रीय में पड़ कर कहते लगा।
बराकशापकिरिक: सर्व श्रुत्वा स्वपान्न्यावासं प्रतिनिवृत्त:। निःशिष्ट-
दिवसे शापिककशावं न्यायालये समुपस्थितं। न्यायाधीशं: पूर्वं चन्दन-
व्यवस्यायिनं प्रकरणं उपस्थापयति। श्लोकिकं: प्राल--प्रतिज्ञाप्राप्तनुसारे-
गां चन्दनपरिमेती "पिष्कुनामककोटं परिवर्तयितुमिच्छेद्यम।" न्यायाधीशं:
प्रोबाच प्रतिज्ञाप्राप्तनुसारेशापकिरिककशावं यतिकमपि परिवर्तितं शकनोति
क्षमायचनपूर्वकं बूटोऽयमापिको न्यायाधीशमुबाच--सौधारांह्य क्षमस्व,
श्लोकिकं: ब्लेंच्छानुसारं चन्दनं विन्धेतुं शकनोति। न्यायाधीशं: प्राल--
एकसहस्रलूक्यकारिणि प्रयच्छासेमै वैदेशिकापिकिय।।

शन्यदा न्यायालये द्वितीयस्य वारः समागतः। न्यायाधीशप्रसमकं
प्रस्ततमावोक्षसंस्य चौथांश्चावृत्तं श्लोकिकं: प्राल--भगवन्।
प्रस्ततमावोक्षसंस्ये न केनापि विनिमित्तं शक्यते यद्यमिच्छौति वेदति
प्रस्ततमावोक्षसंस्ये भवानु महा दापयते वेदान्तमावोक्षसंस्ये निसायं प्रददाति।
न्यायाधीशं: प्राल--तत्तं कथयत्यमापिकिय:। सिद्धांतियोगे स कारागारे निःशिष्टः।।

तृतीयेवस्तुं कारणानि स्वाभिषोगः संस्कारितवः। न्यायाधीशप्रसस्य-
द्वेषोनापिकणे न्यायाधीशः प्राल--यदि भवानु स्वनेत्रं नि:सार्यं तोलयित्यस्ति तदन्नतरमेहुर्मपि स्वनेत्रं नि:सार्यं तोलयानि यद्यक्षणेस मापनं तूल्यं भविता तदाहं
स्वनेत्रं दास्यामि। न्यायाधीशः: प्राल--तत्तं कथयति चायमापिकियः। स
रक्षापुश्तावाररावेंच्छवे वेव प्रहारे रेणा दण्डयतु कारामेनसु।।

श्लोकिकं: कुलीश्चासीत। करायय त्रिनित: प्रोबाच: भगवन्
न्यायाधीश! एतेषापरां विस्मरतु महावंहुणका--एते सर्वं लुप्तका: सन्तो
यदि भविष्ये जनान्न लुप्तविध्यति। ते सर्वं क्षमायचनपूर्वकं न्यायाधीशप्रसमकं
विलयतं: प्रस्ततमावोक्षसंस्ये कृतज्ञतां अहमुयां हुञ्जापियन्तो
वाग्वन्तं सूत्रभावं स्मरन्तं स्वस्वरूपं जग्मृ।।
उस मूर्ख के मस्तिष्क में यह विचार नहीं भ्रा सकता।

बेचारा व्यापारी सब कुछ सुन कर अपने होटल में लौटा। निश्चित समय पर व्यापारी न्यायालय में उपस्थित हुआ। न्यायाधीश ने पहले चन्दन के व्यापारी का प्रकाश उपस्थित किया। व्यापारी ने कहा—अभित्तिज़ पत्र के अनुसार में चन्दन के बराबर पिस्सू नामक कोड़ों को बदलना चाहता हूं। न्यायाधीश ने कहा—अभित्तिज़ पत्र के अनुसार यह व्यापारी तो चीज़ बदल सकता है यह पूर्व व्यापारी क्षमा दाखल-पूर्वक न्यायाधीश को कहने लगा—मेरे अपराध को क्षमा करो, व्यापारी इन्हें अनुसार झपना चन्दन बेच सकता है। न्यायाधीश ने कहा—इस विदेश के व्यापारों को एक हजार रुपये देने के रूप में दी।

दूसरे दिन न्यायालय में दूसरे की बारी श्राई। उसने न्यायाधीश के सामने पत्रधर के पायजामे की चोरी का दृश्य सुनाया, व्यापारी ने कहा—क्यों भगवान्! पत्रधर का पायजामा कोई नही बना सकता, यदि वह चाहता है तो श्राई मुखे पत्रधर का धारा दिलवा दोजिये में पायजामा बनाकर दे दूं। न्यायाधीश ने कहा—यह व्यापारी ठीक कह रहा है। भूते मुकदमे में उसे जेल में डाल दिया गया।

लिसरे दिन कांडों की मुकदमे की सुनवाई हुई। न्यायाधीश के आदेश से व्यापारी ने कहा—यदि यह झपनी अर्ख निकाल कर तोले दे तो उसके बाद में भी झपनी अर्ख निकाल कर तोले दूं। यदि अर्खों का वजन समान हुआ तो में झपनी अर्ख दे दूं। न्यायाधीश ने कहा—यह व्यापारी ठीक कह रहा है। उसने सिपाहियों को आदेश दिया इस कामों को बेतों की सजा दी।

व्यापारी अच्छे खानदान का था, उसे दया भ्रा गई, उसने कहा—भगवान् न्यायाधीश! श्राई यह इनके अपराधों को भूल जाइये, वे भूते यदि भविष्य में लोगों को न भूते तो? वे सभी क्षमा मांगते हुए, न्यायाधीश के सामने विलाप करते हुए, रोते हुए, उस व्यापारी की कुत्तलता बतलाते हुए, भगवान् शिव का स्थरण करते हुए झपने झपने घर चले गये।
83. ध्वनिकारको नीशार:

ज्ञापनवेशस्य अश्रुकथा

“कक्षामयन्तरे चागम्यताम्” श्रवं हृदयेन्म भवत: स्वागतं करोमि,
यदा ध्वनिकारिना पान्यावाभस्य त्वतेऽपि निर्विश्वस्ततदा प्रवन्धकनेन
श्रवित्तिः सनूः कथितम्। तत्सिद्धेन दिते पान्यावाभस्य समुद्धारमः
सज्जातम्। पान्यावाभस्त्ति निर्विश्वासीतू। भोजनान्तरं यदा ध्वनि-
सायी प्रसुव्य तद्वैव ध्वनि निसुता-भ्रात: ! फँ शीतेनाकुलोद्धि?
बालकानामितव श्रवं ध्रुवव्व विस्मितोस्य सहसोक्त्यो विश्वूष्टीपः प्रज्वाल्य
सबें ध्वलोक्यक्तिनः न तत्र कोष्ठ्यतः। किमिथ्वाकालान्तरं पुन: ध्वनिर-
भवतु भ्रात: ! फँ शीतेनाकुलोद्धि? ध्वनिरम् नीशारादागः सत्व-
रमेव ध्वनिकारी विष्टाराधिकं नीत्वा तस्मानिररक्ष्यानाम्। तद्वैव कोष-
प्रविष्ट: प्रवन्धकः। प्रोबाच, प्राचुर्यक! भोजनकाले भवता सुरा पीता
ध्रुवप्रज्वाल्यासनानां जलपसि, फँ नीशारोपिः वक्रुं श्रवनोति?

ध्वनिकारी प्रोबाच भवतो नीशार: प्रलप्ती, रूपकमेकं तस्में प्रदाय
निर्ग्ननोयं पान्याब्धस्य। अन्यदा चायन्यो ध्वनिकारी समागतः। सोःपिः
तथैव मोजन्मक्तवा सुप्तः परं नीशारनिर्गतशब्देन भयत्र तः पलारितः।
निग्नले तत्सिद्धु प्रवन्धको विस्मित: सनूः सर्वोश्चरावरात्सायांत्यतं गृहुः
मारेसे। नैपि ध्वनिना विस्मितोस्य तन्मी नीशारं स्वक्षमानानीवतान्।
अन्यदा स नीशारं तत्र नीतवान्यं यत्र तमकीर्षा। चोःपिः तं नीशारं
कस्यमिचि भाटकमेवकर्षीर्षा। यथेव परिवधे केवलं चत्वारी जनाश्
वासन-निर्बिष्ट मितारी द्रो भ्रात्रयं। पिता निर्विश्वासीतू, शीतेन
प्रविष्टिः सर्वं सूरं, मातापिः मुदा।

ब्रह्मुना भ्रातरावेशकालनानदाबाल्याम्। ब्राह्मणोस्तयोः साहार्ष्यं क:
करोतु ? तौ भोजनपानार्धसेनुक्त्य: गृहुवस्तूः किच्चूमारेभाते। अलैः
तयोः पार्वतीं केवलं नीशारस्वच्छविषिद्दोः। एकदा हिमश्वर्यों तौ नीशारे
रए तस्मिन्तरीं प्रसुतां गाढः प्रसुती तद्वैव गृहुवस्तूः समागत्यं करितं
गृहस्य भाटकं प्रदवताः, तौ भ्राह्मुः-नाम्यक्षिप्यावयोः पार्वतीं नीशानं
विहाय।
43. ग्रावाज करने वाली रजाई

जापान को आपका क्या कहा?

“कामरे के बन्दर आइये” में हुआ से आपका स्वागत करता हुई। जब व्यापारी ने होटल के दरवाजे पर पैर, रक्षा तब मैनेजर ने प्रस्तुत होते हुए कहा। उसने दिन होटल का उद्घाटन हुआ था। होटल का मालिक निर्माता था। मोक्षन के बाद जब व्यापारी सीधे तब एक ग्रावाज निकली—माई। क्या ठंड से सिकूड़ रहे हों? वालकों के जैसे इस शब्द को सुनकर इसे बड़ा अश्चर्य हुआ, अचानक उठकर, बिजली जलाकर सब कुछ देखा कित्तू वहाँ कोई न था। कुछ समय बाद फिर ग्रावाज हुई, माई! क्या ठंड से सिकूड़ रहे हों? यह ग्रावाज रजाई से निकल हूँ रही थी कि प्रबन्धक ने की ओर में भ्राकर कहा। घरे मुसाफिर! मोक्षन के समय तुमने शराब पी थी, अब: हुमे बुरे स्वास्थ्य आ रहे हैं, क्या रजाई भी कभी बोल सकते हैं?

व्यापारी ने कहा—आपकी रजाई बोल रही है, इस व्यापारी उसे एक तरह देखते ही होटल से निकल गया। दूसरे दिन अन्य व्यापारी आया, वह भी उसी तरह मोक्षन करने सीधे कित्तू रजाई के शब्द से भयभीत होकर भाग छूटा। उसके बाद जाने पर मैनेजर ने अश्चर्य—चकित होकर, सभी रजाइयों को निकाल कर उलटा पुलटा। रजाई को ग्रावाज से वह भी अश्चर्य में पड़ गया, उस रजाई को ग्रावाज के कमरे में ले ग्राया। दूसरे दिन रजाई को वह वहाँ ले गया जहाँ से उसने उसे खरीदा था। उसने भी उस रजाई को किसी किरायेदार से खरीदा था। जिसके परिवार में केवल बार आदमी थे—निर्देश माता पिता दो माई। पिता गरीब था, सर्दी से पीड़ा होकर ही उसकी मूल्य हुई थी, माता मोगर गई थी।

अब माई श्रद्धोत्साह थे। उन अन्नाथ्यों की सहायता कौन करता, वे मोक्षन आदि के लिए एक एक करके घर की चीजें बेचने लगे। अंत में उनके पास केवल एक रजाई बच गई। एक बार बरफीली रात में वे दोनों, रजाई से ग्रावाज करने वाले को धूम देने गाड़ी नींद में लगे। रजाई को मानक—मालिक ने भ्राकर कहा—मकान का किराया दो, उन्होंने कहा, इस रजाई को छोड़कर हमारे पास कुछ भी नहीं है।
गृहस्वामी सकोच द्रह नीशारमेव भाटकर्पे नयामि, निर्गच्छतं
गृहान्नम समप्रत्येव । तौ प्रोचतु:-प्रस्तिमहिमपातकाले कव गच्छाव ।
परं निष्क्रियोनों तौ निष्कासितवानु । तदु गृहस्व पृष्ठभागं प्राप्य तौ
हिमपातिन चेतनाशुन्यी धरायम्य न्यपततामु । प्रत्युषे जाते पान्यासैकन्त-
स्मार्गित: । स तथो मृत्तशारीरे दयादेव्या: मन्दिरमानीतवानु, मन्दिर-
स्थेर्कमो ते निचखूनतुः ।

जापानदेशे भरणितिरिय प्रसिद्ध यतु सहस्रहस्तान्नितियें देवी दीनाम-
नुष्ठि धरायमेव निवसति, इति तत्तत् तानव विशवासः । एकदा पान्यासैक-
वासस्थ प्रबन्धको मन्दिरमाणगत्य पूजकं तथा समुपस्थितानु जनान्त
ध्वने: करएकथामशाबास्यतु । कथाभवणानल्लर नीशारं स पूजकाय
प्रदत्तवानु । तत्कथां श्रुत्वा विस्मिता: सर्वं जना: पश्चातापप्रूरिता:
सदृष्टात । तयोऽकालसृष्टु व्यथिता दुःख प्राचकत्तन । तैविचारितं
हुति । यदविन्नमरार बुभूषिया श्रीतेन च हौ बालकौ मृत्तौ।

प्रधापि जगति न जाने कवि जना ग्रन्थकाराबूतात् रश्यासु श्रुतिप-
पासाकुला: स्वजोवनं दुःखदुःखेन भापयन्ति, ते यावजीवं परिश्रमं
कुर्वन्ति परदुवरपूरित्ये रोटिका वस्त्राणि च न प्राप्नुवन्ति । तेषां शिष्यां,
पयसो बिन्दूनां कृते समुस्तस्का श्वैस्पषिभ्यो विना फिर्यन्ते । वस्त्रहीना
एव शीताति प सहन्ते । प्रधापि सहुद्ये नीशारभवनिरिव देशां वस्त्रेच्योगैः
स एव व्यनिरुभूयते, इति जापानदेशवासिनां विशवासः।
मकान-मालिक ने कोथपूर्वक कहा, किराये के स्थान पर इस रजाई को ले जाता हूं, तुम मेरे घर से इसी समय निकलो। उन दोनों ने कहा—इस गिरती हुई बर्फ में कहां जायेंगे? परन्तु इस निर्देश ने उन्हें निकाल दिया। उस घर के पीछे ही वे बर्फ गिरने से भेदनाशुद्ध होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। प्रातःकाल होने पर एक ग्रामीण बहाँ जा गुजरा। वह उनके शवों को दया-देवी के मंदिर में ले गया, मंदिर के एक कोने में उन्हें गाढ़ दिया।

जापान में यह कहावत प्रसिद्ध है कि हृजार-हाथों वाली यह देवी, गरीबों का उदार करने के लिए पृथ्वी पर ही निवास करती है—वहाँ के निवासियों का ऐसा विश्वास है। एक बार होटल के मैनेजर ने मंदिर में शाकाहार पुजारी को तथा उपस्थित लोगों को उस रजाई के भ्रावज की कहानी कथा सुनाई। कथा सुनने के बाद रजाई को उसने पुजारी को दे दिया। उस कथा को सुनकर सभी लोग भ्रावजचर्च में पड़ गये तथा पश्चाताप करने लगे। उनकी प्रकाश-मृत्यु से वे दुःखी हुए। उन्होंने विचार किया-बेद है कि हमारे नगर में भूख एवं सर्दी से दो बालक मर गये। संसार में भ्राज भी न जाने कितने लोग, अश्वेयरी गलियों में, भूख-प्यासे भ्रापना जीवन बड़ी कठिनाई से बिता रहे हैं, वे जीवनमर परिश्रम करते हैं। परन्तु एक भरने के लिए रोटी और कपड़ा भी उन्हें नहीं मिलता। उनके बच्चे दूध की बूंद के लिए तड़फ़ते रहते हैं, दवाई के बिना ही मर जाते हैं। बिना कपड़ों की ही सर्दी-परिस्थिति बिता देते हैं। भ्राज भी दयालु लोगों को रजाई की भ्रावज की तरह, इनके बच्चों से भी उसी भ्रावज का प्रतुमन होता है, जापान के लोगों का ऐसा विश्वास है।
पुरा कवयित्रिसरोवरस्य तटे बृड़ा चैका भेकी न्यवस्तुः। तस्याः केवलमेक एव पुत्रश्रावासितूः। सोश्चप सचातोच वचनकः पापीयानकुमारां-गामी चासीति। मातुर्वचनानि न कदापि पालयामास। प्रतिक्षार्वं शोक-विहृष्णु वसा माता विलपनती तं बोक्ष्य गुशोच, कथमस्य वराक्षय जीवनम-यात्रा प्रचलिष्यतीति। सा चाकथयतु पुत्र! गन्धा पूर्वस्यां दिशि परं स पशिचमायां दिशि गच्छति। यदै सा कथयति परङ्गोपरि गत्वा कार्य-मेतत्क्रुः, त त्वरितमेव निम्मगायां नदीं प्रकृतं तमाग्न च रमते।

वृृिन दिनानि व्यतीतानि। शानः शानः मेकी वृढ्यतरा सक्षाता।

तक्षष्ठिन्नया वृढ्यतात। सा प्रतिक्षार्वं शुष्कोऽव यन्तम मृत्योर्वलं सर्वंस्यस्य कं भेविला? प्रस्यभेभ चिन्तायां निमंता सा केच्या कुणा सञ्चाता। सा चामण्यत यक्षमान्तितम: काल समागतः। जीवनस्य न काय्यशा हारशिप्ता। एक एव सुतोपि भ्रायोश्य इति क्तवा सा सुखेन मर्तुः मनि नाशनकोत|।

एकदा मृत्युश्रुष्यस्यांति सा कक्षनमासार्य प्रबोधितवती-सम प्रिय-पुत्र! किंतुक्तलानलं भयं मृत्युमार्गिता सम चैका भ्रतिमेचछा बतन्ते, ममृत्युस्योर्वलं स्वः न नांदास्ते निखातनीय न पर्वतस्योपस्यकायामु-तवा सम्भवू मृत्तु न वा? सा मनसी व्यजानातु यतस्य पुत्रो मर्योर-न्तनरामि तत्करात्रेतेवाचारप्रियत।

हरितबक्स्य विषवा माता मृत्युमुखे निपतिता। वराकश्याम-भृष्मत्तप्त। शोकेन स: फूक्तक रोदितुमार्गः। पुर्वकृतकर्मां पश्चात-तामपि प्रकृतवन सङ्क्रमि कं कलुः शक्नोति। स परिवेधितवान यन्त्रा-न कदापि मातुर्वचनानि पालितानि स्वजीवाने।

यदा यदा वर्षा भवति तदा स चित्तयति कदाचितम मातृ: काय्यशान प्रवर्मिष्यतीति विचारयमु-पूक्तक वदनु च स्वकृतस्य पशिचतापं प्रकरोति। इद्भेद कारण वचनापि वर्षाकाले सरोवरलेखुः मेका: शंदायने।
हरे मेंडङक का पहला कथा

कोरिया की बर्बाद कथा

पुराने तारीख में एक सरोवर के किनारे एक वृद्ध मेंडङक रहा करती थी। उसका केबल एक ही पूजा था। वह भी स्थानिक ठंडा, पापी तथा बुरे बैलों पर ब्लाष्टने वाला था। माता की आश्चर्य का कस्ती सी पालन नहीं करता था। शोक में दूसरी माता प्रतिक्षा मिलान करती हुई पूजा की देवता से हो जीती थी। इस बैचारे की जीवन यात्रा के बाद वे उसके कहाँ है पूजा! पूजा विद्या की श्रेष्ठ जा, परस्पर वह परिवर्तन विद्या की श्रेष्ठ जाता है। यदि वह कहते हैं कि पर्वत पर जाकर यह कार्य करते हुए श्रद्धा नीचे बहते बाली नदी में कूद जाता और वहीं रखने करता।

बहुत दिन बीत गये। और तो वह मेंडङक और अधिक वृद्ध हो गई। उसकी चिंता भी बढ़ते लगी। वह प्रतिक्षा मिला विचार करती कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे पूजा का यहाँ होगा? इसी चिंता में दूसरी रहते के लिए एक बार वह गए हो गई। उसने सोचा लिया कि अब मेरा अन्तिम समय आ गया है। उसके इतिहास में यह जीवन को कोई आधार न हो। मेरा पूजा भी ध्यान है। यह सोचकर वह अंधेरे में पर भी नहीं सकती थी।

एक दिन जब वह मृत्युशास्त्र पर डूबी थी, उसने अपने पूजा को दुलवाकर कहा, है मेरे प्रियपुजार! कुछ समय बाद मेरी मृत्यु होगी, मेरी एक अन्तिम इच्छा है कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे शरीर को नदी के किनारे गाँवा न कि पर्वत की वादी में, तुमने श्रद्धा तरह सुंदर कि नहीं? वह मन में विचार करती थी कि उसका पूजा मृत्यु के बाद भी विपरीत आदरण ही करेगा।

हरे मेंडङक की विधाबा माता की मृत्यु हो गई। बैचारा पुजा बहुत दुलव तटकी हुआ। शोक है वह पूजा पूजा कर रोने लगा। यद्यपि वह पहले किये हुए कर्मों का पक्षचालन कर रहा था कि मैंने अपने जीवन में कभी भी माता को आश्चर्य का पालन नहीं किया। उसकी अन्तिम इच्छा को मैंने प्रवश्य पूरी करता—यह निश्चय करके मेंडङक ने अपनी माता को उसकी इच्छानुसार नदी के किनारे ही दफना दिया। जब जब मूर्ख होती तब वह विचार करता कहीं मेरी मां की कब्र न बन जाय, इस प्रकार फुट फुट कर रोता हुआ। अपने पूर्वकर्मों का पक्षचालन करता। यही कारण है कि इस इच्छा कृतान्त में शरीरों के किनारे मेंडङक दर्शवते हैं।
रंकुहरिशयोध्रातनम्

सूडानवेषस्य श्रेष्ठकथा

पूर्वं रंकुपशोः शिरसि श्रृव्भाविष्योशोमने सम। तानि श्रृव्भाविष्यो
शब्द्वा बिलुप्तानि विषयेःसिमन रोचककथा वरीवर्तते। तत्काले तेषामुदरे
पिताशयोज्यपि नामवतु। रंकुः पथिव्यः सिकतामये प्रदेशे न्यवसतु। न
तत्र भ्रुस्त्राश्चासन्, वन्यवनस्तीती विहाय न तत्र किमपि वस्तुतप्यते।

रंको: पितुःव्रात्ता हरिणोपिकर्मिजिच्चुद्वेणे न्यवसतु यत्र प्रोन्तः:
पर्वतः: पर्वतानाममुपत्यकाशचासन्। तत्र वसन्तः: प्रसलतामलवचवतु।
हरिणस्तु रंकुवदेवासीतिकिन्तु तस्य शिरसि श्रृव्भा नास्ताम्। तौ परस्परं
स्थित्वत्। : तयोर्मेतमेश्चासीदृ यकस्तयोर्धितिरत्र धारिति?

रंकुः: प्राह, महिवरे तू धारवचन्ते चान्तिमो निरोग्य कर्तव्यः।
हरिणः: प्राह, ममापीयमेवेच्छा वत्तेन्, श्रुत्वं विश्वसिनेम, विज्ञयस्तु समेव
भविता। धावनस्य कृते कोपिः समयवर्मापवज्ञीकोविता चेतन मनोरोक्तः
नमित्रभवेत्। हरिणो मनसि स्वाचारयढु यदि ममापि श्रृव्भ्ने भविष्य
वस्तस्तहि सुगृधु स्वात्।

हरिणः: प्राह, यदि तवं पराजितो भवितासि तस्ति तव श्रृव्भाविष्यो
महं प्रदेयानि। रंकुः: कथयामास, यदि तवं पराजितो भवितासि तस्ति
तव पिताशयं महं दास्यसि। एवं तौ परस्परं प्रतिज्ञाय धावणाय तत्परी
बभूतु।

समतलमूली तौ: श्रृजावातां तत्परं हरिणस्तु सूर्यकरः: सन्तपतः
काठपत्यमन्वचवत्। परिभाषामो रंकुप्रसरः: सन्तपतः: तत्र गद्या स
हरिणां प्रतीक्षते, समागते हरिणो विनाश्या गिरा रंकुः: प्रोकाच, महन्दु
दुःखमनूभवायं यदू मवानू पराजितः, मन्ये भवतं भोजनमणिकं कुंतं
स्मृता।
हरिराज की दोढ़

सूहान की श्रेष्ठ कथा

बहूत पहले, बारहसिंहे के सिर पर सींग शोभित होते थे। वे सींग
आज कहां सुल्तान हो गये; इस विषय में एक रोचक कथा है। उस समय
बारहसिंहे के पेट में पिताशय भी नहीं था। बारहसिंहा पृथिवी के
रौते भाग में रहता था। वहाँ परबत भी नहीं थे, जंगली वनस्पतियों
को छोड़कर वहाँ कोई वस्तु उत्पन्न नहीं होती थी।

बारहसिंहे के बाथा का भाई हरिराज भी किसी बन में रहता था
जहाँ ऊँचे ऊँचे परबत, परबतों की घाटियों थीं। वहाँ रहता था, जहाँ
फसल प्रसन्नता प्रनुभव करता था। हरिराज भी बारहसिंहे के समान ही था
किन्तु उसके सिर पर सींग नहीं थे। वे आपस में मिले तथा सहयोगी
थे। एकबार गर्मी में हरिराज बारहसिंहे का महमान बना। वे दोनों ही
आपस में स्वीकार रखते थे। उनमें केवल एक ही मतवेदन था कि उनमें
की विचारक तेज दौड़ता है?

बारहसिंहे ने कहा, मेरे विचार से दौड़ने के बारे में अन्तिम फैसला
करना है। हरिराज ने कहा, मेरे भी ऐसी ही इच्छा है, मेरा विचारवाद है
कि विजय मेरी ही होगी। दौड़ने के लिए कोई शर्त रखने ब्यौरे, इससे मनो-
रवूफत भी होगा। हरिराज ने मन में विचार किया यदि मेरे भी सींग
बन जाते तो प्रचंड होता।

हरिराज ने कहा, यदि तू हार जायेगा तो तेरे सींग मुफ्त के देना।
बारहसिंहे ने कहा, यदि तू हार जायेगा तो तेरा पिताशय मुफ्त देना।
इस प्रकार वे आपस में शर्त लगाकर दौड़ने में लग गये। समतल जमीन
में तो वे दोनों साथ ही दौड़ रहे थे किन्तु हरिराज सूर्य की गर्मी से कठि-
नाई का प्रनुभव करते लगा। परिणामस्वरूप बारहसिंहा आपे निकाल
गया। वहाँ पहुँच कर वह हरिराज की इतनाजार करता रहा। हरिराज के
श्राब जाने पर बारहसिंहे ने विनम्रता से कहा, मुफ्त हुई दुख हो रहा है
कि आप हार गये, मेरा प्रनुभान है कि आपने शोषण अधिक कर
लिया हो।
समुद्रिनो हरिएः प्राह, पराजितोशि प्रायज्ञचर्मनुसार स्वपिष्टाशया
कातुः समागतः। किचिद्विकालान्तरं रंकुरपि हरिएःगृहं प्रति जगाम।
तौ तत्र सहैव भोजनं कृतवासी। भौजनान्तरं रंकुः प्राह, पूवं भवन्तमहं
परासितवान्वां चुणा पुनः धावितुमिच्छामि त्वया सह, यद्रि पुरुषोशं
सम्प्रतिः प्रातः। हरिएःनापि स्वस्वीकृति: प्रदत्ता।

धारणकिया प्रारूढा, उच्चाऽवचनाचासीत्तत्सानम्। हरिएः सार-ह्वेदाङ्गसर: सम्भाजः। रंकुः ब्याौचारयतु-प्रस्तितवृहस्मारि मम पराजयः
निषिद्धतः। सहसा विराम्य प्राह तहु तहुएः भ्रातः। पराजितोशि, मम
समुद्रस्तन्ता ध्रुवाधिष्ठिती तुस्म्येव दार्श्यामि। इत्थं ते सम्प्रतयापि प्रभादिम्बित्रे
स्तः।
दुःखी हरिरा कहने लगा, हार कर मे शर्त के श्रनुसार अपना पितामाता देने को भाया हूँ। कुछ समय बाद बारहसिंहा भी हरिरा के घर गया। वहां उन्होंने साथ ही भोजन किया। भोजन के बाद बारहसिंहा ने कहा, पहले तो भ्रापको में हरा दिया था, भ्रव में फिर तुझहाँ साथ दौड़ना चाहता हूँ। यथापि में भ्रव वृद्ध हो चुका हूँ। हरिरा ने भ्रापकी स्वीकृति दे दी।

दौड़ भारकम हुईं, वह स्थान कुंचा नीचा था। हरिरा भ्रापकी से भ्रागे हो गया। बारहसिंहा ने विचार किया, इस जमीन पर मेरी हार निबिध्वत है। कुछ रुक कर हरिरा में कहा, भाई! मैं हार गया हूँ, मेरे ऊँचे लोग तुम्हें दूंगा। इस प्रकार वे भ्राज भी अभ्जैं मित्र हैं।
अंक: ४४.

४४: मृत्युरूपः

ईराकदेशयोऽलोककथा

न हृदि विलालि भृहोतानि, ईरानदेशयोऽक्षिमेशिचिद्वाघ्रे महाराजः

अन्यम् कोषिप हृदिको न्यवसतू। बाल्यवस्थायामेव तेन श्रुतग्रासी

स्वल्पस्ताका तुरुष्का ईराकदेशयोऽ कार्यम् कृवान्ति। ईराकदेशयोऽ

प्रजात्वस्मि: सवैव भविष्यो ज्ञाति। तुरुष्का स्तेषां गृहारिण्य दुग्धारिणी,

क्षीणम्यवर्मदितानि पशवश्चोरिताः; सेनिकाः बन्दीऽऽतः; युवत्यशाचप

हुः, निगृहिता: सेनिका दासीकारः।

महाराजे बाल्यवस्थायामेव वस्तिं तुरुष्कानु स्वरास्त्वज्ञानिकासपि

तुम्म। व वनुभवाशिखरे दत्वावधानं; युवाराजाने कक्षरक्ष: गदाधेप्

प्रारैणव्यथाम्बित। युदावर्षायं तु स सेनकेषु मृत्युस्तां लेभे। तत्सम्मु

सम्य सहस्त तुरुषकः ईराकदेशस्मि: सह युद्धस्य घोषणा क्ता। विशाले

ईराकबुध मागे स्वाधिकाराः क्तृत:।

तत्सम्मु समये महाराजे ईराकसैन्ये साधारण: सेनिकश्चास्ते। एकदा

स: ध्वनये बनु: सप्तकालवस्थायाम्बमकरोतु तद्वैव सहस्त श्राकाशे

कष्टसमेवा धाराणूः, शीर्षेऽपि संभाविता: समुख्यत:। एतादे शीर्षे

वातावरणे इत्य चाकाशचार्याः तेन श्रुता।

भाराशे! गृहत्तामेष बाणः। अन्तःकिरीक्षरमत्सम्पत्तिचाष्यायम्

प्रस्य लक्ष्ये सहस्सूल्यपरित्यम्। अन्ते लक्ष्मीराकदेशस्मि वनिन्द्र

क्षेत्रमात्रात्वा शक्तिः अन्त: अन्ते शरस्पतिणे सहृद्य तव मृत्युविनिषिद्धे।

भाराशे तेषु दिनेषु एकस्या श्रामसृवध्य: प्रभाश् निबब्बोभूत्; किन्नर्च

इन्द्रान्ते विवाहो भविता परम्य प्रविष्टां को निवारितुः

शक्तिः।

किन्नर्चिन्द्रान्ते तुरुषका: पुनः ईराकदेशेऽ चाक्षरां कृतम्। इत्योऽ

सैनियो भीषणं जन्यः स्वच्छन्ध:। तुरुष्कार्यां सेनाध्यक्षः गोवाच: ईराक

सेनाध्यक्षः—भवान् स्वातिर्लसैनिकमाब्द्वात् स स्वस्वीमात: वाण्य

प्रशस्तापुरुष बाणो निपत्तिप्रुच्छति तपपरंतं तव देश्यश सीमा। विविध्यति

ईराकदेशस्य सेनाध्यक्षः प्रस्त्रावमिं स्वीकर्पे परम्य स नृपिक्षवशिष्टं सम

वदस्मातकोपूः सेनिक: परम्युं भूषित पुरवधातुः शक्तिः।
46. मृत्युरुपजय

ईराकदेश की श्रेष्ठत्वा

बहुत दिनों पहुंचे की बात है, ईराक के किसी गांव में भाराशे
मामक कोई सैनिक रहता था। बचपन में उससे सुना था कि लुटेरे तुर्क
ईराक पर भाकरमा करते हैं। ईराक के लोग उनसे हमेशा भयमील
रहते हैं। तुर्क लोग उनके पर जला देते हैं, खेतों को ठहरा नहस कर देते
है, पशुओं को चोर लेते हैं, सैनिकों को बन्दौली बना लेते हैं, यूनाइटी का
अपहरण कर लेते हैं, पीछे हुए सैनिकों को दांस बना देते हैं।

भाराशे ने बचपन में ही प्रतिश्रषा की कि भुत हुकौको को अपने देश से
निकालेंगे। उससे बनने चलने का सम्मान किया है, तलवार चलना
सीखा, गदा चलने में कुशल लिपा की। यूनाइटी में उससे सैनिकों
में प्रतिश्रषा प्राप्त कर ली। उसी समय तुर्की ने भ्रंचाकक ईराकवासियों
के साथ युद्ध की घोषणा कर दी। ईराक के बर्डे भू खान पर भ्रष्टिकर
करे दिये।

उस समय भाराशे ईराकी की सेना में एक सांभारण सिपाही था।
एकबार उससे अपने गांव में बनने चलने का प्रमाण बुद्धा था; उसी
समय भ्रंचाकम में काले बादल गरजने लगे, भयमील भ्रंचाकी चलने लगी。
ऐसे भयमील पटाकाबंद उससे भ्रंचाकवासियों सुनी थी।

परेव भाराशे! यह बनने चलने गरजने के संसार कर दिये। ईराक के
कोई लोग को प्राप्त कर लेकिये किंतु इस बाकी के सेनिकों के साथ ही
तुर्की मुसलमा को जमी ना हो जाये। भाराशे ने इस बाकी को स्वीकार कर
लिया। भाराशे उन दिनों एक ग्राममुल्ले के प्रेम में पड़ गया था।
कुछ दिनों बाद उसका विवाह होने वाला था किंतु होनहार को कौन
दाल सकता है?

कुछ दिनों बाद तुर्कों ने फिर ईराक पर प्रामाण्य किया। दोनों
सेनाओं के बीच भयमील धुल हुआ। तुर्कों के सेनाध्यक्ष ने कहा—आप
श्रेष्ठ योरत यूनाइट को औषधि दें, वह बरसी सीमा से बाया फंके, जहां
बाया गिरेगा वहां तक तुर्की सेना की सीमा होगी। ईराक के सेनाध्यक्ष
ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया परन्तु उसे किस्मत नहीं थी कि
हमारा कोई सैनिक बाद हुई सूमी को प्राप्त कर सकेगा।
परंतु धाराशेविश्वसनि स्म यत्स निश्चयन्ति साफल्यमेर्यति। धाराशे सेनाध्यक्षपार्थेमापदेन तथा स्वरूपमन्म्भावकं। सेनाध्यक्षमानसं बाणं प्रक्षेपमुत्तमुलज्जे। धाराशे व्यचारयतु, निकटभेदविध्रो मृत्युमैतिता। स स्वप्राप्तमेण निःस्थित्वमन्म्भाव्यांवृः सह्य शामिलत्।

ब्रह्मसूत्रभाष्यायां धाराशे चायमकरूपं—ब्रह्मसूत्रम्। पर्वतपतिविधिरेषु गच्छतीम् तस्मादृ बाणं क्षिप्राशि। तुरुत्तक्षेत्रायायक्रमात् धाराशे ये पर्वतपतिकरुपः। स्वरूपमन्म्भावकं संकेरामुलसार्ब्रणं विक्षेपम धाराशे। तत्कालमेवाकाशे भीषणा: कलंकर: संभावतः। समुद्रसं। भीषणं व्यायिन्यं विलोक्यं शान्तुसेना श्रद्धा: पलासिता।। धाराशे महोदयस्य बाल्या: ईरानदेशस्य सीमानं मत्तक्रम: सुदृढ़े निरन्तितः।। ध्नेन ईरानस्य विजय: सम्पृवातः।

ईरानदेशस्य प्रजा: धैर्यिका विज्ञयोनस्त्रा: इत्समातेनिर्देशः। वे सर्वे हस्तवेद्धितमु धाराशेमहोदयं सम्मिलतः कतूं प्रभुत्वः। धाराशेमहोदयं मन्चेत्तु पर्वतपतिकरुपणमज्जनु। परं हा हुल्ला। धाराशे ब्रह्म चिन्तिनहिमाणा। प्रसूतः।

धाराशेमहोदयस्य मृत्युसमाचारेण समग्रराशि: शोकः।। प्रसूते सुन्ततियं निपतितमातिश्रीमलस्फुतं गत्वा एवलालज्जः। सम्पूर्णम् गत्र: धाराशेमहोदय: धाृतिः सिद्धिः। धाराशेमहोदयस्य क्रियेऽपि दृष्टिकृतां सख्तं तदः। कर्मचिन्तनां ब्रह्म: इस्मायि। स्यलम्बापि वीरत्वसम्पन्न समाक्रिष्ठं सत्यस्तं न भक्तम्। धाराशे गच्छेदे मृत्युकृत: करंजयः।।
परस्तु भाराश्रो को विश्वास था कि वह निश्चय ही सफलता प्राप्त कर लेगा। भाराश्रो सेवाव्यक्त के पास फुंटा तथा उसने उन्हें भ्रष्टाण निर्मित नहीं किया। सेवाव्यक्त ने कहा—बापुंडों की अनुमति है। भाराश्रो ने बिचार किया चिंतित नहीं करना में मेरी मृत्यु होगी। वह श्रम न गांव गया और बन्धु बालकों से मिला।

दूसरे दिन भाराश्रो ने बुढ़े बुलिया में अपने प्रभावहीन किया—मैं इस पर्देस पर जाकर भारा फंसांगा हूँ। तुर्की सेवाव्यक्त ने अनुमति दी है। शहर पहुँच जाने पर उम्र। भाराश्रो ने सेवाव्यक्त के संबंध के धन्यवाद जान लिया। भाराश्रो ने तब तक षोरील मच बना, बांधी उठ गई। बीमार त्वचा की देख कर बापुंडों अग्रिमकर होकर भारा छूटौं। भाराश्रो का भाग हर ईराक की सीमा को नहर कद हुर जा भिंता। ईराक की विश्वास हो जाता।

ईराक के क्षेत्र की प्रशंसा तथा बालिका के विकास का उत्साह भक्तियों। वे सभी लोगों जगत उत्साह में भाराश्रो को भी सम्मानित करते बढ़ते गये। वे भाराश्रो को दूर दूर पहाड़ पर गये परस्तु बेद है कि भाराश्रो कहा किन्ने मिले से वेदिया हुआ।

भाराश्रो की मृत्यु के समाप्ति से तारे देख वे धोक घाया। जहां उनका अर्थ वसीर किंस हुआ था, बीमार ने जब जाकर प्रभाव अशक्याक्षालि शांति की, नहीं भाराश्रो की स्थिति में विषम हुए बनाई। ईराक के इतिहास में इस दीर्घ का सफलता खास किया आयेगा। उनकी यमापि को भारा भी तीर्थस्थल की तरह सभी के भाग आदर-पूर्ण हो आदर-दिया जाता है और प्रशासन किया जाता है। यातन में भाराश्रो श्रमर्थ हो गये हैं।
राजकुमारो भेकः

पुरा कर्मिष्टचतुर्वृंभिष्टिरे निर्विनकम्प्ती प्रतिविधातः समः। कृषिकार्यं कुल्या श्रमशानालिनितः स्वकालं यायतः यः सरः तयोः सन्तानामायो नितरां गुद्धितः। एका तौ विचाराविवेतु लक्षनीः, एकः सूतुरजनिष्पताः किमं त्वृलियमविष्टतः प्राचेष्टयुगमस्तयं कृषिकर्मणं कः करिष्यति?

एवं सत्यवृंद्यक्षेत्र स्रोतस्ततो सतिष्टं सरिष्पेत्वदेवताय जगवातः प्राणवनासु संलग्नो। किंचितं सत्यवृंद्यक्षेत्र रत्नी गर्भवती जाताः। नवे मनसे शूचिसं तूतुरेकः सममन्तवरां स मैत्रजाहिको न मनुष्यजन्मा। वृद्धः प्राप्तिं किमपि अंबेकैन करिष्याबाहु?

विहिंकमित्यावः। उदासीना पल्ली प्राप्तिनविराज्यक्षेत्रिप्रयुक्तः प्रयुक्तः न प्रत्यक्तं चाहिना। गृहपुष्टि विनिष्पा किमूक्ति प्रवाहः?

तद्विष्ट्व भेकः प्राप्ते नान क्षिति करिष्यति। किंचितकालाधो सत्वमेव भ्रामणम्। प्राचेष्टयुगमस्तयं प्राप्ते प्राप्ते सामसत्वम्। किंचितकः नान क्षिति करिष्यति। प्राप्ते प्राप्ते सामसत्वम्। प्राध्यवनासु मनुष्यमुद्भृति। तद्यथा जगवातः प्राणवनासु मनुष्यमुद्भृति। प्रसन्नाद गार्तो चाहिना। सतः प्रवर्तः परं केनायति अभासेः। भेकः सहजातः।

श्रीियं वर्णिणि व्यष्टीचारि, भेकः प्राप्ते प्राप्ते माति। माकुकृते रौंदके प्रेमकां निर्मितयाः। प्राप्ते केनायति व्यष्टीचारि। प्राप्ते केनायति व्यष्टीचारि। प्राप्ते केनायति व्यष्टीचारि। प्राप्ते केनायति व्यष्टीचारि। प्राप्ते केनायति व्यष्टीचारि। प्राप्ते केनायति व्यष्टीचारि। प्राप्ते केनायति व्यष्टीचारि। प्राप्ते केनायति व्यष्टीचारि। प्राप्ते केनायति व्यष्टीचारि। प्राप्ते केनायति व्यष्टीचारि।
राजकुमार मेंढक

लिखित की शेष कथा

बहुत पहले किसी पवित्र पर निर्भर पति-पत्नी रहा करते थे। वे वेतन करके परिवार पुर्याय प्रपना समय बिताते थे पर उन्हें सत्तान का समां दुःखी किये हुए था। एक बार वे बीजार करते लगे, विशेष एक लड़का हो जाता तो कितना प्रभाव होता, बुढापे में हमारी वेता की रक्षा कौन करेगा? इस प्रकार सच्चे हृदय से पति-पत्नी, नदी-पवित्र और देवताओं को प्रार्थना में लग गये। कुछ समय बाद पत्नी गर्भवती हुई। नवी बहनों में एक लड़का खुदा परस्तु वह मनुष्य न होकर मेंढक था। वृद्ध-पति ने कहा, इस मेंढक से क्या करेंगे? इसे बाहर पेंक भागे। उदास-पत्नी ने कहा, संग्रहणु की हृदय पर छपा नहीं है परस्तु वह मेंढक नहारा लड़का है। इसे घर छोड़ा नहीं जा सकता। इसे घर की पीछे छोड़ कर सुखी क्यों न हों ले।

यह देखकर मेंढक ने कहा, मैं मनुष्य के घर में जल्द हूँ, कुछ समय बाद मेरा भुप मनुष्य को तरह होगा। वृद्ध ने शांच्य-शक्ति होकर प्रपनी पत्नी को कहा—प्रार्थना है कि वह मनुष्य को तरह बोल रहा है। संग्रहणु ने प्रसन्न होकर हमें पूरा दिया है परस्तु वह किसी आप से मेंढक वन गया।

तीन वर्ष बीत गये, मेंढक ने कहा—मां मेरे लिए एक रोटी बने। मैं जमींदार के घर जाकर कहूँगा कि अपनी एक लड़की का विवाह केरे लाने की कीजिए। उसकी तीन लड़कियाँ हैं, उनमें जो दयालू है वह मेरी लानी होगी। बुढ़-माता ने कहा—तेरे साथ कौन अपनी सुन्दर कब्जा का विवाह करेगा? तु जा, तेरे पार्क कल्याणकारक हों। यह ध्यान रखना कि कोई नौकर तुम्हें-नूत समकाल कुछ पर वूल (राजस) न शाल है।

मेंढक ने कहा—सोचन मत करो, वह मेंढक अपना सामान लेकर महल की श्रोर बन पड़ा। वहूँ पथर्वाल कर उसने दरवाजा खट्टर याग। नौकर ने आकार देखा। आश्चर्यचकित होकर कहा—स्वामिन्! दरवाजे पर खड़ा कोई मेंढक आपको बुला रहा है। हो सकता है वह कोई कुट्टा हो। जमींदार ने कहा, मेंढक जल में रहते हैं, हो सकता है कि मेंढक वर्षेदेवता का कोई सदेश लेकर आया हो। पहले द्वृष्ट भावि से इसका सलाम करो, इसके बाद मैं देखूँगा कि वह मेरे राज्य में क्या आया है? नौकर ने उस पर दूष छिड़का।

जमींदार स्वंय बहां गया श्रोर कहते लगा—संग्रहण। क्या आपको वर्हा ने नेत्रा है? भापने क्यों यहाँ आपने का कछ किया?
शेषको वही स्त्रीलिपि: सत्यमानीय वागतो भवेत्। पूर्व दुर्गेन सत्यन- तायन दक्षता यदृच्छयांत: मनस्यांते किमं सागरः सः । मृत्युत्तमुपि दुर्गीःयामाभिषेकं कृत्वा ।

श्रेयस्विणि स्वयं तन्त गत्वा घोरायो—भगवन्। किं घुम्रेन 
प्रेमं प्रेक्षा: मन्तकार्? किमं सतत्वसाध्यायमेतेनात्मा किष्ठितः? अस्मे: अहि- 
वाहू विष्णूस्व सत्यवाकाहकः, हृदिष्ठेवेव भवताप्सर्वंभावः। मकरल दिशा 
कल्यः सतति, एक्ष्या विवाहस्तानु भवस्तु सह कर्त्यते तत् चक्रुतः समह- 
दुली: सवं हिंसाकुला: सुन्मुक्ताः।

अव्व कोठि महात्मातामाबल्ते, इति विष्याते तेन युक्ताविष्यवः सन- 
कामनाय विवाहाः मृणेन सह स्वतः । संकारामहिमाः स्वगृहःस्थय आकुलिकरणी 
प्राणायाम। गृहस्वाभायपुरुष संबंधसंस्थ बूहू संपादिनी। 
हस्तित्वदियोहिमलिसः सल 
समुस्पित्यत्। तत् 
पतिः तत् तेन सह समस्तातीतः विष्सात्तिविभूष्णः। सहसां 
पतिः प्राप्त—सात: खयोशिका गाहती वेदनः जायते। प्रहो गृहं सरस्विप- 
व्यासः, मन्त्रधारः वदनाहाः प्रवर्त: कार्यः।

कब्जायामां रूढ्यः सा वेदी नवः भूत: विषयता। गृहं प्राप्तः सरकर 
स्वप्रतिमावेद्दूमार्था। परं न कुर्षापि तं सार्वकतः। धूलोधनोमातो सा 
शरणसेवा पुरुषं दृढ़ं विभूष्ण। सोभायस्तोलिपिः महतीः। अश्वमहाविभूष्ण:। 
परं संस्कृत: सेवक: सम्राब्यति, इति: किरिकेर सिनगः सर्वत्र 
देशान, सा तंत्रम दशनाय प्राप्त: जगताः। यस्यसा नेपि ज्ञातिविविश- 
मारेः तदा सुर्योऽस्तत: गन्ध्राविभूष्णः। सहसां देवपिते तद्भो चार्य- 
वारभारभा मेषिर्भोऽधृतेऽऽतनागे तदा स्त:। प्रश्नावर्तक्षरु: च श्रुते श्रवण्येते 
श्रावः परं चौमांपादसर्वेचिर्मानीतः। दीवी निश्चितस्य ग्रहत: 
रोपण प्रपातः।

तत्प्रवाहानात्य पतिः प्राप्त—प्रवाहरहिष्णु श्रेष्ठमो मुलवापि 
स्वानु मुक्त्रस्म किमस्तो शैल्याधिः? पति: प्रेमाचर्यात: ततव न समस्याचिर- 
द्विव बहुर्वाचको बिबिधा वाद्र: अभ्याम: एष्टिव्यां जनार्धने सम्मितो: द्वारकस्तस:। 
सह तात क्षेत्रः, मुसामकस्वर्णनेवय स्त्रयतात्मपीदापम्। नाहो 
सुवहस्तकालो जन्ये, एकत्रमातुस्वाश: पुप:। किन्यत्कालान्तरस्यें 
विचारान् भवताता। मेक्षप्रस्तरिः भवं नादो अविलम्बः शक्तोऽधिः। प्रश्ने 
नागेः जीवास्मि। प्रहस्त: त: नातिस्वारातु: पाश्चात्त: ग्रहातिः।

सात्कुतः पतिः विलयः। श्रुते: फिष्किति न: सत्यात् सरिष्यात 
वुष्कमारु—सत्य यदि तत: शां जीवाचिनितं चतुर्थ बुधुधर्मेत्—
संज्ञान होकर नक्का—हैं लक्ष्य का बुद्ध नहीं हूँ, अपनी इच्छा से ही अपने पास आया हूँ।। जबकि तीत लड़कियों हैं, उम्मे से पूरा का बिलास मेरे साथ कर दीजिए ।। यह सुनकर सभी समस्त कथा नित्य से व्यक्त नहीं हो चुके हैं।।

यह कोई स्वाभाविक ड्राइमा है यह सीधे पर भाषाकर ने अपनी कथा का विवेदः, विशिष्टवेक उस संदर्भ के साथ कर पिया । मंडक ने दिवास करने जब ग्राहिया, उसमें अपनी माता के चरणों में प्रस्तुत किया।

गृहस्थान में मुख्यरूपक रहते हुए बहुत वर्ष बीत गये। यह प्रतिवर्ष चयि माता को दीड़ में वाण-प्रेतात था। दुःखिया भी वह चुहरा हड़ताल में ही समय बिताया।

उसकी माता उसके साथ गई हुई थी एवं माता-पिता भी। पत्नी ने प्रचारक कहा—हैं भी मारूं निर में बहुत अघिक पीड़ा हो रही है।। यभ खरा याची है। मेरे लिए एक संग्रह का प्रबन्ध कर दो।

संग्रह पर बैठक कर, जल्दी जल्दी वह पर्यास घर की तीत बात पढ़ी। घर पहुँच कर लोग है उस से अपने पत्र को दूर दिया और दिया किया।

रत्नू वह उसे नहीं पा सकी। बहुत चोर करने पर उसे अपने पत्र का चमड़ा (मंडक का चमड़ा) मिला। मैं सोमभाषाली हूँ, मेरा पत्र अंग्रेजी स्वाट्स है।

रत्नूः वह मंडक की चमड़ी क्यों भारस करता है। यह लोगता हुई। उसे इस चमड़ी से नफरत हो गई, वह उस चमड़ी को बलाता शारस्म किया, तब युह बांध हैं रहा था।

प्रचारक उसका वह युगा पत्र सोहे पर बैठक, बादल की जरूर उड़कर वहाँ से पहुँचा। घोंडे से उत्तर कर चमड़ी को बचाने के लिए विट्ठ ही भाग। कितना चमड़ी का कमल एक वर ही बचा था। चमड़ी लावणे लिए वह पूर्ण पर गिर पड़ा।

पत्नी ने उसके पास प्राणकर कहा, घुड़सवारों में शरदशंख होकर भी बना संदर्भ के चमड़े को बच नहीं भ्रष्ट हो। पत्र कैसे कहा—कहा—तुमने भ्रष्ट नहीं किया, बाबा में जीवित नहीं रह सकता, पूर्वति के लिए भी मातम्य में पुस्क ही नहीं हो सकते। इसमें तुमारे वोप नहीं है, सेरी वर्तुरवाली हैं ही यह भव कुछ वटता घटी हैं। मैं साहवारा गर्दमी नहीं हैं, मे प्रविष्ट वाना का पुन है। कुछ समय वाला मे बलवान ही जाता। मंडक की चमड़ी के बिना में जीवित नहीं रह सकता हूँ। मेरा राज्य नहीं अपनी माँ के पास जाऊँगा।

पति के प्राणु निकल रहे थे और वह विलाप कर रही थी। उसने कहा—मेरा विवाह है कि अपने नहीं मरोगे। सुनक ने कहा—उम्मे
प्रश्नमार्ग क्षेत्र, प्रश्नमार्ग धार्मिक विवाहांतः तत्त्र गत्वा रक्षामेंद्रोपरि वत्तते

tतात्तादृश करणुः मम श्रीरिति कार्यरिति सम्प्रादनीयानि, प्रथयतन्तु-जना

निर्विकार्यन ह्यवन-तत्त्वतः न स्यः, सववं स्माधमनवनवतः स्यः। ह्यतीयं-विष्का-

रित्रायो राजानिः स्वर्णितनान् रक्षते युः। तृतीयं जनतया: क्रूः राजामा-

र्गिः कः श्वेतो भवेत् वेन ते नगरेणु गत्वा स्वर्णितपारं कर्तुः। शक्तूः।

यद्य भागवान् तत्र प्राथम्यां शृत्त्वा प्रसीदन्ति तर्हि रात्री चाह्यं रेकेच्चे सः विनास्पि जीविष्यामि।

प्रश्नमार्ग सा तत्र प्रेदे प्राथम्यान्तः कर्तुः वास्ये। श्रोक्विल्लेछां

तां विलोक्यो द्रवितो भवानव तस्य श्रीरिति कार्यरिति परिपूर्वितवन्तु।

प्रसन्ना गतो सा सत्वर्वेत्र स्वनगरमास्त्वर रक्षाशस्त्रानि कार्यरिति। जने-स्यः आचार्यामस। यदा स स्म्यः अर्थाण्तुमिच्छति तदा तत्त्वता

दृष्टवन्। स प्राह पुत्रिके! तिष्ठ, क्षुः सत्वर् धार्यसि। सा बृह ते श्रीमान्-

स्य पितः! अर्थाण्तवर्षं वत्ते ममाध प्रत्यासत्साङ गृहस्मन्यः। पुनः

सववं कथयिष्ये। परं पित्रा प्रश्नरक्षा गृह्यीता। सा संगत्वलक्तानि श्रीरिति

कार्यरिति पिने आचार्यामस।

विवेदन्तु वित्ता प्रोक्तवच, यद्य निर्विधनिदिनको व नोरः मेद स्तराः

मम महर्षिं कः श्वोकरिष्णति? यद्य रक्षाशस्त्रानिधिकारिणो रक्ष-

रिष्णति तर्हि क्षेत्रेशु कष्टस्तर्कार्यं विधार्यति? राजमार्गिः निर्मान-

ण्योन वादिकर्मां लाङ्घे न्यूनता वनविष्णति। तत्त्वता तां बृह न्यवाधानतः।

विवशा सा लक्ष्यविविधता मृणं शुशोच। ऋतूदित प्रत्येके सम्प्रेर्यो सा

स्म्यः प्रत्य प्रधविविरुङ्गं लगः। परं प्रस्तः। सङ्क्तज:। गृह्यं प्राप्त तया दृष्टि: यत्स्या पति: भृत:। पिततीर्य परिदेवयायङ्क्रजः। सा स्म्यः तत्स्तिनं निपत्य मृणं विललाप,

स्वपितं मनस्ः निर्माणस्या विमलतर्यामतिः किकंतथविढ्जः रोदितूमारस्यः। ततःततः

शाश्वेतः सहीप्रवेशस्य: विशालशिलाय: पानबें परिजना निस्पातवस्ति:।

सा प्रत्यहं तत्र गत्वा रोदिति। किक्षितकलान्तत्त्र सापि तदेव प्रस्तः

शिलामुः परिवर्तिता, इति तिभवानविनां विशवासः।
ही यदि तु मुख़े बिलाना लाहती है तो एक कठिन कार्य करो, घोड़े पर बैठकर परिवर्तन दिशा की ओर जा, बहां जाकर लाल बादलों पर भागवान का महल है। वहाँ प्रारंभ करना कि प्रातःकाल से पहले ही श्राप भरे तीन काम कर दो। पहला काम है—लोग गरीब श्रीर ग्रामीण न हों, सभी के पास बंदंगी बन हो। इस तरह का काम है—श्रविकारी श्रीर राजा अपने ब्राह्मणों की रक्षा करें। दीर्घाकाल में है—जनता के लिए सबकों का निरीक्षण किया जाय जिससे वे नकारों में जा सकें और व्यापार कर सकें। यदि भगवानु, तुम्हारी प्रार्थना सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं तो मैं राष्ट्र में मेंदुक को नमः के बिना भी जीवित रहूँगा।

वह घोड़े पर बैठकर बहां पहुँचें और प्रारंभ करने लगे। भगवानु को उस शोकिनिन्द्रा स्त्री को देखकर दया भ्र गई और उसके तानियों काम उठाने पूरे कर दिये। वह स्त्री प्रसन्न होकर शीघ्र ही अपने नगर की ओर आई और भगवानु द्वारा किए गये तीनों काम लोगों को सुनाये। जब वह अपने घर लौट गए तब उसके पिता ने उसे देख लिया। उसने कहा—पुत्र! ठहर, इतनी बड़ी-जड़ी कहाँ हैड रही हो? वह कहने लगी—पिताजी, अभी क्षमा करो, भर एक अत्याधुनिक कार्य है भ्राज सुवह होने से पहले घर पहुँचना। इसके बाद सब कुछ कहूँगी। परस्पर पिता ने घोड़े की लगाया न मजबूती से पड़ लिया। उसने भगवानु द्वारा किए गये तीनों काम, पिता को सुनाये।

पिता ने दुःखी होते हुए कहा, यदि गरीब और ग्रामीण में कोई भेद न रहा तो भी रहें महत्त्व की कौन सीकार करेगा? यदि श्रविकारी अपने ब्राह्मणों की रक्षा करेंगे तो दुर्भाग्य व्हेटेणों में कौन काम करेगा? सबकों के बन जाने में घनिष्ठ के लाम में कभी भ्र जायेगी। उसके पिता ने उसे मजबूती से बांट रखकर। वह विशेष होकर खक्क्क बनकर हो गई और बहुत श्रविकारी सोच में पह गई।

लेकिन सुबह हो गया। पर जाकर उसने देखा कि उसका पति मर चुका है, माता-पिता विलाप कर रहे हैं। वह अपने पति के शव पर गिर गई और बहुत श्रविकारी विलाप करने लगी, अपने पिता को मल ही मन कोसती दुःखा, खक्क्क बनकर रोने लगी। उसके पिता का शारीर समीप की जिनी पर, उसके पदार्थ वालों ने गाड़ दिया। वह प्रतिदिन बहां जाकर रोता है। कुछ समय बाद वह मी बहां पर पश्चिम की चट्टान के रूप में बदल गई—यह तिम्रवत्तवादियों का विवास है।
४८. मणकस्योपत्ति:

चिलोदेशस्य भाषाकथा

सहस्राणि वर्षसिद्ध्वनिधं न्यायोपतितानि, एकत्रिमणि ग्रामे नाजनकावानसमकः
कुककस्यको न्यायसत्तु। निर्देशस्मिर्दिक रुपवत्ती स्वरूपिन्यान्यावत्वात्।
कुककस्य स्त्री सृवरतरुपवती शहर्तृति गतिज्ञानि, श्रीकोटकानकञ्चनसुलोऽ।
इत्यं कुककस्यपतिः रुपवती स्वरूपिन्यान्यावत्वात्।

निर्ध्वंविवानि विचित्र मनमिति। यद्वानवति तद्वहृत्येव। एकदा
सच्चसा कुककस्य रुपवती भार्या मूता। तद्रिप्तमें शोधुमसंगमस्यैः सा
जन्मारोप्य भलितू लगभदेकत्तः। स राजस्विनं नावामन्त्रावत्तु,
पवित्रस्थोत्तरत्नासान्याजख्च। तत्त्वं सौन्दर्य दर्शनीयमात्ते। कुक्कवी
नाचं तरं गुटवा पवित्रां तारः। पर्वतास्तित्रेषो एकत्रेषर्विक महाश्वी
पादीनेव-केनाकालितः, छोटीपिति देवसा परिवृति इववित्तमाः सुभूमे।

“जीवी” नामकोश सच्चसा जनाविवाना। देवता, इति पालिचित्रोऽसाकारस्तं
सहस्त्राणां स्वविवानिः। स तस्य पाद्यः पपत, स्वविवानिः। श्रीवामि योः।
निर्ध्वंसस्तमण्डलम्बः स्वविवानिः भवाय जीवी प्रस्तः। सन्नीवाच, वत्सः,
उत्तमः, तत्वं मम शिष्यो मनितूमहिः। किन्नु नाककामन्त्रावत्तु वार्तात्
रंगस्या भार्या जीविता भवाय। जीवी मनस्ववक्रोद्यमयवर्ते भार्यान्यित्से
प्रायोपन्यत्, हत्तथा, भववर्ते निमित्तस्तं नौददृ निमित्तिः चात्मायांगाः
वस्त्राः प्रस्तीतिं तं प्रस्ततः द्वम भयतिः सा तवं न कोरितविः।

“जीवी” सत्यमेव दत्ता प्रोपाच, नमः पदविंदा स्वापूपुलिंक्षेवः
विनायकं निमित्तत्वा रक्षसविन्नु तस्यो तिहागदम्। वैस तत्र सीविता हृदाय।
इत्युक्तः नामकर्ताः जीवी। नाककामः। युगाकालीत्तमाग्य तथावर्तको-रोणेन
सम पुरुषोपधिमायस्वत्। जबल पीलवा भ्रान्तं तो प्रहारितो नाकणार्का
गूँहः प्रति प्रमालविदः।

विनायकंनानां व्यतीतानि, तीरे नां संस्थानां सायं विश्वविद्यमु-प्रतिहारामृ। नाककामः।
पर्वताः तत्रान्त्रत्वान्त्रत्व सोजनमुनिभक्ष्यं ग्रामं प्रति
प्रभुविदः। मुड़ुसामर्थं ग्रामं देवाननेन विलम्बो जातः।

इति नाक्कामस्यस्याप्रसि: भक्तिः धार्मवन्यय स्वभवायी नहान्तिप्रस्त
सीन्यंयरोकारितस्य स्न्योदाापि निववः। साये भृरक्षोद्धिनेन सायो व्यवसायी
व्यवसायी सायं स्पातुमेच्छतु नाक्कामो सोजनि नाननाय इत्यादिधुत्
48. मच्छर की उत्पत्ति

चिलंगी की ब्रौंच कथा

हजारों बर्ष, बीत चुके हैं, एक गांव में नाकताम नाम का एक किसान रहता था। वह निर्धन था और खेती करके अपनी खुशियाँ बनाता था। किसान की पत्नी बहुत ही सुन्दर थी, ताहतुत के बगीचे में रेशम के कुड़े पालती थी। इस प्रकार वह एककुक-दसपति सुख से अपना जीवन बिता रहे थे।

विज्ञापन का विधान विचित्र होता है। होनेवाल होकर रहती है। एक दिन किसान की पत्नी प्रचारक मर गई है। उसके विवाहों को सहेज करने में ब्रह्मसर्थ यहु देखा, उसे नाव में बिठा कर इधर-उधर घुमाने लगा। वह रात दिन नाव चला रहा था। इस प्रकार वह पहाड़ी की तलहटी में पहुँचा। वहाँ का सौन्दर्य दर्शनीय था। किसान ने नाव किनारे पर लगा ली और वह पहाड़ पर चढ़ गया। पहाड़ पर एक तेजस्वी महालमा एक पैर पर खड़ा था, बुझ होता हुआ बीत देखते ही वह तेजस्वी बहुत सुन्दरित हो रहा था।

यही “जीवी” नामक वास्तूसचिवियों का देवता है, नाकताम ने उस महालमा के सम्मन में ऐसा सोचा। वह उसके पैरों में गिर गया और उसके अपनी पत्नी के प्रश्नों को उत्तर देने लगा। जीवी भी प्रसन्न होकर कहने लगा है वस्त्र, उठ-टू में रा शिव योग है किंतु नाकताम ने इच्छा थी कि उसकी भाषा जीवित हो उठे। जीवी के मसू में विचार किया कि इस स्वी के प्रेम में गन्तव्य हो रहा है, वह गोला—बलस, तुम मयावाण ने बूढ़र रहे हो अपना उदार नहीं करना चाहते हो, जिनके प्रेम में तुम छूटने पाना होकर कूम रहे हो वह तुम्हें याद से नहीं करेगी।

जीवी इसे एक मतल देता हुआ कहता है कि मतल पड़कर अपनी अंगुली काटकर खून की तीन बूढ़े उस पर गिराना, इसीसे वह जीवित हो उठे, ऐसा बहकर जीवी ब्रह्मसर्थ हो गया। नाकताम पुनः नदी के किनारे पर गांव और उसके ऐसा ही किया इससे वह जीवित हो उठे। जल पीकर दोनों ही प्रसन्न होकर, नाव में बैठकर घर की ओर चले।

बहुत दिन बीत गये, किनारे पर नाव रखकर थे दोनों विज्ञान करना चाहते थे। नाकताम अपनी पत्नी को वहाँ छोड़कर भोजन ठेठने के लिए गांव की ओर चल दिया। गांव बहुत दूर था जहां विल्ल मध्य हो गया था।

इतिहास नाकताम की जनुविकृति में कोई धर्मवाद व्यापारी ने नहान-दीप की मुन्दरता को देखा तो वह ज्ञानित होकर उसके मोहत्ताल में
तत्त्व स्वप्नीमदृष्ट्वा नित्यर्म विह्वलो जातः। स ताम्बन्धेष्टु निर्गतः।
एकमासान्तरं नाकतामेन दृष्टं यतसा कस्यचन व्यवसायिना सार्थं
वार्तालापे संलग्नाससीत्। नहानदीप सम्पदशचार्कर्षणं व्यवसायिनं
त्यक्तु नैच्छिन्त्। सा नाकताम श्रीवाच, ध्रागच्छावास्यां सह सुखन कालं
यापयम्यायामः।

कृष्णान्वितो नाकतामः प्राह, मया तुम्हं द्वितीयं जीवनं प्रदत्त-मास्ते। सा प्राह, त्यथा रक्तबिन्दुभमयं महं प्रदत्तं, तत्र रक्तबिन्दुभमयं
तुम्हं प्रतिददानि। इत्युक्तवा सा स्वामुरुच्च कर्तव्यं वत्ता रक्तबिन्दुपाल्यतं
तत्कालमेव मशकभूतं सा तस्माच्चार्न्नमूं ता सम्भाजा। इति सा हृद-वती नहानदीपनामस्वी तद्हिमान्मशकभूतं नाकतामस्य क्रेण्योरागत्य
क्षमामिव याचनानाप्रत्येकं क्षवृत्तार्थे विचारणामवासिनो विश्वासः।
फँस गया। वह स्त्री भी हीरे-मोटियों के लोभ में श्रव व्यापारी के साथ ही रहना चाहती थी। नाकताम भोजन लेकर लौटा, वहां अपनी स्त्री को न देखकर बहुत दुःखी हुआ। वह उसे ढूंढ़ने निकल पड़ा। एक महीने के बाद नाकताम ने देखा कि वह एक किसी व्यापारी के साथ बातचीत करने में लगी है। वह नहानदीप संपत्ति के आकर्षण से उस व्यापारी को छोड़ना नहीं चाहती थी। उसने नाकताम से कहा, श्राप्रो हमारे साथ ही सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करो।

कोई नाकताम ने कहा, मैं तुम्हें दूसरी जिंदगी दी है। वह स्त्री बोली, तुम मुझे खून की तीन बूंदें दी हैं, तेरी खून की तीन बूंदें में तुम्हें दे देती हूँ। ऐसा कहकर उस स्त्री ने अपनी श्रेणु लेने काटी और खून की तीन बूंदें गिराईं। वह स्त्री उसी समय मच्छर बन गई और अद्वैत हो गई। इस प्रकार वह रूपवती नहानदीप नामक स्त्री, उस दिन से मच्छर बनकर नाकताम के कार्यों के पास श्राप्रक क्षमा मांगती हुई प्रतिदिन शब्द करती है, ऐसा नियतनाम के लोगों का विश्वास है।
४४. मृत्युर्बलवती लोके
बेबीलोनदेशस्य श्रेष्ठकथा

भूति दिनानि व्यतीताति, बेबीलोनदेशे नगरसासीदेकू एरिच-नामकम्। तस्मिन् राज्यनिर्णयं जीलगामेशनामको नृषः। स नगरम-भिन्न: प्राकारां मन्दिरनायक सुन्दर्ण निष्किर्तवान्। जीलगामेशनूत्तनितिशवातीव रूपसम्पन्न: शक्तिसमन्वितशक्तिसीतु। नगरस्य प्रजा- सर्वदा तस्मादभव-दु:ता वातातिष्ठत्। जना भगवन्त मार्यायामन्त्र्यं यद्दस्मयमभवं क्यत्च्छत्तु स्वावान्।

लोकप्रार्थना श्रुत्वा देवा: कुपालवं सम्जाता:। ते अनकीडानामक बलिमुपराव एरिचनगरप्रभेदन। देवा व्याचरणः अनकीडु जीलगामेशमिव शक्तिसम्पन्नों प्रक्ष्यति तथा नगरस्यसिनिनामभवं प्रदास्पदति।

इतथमनकीडु एरिचनगरन्त्रा प्राप, जीलगामेशेन सह सत्य जन्मभवन्तः श्रद्धे विजयश्रिमतमवाप जीलगामेश। अनकीडावर्तमण शीर्ष निमायथ जीलगामेश। प्रस्था: सत्य तेन सार्थ मशीमकरोतु भविष्ये जन्मभवन्तु प्रियरेणः।

तौ ह्रावेश प्रतापिनी साहसपूर्ण कायं कर्तु: प्रचलितौ, शरवाञ्ग गत्वा तत्र भीषणदैत्यवधमकुर्ताम्। विशालानु मृत्युखान्तितीक्ष्य स्वनगर-गाम्यतामू। द्वारोभीरेऽ: साक्ष्यमवेश्य जननुवेषेऽ: नेहुः भृत्यान्तशरीर सञ्चारः सम्भवतु। नगरप्रकाशः इत्यरा जीलगामेशेन सह विकारह कर्तु: मेच्छत किन्तु जीलगामेश। प्रस्थानमन्त्रस्वकृतवान।

इत्यरा रूप्ता माती देवानु सम्प्राप्तिततवत् यत्र कर्त्य वृहस्मं मर्मप्रसा स्वनगरं सम्प्रेष्यन्तु येन नगरस्यन्त्र विनष्ट स्मातः। प्रस्था: देवा वन्यवृपभमेकः प्रेष्टितान्त:। वृहस्मावाय नगरी भीषणां विनाशमिव कर्तूः भारेमे। ह्रावेशतो मिलित्वा वृहस्मावें हस्तवती। किन्तु वृहस्मरणसह सत्य तयोऽ: पत्तां आरेमे।

देवा: अनकीडामहोद्वे भापं दत्तवतः। भेन स हुसां: सम्जात्।। किच्छवहिनान्तरं महोद्वि जीलगामेशो यद्वा विनाशेन मित्रं षुष्का भग्नापदे तद्वद स विश्वकारानाविक्ष्टवान् यत्त्वर्णिणीहरकान्तां। अनकीडु-भूति निर्विश्वेषत्तुभस्वं।। तदन्तरं जीलगामेशो विचारितुं लगनं:। मृत्युर्बलवती वेतादिः। तेन श्रुतमालीच्छू युतानदेशे नोबानामक: पुष्पकवचारवन्ना। स तमस्येष्यात्तुं लगनं।।
चौथे दिन पहले की बात है, बेविशुके देश में एक अर्धांश नामक नगर था। उसमें जीलगामेश नामक राजा राज्य करता था। उसके नगर के दोनों ओर दीवार बनवाई और एक सुंदर मन्दिर बनवाया। जीलगामेश नामक यह राजा बहुत ही सुंदर और साफ साराजी था। नगर के लोग उससे हृदय न मसीही रहते थे। लोगों में भ्रष्टाचार से प्रार्थना की कि हमें भ्रष्ट भ्रष्ट प्रदान कराओ।

लोगों की प्रार्थना सुनकर नेताओं को दया आ गई। उन्होंने अर्धांश नामक एक शत्रुशाली जीव को उम्मीद कर अर्धांश नामक नगर में भेजा। देवों ने विचार किया कि अर्धांश जीलगामेश की तस्क ही शक्ति सम्पन्न होगी और नगरबच्चों को नशे में प्रसार करेगा। इस प्रकार अर्धांश जीलगामेश नामक नगर में पहुँचा। जीलगामेश के ग्राम उसका युद्ध हुआ प्रत्येक में जीलगामेश की विजय भास्त हुई। अर्धांश नामक जीव की बहुमुखी देश कर जीलगामेश प्रसन्न हुआ। हुआ, उसने उसके साथ मिलता कर सी तथा शविष्य में युद्ध न करने की प्रतिज्ञा कर ली।

वे दोनों प्रतापी शाहसुपूर्ण कार्य के लिए बल पड़े सरकर्ड के बन में जाकर उन्होंने एक शीघ्र बेल का वच किया। बड़े बड़े पेड़ उखाड़ कर वे अपने नगर में ले गये दोनों जीव की सफलता को देख कर लोगों में प्रेम और पूर्णा का समर्थन हुआ। नगरवासित्व इत्तरा ने जीलगामेश के साथ विचार करता था। किंतु जीलगामेश ने इसका प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया। इसके बाद होकर दोनों से प्रार्थना की कि वे एक जंगली बेल को एरियन-नगर में भेजे ताकि वह नगर नष्ट हो जाय। प्रसन्न होकर दोनों ने एक जंगली बेल को एरियन-नगर में भेजे ताकि वह नगर नष्ट हो जाय। यह बेल नगर में संकल होकर विचार कर रहा था। इन दोनों ने मिलकर इस बेल को भार दाला। किंतु बेल के मरने के साथ ही उनका पतन सी आरम्भ हो गया।

देवों ने अर्धांश को अराहार दिया। जिससे वह रोगी हो गया। कुछ दिनों बाद मर भी गया। जीलगामेश ने जब मरने हुए मित्र को देखा तो वह भयानक हो। उठा तभी उसने शिखरकारों को बुलाकर प्रार्थना की कि अराहार देने शीर्ष हो की एक अर्धांश की सूरत बनायें। इसके बाद जीलगामेरा विचार करते लगा कि मृत्यु अराहारसंभाल्या है। उसने चुना था कि युद्धात देश में नोचा नामक एक मुर्ख है जो अराहार है। वह उसे तूंड़ने लगा।
एतद्धर्मसतत्रिरथी यात्रा कृतवान्। मागेः उच्छान् पर्यायतानुलखम्, 
भंभावतेन प्रताधितः। वन्यपशुभिः सह संख्यम्, लक्ष्यापिपारसतदितः। सत्त्वपि 
नोबापुरुषस्य बसैति प्राप्। नोबामहोदयं प्रमृतस्तवरहस्यं पुष्टवान् किंतु 
नायं नोबा रहस्यमेतद्विजापिपारसपितमश्वनोत्।

स जीलगामेशमेकदा विजापिपतवान् यदू भवान् ऐनीलो जगजमल- 
मग्नं कतु रम्भचत्। यतो हि जगतः कोलाहलेन तत्य निद्रा चुटिता। 
एहानामको देव नोबामसूचयत् यदेका विशाला नोः कारयितव्य तस्यां 
प्रत्येकं वस्तुनः बीजान् निकिष्ठ्य प्रलयकालं प्रतिशक्षव। नोबा तथैव 
कृतवान् नांवा सह सोत्यमण्डल्। यदा जलग्रामः शान्तः समजनि ऐहा 
नोबामहोदयं वरं देवी॥

यदा जीलगामेशो नीराशः सन् प्रत्यागणतुमेच्छत्तादैव तत्पतस्य दयाद्रिः 
सती जीलगामेशं प्रोचे यत् समुद्रे वर्तते वनस्पतिरेको यथ्य सेवनेन 
शारीरं यौनमपरिपूर्ण तिष्ठति। जीलगामेशो वनस्पतिमवेणें निगतः 
समुद्रं प्रति। स्वपादयोः प्रस्तरखण्डकामस्योत्ततारसमुद्रवत्तेऽ। वनस्पति 
सम्प्राप्तवान् सः। प्रहर्षि: सन् भूमस्मागः। तेन विचारितं स्वनगरं 
प्राप्य वनस्पतिमेन्त्यादिष्ठयामि जनेस्मयो वितरिष्ठयामि ्च॥

किंतु यदा स स्नातुमारेरे तदैव कोदसिंहपि सर्पं वनस्पति नीतवा प्रधान- 
विविधः। इत्यं जीलगामेशस्याशा नीराशायं परिगिता सम्भवता। स 
विशवसिति स्म यल्लोके मृत्यु बैंवती चावशयंभाविनी ्च वर्तते।
इसके लिए उसने बड़ी लम्बी यात्रा की। रास्ते में ऊँचे ऊँचे पर्वतों को उलाँचा, ग्रांथी तूफान का सामना किया, जंगली पशुओं के साथ युद्ध किया; भूखा ध्यासा वह नोवा पुरुष के निवास पर पहुंचा। उसने नोवा से अभिव्यक्ति का रहस्य पूछा किन्तु नोवा भी इस रहस्य को न बतला सका।

उसने एकबार जीलगामेश को बताया कि भगवान् एविल संसार को जल में डूबोना चाहते थे। क्योंकि संसार के शोरगुल से उसकी नींद टूट गई थी। एहा नामक देव ने नोवा को बताया कि एक विशाल नाव बनाएं उसमें प्रत्येक चीज के बीज डालो तथा प्रलय काल की इंतजार करो। नोवा ने ऐसा ही किया। नाव के साथ वह भी चला गया। जब जलप्रलय शान्त हुआ तब एहा ने नोवा को बरदान दिया।

जब जीलगामेश निराश होकर जाना चाह रहा था तब उसकी पत्नी को दया था और वह जीलगामेश को कहने लगी कि समुद्र में एक वनस्पति है जिसके सेवन से शरीर सर्वदा नवयौवनयुक्त बना रहता है। जीलगामेश उस वनस्पति को ढूँढने के लिए समुद्र भी शूर निकल पड़ा। अपने पैरों में दर्द बांधकर वह समुद्रतल में उतर पड़ा। उसने वह वनस्पति सो प्राप्त कर ली। प्रसाद होता हुआ वह जमीन पर गया। उसने विचार किया कि अपने ठहरने में पहुंच कर वह वनस्पति को खायेगा तथा लोगों को बांटेगा।

किन्तु जब वह स्तान करने लगा तब कोई सप्त वनस्पति को लेकर दौड़ पड़ा। इस प्रकार जीलगामेश की धार्मिक निराशा में बढ़त गई। उसको विश्वास हो गया था कि संसार में मृत्यु बलवती तथा अवश्य-भाविती है।
३०. सूर्यस्य व्यवहारः
ह्वाईद्वैवल्य्य श्रीककथा

सृष्टे: प्रारम्भे दिवसीयो नासीत् काराधनस्य जग्न्यकारकः। सूर्यः सुदूरमाते। दुखोध्वं लोकप्रपीडः चानन्दमनन्मस्वति संस्मानः। जना: सूर्यः प्रशीक्षते परम्बं गाढ़निश्चित् प्रसुप्तस्तिक्षुः। यदि उदात्तः तवह सत्वर-मेव गयस्य परिक्रमाणं विधाय उपलब्धे। परिएमतो जना जल्यािम-प्यकुर्वेन्ति विष्ट्तस्य शरणामवध्येन्।

सूर्यस्य व्यवहारे नितरामसंस्कृता जना न किमपि कन्हः माननवन्। सर्वे दुष्कालः सम्ब्रवस्त:। जना व्यावहारयु इत्यद् फायवः हन्न्यत्र प्रचलित्यतः। सूर्यस्य नियमनाय किमपि कत्रो भवेन्तु। अन्यत्या चाराणां जीयोक्तां कठिनं भविष्यति। वृद्धा गम्मीर्त्या व्यावहारयु अन्यत्या च सर्वे उद्दित्त्वशैक-सिंहस्याने सम्पलेता:। सूर्यांदयो जात: परं तवक्षािमेव विनाशी चाण्व-कारारूपता जाता।

युवकः प्रोचुः, किमपि भवन्त: सूर्यस्य स्तुवितु कुर्वन्तः। सूर्यस्य किं प्रशीक्षणः। तीनस्तक्षािस्य प्रशीक्षयो तथोऽपि ते न श्रावन्तः।

तदैव कोशिका धीवर: सम्ब्रवस्त्रे प्राह्न च, योजनेका मथा विनिमितता सूर्यस्य नियमनाय। प्रलम्बो दृढ़श्चको गुणः निर्मापनयितवः। पुनः सर्वेःस्मृ विधायायमि। तस्या योजनायायास्विन्वासस्तोतिः सर्वे गुणानिर्मित्राः लग्नः।

सहारकरप्रयासाम्मुको निर्मितः। प्रलम्ब गुणं नीत्वा स्वनौस्थित-तोिवज धीवर: प्राचलू पूर्यः निग्रहिीतरूपः। सम्यकस्तुग्निताय जना ततसा-फलवाियो इत्याध्यायः। नार्व संयोज्य सः सुदूरं विनिगतः। बहूतन वर्णार्थ व्यतीतान्ति, यथार्थकथनिवः: पूर्ववा दिशि विनिर्जससंस्कारप्राप्रः। तदे नौबन्धनं विधाय नौस्थितं गुणं निज्ञासायामयाः। सूर्यबिश्वते वेस्वगुरुं प्रक्षिप्य नौस्थितः: सूर्याद्यं प्रतीक्षते। सूर्यः यथा शयनाद्वित्यत स्थायी गुणं निवद्धः। चीकुर्वेण्तायो तस्माद्गुणात्मिति को नामवतः।

धीवर: प्रह्न्न: सम्प्रोचः, सूर्यः। स्वसंस्कारस्य फलो मोक्षयति भवान्। लोकस्य प्रार्थनामनोिन न श्रुत्योति। शृणुमुद्धिनः सूर्यः प्रोचः, किमपि-महावर्गः, किमच्छति भवान्। धीवर: प्राहु, वयस्मिच्छायो यद्यमानः।
५०. सूर्य का व्यवहार

हवाईहीप की भूमिका क्या

सृष्टि के आरम्भ में न तो दिन था, इसका कारण शक्ति करने वाला सूर्य बहता है। इस हुस्त सूर्य को, संसार को पोड़ा पहुँचाने में आर्थिक भारता था। लोग सूर्य का इत्तफाम करने परन्तु वह गहरी नींद में चोटा रहता। यदि वह बड़ा भी होता, तो शोषण सृकाश की परिवर्तन करके भाग जाता। परिवर्तन के लोग पानी से नहीं पी पाते कि उन्हें विस्तत की शरण में जाना पड़ता।

सूर्य के व्यवहार द्वारा बहता शक्ति, व्यवहार लोग कुछ भी नहीं कर सकते थे। सब जगह सृकाश पड़ गया। लोगों ने विचार किया कि ऐसे काम नहीं चलेगा। सूर्य को बस में करने को कुछ करना होगा। नहीं तो हमारा जीवन रहना कठिन हो जानेगा। वृद्धों ने बड़ी मस्ती रत्ने विचार किया, दूसरे दिन सभी बुटिस्तान लोग एक जुगह दक्षरे हुए।

सूर्य उदय हुआ तेजी में उसी समय वृष्टि पर ध्वनियाँ छा गया।

पुलकों ने कहा, ध्रुव लोग इस पूर्त—सूर्य की स्तुति करने हो। सूर्य कुमके इसका क्या फल दिता है। इस श्राप जाता के बदले भी न ले सके। उसी समय कोई ध्रुव श्राप धौरा कहने लगा, सूर्य को बस में करने की मैंने एक धोजना लानाँ है। एक लम्बी धौरा मजबूत रस्ती बनाओ, फिर में सब कुछ कर लुंगा। उस योजना पर विषयवस्ती न करते हुए भी सभी लोग रस्ती बनाने लगे।

एक ह्वायर मील लम्बी रस्ती बनाई गई। उस लम्बी रस्ती को लेकर, वह ध्रुव धर्मनी नाय में बैठकर सूर्य को बस में करने लगा। समुद्र के किनारे खड़े लोगों ने सबकी ताकताओं की कामयाबी की। ताजा लेकर वह बहुत हुई निकल गया। भ्रष्टक कर बीत गये, जैसे तभी बहुत पूर्व विश्व के छोर पर पहुँचा। किनारे पर उसने खाना बनाये धौरा धौरा रस्ती का निकाला। सूर्य के विस्तत पर धर्मनी रस्ती बदलकर वह ताजा पर बैठा हुमा सूर्य का इत्तफाम करने लगा। जैसे ही सूर्य विस्तत से उठा वैसे ही रस्ती में बंध गया, वह बहुत चिल्लाया पर वह रस्ती से मुक्त न हो पाया।

ध्रुवर ने प्रसव होते हुए कहा, हे सूर्य। धर्मनी किए हुए का फल भोगैया, तुम लोगों की प्राधिक्य भी नहीं पुण्यते। बहुत दुखी हुईसे रस्ते में कहा सुकू में धर्मनी के बांधा है। भार क्या चाहते हैं? ध्रुवर ने कहा, हे,
216/सूर्यस्य व्यवहारः

प्रत्येक, नियमिततः प्रवेश लोकं प्रकाशयन् जगति सुस्वास्थ्यं सम्पादयतु।
भवतामभावे वयं न किमपि कतुः क्षमा:।

सूर्य: प्राह, भवतु मया सर्वं ज्ञातम्। ग्रहं नियमिततः पृथिव्यां प्रकाशं वितरिष्यामि,
मां निम्नुक्तबन्धनं कुरु॥ धीरः: प्राह, प्रधुनांहि
मेतत् निम्नुक्तबन्धनं करिष्यामि परं भवतो नियमनाय गुस्यस्येकभागां
पृथिव्यां नेष्यामि।

सूर्यस्य व्यवहारे परिवर्तनं जातं स गगने नियमितं प्रकाशते तदृदि
नादारस्य लोके भगत हिरियं प्रसिद्धा यद्धीरवः: सूर्यस्य पादे यं गुरां
निर्बंबन्धं स सम्प्रत्यपि सूर्येदयास्तकाले द्रष्टुं शक्यते।

।